श्रीमद् बुद्धिसागरजी ग्रन्थमाळा ग्रन्थांक ८

योगनिष्ठ मुनिराज श्री बुद्धिसागरजी कृत.

श्री परमात्म दर्शन.

जिज्ञासु सद्‌ग्रहस्थोनी सहायथी

छपावी प्रसिद्ध करनार,
श्रीअध्यात्मज्ञानप्रसारकमंडळ.

[श्री "लक्ष्मी" प्रिन्टिंग प्रेस—अमदावाद.

वीर स. २४३६ सने १९१०

किम्मत [०-१२-०]

बे बोल.

" ज्ञानक्रियाभ्या मोक्ष " ए मोक्षमार्गनुं दृष्टिबिंदु छे तथापि घणा जैनो तेना खरा रहस्यने नहि जाणता एक तरफ वधु वलणतो बीजा तरफ न्युन एटलुज नहि पण अपेक्षा समजवाना ज्ञाननी खामीए घणी वखत डाबो हाथ जमणाने दवावे छे तेवी स्थिति जोवाय छे. आनु कारण पूर्वाचार्योए द्रव्य गुण पर्याय आदीनु जे सुक्ष्मज्ञान प्रकाश्यु छे ते ज्ञानने समय अनुसारनां मनुष्यो समजी शके तेवी उत्तम शैलीथी सरळ भाषामा ग्रथो तैयार करी जनसमाज आगळ जोइता प्रमाणमा रजु नहि थवानु छे.

अमारु चोकस मानवु छे के जैनधर्मनां सिद्धांतो प्रमाण अने युक्तिओथी एवां तो प्रबळ अने न्याययुक्त छे के जेम जेम ते तत्वो वधु फेलावो पामशे तेम तेम माचिन दृष्टि वधु खीली नीकळशे, अने जैनधर्मनु क्षेत्र वहोळु थशे.

आ माटे मात्र जैनोज नहि पण सर्वे लोकोना बोधार्थे जैनधर्मनां पुस्तको रचाववाथी अने सारी रीते वंचाववाथी अन्य लोको पण जैनतत्वनो लाभ मेळवशे केमके जैनधर्म मात्र जैनो माटेज नथी. गमे ते ज्ञाति होय पण तेनां सिद्धातो अनुसार वर्त्तन राखनार जैन होइ शके छे. आवी भाव उपकारनी दृष्टि ध्यानमा राखी, काळने अनुसरी, तथाप्रकारनो प्रयत्न करी परमपूज्य गुरुवर्य श्रीमद् बुद्धिसागरजीए आवा तत्वमय ग्रथो रच्या छे जे पैकीनो आ " परमात्मदर्शन " ग्रथ छे.

आ ग्रथ अमे उपर जणाव्यु तेवा प्रकारनी खामीने दुर करनार छे, एम कहीए तो अतिस्योक्ति नहि कहेवाय.

आ ग्रथमा बीजा अनेक विषयो साथे ज्ञान अने क्रिया बनेनी यथास्थित साबीती करी बताया छ केमके बनेना समेलन विना आत्मकल्याण दुर छे. षटद्रव्य, षटकारक, पचसमवाय, नय निक्षेपा वीगेरेथी द्रव्य,क्षेत्र,काळ, भावने, अनुसरीने आ ग्रथ लखायो

छे, जे अभ्यासीओने माटे आशिर्वादरूप छे बलके आत्माभीमुख लइ जनार छे आखो ग्रंथ वाचनार पोतेज कबूल करशे के गुरुवर्य श्रीमद् बुद्धिसागरजीए आ प्रकारना प्रयासे करी जैनसमाज उपर महान उपकार कीधोछे तेओनो आ रीते जैनकोम उपरज उपकार थाय छे, एम नहि पण तेओना ग्रंथोनी लेखन, अने काव्य शैली, एवी तो प्रेम उपजावनारी छे के सर्व दर्शनवाळाओ तेओश्री रचीत ग्रंथो होंसथी वांचे छे एम अनुभव कही आपे छे एटलुज नहि पण तेओश्रीनां भजनपदो तो तेओश्री ज्यां ज्यां विचर्या छे, त्यां त्यां कोइपण रीतना तफावत विना हमेशना माटे गवातांज रहे छे आथी अन्य दर्शनीओ पण जैनधर्मने जाणता अने प्रीति करता थया छे. आ शु जनसमाज उपर जेवो तेवो उपकार छे ?

तेओश्री तरफना अकुशना आधिने तेओश्री विषे हमारे जणाववु जोइए छे ते जणावी शकता नथी, पण समाज तो कबूल करती जोवाय छे के, भेदाभेद अने मारामारोनी कोइपण चर्चामां न उतरतां पोते अने अन्य जीवा पोताना आत्मानु कल्याण कइ रीते करी शके तेज मार्ग तरफ तेओश्रीनु प्रयाण छे अने ते दिवसे दिवसे चढतु अने वधतु जाय छे

तेओश्रीना ग्रंथो सबधी वधु विवेचनमा नथी उतरी शकता कारण तेओश्रीनु मानवु एम छे के दुनियां दर्पणरूपे वस्तुने वस्तुरूपे केम नहि जोइ शके ? (बेशक गुणानु रागनी द्रष्टि तेमां मुख्य भाग भजवे छे.) तेथी अमो तेवा प्रकारनो तजवीजमा न उतरतां तेओश्रीनी कृतिना ग्रंथो जेम बने तेम समाज आगळ सारा स्वरुपमा (ओछी किंमते) रजु करवा एज कर्तव्य समजी आगळ वधीए छीए अने गुरु कृपाथी मडळ पोताना नामे १ वर्षमा ११ पुस्तको बहार पाडी शक्यु छे.

आ रीते मडळ आगळ वधवामां जे फतेह पाम्यु छे तेमां गुरुश्री उपरात मडळने पुस्तको प्रगट करवाने द्रव्यनी मदद करनारा गृहस्थोनोपण हिस्सोछे जे अमो जणाववा चुकी जइयेग्यधारतानथी

अगाउना ग्रंथोना सहायकोना नामो तेते ग्रंथो साथे मुद्रित

थयेल छे. जेओ उपरात मजकुर " परमात्मदर्शन " ग्रथने प्रगट करवामां नीचे मुजब सहाय मळी छे.

१५०) शेठ मोतीजी जेनाजी पुनावालानी विधवा बाइ नाजुबाइ
७५) शेठ मोहनलाल ताराचद. विजापुरवाळा.
५०) शेठ रायचदभाइ रवचद. साणदवाळा.
५०) शेठ वाडीलाल मगनलाल अमदावाद.
५१) शेठ अमृतलाल केशवलाल वाटी सद्गत भाइ अमृतलालना स्मणार्थे तेमनी मातुश्री चचळ व्हेने अमदावाद.
५०) बाइ हरकोरव्हेन श्री अमदावाद.
३१) वकील मोहनलाल हेमचद तेओना ची. भाइ सवाइना पुण्यार्थे श्रीपादरा.
२५) शेठ हाथीभाइ मुलचद. श्री माणसा.
३०) शेठ माधवलाल अमथालाल. श्री माणसा.
३१) शेठ मोहनलाल करमचद अमदावाद.

आवी रीने सहाय करनाराओनो तथा बीजा मददगार ग्रहस्थोनो मडळ आभार माने छे. अने तेओने पोताना द्रव्यनो आ रीते सदुपयोग करवा माटे धन्यवाद आपे छे.

मडळनो उद्देश उपर जणाव्यु तेम जनसमाजमा तेओश्री रचित पुस्तको वधु वचाय ते माटे सस्ती किंमते प्रगट करवानो छे, ते बजावे जाय छे. ते समाज पण जोइ शकी छे के बीजी कोइपण सस्थाओ करता मडळ पुस्तकोनी घणीज ओछी किंमत राखे छे, ते पण बीजा पुस्तको प्रगट थवाने उपयोगार्थे तेमज थोडीपण किंमत आपी पुस्तक खरीदनार ते उपर बहु भाव रहे छे ते अर्थे.

मडळ आशा राखे छे के गुरुवर्य पुस्तको तैयार करता रहे छे तेज प्रकारे प्रगट करावबाने सहायको वधता जशे

छेवटमा ध्यान खेंचवाने रजा लइए छीए के मडळ मारफते आ रीते पुस्तक प्रगट कराववाने जरुर विचारशो.

मुबाइ चपागली
वीर सवत २४३४
पोस सुदी १० गुरु

ली.
श्री अध्यात्मज्ञान प्रसारक मडळ.

परमात्मदर्शनग्रंथ

प्रस्तावना.

जगत्मा प्रत्येक मनुष्यो धर्मनु आराधन करे छे. प्रत्येक मनुष्यो धर्मना माटे इच्छा राखे छे. प्रत्येक मनुष्योने अनंत सुख प्राप्त करवानी तीव्र जिज्ञासा वर्ते छे जन्म, जरा, मरणना दुःखमांथी बचाव थाय ते माटे प्रत्येक मनुष्यो बुद्धयनुसार उपायो शोधे छे अमर थवु ते माटे अनेक प्रकारनी शोधो करे छे. आवी अमूल्य शोध करवानी कोने जिज्ञासा न होय ? अलबत सर्वने होय छे आवी शोध माटे ज्ञानदृष्टिनी जरुर छे अने ते पण सर्वज्ञ दृष्टि होवी जोइए आवी सर्वज्ञ दृष्टिवाळा तीर्थकरो प्रथम थइ गया छे. आ क्षेत्रमा चरम तीर्थकर त्रिशलातनय श्री महावीरस्वामी २४३६ वर्ष उपर थइ गया छे तेमणे केवलज्ञानथी सर्व पदार्थो जाण्या तथा देख्या मनुष्यो नित्य सुख प्राप्त करे तथा जन्म जरा अने मृत्युना दुःखमांथी छूटे ते माटे तेओश्रीए आत्मज्ञान बताव्यु छे. सर्व प्रकारना जीव अने अजीव पदार्थोनु स्वरुप बताव्यु छे ज्ञानदर्शन अने चारित्ररूप मोक्ष मार्ग बताव्यो छे. जात जातनो भेद राख्या विना आत्मतत्त्वनी शक्तियो खीलववाना उपायो बताव्या छे साधु धर्म अने गृहस्थ धर्म एम बे प्रकारना धर्म बताव्या छे अमर थवाने माटे आत्मधर्मनु यथार्थ स्वरुप बताव्यु छे. समवसरणमां बेसी देशना देइ चतुर्विध संघनी स्थापना करी छे तेमना गणधरोए द्वादशांगीनी रचना करी, पश्चात् स्थविरोए उपांगनी रचना करी तेमनी पाटे जे जे आचार्यो थया गीतार्थो थया तेओए प्रकरणो ग्रंथो आदिनी रचना करी प्रत्येक आचार्योनो मुख्य उद्देश जमानाने अनुसरी गमे ते भाषामां सहेलाइथी मनुष्यो रुत्व मार्ग समजी शके तेवा ग्रंथो अने तेवा प्रकारनो उपदेश आ-

पवानो हतो, ते रीतिने अनुसरी उमास्वाति वाचक, सिद्धसेन दिवाकरसूरि, हरिभद्रसूरि, श्री हेमचन्द्र आचार्य श्री अभयदेवसूरि, यशोविजय उपाध्याय, आदि धर्मधुरधर आचार्योए. अनेक मनुष्योना उपकारार्थे संस्कृत भाषामा तथा मागधी प्राकृतादि भाषामां उपदेश दीधो छे तथा तेवा ग्रंथो बनाव्या छे. पूर्वोक्त आचार्योना ग्रथो सूत्रोनी पेठे माननीय पूजनीय गणाय छे. श्री हेमचन्द्र पश्चात् लोकोनी स्थिति विद्या संबंधी घटवा लागी. लोको मागधी अने संस्कृतमां पण अल्प समजवा लाग्या त्यारे आचार्योए जमानाने अनुसरी चालती गुर्जर भाषा आदिमां रासो वगेरे बनाववा लाग्या सं. १३२७ नी सालमा सात क्षेत्रनो रास बन्यो छे आ सात क्षेत्रनो गुर्जर भाषानो रास छपावी सिद्ध कर्यु छे के जैनोमाथी गुर्जर भाषा मुख्यताए प्रकाशी छे आ रास भजन संग्रह चोथा भागमां छपाव्यो छे. ते पहेला पण गुर्जर भाषामा जैनाचार्योए काव्य लख्यां होय एम संभव थाय छे अने ते माटे शोध चालेछे. प्रथम तो गुर्जर भाषामा पद्य तरीके रचना करी उपदेश आप्यो पश्चात् गद्यमां पण ग्रंथ बनावी उपदेश देवा प्रारंभ कर्यो. श्रीवीरे प्ररुपेलां तत्त्वोनो संस्कृत, प्राकृत, मागधी, गुजराती, हिंदुस्थानी वगेरे अनेक भाषामा हाल अवतार थएलो अनुभवाय छे श्री वीरप्रभु मुक्तिमां गया तो पण गंगाना प्रवाहनी पेठे तेमनी पाछळ तेमनो उपदेशेलो तत्त्वमार्ग पुरुष परंपरा अखंड वहेवा लाग्यो हाल पण ते प्रमाणे जोवामां आवे छे.

संस्कृत भाषामा तथा मागधी भाषामा हाल ग्रंथो बनाववामा आवे तो प्रायः दश हजारमा पांच माणस पण भाग्येज समजी शके. संस्कृत तथा मागधीमा बनावेला ग्रंथोने पण गुर्जर भाषामा समजाववामा आवे त्यारेज लोकोना समजवामा आवे त्यारे गुर्जर भाषामा ग्रंथो बनाववामा आवे तो घणा लोको समजी शके प्रस

प्रस्तावना.

जगत्मां प्रत्येक मनुष्यो धर्मनुं आराधन करे छे. प्रत्येक मनुष्यो धर्मना माटे इच्छा राखे छे. प्रत्येक मनुष्योने अनंत सुख प्राप्त करवानी तीव्र जिज्ञासा वर्ते छे. जन्म, जरा, मरणना दुःखमांथी बचाव थाय ते माटे प्रत्येक मनुष्यो बुद्धयनुसार उपायो शोधे छे. अमर थवु ते माटे अनेक प्रकारनी शोधो करे छे. आवी अमूल्य शोध करवानी कोने जिज्ञासा न होय ? अलबत सर्वने होय छे. आवी शोध माटे ज्ञानदृष्टिनी जरुर छे अने ते पण सर्वज्ञ दृष्टि होवी जोइए. आवी सर्वज्ञ दृष्टिवाळा तीर्थंकरो प्रथम थइ गया छे. आ क्षेत्रमां चरम तीर्थंकर त्रिशलातनय श्री महावीरस्वामी २४३६ वर्ष उपर थइ गया छे. तेमणे केवलज्ञानथी सर्व पदार्थो जाण्या तथा देख्या. मनुष्यो नित्य सुख प्राप्त करे तथा जन्म जरा अने मृत्युना दुःखमांथी छूटे ते माटे तेओश्रीए आत्मज्ञान बताव्युं छे. सर्व प्रकारना जीव अने अजीव पदार्थोनुं स्वरुप बताव्युं छे. ज्ञानदर्शन अने चारित्ररुप मोक्ष मार्ग बताव्यो छे. नात जातनो भेद राख्या विना आत्मतत्त्वनी शक्तियो खीलववाना उपायो बताव्या छे. साधु धर्म अने गृहस्थ धर्म एम बे प्रकारना धर्म बताव्या छे. अमर थवाने माटे आत्मधर्मनुं यथार्थ स्वरुप बताव्युं छे. समवसरणमां बेसी दशनाने चतुर्विध संघनी स्थापना करी छे. तेमना गणधरोए द्वादशांगीनी रचना करी, पश्चात् स्थविरोए उपांगनी रचना करी. तेमनी पाटे जे जे आचार्यो थया. गीतार्थो थया तेओए प्रकरणो ग्रंथो आदिनी रचना करी. प्रत्येक आचार्योनो मुख्य उद्देश जमानाने अनुसरी गमे ते भाषामां सहेलाइथी मनुष्यो तत्त्व मार्ग समजी शके तेवा ग्रंथो अने तेवा प्रकारनो उपदेश आ-

पवानो हतो, ते रीतिने अनुसरी उमास्वाति वाचक, सिद्धसेन दिवाकरसूरि, हरिभद्रसूरि, श्री हेमचद्र आचार्य श्री अभयदेवसूरि, यशोविजय उपाध्याय,आदि धर्मधुरधर आचार्योए. अनेक मनुष्योना उपकारार्थे सस्कृत भाषामा तथा मागधी प्राकृतादि भाषामा उपदेश दीधो छे तथा तेवा ग्रथो बनाव्या छे. पूर्वोक्त आचार्योना ग्रथो सूत्रोनी पेठे माननीय पूजनीय गणाय छे. श्री हेमचद्र पश्चात् लोकोनी स्थिति विद्या सबधी घटवा लागी. लोको मागधी अने सस्कृतमां पण अल्प समजवा लाग्या त्यारे आचार्योए जमानाने अनुसरी चालती गुर्जर भाषा आदिमां रासो वगेरे बनाववा लाग्या स १३२७ नी सालमा सात क्षेत्रनो रास बन्यो छे आ सात क्षेत्रनो गुर्जर भाषानो रास छपावी सिद्ध कर्यु छे के जैनोमाथी गुर्जर भाषा मुख्यताए प्रकाशी छे आ रास भजन सग्रह चोथा भागमां छपाव्यो छे. ते पहेला पण गुर्जर भाषामा जैनाचार्योए काव्य लख्यां होय एम सभव थाय छे अने ते माटे शोध चालेछे. प्रथम तो गुर्जर भाषामा पद्य तरीके रचना करी उपदेश आप्यो पश्चात् गद्यमां पण ग्रथ बनावी उपदेश देवा प्रारभ कर्यो श्रीवीरे प्ररुपेलां तत्त्वोनो सस्कृत, प्राकृत, मागधी, गुजराती, हिंदुस्थानी वगेरे अनेक भाषामा हाल अवतार थएलो अनुभवाय छे. श्री वीरप्रभु मुक्तिमां गया तो पण गगाना प्रवाहनी पेठे तेमनी पाछळ तेमनो उपदेशेलो तत्त्वमार्ग पुरुष परम्परा अखड वहेवा लाग्यो. हाल पण ते प्रमाणे जोवामां आवे छे.

सस्कृत भाषामा तथा मागधी भाषामा हाल ग्रथो बनाववामा आवे तो प्रायः दश हजारमा पाच माणस पण भाग्येज समजी शके. संस्कृत तथा मा[illegible] बनावेला ग्रथोने पण गुर्जर भाषामा समजाववामा [illegible] लोकोना समजवामा आवे त्यारे गुर्जर भाषामा [illegible] आवे तो घणा लोको समजी शके

कहेवुं निर्विवादछे. गुजरातमां रहेनार पुरुषो तथा स्त्रीओ भले संस्कृतनो अभ्यास करे. इग्लीश भाषानो अभ्यास करे तोपण २४ कलाओ पैकी सर्व कलाओमां गुर्जर भाषामां बोलीनेज सर्वने पोतानुं कार्य करवुं पडेछे. मातृभाषामां जे उपदेश आपवामां आवेछे ते सहेजे समजायछे. आम कहेवाथी कइ संस्कृत अने मागधी भाषानी हलकाइ देखाडवामां आवती नथी कहेवानुं तात्पर्यार्थ ए छे के गुजरातीओने माटे गुर्जर भाषामां लेख लखी समजाववामां आवे तो विशेष उपकार थाय आ न्यायने अनुसरी गुर्जर भाषामां लेख लख्योछे

आत्मतत्त्व संबंधी मान्यता दरेक दर्शनवाळाओनी भिन्न भिन्न छे. आर्यभूमिमां जैन, वेद अने बौद्ध आ त्रणनां पुस्तको विशेष जोवामां आवेछे मुसलमान अने ख्रीस्ति लोकोतो ज्यारे आ देशमां आव्या त्यारे तेमना धर्मना पन्थोना पुस्तको लेइ आव्या. दरेक दर्शनवाळा ईश्वर, धर्म अने आत्मादि तत्त्वो संबंधी भिन्न भिन्न मत जणावेछे अने ते माटे पोतपोतानी युक्तियो जणावेछे

षड्दर्शनमांथी क्युं तत्त्व सत्यछे ते युक्ति अने प्रमाणथी समजी शकायछे श्री वीरप्रभुए आत्म तत्त्व एवुं सरस बताव्युंछे के तेमां पक्ष अने ज्ञान दृष्टिवाळाने रुच्या विना रहे नहि.देवगुरु अने धर्म तत्त्वनुं स्वरूप सर्वज्ञ दृष्टिथी बताव्युंछे. आ ग्रंथमां श्रीवीरप्रभुए कहेलुं आत्मतत्त्व गुरुगमानुसारे लख्युं छे. जिनागमोनुं दोहन करी देवगुरु धर्म तत्त्वादिनुं यथार्थ वर्णन करवामां आव्युंछे

प्रथम आग्रंथमां सद्गुरुनुं मंगलाचरण कर्युंछे. पश्चात् गुरुनी केवी शक्तिछे ते जणाववा प्रदेशी राजा अने केशी कुमारनो संवाद देखाडी आत्मानी अस्तिता सिद्ध करीछे पश्चात् ज्ञान अने क्रियानो संवाद प्रसंगानुसारे जणाव्योछे पश्चात् योग्य अयोग्य श्रोताना लक्षण जणाव्याछे पश्चात् ६८ मा पानाथी षड्द्रव्यनुं स्वरूप स
पश्चात् आत्मधर्म महत्ता दर्शावीछे. पश्चात् आत्म

धर्मनी महत्ता माटे क्षमा निष्कपटपणु आदि सद्गुणोनी जरुरीयात बतावीछे पश्चात् पत्र १२३ मार्थी आत्मानी शोध कोइ विरला करेछे ते संबंधी एक बादशाह अने फकीरनी वार्ता आपी बागनु दृष्टांत जणाव्युछे. पश्चात् पत्र १४६ माथी मतिश्रुत आदि पचज्ञाननु स्वरूप दर्शाव्युछे

पश्चात् साधुनी आत्मध्यानादि क्रिया दर्शावीछे पश्चात् आत्म स्वरूप दर्शाव्युछे. पश्चात् अनुक्रमे पत्र १९० माथी भव्यात्माए दश प्रश्न सबधी विचार करवो जोइए. तेना नाम जणावी अनुक्रमे वर्णन कर्युंछे. ते प्रश्नोना सातमा प्रश्नना विषयमाज पत्र १७५ माथी कर्मराजा अने धर्मराजानु युद्ध वर्णन कर्युछे. ते स्थिर चित्तथी वांचवानी जरुरछे. पत्र ३०३ थी आठमा प्रश्ननो विषय शरु थाय छे तेनु पूर्णप्रेमे मनन करवु जोइए. पत्र ३१५ माथी नवमा प्रश्ननो विषय शरु थायछे. पत्र ३३१ माथी आत्मा, कर्मनो तथा भोक्ता केवी रीतेछे तेनु वर्णन कर्युंछे पश्चात् सिद्धस्वरूप दर्शाव्युछे पश्चात् पत्र ३५७ थी ईश्वर जगत् कर्त्ता नथी. तेप सबधीनु व्याख्यान कर्युंछे. पश्चात् पट्स्थानकनी सिद्धि करी बतावीछे. आत्मसिद्धि करवामा अनेक जिनागमोना अनुसारे युक्तियो दर्शावीछे. ते युक्तियोने जो मुखे करवामा आवे तो जैन धर्म तत्त्वोनी पूर्ण श्रद्धा थाय. आत्मा कर्मनो नाश करी अनत सुख प्राप्त करी अमर थाय छे तेज मुख्य मुद्दो ध्यानमा राखी तेना उपायो दर्शाव्याछे तेथी प्रत्येक मनुष्योनु आ ग्रंथ वाचता कल्याण थाय एमा काइ संदेह नथी. परमात्मदर्शन ग्रंथ वाचनार अवश्य ज्ञान दर्शन चारित्र पामी मुक्तिमार्ग पामेछे जे भव्य जीवो होय तेने आ ग्रन्थमा लखेला तत्त्वानी श्रद्धा थायछे.

आ ग्रन्थना प्रत्येक पानाना मुखपर मुख्य हेडींग छे तेथी वाचनारने प्रत्येक विषयनी सरलता थशे. आ ग्रन्थमा छेल्ला दुहा तथा चोप . . . [illegible] व्यो नथी. पण कोइ भक्त पडित पुरुष

अवशेष दुहा तथा चोपाइओ उपर अर्थ पुरशे तो घर्मेल भ प्राप्त करशे समयना अभावे अवशेष दुहा आदि उपर विवेचन थयु नथी ते दुहाओ वगेरे सद्गुरुना पासे जे वाचशे ते विशेषत' अर्थ प्राप्त करी शकशे जडवादियोनी सामे रक्षण तरीके आ ग्रथ उपयोगी थशे आ ग्रन्थने माध्यस्थ दृष्टिथी वाचशे ते सद्गुण रागथी तेनो यथार्थ तत्त्व रहस्य मेळवी शकशे

आ ग्रथ मळ तरीके-श्री लोदरा गाममा आरभ्यो हतो त्यांथी मेसाणे जई त्यां स १९६० नु चोमासु कर्यु त्यां अशाड सुदी ५ ना रोज आ ग्रथ पूर्ण कर्यो. पश्चात् तेज चोमासामां विवेचन जेटलु लखायु छे तेटलु अत्र दाखल कर्यु छे बाकीना दुहानु विवे-चन, कोई भक्त शिष्य पूर्ण करशे

आ ग्रन्थमा जे कइ जिनाज्ञा विरुद्ध लखायु होय ते सबधी मिथ्यादुष्कृत हो सज्जन दृष्टिथी जे कोइ आ ग्रन्थ वाचशे तेने अत्यत लाभ प्राप्त थशे ज्ञानिने आश्रवना कारण ते सवररूपे परि णमेछे.अने अज्ञानिने सवरना कारण ते आश्रवरूपे परिणमेछे तेम योग्य जीवने आ ग्रन्थ सम्यग्पणे परिणमशे अने अयोग्य कुपात्र मत्सरी दुर्गुणग्राहीने आ ग्रन्थनु वांचन, विपरीतपणे परिणमशे. तेमा तेनी दृष्टि तेज मुख्य कारणछे

प्रत्येक भव्यजीवो आ ग्रन्थ वाची अध्यात्मस्वरूपमा रमणता करी परमात्म स्वरूप प्राप्त करो परमार्थ प्रति सर्वेनी रुचि थाओ परमानदने सर्व जीवो प्राप्त करो सर्व जीवो मगलमालाप्राप्त करो. एजशुभाशी. ॐ शान्ति. शान्ति शान्ति.

मुकाम-अमदावाद-झवेरीवाडो
सवत १९६६ कार्तक वदी ८

लि मुनि बुद्धिसागर
आसली पोळनो उपाश्रय

॥ अथ परमात्मदर्शन ॥

पंचशती प्रारभ्यते.

श्री संखेश्वरपार्श्वनाथाय नमः

मंगलम्.

गुरु स्तुति, दुहा.

सुरतरु जंगम तीर्थरूप, सद्‌गुरु साचा देव;
त्रिकरण योगे तेहनी, भावे कीजे सेव. १

श्री सद्‌गुरुनी स्तुति कराय छे. अनादि काळथी जीव अज्ञान (अविद्या) थी बहिर् वस्तुमां आत्मपणाथी बुद्धि धारण करी अनतशः दुःखराशि भोक्ता थयो अने बहिरात्मभावे परवस्तुने पोतानी मानी स्वस्वरुप भूल्यो एवा मूढ आ जीवने शुद्ध स्वरूप ओळखावनार श्री गुरुमहाराज सत्य देवरूपे छे मिथ्यात्व अने सम्यक्त्व स्वरूप समजावी शुद्ध मोक्षमार्ग योजक श्रीगुरुना समान बीजा देव नथी मुक्ति रूप फल देवामा श्रीगुरु कल्पवृक्ष छे. अन्य कल्पवृक्षो पौद्‌गलिक सुखदाता छे अने गुरुरूप कल्पवृक्ष तो अनत आत्मिक शाश्वत सुख समर्पे छे. जो के उपादान कारणरूप गुरु महाराज नथी तो पण उपादान कारणनी शुद्धिकारक तथा सहायभूत निमित्त कारणरूप श्रीगुरुराज छे, ए कल्पवृक्षनी प्राप्ति महा पुण्योदये थाय छे. गुरु जगम तीर्थ छे, अन्यत्र के ज्यां श्री तीर्थंकरादिना कल्या[illegible] थया छे, ते तीर्थ स्थावर तरीके कहेवाय

छे, ते तीर्थोनी यात्रा सेवा भक्ति करवाथी सम्यक्त्व निर्मल थाय छे किंतु ते स्थावर तीर्थनी श्रद्धा ओळखाणकारक पृथ्वीतळ गमनकर्ता श्री सद्गुरु प्रत्यक्ष महाउपकारी छे. येनालवनेनजीवो । भवाभोधितरतीति तीर्थं जेना आलंबने जीव संसार समुद्रने तरे छे ते तीर्थछे, श्री गुरु महाराजना आलंबने जीव संसार समुद्र तरे छे, माटे गुरु तेज तीर्थ छे, गुरुरूप तीर्थनी सेवाभक्ति झटिति प्रत्यक्ष फलदा छे श्री गुरुनी वाणीरूप गंगामां जे स्नान करे छे ते पोते उपार्जनकृत कर्मपंकने गमावे छे चक्षुनी विद्यमानताए पण अन्य पदार्थोना निरीक्षणमां सूर्य चंद्र दीपकनी जरूर पडे छे. तेम भव्यात्माओने पोतानुं आत्मिक शुद्धस्वरूप अवलोकनार्थे गुरु सूर्य समान छे तेथी तेनी जरूर पडे छे, विशेष ए छे के, सूर्य अंतरनो प्रकाश करी शकतो नथी अने गुरु महाराज अंतरना प्रकाशकारक छे. माटे आ सूर्य करतां पण विलक्षण अलौकिक गुरुरूप सूर्य छे, पूर्वोक्त सद्गुरुनी त्रिकरणयोगे अत्यंत भावे सेवा करवी, सेवा कीजीए ए कहेवाथी एम सूचव्युं के जेने मुक्ति पदनी इच्छा होय तेने सद्गुरुनो बहुमानथी विनय करवो. कारण के धर्मनुं मूळ विनय छे अने विनय विना धर्मनी प्राप्ति थती नथी, अने धर्मनी प्राप्ति गुरु विना थाय नही माटे श्रद्धा भक्ति बहुमान पूर्वक गुरुराजनो विनय करवो

सुरतरुनी उपमाथी समजवुं के—गुरु अनंत आत्मधर्मना दानी छे

आत्मधर्मनुं दान ते भाव अभयदान छे. पंचधादान छे १ अभयदान, २ सुपात्रदान, ३ अनुकंपादान, ४ उचितदान, ५ कीर्त्तिदान, ए पांचमां महाउपकारक अभयदान मुख्य छे, द्विधा अभयदान द्रव्यतो भावतश्च अभयदान बे प्रकारे छे १ द्रव्य अभयदान. २ भाव अभयदान. एकेंद्रियादिथी ते पंचेंद्रिय पर्यंत जी-

वोना प्राणोनु रक्षण करवु तेमनो कोइ घात करतु होय तो बचाववा तेने द्रव्य अभयदान कहे छे, दरेक जीवने जीववु प्रिय लागे छे. कोइने मरण शरण थवु प्रिय लागतु नथी. कह्यु छे के. मरण समो नास्थि भयः मरण समान कोइ भय नथी, माटे प्राणीओने कोइ मारतु होय तो अनेकरीत्या तेमनु रक्षण करवु. जीवनी दयाथी जीव तीर्थंकरनामकर्म उपार्जन करे छे, नरस्वर्गादि सुखसंपत्तिनो भोक्ता थाय छे. एक राजानी अणमानीती स्त्रीए चोरने फासीनी शिक्षा थती अटकावी अने अन्य राणीओए लक्ष रुपैया खरची तेने मिष्टान्न जमाड्यां, किंतु चोरे अणमानीती स्त्रीनो अत्यत उपकार मान्यो अने तेणीए छोडाव्यो त्यारे सुखी थयो, श्री शान्तिनाथना जीवें पूर्व भवमा एक पारेवानो जीव बचाव्यो तेथी अत्यत पुण्य उपार्जन कर्यु, तेम भव्यात्माओए प्रत्येक जीवोनी दया करवी, कोइ जीवनी हिंसा करवी नहीं, मिथ्यात्वे पाप बुद्धिरूप पिशाचिकाना प्रेर्या केटलाक जीवो मत्स्य अज पशुपखीनां मास भक्षण करे छे, मास वेचे छे, मास भक्षणनी अनुमोदना करे छे ते जीवो घोरकर्म ग्रही अति दारुण दु ख.लय अधोगतिभाक् थाय छे अने आ भवमा पण कर्मोदये दु.खनी झाळमा फसाय छे, माटे मन वचन कायाए करी जीवनी हिंसा वर्जवी.

२ भावअभयदान–भव्य जीवात्माओने तेना शुद्ध गुणोनु दान आपवु तेने भाव अभयदान कहे छे तद्द्विविध=भाव अभयदान बे प्रकारे छे १ स्वभाव अभयदान २ परजीवधर्म अभयदान. पोतानो आत्मा असख्यातप्रदेशी छे अने ते प्रदेशो अरूपी छे, कोइ काळे पण उत्पन्न थया नथी माटे अज छे, वर्तमान, भूत अने भविष्यत् काळमां प्रदेशो जेवा छे तेवा ने तेवा रहे छे, माटे . छे, ए असख्यात आत्माना प्रदेशो घाल्या बळता

नथी, गाल्या गळता नथी, एक प्रदेशे आत्मा कहेवाय नहीं, बे प्रदेशे आत्मा कहेवाय नहीं, असंख्यात प्रदेशमयी आत्मा कहेवाय छे, जडरूप पुद्गळथकी आत्मानु स्वरूप न्यारू छे, अनतज्ञान, अनत दर्शन, अनत चारित्र, अनत वीर्य, इत्यादि आत्माना अनत गुणो छे, आत्माना एकेक प्रदेशमा अनत धर्म रह्या छे, आत्मामां अनत सुख अस्तिभावे रह्यु छे

किंतु अनादि कालथी जीव पोतानास्वरूपनाअज्ञानथी परवस्तुमा अहभाव धारण करी, मिथ्यात्व, अविरति, कषाय अने योगथी पुद्गल स्कधोन अष्टकर्मनी वर्गणा तरीके परिणमावी विचित्र शरीरोने धारण करे छे, जीवनी अनादिकाल मूळ वसति निगोद छे, निगोदना जीव बे प्रकारे छे १ सूक्ष्मनिगोद २ बादरनिगोद अनत जीवो वच्चे एक शरीर होय छे अने चतुर्दश रज्वात्मक (चउदराज) लोकोने काजलनी कुपलीनी पेरे व्यापीने रह्या छे, तेने सूक्ष्म निगोदीया जीव कहे छे

ए सूक्ष्म निगोदीया जीवने मिथ्यात्व, अविरति, कषाय, अने योग रह्या छे. सदाकाल ते दु खना भोक्ता छे त्रण प्रकारना जे अज्ञान छे, तेमांथी एक पण अज्ञान टळ्यु नथी, तेनामां समजवानी कइ पण शक्ति नथी ए सूक्ष्म निगोदना जीवोमा केटलाक भव्य जीवो अने केटलाक अभव्यजीवो छे साधारण वनस्पतिना जीवोने बादर निगोदीया जीव जाणवा, द्विप्रकार निगोदमां अनतश. जन्म मृत्युना चक्रवेगे जीव भम्यो, त्यांथी भवितव्यतायोगे पृथिवी, जळ, ज्वलन, वायु, प्रत्येक वनस्पतिना शरीरो धारण करी भवभ्रमण कर्यु, पण आत्मस्वरूपनो अवबोध थयो नहीं. द्रान ए श्री वस्तु छे तेटलु पण जाणवामां आव्यु नहीं अने ते कर्यु नहीं

प्रश्न–जल सरोवरमा भर्युं होय छे त्यारे हजारो पशु पक्षी मनुष्यादि तेमांथी जलपान करे छे, त्यारे जले पोतानुं दान बीजाना अर्थे शुं कर्युं ना कहेवाय ?

उत्तर–अन्य जीवो जलपान करे छे ते पोतानी सत्ताथी करे छे, जलपान अन्य जीवो करे तेमा जलना जीवो राजी नथी, जलपान करवाथी जलना जीवोनो नाश थाय छे तेमा पोते राजी नथी, माटे ते दान कहेवाय नहीं. द्वीन्द्रियथी ते चतुरिन्द्रिय पर्यंत जीवो अभयदान पोते करी शकता नथी. पचेंद्रियना चार प्रकार छे. १ देवता २ मनुष्य. ३ तिर्यंच. अने ४ नारकी. भुवनपति, व्यन्तर ज्योतिष्क अने वैमानिक ए चार प्रकारना देवो द्रव्य तथा भाव अभयदान करी शके छे. सम्यक्त्वधारकदेवो समकितनी अपेक्षाए भाव अभयदान करी शके छे, कारणके समकित पामेला देवताओ पोताना आत्मानु स्वरूप समजे छे, पोताना आत्माने पोताना समकित गुणनु दान आपे छे तथा अन्यदेवो तथा मनुष्योने धर्मनी श्रद्धा करावे छे, माटे बीजाने भाव अभयदान अर्पे छे. सर्व जातना देवताओनो मिथ्यात्व गुणस्थानकथी ते समकित गुणस्थानकनी अंदरमां समावेश थाय छे. बहु देवताओ धर्मभ्रष्टोने धर्ममा स्थिर करे छे, पण देवताओना करता मनुष्यो अभयदानमां विशेष छे. कारणके मनुष्यने चउद (चतुर्दश) गुण स्थानक छे, जे दान पामवाथी आत्माने कोइनो भय रहे नहीं एवु भाव-अभयदान संपूर्ण मनुष्य पामेछे, अज्ञानी जीवने सत्यासत्यनी समजण पडती नथी तेने सद्गुरु त्रिजगद् दु.ख दावानल मेघ समान धर्म देशनाथी आत्मस्वरूप समजावे छे, जड वस्तुनु स्वरूप समजावे छे, देवगुरु धर्मनु स्वरूप समजावे छे, नवतत्त्वनु विशेषरीत्या ... पे छे, अने अज्ञानी जीवने समजावे

अरे पुद्गलअंठना भिक्षुक तारी भूख पुद्गलएंठथी कदी भागवानी नथी, तु परवस्तुनु ग्रहण करी सुखी थवानो नथी पोताना घरमा अनत धन छता केम परगृहे भीक्षा मागे छे. तारु घर ओळख, तारो अपूट खजानो ताराथी दूर नथी, पर पुद्गल चुथता तने लज्जा शु नथी आवती ? तारी ऋद्धि तारी अन्तर भरी छे अने तेना अज्ञाने तु दरिद्री थयो छतो अनत दु खने पामे छे, माटे तु तारा आत्माने तारी ऋद्धिनु दान आप, परना केम फांफां मारे छे ? हे पामर प्राणी ! तें असत् वस्तुने सत् तरीके जाणी, अने सत् वस्तुने असत् तरीके जाणी तेथी भ्रान थयो माटे हवे काया मायाथी तु भिन्न छे तारु कोइ नथी कोइनो तु नथी, तु सर्वथी न्यारो छे एम अवबोध, त्यां कोइनो सचार नथी एवो तु आत्मा छे जो तु तारा स्वरूपे रमे तो तृष्णा, काम, क्रोध, मोह स्वत. नाश पामे मलीन जलमां जेम चद्रनु प्रतिबिंब बराबर पडतु नथी तेम तारु मनरूप जल ज्या सुधी विकल्प अने सकल्प वडे मलीन छे तावत् तेमा आत्मरूपी चद्रनु प्रतिबिंब बराबर पडी शकतु नथी, तु अज्ञाने पोताने भिक्षुक माने छे, पण हे आत्मा तु तो त्रिभुवनपति छो हे पामर प्राणी ! तारामा त्रण रत्न छे ते प्राप्त कर अने जो ते आत्माने मळ्या तो तु सर्वोत्कृष्ट बने जोने सिद्ध परमात्माओ, तेमने समये समये अनत सुख छे तादृश अनत सुख तारामा छे तेनु दान तु तारा आत्माने आप के जेथी कोइनो भय रहे नहीं एम सद्गुरु महाराज पामर प्राणीने उपदेशद्वारा भाव अभयदान अर्पे छे ए दान पाम्याथी कोइवार जन्म जरा मरण प्राप्त थतु नथी. शुद्ध सच्चिदानदनी लहेरीओ आत्मामा प्रगट छे. ए भावदान पामेला जीवो अनत सुखने पाम्या, पामेछे, अने पामशे. अहो ! सद्गुरुना समान जगत्मा मोटा कोइ दानेश्वरी नथी.

जेणे मिथ्यात्वनो नाश करी सम्यक्त्वनु दान आप्यु. एवा सद्गुरु-नो कदापि काल उपकार वाळवा कोइ समर्थ नथी, धर्मनी श्रद्धा करावनार धर्मगुरुए अनंत जन्म मरणना दुःख टाळ्या, तेमनो उपकार क्षण पण वीसराय तेम नथी.

श्री प्रदेशी राजाने प्रतिबोधक केशी गणधर सदृश सद्गुरु जाणवा. प्रदेशी राजा बिलकुल नास्तिक हतो तेनु वृत्तांत कथेछे.

श्वेतांबिका नाम्नी नगरीमा प्रदेशीराजा राज्य करतो हतो ते नगरीना मृगवन नामना उद्यानमा केशीकुमार साधु परिवारे परि-वर्या, समवसर्या, धार्मिक नागरिक जनो भगवानने वंदनार्थे आ-ववा लाग्या, गुरुए देशना आरंभी, ते अवसरे कांबोज देशथी अश्वो आव्या छे तेनी परीक्षाने माटे चित्र सारथीए राजाने वि-नव्यो, चित्रे रथ जोड्यो, लांबा वखत सुधी अश्वो दोडाव्या. अश्वो थाक्या त्यारे समयसूचक चित्रे राजाने विनव्यु के स्वामिन् अश्वोने विश्रांति माटे वृक्षनी छायामा बेसाडवा जोइए एम कही राजा सह चित्रसारथि मृगवनमा आव्यो, त्यां आचार्य देशना देता हता त्या जेम आचार्यनी शब्दध्वनि सभळाय तेम आसन्न मुकाम कर्यो प्रदेशी राजाए भव्य जनोने उपदेश देता एवा केशी गणधरने दीठा.

राजाए मनमा चिंतव्यु के अरे आ मूढ शुं बोलतो हशे, अने अप्रस्थित एवा मूढ मनुष्यो शु सांभळता हशे अहो खरेखर वक्ता अने श्रोताओ जड छे, एम मनमां विचारी राजाए चित्रसारथी प्रति कह्यु–

प्रदेशी–अरे सारथी! आ जगत्थी विचित्र वेषधारक कोण हशे? अने ते शु बके छे?

चित्र–हे महाराज श्री पार्श्वनाथ नामना त्रेवीशमा तीर्थंकरना प रंपरागत शिष्यो छे अने ते देहथी जीव पृथक् कहे छे

प्रदेशी–हे चित्र ! ते केवा प्रकारनी युक्तिओथी शरीरथी भिन्न जीवनी अस्तिता कथे छे ?

चित्र–हे नरपते ! पनी मने मालुम नथी तेमनी पासे गमन करी श्रवण करीए तो मालुम पडे

राजाए कह्यु " चालो त्यारे तेमनी पासे, एम कही आचार्य पासे जइ स्थाणुनी पेठे विनयरहीत नास्तिक शिरोमणि बेठो

प्रदेशी–तमो कइ कइ युक्तिओथी शरीरथी भिन्न आत्मा मानो छो?

केशी गणधर–हे राजन् ! ए प्रमाणे प्रश्न पुछवाने इच्छा राखे छे तो केम विनयनो भग करे छे ?

प्रदेशी–शु में असमजस कर्यु ?

केशीसूरि–दूरस्थ एवा तें अमोने देखी मनमां एवु चिंतव्यु के आ मूढो मूर्खाओनी आगळ शु असत्य बके छे तें मनमां विकल्प कर्यो ते सत्य के असत्य ए प्रमाणे सूरिनु वचन साभळी राजा चमत्कार पाम्यो

प्रदेशी–पराभिप्रायने तमोए शाथी जाण्यो ?

सूरी–पाच ज्ञानमांथी मारा विषे चार ज्ञान छे तत्र प्रथम मतिज्ञानं इंद्रियप्रणोदनोद्भूत,। द्वितीय श्रुतज्ञान तच्च श्रवणगृहीत पदवाक्यैरर्थावबोधरूप। तृतीय अवधिज्ञान तचेन्द्रियकृज्ञानव्यतिरिक्तमात्मनैव प्रत्यक्षकृत रूपि द्रव्यगोचर। चतुर्थमन पर्यायज्ञान तच्च मनुष्यलोकवर्तिना सज्ञिजीवानां ये मन·

पर्यायान् विचित्रमनोऽवस्थाः ताश्चात्मनैव प्रत्यक्षीकृत्य ततोर्थापत्यातश्चिंतितज्ञानं । एतानि चत्वारि ज्ञानानि मम संति तेन परंमनोविकल्पितं अहंजानामि । यत्तु पंचमं केवलज्ञान तत्र सर्वाण्येतानि चत्त्वारि ज्ञानानि लीयंते सूर्यप्रकाशदन्यताराप्रकाशवत् तच्च ज्ञानं मम नास्ति ॥

मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, अने मन. पर्यायज्ञान ए चार मने वर्त्ते छे. तेथी मन. पर्यवज्ञाने अन्य मनोना अभिप्रायने हु जाणु छु.

प्रदेशी—पोताना मनमा विचार करवा लाग्यो के अहो आ महापुरुष छे, ज्ञानी छे, तेमनी साथे सभापण लाभार्थे छे एम चिंती बेसवानी इच्छावाळा राजाए सूरिने कह्यु, हे स्वामिन् तमारी आज्ञा होय तो हु बेसु. सूरिए कह्यु, तमारी पृथ्वी छे जेम सुख थाय तेम करजे.

राजा बेसी बोल्यो—देह अने जीवनु भिन्नत्व तमो कथो छो ते घटतु नथी. आत्माने सुख दु.खनी अवस्थाना भेदो माटे पुण्य पापनी कल्पना करवी अने पश्चात् पुण्य पाप भोगार्थ प्रति परलोक गत्यागतिनी कल्पना करवी ते प्रत्यक्ष प्रमाणथी विरुद्ध छे. कारण के-मारो पितामह अत्यत पापी हतो, तेनो मारा उपर अत्यत स्नेह हतो, जो ते कहेवा प्रमाणे नरकमा गयो होय तो तेणे अत्र आवी केम पापनो निषेध कर्यो नहीं ? कारण के त्या अत्यत दुःख मारे भोगववु पडे माटे, हे पुत्र तु [illegible] हु तो पापार्जनथी दुःखी थयो छु एवो

जगाए नरकमांथी आवी मारा पिताए केम कह्यो नहीं ? माटे एवा व्यतिकरना अभावे हु एम स्वीकारु छु के जीव देहनु ऐक्य छे, कोइनु पण परलोकगमन नथी.

केशी गणधर–हे राजन् ! जो कोइ पुरुष तारी राणीने भोगवे अने ते तें जाण्यु तो तु तेने कोइक दड आपे वा नहीं ?

प्रदेशी–तेने हु घणी विडवनाओ करी मारु

केशी०–ते पुरुप जो एम कहे के मने क्षणवार मूको तो हु मारा कुटुबने शिक्षा आपी आवु के हु अकृत्य करवाथी अत्यत दु.खी थयो छु माटे तमारे कोइए अकृत्य करवु नहीं तो तु तेनु वचन अगीकार करे ?

प्र०–कदी तेनु वचन मानी छोडु नहीं

केशी०–त्यारे ए प्रमाणे तमारा पितामह पण नरकमांथी आवी शके नहीं, ए प्रथम प्रश्नोत्तर

प्रदेशी–मारा पितामह कदापि आवी शके नहीं तेथी मारी प्रतिज्ञा असत्य ठरती नथी, मारी पितामही तमारा शासननी अनुरागिणी हती ने धर्म कर्ममां सदा आसक्त हती तो ते तमारी युक्तिए देवलोकमा गइ तेनो मारा उपर अत्यत स्नेह हतो तो तेणीए अने आवीने केम प्रतिबोध कर्यो नहीं ! अरे पौत्र तु धर्म आचर, हु धर्म प्रसादथी स्वर्गमा गइ छु, अने तारा पितामहे तो पापना सबबथी नरक गति पामी एम तेणीए केम कह्यु नहीं, तेने तो अहीं आवता कोइ अटकावी शकतु नथी, तो तेना व्यतिकरना अभावे मारी प्रतिज्ञा सत्यज छे. देहथी जीव भिन्न नथी एतादृशी प्रतिज्ञा मम सत्या.

केशीगणधर–ज्यारे तें स्नान करी सुगधिद्रव्यनु शरीरे विलेपन

कर्युं होय अने अलंकार वस्त्रोथी शरीर अलंकर्युं होय ते वखते चंडाल आवीने कहे के स्वामिन् मारा विष्टाना घरमां क्षणवार आवी बेसो. एम कहे त्यारे तेनुं वचन तुं स्वीकारे के नहीं ?

प्रदेशी–त्यां जवुं तो दूर रह्यु पण तेनो संबंध पण हुं करुं नहीं ?

केशी–देवताओ निर्मल पवित्र वैक्रियशरीर धारण करी अद्भुत सुख भोगवे छे, मनुष्यो सात धातुथी निष्पन्न औदारिक शरीरने धारण करनारा छे, मनुष्य लोकनो गंध पंचशत योजन ऊर्ध्व उछळे छे, मरनयादि अभावे चतुःशत योजन दुर्गंध प्रसरे छे. यतः

चत्तारिपंच जोयण सयाइं। गंधोय मणुय लोयस्स॥
उहं वच्चइ जेण। नहु देवा तेण आवंति॥ १॥
संकंति दिव्वपेमा। विसय पसत्ता समत्तकत्तव्वा॥
अणहीण मणुअकज्जा। नरभवमसुइं न इंति सुरा॥१॥

इत्यादि विचारी जोता तारी पितामहीनुं आवागमन असंभवित छे, मनुष्यभव संबंधी मोहना अभावे अने दुर्गंधिस्थानपणाथी तेनुं आवागमन थतुं नथी.

प्रदेशी–मारी पितामहीनुं अनागम हेतु तमोए युक्तिथी सिद्ध कर्युं किंतु में जीव देहनी ऐक्यता घणी युक्तिथी साधी छे. माटे मारो पक्ष सत्य छे, में एक जीवता चोरने निःछिद्र कोठीमां घाली उपर ढांकणुं दीधुं पुनर् मृत्तिकादि द्रव्योथी लिंपी. केटलाक दिन पश्चात् ते उघाडी मृत चोर देख्यो, किंतु तेना जीवने निस्सरवानो निर्गमन मार्ग कोइए देख्यो नहीं; त्यारे में ज[illegible]नी चैतन्य शक्ति आ देहमां लय पामी अने जो

विलय ना पामी होय तो जीव अन्यत्र जात, तो तेनो नीकळवानो मार्ग पण थएलो जणात, तेना जीवने नीकळवाना मार्गना अभावे मारी प्रतिज्ञा सत्य छे

केशी–हे राजन् कश्चित् दुदुंभिवादक भूमीगृह (भोंयरा) मां प्रवेशे अने पश्चात् भोंयरानु मुख बंध करे, जरा पण छिद्र रहेवा दे नही, त्यां दुदुंभि वगाडे तो तेनो शब्द बाहिरना लोको साभळे के नहीं ?

प्रदेशी–बाहिरना लोकोथी शब्द समळाय.

केशी–ए दुदुंभिना शब्दने निस्सरवानो क्याय मार्ग जणाय छे ?

प्रदेशी–कोइ स्थाने जणातो नथी.

केशी–श्रोत्रथी ग्रहण थाय एवा शब्द पुद्गलोने निःसरवानो मार्ग जणातो नथी तो आकाशनी इव अरुपी आत्मानु निर्गमनद्वार कयरीत्या पामी शकाय? गमे त्या थइ आत्मा अरुपी माटे नीकळी शके छे ते स्थूलदृष्टिथी अवलोकाय नहीं. इति तृतीय प्रश्नोत्तर

प्रदेशी–हे भगवन् ! आपनी बुद्धिनी युक्तिथी ए वात साधी पण निश्चयसा य थती नथी चोरना कलेवरमा कृमीयो उत्पन्न थया ते जीवो अछिद्रवाळी कुंभीना कया द्वारथी प्रवेश्या ? चोरने कइ छिद्र नहोता तेथी प्रतिज्ञा करु छु के विकारवाळु चोरनु शरीर तद्रूपताने पाम्यु माटे मारी प्रतिज्ञा सत्यज छे

केशी–हे राजन् भृशवन्हितप्तायोगोलकमा वन्हि प्रवेश छे के नही?

प्रदेशी–अयोगोलकमा वन्हि प्रवेश छे

केशी–त्यां छिद्रना अभावे अयोगोलकमां वन्हि प्रवेशनी उपलब्धि छे तद्वत् जीव पण द्वार विना पेसतो छतो केम अश्रद्धेयक

थाय ? किंतु द्वार विना पण अरूपी आत्मानो प्रवेश थाय छे एम सदहवु जोइए. (इति चतुर्थ प्रश्नोत्तर).

प्रदेशी–हे भगवन् तमारी युक्ति प्रमाणे तो समलक्षणयुक्त सर्व जीवो छे ते घटतु नथी लक्षणनी साम्यताए सर्वमां सरखु बल होवु जोइए ? ते प्रत्यक्ष प्रमाण विरुद्ध छे जे कारण माटे बालके छोडेलो बाण नजीक पडे छे, अने तरुणे छोडेलो बाण दूर पडे छे. ए सर्व जीव देहनी ऐक्यताए घटे छे, लघु शरीरे लघुवल, मोटा शरीरे बल पण महत् माटे सर्व जीवो-मा लक्षण साम्यताए समबलत्व अयुक्त छे माटे मारी प्रतिज्ञा सत्या समजवी.

केशी–कोइ बलवान् तरूण पुरुष प्रत्यचा चढावी बाण फेंके ते ज्या सुधी भूमि उल्लघे ते ज धनुष्य चढावी बालक बाण फेंके ते युवान पुरुषे फेंकेला बाणे जेटली भूमि उल्लघन करी छे तेटली भूमि आ उल्लघन करे के नही ?

प्रदेशी–ते बाण आसन्न भूमीमा पडे पण पूर्वोक्त पुरुषे फेंकेलु बाण तेना जेटली भूमी अवगाही शके नही ?

केशी–भला तेमा शो हेतु ?

प्रदेशी–साधन वैकल्य तेमा हेतु छे

केशी–बालनु शरीर निर्बल साधन छे धातुओना अपुष्टपणाथी, पुष्ट शरीर सबल साधन छे ते माटे सर्व जीवोमा लक्षणनी साम्यता अगीकार कर. (इति पचम प्रश्नोत्तर).

प्रदेशी–तमोए जीवोमां समलक्षणपणु कह्यु ते असत् छे, कारण [illegible]ान अने बालकनी शक्तिनी (पराक्रम) भिन्नता छे [illegible]ी शक्ति अल्प छे, युवाननी विशेष छे,

सरखो होय तो पराक्रम पण एक सरखु होवु जोइए, परा क्रमना भिन्नता छे माटे समलक्षणयुक्त जीवो कहेवाय नहीं अने ते विरोध प्राप्त थता शरीरथी जीव भिन्न सिद्ध थतो नथी

केशीकुमार–एक युवा अने मोटु पखी होय ते जेटला भारनु उद्वहन करे तेटलो भार दुर्बळ नाना पखीथी उपडातो नथी त्या शरीर शक्तिरूप साधननो अभाव हेतु छे मोटा पखीमा शरीरशक्ति विशेष, नाना पखीमा शरीरशक्ति अल्प तेथी तेना जेटलो भार उपाडी शकातो नथी किंतु जीवो तो सर्व समलक्षणवत छे, माटे समलक्षण जीवोनु छे एम हे राजन् तु जाण।

प्रदेशी–हे भगवन् में जीवता चोरने तुलामा जोरयो, पश्चात् गळे पाशथी मारी नाख्यो, मरेलाने पश्चात् तुलामा आरोही जो रयो तो पण प्रथम जेटला भारनो हतो तेटलोज रह्यो, टक प्रमाण पण हीन थयो नहीं, तेथी में विचार्यु के जो देहथी जीव भिन्न होय तो जीवनो अपगम थता मृतक चोर शरीर करी हीन थवु जोइए पण थयु नहीं, तेथी सिद्ध ठर्यु के–जीव देहनी ऐक्यता छे

केशी–चामडानी धमणमा वायु पुरीने जोखवी, अने पश्चात् वायु काढी नाखी जोखवी, वायु पुरीने जोखेली धमण करतां वायु काढी नाखी जोखेली धमणमा कइ भारनी न्यूनता थाय छे ?

प्रदेशी–हे भगवन् ना भारमा कइ न्यूनता थती नथी

केशी–जो त्या भार वधतो नथी तेम घटतो नथी तो अमूर्त आ-त्मानो देहमा शो भार होय ? के जेथी जीव नीकळ्या पश्चात्

चोरनु शरीर भारमां घटे ? वायुरूपी छे, शरीरी छे, आत्मा अरूपी, अशरीरी छे, अन्यत्र गतिमां गमनकर्ता आत्मा सूक्ष्म शरीरी जाणवो. (इति षष्ठं प्रश्नोत्तर).

प्रदेशी—एक चोरने में कटके कटका करीने जोयो, त्वचादि सप्त धातुओनु निरीक्षण कर्यु मल मूत्र पण अवलोक्यु पण क्याय जीव देखायो नहीं, माटे जीव देहनी ऐक्यता सिद्ध ठरी.

केशी—हे राजन् वनोपजीवि जनवत् तु मूढ छे

प्रदेशी—कोण ते वनोपजीवि. दृष्टान्त.

केशी—जे काष्ट छेदन विक्रयथी स्वआजीविका निर्वहे छे,ते वनोपजीवि पुरुषो कुहाडी करवतादि उपकरणो लेइ तथा पकाववाना अन्न लेइ वनमा गया, त्या तेओए एक पुरुषने कह्यु के अमो काष्टार्थे आगळ जइशु, तु आ मूकुं अरणिनु काष्ठ अने आकडानु काष्ठ तेमाथी अग्नि उत्पन्न करी रसोइ पकावजे, एम कही ते वनमा गया, पेलो पुरुष केटलोक वखत निद्राधीन थइ पश्चात् अरणीना काष्टना खडोखड करी अग्नि जोयो पण देखायो नही, तेम आकडाना लाकडाना खडोखड करी जोयु पण अग्नि दीठो नहीं, तेथी खिलखो थयो, चरम प्रहरे ते पुरुषो आव्या, अने आने कहेवा लाग्या के—रसोइ तइयार थइ छे ? त्यारे मूढ पुरुषे कह्यु के अग्नि विना शी रीते रसोइ करू ? त्यारे तेओए कह्यु आ अरणि अने आकडाना लाकडामा अग्नि छे तेम कह्यु हतुं, तेनु केम? त्यारे तेने कह्यु के—बन्ने जातिना काष्ठना खडोखड करी जोयु पण अग्नि दीठो नहीं, त्यारे तेओए जाण्यु के, आ महा मूर्ख छे, [illegible] अरणिकना काष्टने नीचे मूकी, उपर मूकु [illegible] कडाना काष्ठथी मथन करी अग्नि [illegible]

करी ते वडे रसोइ पकावी सर्वेए खाधु, पश्चात् सर्वे पोताने घेर गया, आ दृष्टांतनी पेठे हे राजन् ! तु पण मूर्ख छे.

प्रदेशी–तमो निपुण, बहुविद् छो तो सभा समक्ष तु मूर्ख छे एम केम मने कह्यु ? ए केहेवु तमने अनुचित छे

केशी–मनुष्य लोकमां हे राजन् केटली सभाओ छे ?

प्रदेशी–राजसभा, गाथापति सभा, ब्राह्मण सभा, अने चोथी ऋषिसभा जाणवी

केशी–ते सभाओमां अपराध करे तेने दंड शो आपवो ?

प्रदेशी–राजसभा, गाथापति सभा, अने ब्राह्मण सभामां अपराध करनारने अनुक्रमे मोटी लघु शिक्षा करवामां आवे छे अने ऋषिसभामां अपराध करनारने वाणीवडे तर्जना कराय छे.

केशी–हे राजन् ! तु जाणतो छतो मने केम उपालंभ आपे छे कारण के तु कुयुक्तिवडे वारवार मारी प्रतिज्ञा सत्य छे एम कही वक्रपणु धारण करे छे माटे तु अपराधी अमारो करेलो दंड युक्त छे (इति सप्तम प्रश्नोत्तर)

" वृक्षनी शाखाओ कपवा लागी ते देखीने सूरि कहे छे

केशी–आ वृक्षना पान्डां डाळीओ कोण हलावतु हशे ?

प्रदेशी–वायु हलावे छे, त्यां शो संदेह छे ?

केशी–हे राजन् तु वायु देखे छे ?

प्रदेशी–ना किंतु वायु स्पर्श वडे प्रत्यक्ष देखाय छे पण चक्षुथी देखातो नथी

केशी–वायु जेम त्वाग्र् प्रत्यक्ष छे, तेम ज्ञान गुणवान् जीव मानस प्रत्यक्ष छे, एम निश्चय जाण.

प्रदेशी–कुंथुओमा अने हस्तिमा शी रीते समपरिणामी जीव होय? शी रीते ते साचु मानवु, लघु स्थानमा लघु वस्तुनु अवस्थान युक्त छे, मोटी वस्तुनुं मोटा स्थानमा अवस्थान युक्तछे

केशी–हे आयुष्मन्–प्रदीप प्रभानो दृष्टांत अत्र जण, दीपक मोटी शाळामा मूक्यो छता तेटली सर्व शाळाने तेनो प्रकाश व्यापीने रहे छे, तेम-कुभमां मूक्यो छता ते कुभनो ज उद्योत करेछे, तेम आत्मा जेवडा शरीरने अवगाही रह्यो होय छे तेटला शरीरनेज चेतना गुणवडे द्योतन करे छे त्या जरा पण शसंय नथी. इति.

प्रदेशी–हे भगवन् आपे अनादि कालथी लागेली एवी मिथ्यात्व मारी आज टाळी आपना सद्ज्ञानरूप सूर्यथी मिथ्यात्व अंधकार दूर टळ्यु. हे भगवन् मारो उद्धार करनार आप छो, इत्यादि स्तुति करी नन ग्रही पोताना घेर गयो बीजा दिवसे अत्यंत आडंबर सहीत भाव अभयदानरूप समकित दाता गुरुने वदन कर्यु, विशेष अधिकार रायपसेणी सूत्रमा छे. श्री महावीर प्रभुए श्रेणिकराजाने भाव अभयदान अर्प्युं, श्री नेमिनाथप्रभुए श्री कृष्णमहाराजने भाव अभयदान अर्प्यु, तेना जेवो अन्य कोइ जगत्मा उपकार नथी, माटे सद्गुरू भाव कल्पवृक्ष दृष्टांतने सार्थक छे, सुरनरनी उपमाथी दानगुण सर्वमा श्रेष्ट छे, अने तेथी धर्मोत्पत्ति छे, एम जणाव्यु, गुरुश्रीरूप जगम तीर्थनी प्राप्ति दुर्लभ छे, ग्रामानुग्राम विचरता सद्गुरूनी प्राप्ति दुर्लभ छे, स्थावर तीर्थ पण भूत तीर्थकरादिनु स्मरण करावे छे, स्थावर तीर्थ उपर जेवी भाव भक्ति श्रद्धा होय छे तादृशी श्रद्धा भाव भक्ति जो सद्गुरू

उपर थाय तो आत्मा शिघ्र परमात्मपद पामे, भाव तीर्थ पोतानो आत्मा समजवो, अनंत गुण तेमां भर्या छे, जो तेनी यात्रा कोइ मुमुक्षु धारे तो अवश्य मुक्ति पद पामे आत्मारूप प्रभुना दर्शनार्थम् जतां प्रथम चतुर्दश पगथीयांरूप चौद गुण स्थानक उल्लंघतां क्षपक श्रेणिरूप दोरी झाली आगळ चढतां आत्मा गुणठाणे चारघातीयां कर्मना सक्षयथी आत्माना अ सख्यातप्रदेशरूप महेलमां जवाय छे, अने तेमां विराजित परमात्माना साक्षात् कैवल्यचक्षुथी दर्शन थाय छे, पश्चात् आत्मा परमात्मप्रभुनो दर्शन करे छे, त्यारे अलौकिक स्वरू पवाळो बने छे, अने त्यांने त्यां रहे छे पश्चात् अघातिक कर्म क्षपणथी परमात्मस्वरूप बनी स्वयमेव प्रकाशे छे यावत् भावतीर्थनी यात्रा थइ नथी तावत् सांसारिक भ्रमणप्रपंचमूलभूतरागद्वेषनी ग्रंथि छेदाती नथी माटे तेनी प्राप्तिना हेतु स्थावरतीर्थ अने जगमतीर्थ छे जगमतीर्थनी सेवा भक्ति श्रद्धा, नमन, स्तुत्यादिद्वारा भावतीर्थ दर्शन थाय छे, यथा पोतानो आकार जेवो होय तेवो आदर्शमां जोवाथी भासे छे तथा जंगमतीर्थ स्वरूपगुरुमहाराजना आलंबनथी यादृक् आत्मानुं स्वरूप होय तादृक देखाय छे. आत्मानो प्रकाश सूर्य तथा चन्द्रथी थतो नथी, किंतु स्वीय आत्मानो प्रकाश सद्गुरुद्वारा थाय छे, परपुद्गलसंगी आत्मा परभावी थइ भवभ्रमणामां भूल्यो, मोह मायामां डुल्यो, आत्मानी अनंत ऋद्धि डूल्यो, पण गुरुनी यात्रा करतां पोतानुं स्वरूप समजायुं, माटे गुरु समान अन्य तीर्थ स्वात्म निर्मळकारक नथी, गुरु तज परम जंगमतीर्थ छे, गुरुनी सेवा तेज गंगा नदी जाणवी, गुरुनी कृपादृष्टि तेज मारी

शुभ गति छे, ए प्रमाणे गुरु महाराज तीर्थरूप जाणवा, तीर्थ बे प्रकारनां छे १ लौकिक तीर्थ, २ लोकोत्तर तीर्थ वळी लोकोत्तर तीर्थ द्विधा छे, वळी तीर्थ बे भेदे छे, स्वतीर्थ अने परतीर्थ, वळी तीर्थ बे प्रकारनु छे, द्रव्यतीर्थ अने भावतीर्थ. वळी शुद्ध अने अशुद्ध, ए बे प्रकारे तीर्थ छे. स्थावरतीर्थ करता पण सद्गुरु विषे अधिक श्रद्धा भक्तिभाव जागशे, त्यारे नकी समजवु, के आत्मानु कल्याण थशे, धर्मप्रद धर्मगुरुनी स्तुति पोताना आत्माने निर्मल करे छे, गुरुनो राग, भवभ्रमण त्याग करावे छे, गुरुने तीर्थनी उपमा आपवानो हेतु ए छे के गुरुराज ससार समुद्रमाथी भव्य जीवने तारे छे, एवा धर्म गुरुराजनु शरण मन वचन अने कायाथी थाओ, गुरुराजने सत्य देवनी उपमा आपवामा आवे छे, गुरु रूप देव तो पुण्य अने पापकृत्य स्वरुपने अवबोधे छे, अने भव्यात्माओ उपर गुरु देव सदा काल कृपादृष्टि फेंके छे, अज्ञानरूप अधकार कोडनाथी नाश पामे नहीं तेवा मिथ्यात्व अधकारनो नाश गुरुमहाराज उपदेशद्वारा करे छे, गुरु तेज देव छे, श्री गौतम स्वामीना मनमा विद्यानो अहकार हतो अने आत्मा छे के नहीं तेनी शका हती, तेमनु पण श्री महावीर गुरुए शका टाळी चारित्र अर्पी हित कर्यु, देवताओ पण पचमहाव्रत धारी ध्याननिष्ट महामुनि गुरुने नमस्कार करी स्तवे छे, माटे गुरु तेज सापेक्षतः देव जाणवा, आत्मानी सिद्धि गुरुथी थाय छे सर्व शाश्वत सुखरुप मागल्यप्रद गुरुराज छे, माटे आत्मा स्तुतिरूप गुरुनु मगल कर्यु, आत्मा पोताने स्वयमेव जाणे छे ते दर्शावे छे.

"दुहा."

तेने तेहिज ओळखे, अवर न ज्ञाता कोय,
ज्ञाता तेहिज आतमा, नित्यपणे जग जोय. २

भावार्थ–आत्मा पोते पोताने ओळखे छे, आत्मा विना अन्य कोइ आत्मानो ज्ञाता नथी, सर्व पदार्थ ज्ञानवडे जे ज्ञाता छे, ते आत्मा जाणवो, आत्मानु स्वरूप अन्यथा थतु नथी, एज अद्भूत आश्चर्य छे जगत् अवस्थितसर्व पदार्थो ज्ञानथी जणाय छे, अने स्वकीय शुद्ध स्वरूप पण ज्ञानथी जणाय छे, स्व परने ज्ञानमां विषयभूत करनार तेज आत्मा छे, आत्माथी भिन्न जड वस्तुमां ज्ञान गुण नथी, ज्ञान गुण शक्ति अलौकिक छे, निगोदीया जीवोने पण आत्माना आठ रुचक प्रदेश निर्मला छे, ज्ञान त्यां चेतन अने चेतन त्यां ज्ञान सदा रहु छे, निमित्तना योगे आत्मा पोताने स्वयमेव अनायासे ज्ञानथी निहाळे छे, कोइ सिंहनु बच्चु नानु थावथु कोइ भरवाड पकडी लाव्यो पेलु सिंहनु बच्चु बकराना टोळा भेगु रमवा फरवा लाग्यु, अने मनमां समजे छे के हु पण बकरांना जेवु छु, मारी जाति अने बकरानी जाति जुदी नथी, एम समजतु हतु, प्रतिदिन ते सिंहबाल मोटु थवा लाग्यु, एक दिवस बकरा सहित वाडामां ते बच्चु बेठु हतु त्यारे एक सिंह आव्यो, पेलु सिंहनु बच्चु मनमां विचारवा लाग्यु के–अहो आ साम्रु प्राणी देखाय छे ते विचित्र छे, तेनु शरीर अने मार शरीर मळतु आवे छे हु जे टोळामां रहु छु तेना शरीरना लक्षण अने मारा शरीरना लक्षण भिन्न भिन्न छे, आ साम्रु जे प्राणी देखाय छे तेना सरखो हु छु, एम ज्ञान थतां एकदम वाडामांथी बहार नीकळी गयो अने सिंह समुदायमा मळ्यो, तेम आत्मा पोतानु

स्वरूप स्वयमेव आलंबन योगे पामी परमात्मस्वरूपमय बने छे कह्यु छे के—

अज कुरु गति केसरी लहेरे, निज पद सिंह निहाळ;
तिम प्रभु भक्तें भवि लहेरे, आतमशक्ति सभाळ.अजित.

परमात्म स्वरूप ओळखी तेनुं ध्यान करता पोतानो आत्मा पण परमात्म रूप भासे छे, परमात्मा अने मारामा भेदभाव नथी, मलीन सुवर्ण समान ससारी भव्यात्माओनी स्थिति छे, अने शुद्ध कंचन समान सिद्धात्मानी दशा छे, मलीनतानो अपगम ध्यान-योगे थता परमात्मरूप थनी त्रिभुवन पदार्थ गुण पर्याय ज्ञाता बने छे, ज्ञातृत्वशक्ति आत्मामा रही छे, जडमा ज्ञातृत्वशक्ति नथी, जड पदार्थ ज्ञेय छे, जेटला ज्ञेय पदार्थ तेटलु ज्ञान समजवु, ज्ञेय पदार्थ अनत छे, तेथी ज्ञान पण अनत कहेवाय छे, अने ते प्रमाणे अनु-भवमा आवे छे, ज्ञातृशक्तिनो आधार चेतन (आत्मा) छे, आ-त्मानो कदी नाश थतो नथी, माटे नित्य छे, यद्यपि अविद्याना योगे अनेक शरीरो धारण करे छे तो पण पोताना स्वरूपने त्य-जतो नथी, अज्ञानी जीव एम जो कहेशे लागे के आत्मा नथी पण तेना वचनथीज सिद्ध थाय छे के आत्मानी अस्तिता छे तो ते जीव नास्ति एम कहे छे, अविद्यानो नाश थता अवश्य यथात-थ्य सहेजे आत्मतत्त्व भासे छे, आत्मा अनंत सुखनो धणी छे, सुख दुःखनी चेष्टा आत्मानी प्रेरणाए थाय छे, इष्टानिष्ट ज्ञाता आत्मा छे, जो ए आत्मतत्त्व सम्यक् रीत्या ओळखाय अने तेनु ज्ञान थाय तो स्वमानी पेठे सर्व जगत् देखाय, आत्मामा जे चित्तवृत्ति राखी चिंतवन करे छे ते पुरुषो आत्माने सहेजे ओळखे छे अने सुख भोक्ता बने छे,

" दुहा. "

समाय तु तारा विषे, तारु ताहरी पास,
मारु मारु स्यां करे, धरतो परनी आश. २

हे आत्मा तु तारा स्वरुपमां समाय छे, तारी गति सर्वना करता न्यारी अने अनंत आनंद आपनारी छे, तु कोइ अन्य पदार्थमां रहेतो नथी, प्रकाशथी तम समूह यथा सर्वथा न्यारु छे, तेम अनंत शक्तिधारक चेतनथी सांसारिक स्वरूप सर्वथा न्यारु छे. अवळी परिणतियोगे परवस्तुने पोतानी मानी ममताना पासमां पडे छे पण सहजानन्दी आत्मा विवेकथी तु विचार के—स्वप्नामां भासेलु जगत जेम मिथ्या छे, तेम परवस्तु पण तारी नथी, चेतन तारी ऋद्धि ताराथी जरा मात्र भिन्न नथी, जेम मृगथी कस्तुरी भिन्न नथी तेनी दुटीमांज रहेली छे, तेम आत्मानी ऋद्धि पोतानामां भरी छे, परमात्मपद आत्मामां छे, आचार्यपणु पण आत्मामां छे, तेम उपाध्याय, साधुपणु पण आत्मामां छे, ज्ञान, दर्शन, चारित्र अने तप वीर्य आदि गुणो पण आत्मामां रह्या छे, अनंत सुख पण आत्मामां छे, तो बहिरात्मभावे हे चेतन परनी आशाथी मूढ बनी मारु मारु एम शु चिंतवे छे ? परवस्तु तारी कदी थवानी नथी एम निश्चय जाण, तारी ऋद्धि ताराथी न्यारी नथी, खोजे सो पावे आ कहेवत आत्मामां योजवी, अनादि कालथी चेतन मिथ्यात्वयोगे स्वस्वरूपना अनुपयोगे परवस्तुने पोतानी मानी जन्म जरा मरण उपाधि पामी, किंतु हवे निर्णयपूर्वक जाणवामां आव्यु के—परवस्तु अचेतन जड विशिष्ट छे, हु एनो नथी, ए मारु नथी, हु मारा स्वरूपे समायो छु, हु जे जे वस्तुओ चक्षुथी देखु छु, घ्राणे सुंघु छु, जिव्हाए स्वादु छु, ते ते वस्तुओमां

हु नथी माराथी सर्व पदार्थ जणाय छे, तो पण ते पदार्थोमा हु नथी. सर्व पदार्थो प्रकाश्य छे, अने हु प्रकाशक छु, मारी जे वस्तु नथी तेनी ममता हु केम राखु ? पुद्गलनी एंठ आ जीवे बहिरात्मभावे वा क्षुधावेदनीना उदये भक्षण करी पण ते पुद्गल अने मारु नथी, एम निश्चय करी स्वस्वभावे स्थिर रहेवु एव हिताकाक्षा.

" दुहा "

देखी आतमस्वरूपने, जाण्यो पुद्गल खेल,
न्यारो तेथी आतमा, चिदानंद गुणरेल ॥ ४ ॥

भावार्थ-परोपकृतिमान् श्री सद्गुरुद्वारा ध्याननी एकाग्रताए आत्मस्वरूप भास्यु त्यारे आ सासारिक प्रपच सर्व पुद्गल खेल जाण्यो, ते खेलथी आत्मा न्यारो छे अहो शु आश्चर्य, सर्व सासारिक पदार्थो नाशवत छे अने आत्मा अविनाशी छे, आनद, अने ज्ञाननो धारक आत्मा छे, आत्मस्वरूप बतावे छे.

पद

चेते तो चेतावु तनेरे, पामर प्राणी-ए राग.

आतम रूप देखु आजेरे सकल सुख,
अचल अखड योगी, अभोगी अशोगी भोगी,
स्वभावे ते नहीं रोगीरे-सकल सु० आत० १
देहमांहीं वसनारो, देहातीत मन धारो,
रूप रग थकी न्यारो रे-सकल. आत० २
जाणे सुख दुःख सहु, चेतन छे जग रहु,
व्यापी घट घट बहुरे-सकल० आत० ३
नाम ठाम जेने नहीं, नहीं जाति भाति कही,
पोतानामां व्यापी रही रे-सकल० आत० ४

निरजन निराकार, ज्ञानदृष्टि आरपार,
बुद्धिसागर सुखकार रे-सकल० आत० ५

परिपूर्णसुखरूप आत्मानु स्वरूप-निर्विकार अखंड छे, आत्मतत्त्वप्रापक जीवोने कोइनी स्पृहा रहेती नथी. कोइ निंदा करे वा स्तुति करे तोपण हर्ष शोक रहित आत्मज्ञानी विचरे छे, राग द्वेषनी परिणति मंद पडे छे, समये समये आत्मिक सुख सतति वृद्धि पामे छे, तृष्णानु मूळ छेदाय छे, परस्वभाव प्रवृत्ति स्वयमेव विरमे छे, अने आत्मस्वभावप्रवृत्तिद्वारा निवृत्ति सुखोद्भव थाय छे, देहमां वसता देहातीत अवस्थानो भोगी आत्मा बने छे, काकविष्टा सम पौद्गलिक विषय सुख लागे छे, परनिंदातो आत्मज्ञानीने गमती नथी, आत्मस्वरूपना ध्यानी पुरुषने जे सुख थाय छे ते अवाच्य छे, आनदनो समुद्रज जाणे होयनी एवो अध्यात्म ज्ञानीनो आत्मा बने छे, आत्मज्ञानीनी दशा प्राप्त थया विना आत्मिक सुखनो अनुभव थमातो नथी, आत्मा परम पूज्य छे अतरात्मयोगी थइ परमात्मतन्मय ध्यानथी थता अनहद सुख भोगी आत्मा स्वयमेव स्वस्वरूपी थइ रहे छे

" दुहा "

ध्यानथी दृष्टि फेंकु ज्यां, त्या सहु स्वरूपे स्थिर,
शत्रु मित्र स्वप्नु थयुं, गइ अनादिकु-पीर ॥५॥

भावार्थ-मन, वचन, कायानी एकाग्र आत्म स्वरूपे थतां जगत् विचित्र देखायु, प्रथम ध्याननी पूर्वे सर्व जगत् हस्तिना कर्णनी पेठे चचल उन्मत्त लागतु हतु, ते हवे ध्याननी एकाग्रताए स्वस्वरूपे स्थिर थता सर्व जगत् पोताना स्वरूपे स्थिर देखायु, मारु मन चचल तो सर्व वस्तु चचल अने मारु मन स्थिर तो सर्व

वस्तु स्थिर एम देखायु तेथी सार लीधो के-मन जो आत्मामा रमे तो मोक्ष अने मन. परभावमा रमे तो भवभ्रमणता, एनो निश्चय थयो, आत्मज्ञान विशेष थता स्थिरता सर्वत्र भासे छे, कह्यु छे के-

भासे आतम ज्ञान धुरि, जग उन्मत्त समान,
आगे दृढ अभ्याससे, पत्थर तृण अनुमान ॥५॥

सारमा सार ग्राह्य, आराध्य आत्मा छे, ध्यानथी आत्मामा रमता शत्रु मित्र स्वप्ननी पेठे भासे छे, अर्थात् शत्रु मित्र आत्म ज्ञानीनो कोइ नथी. अनादि कालनी लागेली कुटेव तो नाशी गइ अने शुद्ध चेतना प्रगट थइ, मिथ्यात्वपणु टळ्यु, आत्मानु शुद्ध स्वरूप प्रगट थता सहजानंद प्रगटे छे, आत्मज्ञानीओ एवी दशामा रमे छे, तेमने पुन पुन' नमस्कार थाओ.

" दुहा "

अहं बुद्धि परमां धरी, परमांही बधाउं;
अहं बुद्धि जो आतमां, तो हु क्यां रंगाउं.॥६॥

परवस्तुमा अहपणानी बुद्धि धारण करी कर्मरूप परवस्तुमा बंधाउ छु, पण जो आत्मामा अहपणानी बुद्धि थइ एटले आत्मा पोते हुछु अन्यमा हु नथी, आवी बुद्धि थता हु आत्मा कोइथी क्याय रगातो नथी. अर्थात् कर्मे करी लेपातो नथी, जे महात्माओ आत्मामांज वृत्ति राखे छे ते आत्मानी ऋद्धि पामे छे, परमा चित्तवृत्ति राखवाथी अमुक दुष्ट अमुक लुच्चा अमुक वैरी इत्यादि बुद्धि थाय छे पण पोताना आत्मानी सत्तानु चिंतवन कर्याथी स्वरूप भास थाय छे.

" दुहा. "

काल अनादि परिणम्यो, आतम जडने संग,
अशुद्ध परिणामे करी, करतो नाटारंग. ॥७॥
पोताना अज्ञानथी, पाम्यो दुःख अनंत,
स्वपदज्ञानाप्ति ग्रही, थयो सिद्ध भगवंत, ॥८॥

भावार्थ—अनादि कालथी जीव कर्माष्टक ग्रही औदारिकादि शरीर ग्रही जड संगे दुग्धपयोवत् परिणम्यो छतो अने ते कर्मना योगे पोताना आत्माना थयेला अशुद्ध परिणामे करी चतुर्गति रूप संसारमां जन्म जरा मरणना दुःख ग्रही नाटारंग करतो फर्या करे छे, आत्मानो शुद्ध परिणाम थतां भव प्रपंचनी बाजी नाश पामे छे, पोताना एटले आत्माना अज्ञानथी जीव अनंत दुःख पाम्यो. शरीरने आत्मा मानी बहिरात्मभावे रमतो फरतो पोतानुं स्वरूप भूल्यो, दुःखनो समुह पोताना अज्ञानबीज मात्र पाप छे पण सद्गुरु समागमे आत्मस्वरूप जाण्युं तेमां रमणता करी कर्मनो नाश कर्यो. अने मोक्ष स्थाननी प्राप्ति करी सिद्ध भगवंत थयो ए सर्व आत्मज्ञाननुं फल छे

" दुहा "

जेनाथी निज आतमा, समजायो सुखकंद,
त्रिकरण योगे भावथी, नमुं गुरू क्रमद्वन्द्व. ॥ ९ ॥

सुखकन्द अनंतगुणविशिष्टआत्मस्वरूप जे गुरुना बोधथी समजायुं ते-सद्गुरु महाराजना चरण कमलद्वयने भावथी मन वचन अने कायाए करी नमस्कार करुं छुं, आत्माने ओळखावनार गुरु छे, गुरु पण आत्मा छे अने श्रोता पण आत्मा छे, किंतु

गुरुनो आत्मा ज्ञानवंत छे अने सेवक श्रोताजननो आत्मा निर्मल नथी तेने जणावनार गुरु छे, उपदेशक धर्मतीर्थ छे, माटे गुरुलेज मोटुं तीर्थ जाणवु, सुदर्शना चारित्रमां चारण मुनिए चंद्रगुप्तराजाने महाफल जाणी उपदेश आप्यो छे, सद्गुरु समान त्रिभुवनमा मोटु कोइ तीर्थ नथी. सद्गुरु मोटुं तीर्थ छे एम मनमा श्रद्धा थता सम्यक्त्वनी प्राप्ति थशे, हृदयमां गुरुनी मूर्त्ति स्थापन करी तेनुं एकाग्रचित्तथी भक्ति पूजन ध्यान करवाथी आत्माने अलौकिक शांति थशे, अने दररोज एम ध्यान धरवाथी पोताने साक्षात् सद्गुरु जाणे होयनी एम साक्षात् भासे थशे, अने गुरु माहात्म्यथी अनुभव ज्ञाननो प्रवाह वहन थशे, अने दुर्गुणोनो अवश्य नाश थता मन प्रसन्न थशे, अने आत्मा सद्गुणधाम थशे

" दुहा. "

सद्गुरु वण भव दुःखनो, परिहारक नहि कोय ॥
ते सद्गुरु नित्य वंदीए, जन्म सफलता होय ॥१०॥

भावार्थ–भव दुःख अतकारक सद्गुरु विना अन्य कोइ नथी, ते सद्गुरुने प्रतिदिन वंदन करवाथी जन्मनी सार्थकता छे, घोर कर्म करनारा दुष्टजनो पण गुरुना उपदेशथी गुरुता पामी शारीरिक मानसिक दुःख सहन करी पंचमीगतिने पाम्या छे, पामे छे, अने पामशे.

" दुहा "

साधन साध्यापेक्षथी, जे पाळे आचार;
राग रोष मद जीतता, सफलो तस अवतार॥११॥

रागादिक त्यागी शमे, करशे आतम ध्यान,
सम्यग् ज्ञान क्रिया थकी, थाशे ते भगवान् ॥१२॥

भावार्थ–जे भव्यात्माओ पंच महाव्रतादिनो आचार साधन साध्यनी सापेक्ष बुद्धिथी पाळे छे, अने राग रोषने जीते छे, तेनो आचार सफळ छे, अने ते दुनियामां जन्म्यो सफळ छे, क्रोध, मान, माया, लोभ, निंदादिनो जय करी शमभावे जे मुमुक्षुओ आत्मध्यान करशे, अने सम्यग्ज्ञान अने सम्यग्क्रियानु अवलंबन करशे ते पोते भगवान् थशे, कर्ममळना नाशथी आत्मा ते सिद्धात्मा थइ शके छे, किंतु अभव्यजीव मुक्तिपद पामी शकता नथी, कारणके अभव्यजीवोमां मुक्ति पामवानो स्वभाव नथी अभव्य जीवोनु उपादानकारण शुद्ध थइ शकतु नथी, भव्यजीवोनु उपादानकारण शुद्धसामग्री योगे थइ शके छे, संसारमां परिभ्रमण करवानु मुख्यकारणराग अने द्वेषभावकर्म छे, नोकषायसहचारि भावकर्ममां छे, क्रोध, मान, माया, अने लोभनो राग द्वेषमां अंतर्भाव छे, सिद्ध थता जीवोने राग द्वेष अनादि सान्त भांगे छे, अभव्यजीवने रागद्वेष अनादि अनंत भांगे छे, रागअने द्वेषनो क्षय सवरथी सर्वथा थाय छे, बहिरात्मभावे राग द्वेषनो क्षय थतो नथी, ज्यारे अंतरात्मपणु प्राप्त थाय छे, त्यारे राग द्वेषनो क्षय थइ शके छे. कह्यु छे के—

राग द्वेष के त्याग बिन, मुक्तिको पद नांहि,
कोटि कोटि जप तप करे, सबे अकारज थाय॥१॥

रागद्वेषना क्षय विना मुक्तिपद प्राप्त थतु नथी, राग द्वेषना त्याग विना कोटि कोटि जप तप करे तो पण लेखे थतु नथी, प्रथम आत्मस्वरूप गुरुसमक्ष जाणवामां आवे, अहनु यथातथ्य

स्वरूप जाणवामां आवे पश्चात् जड अने आत्मानी भिन्नता मालुम पडता विवेक प्रगटे, विवेकथी आत्मतत्त्वआदेय लक्ष्यमा ग्रहे, अने अजीवतत्त्व हेय जाणे पश्चात् आत्मा विचारे के-मारामा अनत ज्ञान, अनत दर्शन, अनत क्षायिक चारित्र, अनत वीर्य छे, हु स्वतत्र छु, किंतु अनादिकाळथी राग द्वेषना योगे परतत्र छु, राग द्वेष ए माह आत्मस्वरूप नथी, एम विचारता सर्वत्र सर्व प्राणी उपर तथा वस्तुओ उपर समभाव प्रगटे, दुनीयानी सर्व वस्तुने शमभावे निरखे, राग द्वेषनो क्षय शमभावे आत्मध्याने प्रवर्तता थाय अने सम्यग्ज्ञान अने क्रियाथी मुक्तिपद मळे माटे जे मुनिवरो रागादिकनो त्याग करी वायुनी पेठे अप्रतिबद्धताए विचरी स्वआत्महितमा लीन रहेशे, ते क्षणिक आयुष्यनी सफलता करे छे

" दुहा. "

को किरिया जड बोलता, तरशुं अम संसार;
कर्मनाश किरिया थकी, सफलो अम आचार ॥१३॥
बहिर् क्रियामां राचता, अंततत्त्व न भान,
भूल्या भवमां भटकता, क्रियाजडी अज्ञान. ॥१४॥

भावार्थ-कोइक क्रियारुचिजीवो एम माने छेके-अमो क्रिया करवाथी ससार समुद्र तरीशु, अमो जे क्रियाकाडनो आचार आदरीये छीए ते कर्म नाश करशे, माटे क्रिया सफळ छे, जे जे क्रिया छे ते सफळ छे, यथा दोहन, भक्षणक्रिया, ते प्रमाणे पडिलेहण (प्रतिलेखन) आदि क्रियाओ पण कर्म नाश करवाथी सफळ छे, ए प्रमाणे साध्य आत्मतत्त्वना अजाणपणे अतर्क्रिया जे ध्यानादिकनु स्वरूप नहीं जाणवाथी क्रियाजड पुरुषो भवमां

भटक्या, भटके छे, अने भटकशे, अने परमात्मपद केम पामी शके, साध्य सापेक्षताए क्रिया सफल छे, एम एकांते बाह्यक्रियाथी जडात्माओ इष्टफल जे मोक्ष ते पामी शकता नथी

" दुहा. "

कोइ ज्ञानने मानता, ज्ञान सत्य जग सार,
विना ज्ञान क्या मुक्तिफल, ज्ञाने भवजल पार॥१५॥
एकांते एम जे ग्रहे, करे कदाग्रह चित्त,
आत्मतत्त्व पाम्या विना, होय न तत्त्व प्रतीत॥१६॥

केटलाक भव्यात्माओ ज्ञानने मुक्तिप्रद माने छे, आत्मतत्त्वना ज्ञान विना मुक्ति नथी, ज्ञानथी संसार समुद्र तरी शकायछे, आत्मतत्त्वना बोध विना जे भव्यो एकांते हृदयमां हठ कदाग्रह धारण करी स्वेच्छाए प्रवर्ते छे, ते परमात्मपद पामी शकता नथी, आत्मतत्त्व पाम्या विना मोक्षनी प्राप्ति थती नथी

" दुहा "

युवत्यंग निरख्या थकी, विषय तृप्ति नहि थाय,
भोजनज्ञान थया थकी, भूख न भागे भाय ॥१७॥

भावार्थ–युवतिना अंगनुं निरीक्षण करवाथी विषयिपुरुषोने विषयनी तृप्ति थती नथी, जेमज वरफी, दूधपाक, मिष्टान्न भोजननुं जाणपणुं मात्र थवाथी, उदरपूर्ति थती नथी, माटे तेनी क्रिया कराय तो इष्ट फलनी सिद्धि थाय छे, माटे क्रियानी मुख्यताए फल सिद्धि छे.

ज्ञानवादी–हे क्रियावादी ! तमो क्रियाने फलदायक कहोछो ते युक्त नथी, क्रिया करवाथी संसारनी वृद्धि थाय छे, राघवुं,

युद्ध करवु, ए आदि क्रिया छे तो तेथी मुक्ति नथी, किंतु कर्मबंध छे, माटे क्रिया संसारवृद्धिहेतुभूत छे, माटे ज्ञान तेज सार छे, कर्मक्षय ज्ञानथी थाय छे.

क्रियावादी–क्रिया थकीज मोक्ष छे, क्रिया बे प्रकारनी छे, १ कर्मक्रिया २ धर्मक्रिया, जे क्रियाथी ससारमा परिभ्रमण करवु पडे अने आश्रवनु ग्रहण थाय ते कर्मक्रिया जाणवी, तेनो तो त्याग करवो योग्य छे. पण जेनाथी जन्म जरा मृत्युना दु:ख नाश पामे एवी धर्म क्रियाओ कही छे, ते करवी जोइए, कारण के तेनाथी कर्मनो नाश थाय छे, किंतु ज्ञान थकी थतो नथी माटे क्रिया तेज मोक्ष मार्ग छे.

ज्ञानवादी–अमने माटे क्रियानी जरुर नथी, आत्मानी मुक्ति तो ज्ञानथी थाय छे, शरीरनी क्रिया, वचननी क्रिया शुं मोक्ष आपी शके ? ना नहीं. मननी क्रिया विकल्परूप मोक्ष आपी शकती नथी, किंतु आत्मानुं ज्ञान थवाथी मुक्ति प्राप्ति छे, ज्यां ज्यां क्रिया त्यां कर्मनो बंध समजवो, कारण के क्रिया जड छे तो तेथी उत्पन्न थनार फळ पण कर्म जडछे, तो मुक्ति क्याथी मळे ? माटे ज्ञानथी मुक्तिनी सिद्धता छे.

क्रियावादी–क्रियाने जड कहो किंतु क्रियाथी जडनो नाश थाय छे, कारण के सजातियथकी सजातियनो नाश थायछे, ईटनो नाश मोगरथी थायछे, तेम कर्मछे ते जडछे तो तेनो नाश क्रियाथी थायछे माटे क्रियाथी नाश थवो तेज मोक्ष जाणवुं, ज्ञानथी कर्मनो नाश शी रीते थाय ? माटे कर्म नाशिका क्रिया जाणवी, मानसिक, वाचिक, कायिक क्रिया करवाथी कर्म नाश थायछे, माटे ते करवी जोइए अने क्रिया ज मोक्ष फळदाछे.

ज्ञानवादी–तमोए जड थकी जडनो नाश थयो एम कह्यु, ते युक्त नथी तमारा मत प्रमाणे तो एमज सिद्ध थायछे के पाप करवाथी पण कर्म नाश थाय, कारण के पाप पण जड छे अने कर्म पण जडछे माटे पापथी कर्मनो नाश थाय तो पश्चात् दया, सत्य, तप करवानी शी जरुर होवी जोइए ? अने जो एम होय तो पापी जीवोनी शीघ्र मुक्ति थवी जोइए अने धर्मी अने पापी एवो भेद मात्र पण असत्य थाय किंतु शास्त्रमा वीतराग भगवंते तो एम कह्युछे के पाप कृत्यथी कदापि मुक्ति मळती नथी, माटे ज्ञानने सत्य मानो अने तेनाथी मुक्ति थायछे

क्रियावादी–हे ज्ञानवादी ! तु मारु कथन समजी शक्यो नहीं, प्रतिपक्षी जडथकी प्रतिपक्षी जडनो नाश थायछे, कर्मनु प्रतिपक्षी पाप नथी माटे पापथी कर्मनो नाश थतो नथी, पुण्य अने पाप ए बे परस्पर प्रतिपक्षीछे माटे पुण्यथी पापनो नाश थायछे पुण्यनी क्रिया दु:खनाशक छे माटे धर्मनी क्रिया अवश्य करवी जोइए

ज्ञानवादी–पुण्यनी क्रियाथी कइ कर्मनो नाश थतो नथी, कारण के पुण्य पण कर्मस्वरूपछे, तो पुण्यथी कर्मनी वृद्धि थाय पण कर्मनो नाश तो थतो नथी. माटे ज्ञानथीज मुक्ति थायछे एम मानवु जोइए

क्रियावादी–भला ठीक पुण्यथकी कर्मनो नाश न थाय तोपण शातावेदनीयकर्म बंधाय अने तेथी उत्तम कूळमा जन्म थाय धन, पुत्रादि ऋद्धि प्राप्त थाय तेथी सुख मळे ते पण क्रियानु फळ छे, अने तेथी अनुक्रमे कर्मनो नाश थाय माटे क्रियाकांडनी साफल्यताछे

ज्ञानवादी–पुण्यथी शातावेदनीयकर्म बंधायछे अने तेनो भोग

भोगववा अवतार धारण करता जन्म जरा मरणना दुःख प्राप्त थायछे, अने अवतार धारण करता पश्चात् ते भवमा वळी नवा कर्म रचाय पण कर्म बंधनो पार आवे नहीं, ज्ञानथी कर्मनो नाश थायछे माटे तेनो स्वीकार करवो योग्यछे.

क्रियावादी–अमो क्रियाथी कर्मनो नाश मानीये छीए ते सयुक्त छे, उत्तम अवतार आव्या विना धर्मना कार्य थइ शकता नथी, पडिलेहण, प्रतिक्रमण, प्रभुपूजा, इत्यादि क्रियाओ पापनो नाश करे छे, अने नवीन कर्म प्रतिबंधकद्वारा आत्मा निर्मळ थतां मुक्तिनी प्राप्ति थायछे माटे क्रिया सफलछे.

ज्ञानवादी–धर्मनी क्रिया उत्तम कुळजन्म धनसंपत्ति आपनारीछे, पण तेथी कर्मनी वृद्धिछे. पडिलेहण, प्रतिक्रमण, प्रभुपूजा, पण कर्मनो नाश करी शकती नथी, जरा सूक्ष्मदृष्टिथी विचारो के–ज्ञान विना क्रिया करवाथी शुं फल थइ शके ? ज्ञानाग्निः सर्वकर्माणि, भस्मसात् कुरुतेऽर्जुन ज्ञान अग्नि सर्व कर्म बाळीने भस्मीभूत करे छे, माटे हठ कदाग्रह त्यागी, ज्ञान मुक्तिप्रद मानवु ते योग्यछे.

क्रियावादी–क्रिया विना ज्ञाननी उत्पत्ति थती नथी, ज्ञाननो (क्रिया) अभ्यास ज्ञानने उत्पन्न करेछे, प्रथमथी कइ ज्ञान होतुं नथी. विद्याभ्यास करता करता ज्ञाननो प्रकाश थायछे, सारमां समजवानु के ज्ञानाभ्यासरूप क्रियाथी ज्ञान उत्पन्न थायछे तो क्रियाथी कर्मनो नाश थाय एमा कइ शका नथी, माटे क्रियाथी कर्मनाश मानवो योग्यछे.

ज्ञानवादी–ज्ञान विना सर्वत्र अंधारुं, जे कर्मनो नाश करवानोछे ते कर्मनु स्वरूप जाण्या विना कर्मनो नाश शी रीते थाय ?

पुरुषे कह्यु के, तारो चक्रवेग

छे ते तने मारवा धारेछे, हवे जो चैत्रने चक्रवेग ओळखतो होय तो चैत्रनो घात करे, अन्यथा तेनो नाश करी शके नहीं. तेम दृष्टांतथी समजवानु के-कर्मनो नाश करवो ते कर्मनु ज्ञान थया विना बनतो नथी माटे ज्ञानथी कर्मनो नाश मानवो जोइए

क्रियावादी-फक्त वस्तुनु ज्ञान थवा मात्रथी फलनी सिद्धि थती नथी, एक माणसने भोजन करवानु ज्ञान थयु पण भोजननो मुखमा प्रक्षेप करे चावे त्यारे तेनी उदरपूर्ति थाय अने क्षुधा मटे, माटे क्रियाज फलप्रद छे ज्ञान तो जाणवा मानछे, जेम कोइ तार (तरनार) जळमा तरवानु जाणेछे किंतु जलमा प्रवेश करी हाथ पग हलावे नहीं तो बुडी जाय तेम कर्मनु ज्ञान थता कर्म नाशकारक क्रिया नहीं कराय तो कर्मनो नाश थतो नथी, परतु क्रियाकरणथी कर्म नाश थायछे

ज्ञानवादी-तमारु कथन ठीकछे, किंतु ज्ञान विना वस्तुनु यथातथ्य स्वरूप जाणी शकातु नथी, तो पश्चात् ते आदरी शकातु नथी, मोदक बनाववानु जाणे अने ते भक्षण कर्याथी अमुक फायदो थायछे ते जाणी शकाय तो त्यार बाद करी शकाय, जे वस्तुनु ज्ञान नथी ते वस्तुनी क्रिया शी रीते करी शकाय ?-दृष्टात तरीके जाणो के-कोइ मनुष्यने बीजा मनुष्ये कह्यु के शास्त्रमा आकाशगामिनी विद्या कहीछे, तेनु ज्ञान थाय तो आकाशमा उडी शकाय, त्यारे पेला मनुष्ये शास्त्रनी शोध करी आकाशगामिनी विद्या जाणी, त्यार बाद क्रिया करी आकाशमा गमन करवा लाग्यो. अत्र समजवानु के आकाशगामिनी विद्यानु ज्ञान थतां तेनी क्रिया थइ शके, माटे ज्ञाननी मुख्यताछे, ज्ञान विना कोइ क्रिया थइ शकती नथी

क्रियावादी–हे ज्ञानवादी! तमो मूळ हेतुथी विरुद्ध उतरोछो, तमारे विचारवु के–ज्यां ज्यां क्रियाछे त्यां अवश्य ज्ञान रहु होयछे, ज्या साकर त्या साकरनो रस, ज्यां केरी त्यां तेनो रस अवश्य होयछे, तेम ज्या क्रिया होयछे त्यां अवश्य ज्ञाननी अस्तिताछे, माटे ज्ञाने जाणता क्रिया करती वखत पण गौणभावे ज्ञान होयछे, मुख्यरूपे क्रियाछे, अने क्रियाथी कर्मनो नाश थायछे माटे क्रिया तेज कर्मनाशकछे.

ज्ञानवादी–हे क्रियावादी तारु वचन अयुक्तछे, ज्यां क्रिया होय त्या ज्ञान होय एवी व्याप्ति नथी, फोनोग्राफ वाजींत्रमां क्रिया बोलवानीछे, पण ज्ञान नथी, आगगाडी (अग्निरथ) मा गमननी क्रियाछे पण ज्ञान नथी, माटे तारु कथन असत्यछे, वळी जेना माटे तु क्रिया करवानु कहेछे ते आत्मा तो अते सिद्धपणु पामी अक्रिय थायछे, अने सिद्धमां क्रिया नथी, अक्रियछे, आत्माना घरनी क्रिया नथी, तो ते क्रिया निष्फळछे, सिद्धमा ज्ञानछे, अने ते तो आत्मानो गुणछे माटे ज्ञानथी मुक्तिछे एम जाण

क्रियावादी–क्रिया आत्मा करेछे, माटे आत्मानीछे, शरीर कइ क्रिया करतु नथी माटे क्रिया प्रमाणीभूता कर्मक्षये जाणवी.

ज्ञानवादी–आत्मा कइ फक्त एकलो क्रियाने करतो नथी, शरीरधारी आत्मा क्रिया करेछे, अने ज्यारे शरीरनो त्याग करी सिद्धपद पामेछे त्यारे क्रियापणु टळेछे, आत्मा ससारमा कर्मयोगे सुख दु ख योगे त्रण प्रकारनी क्रिया करी शकेछे, व्यवहार नये क्रियानो कर्त्ता आत्माछे, निश्चयनयथी जोता आत्मा नथी माटे आत्मानी क्रिया कही

ते लाकडाने बाळी भस्मीभूत करी त्

(ओळशइ) जायछे, तेम क्रिया पण कर्मने बाळी पोतानी मेळे नाश पामेछे, माटे क्रियाथी मुक्तिछे.

ज्ञानवादी–हे प्रियतम, जरा विचारशो तो मालुम पडशे के–क्रियाथी मुक्तिछे पण शाथी जाण्यु उत्तरमां कहेवु पडशे के ज्ञानथी, ज्ञान न होय तो क्रियाने जाणी शकाय नहीं, तो पछी शी रीते करी शकाय ? तमोए कह्यु के क्रियाथी मुक्ति छे आ वचन प्रलाप मात्रछे, देखो प्रसन्नचंद्र राजर्षि ज्यारे सूर्यनी सामी दृष्टि राखी ध्यान करता हता त्यारे ते कोइ क्रिया करता नहोता, अने ज्ञान ध्यानथी केवलज्ञान पाम्या, विचारो के त्या कइ क्रिया करता हता, कइ नहीं, भरतराजाए आरीसा (आदर्श) भुवनमा भावना भावतां भावतां केवलज्ञान उत्पन्न कर्यु, मरुदेवा माताए हस्ति उपर भावना भावतां केवलज्ञान उत्पन्न कर्यु त्यां कइ क्रिया करी नथी, फक्त ज्ञानवडे कर्म खपावी केवलज्ञान पाम्या जीवो देखायछे, माटे ज्ञानछे तेज सत्यछे

क्रियावादी–हे ज्ञानवादी तमोए प्रसन्नचंद्र राजर्षिनु दृष्टान्त ज्ञाननी सिद्धिने अर्थे आप्यु, ते ज्ञानने सिद्ध नहीं करता क्रियाने सिद्ध करेछे, प्रथम समजवु के ध्यानछे ते क्रियारूपछे, ध्याननां चार प्रकारछे, आर्तध्यान, रौद्रध्यान, धर्मध्यान, शुक्लध्यान, ए चारमांथी प्रथमना बे ध्यान दुर्गति अर्पेछे, काउस्सग्गमां प्रसन्नचंद्र ऋषिए प्रथम दुर्ध्यान ध्यातां नरक गति उपार्जन करी पश्चात् पश्चाताप पामी धर्मध्यानादि ध्यावतां कर्म खपावी केवलज्ञान पाम्या तेनु कारण धर्मध्यान अने शुक्लध्यानरूप क्रियाछे, बार भावनाओ पण धर्मध्यानमां आवी, मरुदेवी माता अने भरतराजाए धर्मध्यानादि ध्यातां

केवलज्ञान पाम्यु, माटे ते पण क्रियाथीज, केवलज्ञान, मुक्ति आदि पाम्याछे. श्री विजयलक्ष्मीसूरीजीए पण कह्युछे के ध्यानक्रिया मनमा आणीजे, धर्म शुक्ल ध्यायीजेरे, इत्यादि, माटे क्रिया कर्म क्षय करीछे.

ज्ञानवादी–हे क्रियामा राचनार, हजी तु पोतानो मत छोडतो नथी, मारा वचन उपर लक्ष आप, ज्ञान विना ध्यान थइ शकतु नथी जेनामा ज्ञान छे ते ध्यान करी शके छे, जुओ भरतराजा. जेनामा ज्ञाननो सर्वथा अभावछे त्यां ध्याननो अभावछे, जुओ, घट जडछे तेमा ज्ञान नथी, जो, ध्याननु ज्ञान न होय तो ध्यान शी रीते शके ? प्रथम ज्ञान अने पश्चात् क्रिया, वळी समजजु के ज्ञान विना जरा पण क्रिया थइ शकती नथी, एक दिवसना जन्मेला बालकने पण स्तन पान प्रवृत्तिमा सस्कार बुद्धि कारण छे, सुख दु.खने पण जगावनार ज्ञानछे, ज्ञान रुपराजानी क्रिया दासीछे, माटे ज्ञानना हुकम प्रमाणे क्रिया थइ शकेछे, ज्ञानरूप राजाना करतां क्रिया दासी मोटी कहेवाय नहीं. ज्ञान देखतुछे, अने क्रिया आन्धळी छे, ज्ञान विना चारित्र नथी, ज्ञान विना वैराग्य थतो नथी, ज्ञान विना देव गुरु धर्मने ओळखी शकाता नथी, अरे विचारो तो खरा, ज्ञानथीज आत्मा पण ओळखाय छे, पण क्रिया ओळखी शकती नथी. ज्ञानथी बीजाना मननी वात जाणी शकाय छे, कोइ अंध पुरुष वनमां फरतो फरे किंतु अंधपणाथी–खाडामा चालतां पण पडी जाय, तेना सामो वाघ आवे तो कइ दिशा तरफ जवु ते देखी शके नहीं, अने जो देखतो होत तो दु खथी बचे माटे ज्ञान ते देखता पुरुष समान छे अने क्रिया आंधळा पुरुष समान छे.

श्रावकथी व्याख्यान वाची शकाय नहीं, कारण के ते संसारमां राची माची विषयसुख भोगवतो संसार असार जाणीने पण पडी रह्यो छे, अहंकारबुद्धिथी परमा अहपणानी बुद्धि थायछे, हुं मोटो आ सर्व मारु, मारा समान दुनियामा कोण विद्वान छे ? एवा विचार थायछे त्या सुधी निश्चयज्ञानीपणु नथी, शुष्क ज्ञानीपणु जाणवु, एवा शुष्कज्ञानी परमात्मस्वरूप तरफ लक्ष आपता नथी अने बहिरात्मपणु धारी मुक्ति स्थान पामता नथी.

आत्मज्ञानीनु लक्षण कहे छे

" दुहा "

वैराग्यादिक गुण वृंद, आतममां प्रगटाय,
समभावे निरखे सदा, परमातम पद पाय ॥२०॥

भावार्थ–वैराग्य, संवेग, समता, सहनशीलता, निर्लोभता, आदि गुण समूह आत्मामां प्रगटावे अने गुणधारकआत्मा, सम-भावे शत्रुमित्र, कंचन, उपल, निंदक, वंदकादिने देखे, त्यारे पर-मात्म पदनी प्राप्ति थायछे

" दुहा "

त्याग विराग विना कदी, थाय न आतम ज्ञान,
आतम ज्ञान विना कदी, पामे नहि शिव ठाण ॥२१॥

भावार्थ–संसारबंधनभूतपुत्रस्त्रीधनादिकना ममत्वरूप त्याग विना अने वैराग्य विना आत्मज्ञान थतु नथी, अने आत्मज्ञान विना शिवस्थाननी प्राप्ति नथी, साराशके–संसारनी मोहजालनो त्याग अने तिव्रस्थिरज्ञान वैराग्यथी सद्गुरु उपदेशद्वारा आत्मस्वरूप समजी, आत्मस्वरूपमा लीन थायछे, आत्मज्ञानीओने ,अमुकमा अमुक दोषछे, अमुक क्रोधीछे, अमुक मारो शत्रुछे, आवी

भावना थती नथी, ते तो एमज विचारेछे के जीवनो कोइ शत्रु मित्र नथी, तेम सगपण पण नथी, पारकी निंदा करवी तेमा मने कइ फायदो नथी, आत्मज्ञानीओ तो एम विचारेछे के-सर्व जीव कर्मना वशे जुदी जुदी सारी नठारी आचरणा करेछे, तेमा हुं सर्व ना आत्मानी निंदा करु के शरीरोनी निंदा करु, अलबत विवेक थी विचारता कोइ पण निंदाने पात्र नथी, ज्यां सुधी मनमां निंदा करवानी बुद्धि थायछे त्या सुधी कोइ अपेक्षाए धर्मी नथी, तेम परनी निंदा करतो साधु वा श्रावक होय तो पण ते चडाल समान मनोवृत्तिथी जाणवो, शुष्कज्ञानी मुखथी आ ससार असारछे एम मुखथी पोकारेछे, पण ससारमां आसक्ति राखी भवभ्रमण करेछे, शुष्कज्ञानी चारित्र अंगीकार करी शकतो नथी, केटलाक श्रावको उपरथी त्याग विराग देखाडी ससारमा शुकरनी पेठे आसक्ति धारण करेछे तेम ज्ञाननुं फल विरति पाम्या विना स्वजन्म निष्फल गुमावेछे. केटलाक जीवो उपरचोटीया वैराग्यथी दीक्षा अंगीकार करी पूजा माननी लालचे गच्छमतना कदाग्रहे नड्या छता आत्मस्वरूपना ज्ञान विना बहिरात्मपद पामता परस्पर एक बीजानी निंदा करी टोळं भेगु करवानी बुद्धिथी, व्याकरण, न्याय आदि अभ्यास करी एक बीजानुं खडन मडन करेछे तेवा साधुओ आत्मज्ञान पामी शकता नथी पण जे साधुओना हृदयमा ससारनी असारता वसी रहेलीछे, अने शात मुखाकृतिथी विचरेछे, सद्गुरुनु तथा गीतार्थ साधुनी सगति करेछे ते आत्मज्ञान पामी कर्म क्षय करी मुक्तिपद पामेछे, संसारमा वसता त्याग विरागपणु पामवु मुश्केलछे, त्यागी अने वैरागीपणु अध्यात्मदशावाळा मुनिवरो पामी शकेछे, अने आत्मामा अनंत सुख अनादि कालथी तिरोभावे रह्युछे, ते पण आत्मानुभवी भव्यो ज. मा-

याने आत्मायकी भिन्न जाणे ते पुरुषो तेनो त्याग करी शकेछे, ससार बळता अग्नि समान छे, ससारनां दरेक कार्यो उपाधिमय छे, ससारनी उपाधिमां वसतां आत्मानु ध्यान थइ शकतुं नथी, माटे ससारी उपाधि त्यागी सद्गुरु उपदेश सांभळवो के जेथी वैराग्य प्राप्त थाय, अने वैराग्य प्राप्त थता गुरु महाराजने पूछी आत्मानुं स्वरूप ओळखवु, अने ते आत्मस्वरूप जाणतां तेनुं ध्यान धरतां कर्मनो नाश थायछे, माटे आत्मस्वरूपाभिलाषिओए त्याग अने वैराग्यनी प्राप्ति माटे प्रयत्न करवो.

" दुहा "

योग्य होय ते आदरे, हठ कदाग्रह त्याग;
वैराग्ये मन वासितु, तस परमातम राग. ॥२२॥

भावार्थ-आत्मतत्त्व तथा तेनी प्राप्तिना अव्यभिचारी हेतुओने भव्यात्मा अंगीकार करे आत्मतत्त्व जेनाथी पामी शकाय नहीं एवा साधनोमां हठ कदाग्रहपणानी बुद्धिनो त्याग होय, सद्गुरु महाराजा भव्यात्माओनी विचित्र पद्धति जोइ जे साधनथी जेने फायदो थाय ते साधन व्रतादि तेने अंगीकार करावे, त्यारे अतिशय प्रेमभक्तिथी गुरु वाक्यने शिष्य अंगीकार करे, आत्मार्थी जीव भवभयथी बीक पामतो विचारे के-जो दुर्लभ मनुष्यावतार पामी स्वछंदाचारीपणे वर्तीश तो अनंत भवभ्रमण करवां पडशे माटे गुरुनी आज्ञा मस्तके धारी मत कदाग्रहनो त्याग करे अने ससारनी अनित्यता विचारे-कर्मनु स्वरूप सूक्ष्मदृष्टिथी विचारी सार ग्रहे के-आ जगतमां सम्यग्धर्मथी आत्महित छे, एम चिंतन करी जळपंकजवत् ससारभावथी न्यारो रहे, तेवा भव्यात्माओने परमात्मपदनो राग थाय किंतु ससारमां विष्टा शुकरवत् अहर्निश

विवेकथी शून्य हृदयवाळा, अने परवस्तुने पोतानी मानी हर्ष शोक धारण करनारा रागीबहिरात्मीओने परमात्मपदनो राग थतो नथी, वैरागी, त्यागी, मत कदाग्रहवर्जित जीवो परमात्मपदपामी शके छे. आ आत्मार्थीनु लक्षण छे.

" दुहा. "

समकित जेणे अर्पियुं, ते मोटा गुरु देव;
निमित्त गुरु ते आत्मना, कीजे तेहनी सेव. ॥२३॥
त्यां त्यां गुरुनी बुद्धिथी, भटके जाणे रोझ;
गुरु गुरु शी वस्तु छे, नहीं करतो तस खोज ॥२४॥
थोडुं तेटलुं दुध एम, तेवी गुरुमां बुद्धि,
गुरुबुद्धि सर्वत्र जास; तस नहि आतम शुद्धि ॥२५॥
सेवे सद्गुरु प्रेमथी, चरणकमल आधीन,
पामे ते परमार्थने, थावे शिवसुखलीन. ॥२६॥
सद्गुरु सम कोनो नही, भवमांहि उपकार,
कामकुंभश्रीसद्गुरु, भवजल तारण हार ॥२७॥
प्रत्यक्ष उपकारी गुरु, परोक्ष जिनवर होय;
एहवी बुद्धि प्रगटतां, धर्म योग्यता सोय. ॥२८॥
गुरुश्रद्धाभक्ति विना, लागे नहीं उपदेश;
भणवुं सुणवु शास्त्रनुं, ते पण हेतु क्लेश. ॥२९॥
सद्गुरु वचनामृत विना, तत्त्वस्वरूप न पाय,
सदगुर [illegible] थकां, समकितरत्न ग्रहाय. ॥३०॥

तारक बुध्धिथी गुरु, कथन करे उपदेश,
श्रध्धा भक्तिथी सुणी, आदर करो विशेष. ॥२१॥

भावार्थ—अनंतकरूणायोगे केवलपरमार्थबुद्धिथी अनंत भव दुःखवल्लिछेदककुठारसदृश धर्ममूलभूतसमकित रूप रत्न जे सद्गुरुए अर्पण कर्युं ते गुरु मोटा देव समानछे, देव गुरु धर्मनी श्रद्धाथी समकित आत्मामां उत्पन्न थायछे, देव वीतराग अष्टादश दूषण रहीत होय तेने स्वीकारवा

यत जिनेन्द्रो देवता स्तत्र, राग द्वेष विवर्जित
हतमोहमहामल्ल, केवलज्ञानदर्शन ॥१॥
सुरासुरेंद्रसपूज्य, सद्भुतार्थप्रकाशक
कृत्स्नकर्मक्षय कृत्वा, सप्राप्तं परम पद ॥२॥
जीवाजीवौ तथा पुण्य, पापमाश्रवसंवरौ,
बंधोविनिर्जरामोक्षौ, नवतत्वानि तन्मते ॥३॥
तत्र ज्ञानादिधर्मेयो, भिन्नाभिन्नविवर्त्तिमान्
कर्म शुभाशुभ कर्त्ता, भोक्ता कर्मफलस्य च ॥४॥
चैतन्यलक्षणो जीवो, यश्चैतद् विपरीतवान् ॥
अजीव.स. समाख्यात. पुण्य सत्कर्मपुद्गला ॥५॥

इत्यादि

वीतराग शासनमां जिनेन्द्र भगवान् देवछे, ते राग द्वेष रहित छे, जेणे मोहरूप महामल्लनो सर्वथा नाश कर्योछे, अने जेमने केवल ज्ञान अने केवलदर्शन साकार निराकार उपयोग तरीके भास्याछे, वैमानिक अने भुवनपति आदिना चोसठ इन्द्रोवडे जेना चरण कमल

पूजायछे, एवा वीतराग देव जाणवा, वळी तीर्थंकर देव त्रिभुवनवर्त्ति धर्मास्तिकायादिक षड्द्रव्योना गुण पर्याय आदि सत्य पदार्थोना प्रकाशकछे, जेवुं जगत्नु स्वरूपछे तेवु तेमणे केवलज्ञाने प्रकाश्युछे. असत्य जल्पनतु तेमने कइ प्रयोजन नथी, दयाळु अने उपकारीपणाने लीधे सत्य तत्त्वनी प्ररुपणा करीछे, भरत, ऐरवत अने महाविदेह क्षेत्रमां तीर्थंकरोनी उत्पत्ति थायछे वीश स्थानकमानु गमे ते स्थानक उत्कृष्ट परिणामयोगे आराधवाथी त्रिभुवन आराध्य तीर्थकरनामकर्म बधायछे, अनादिकालसगी रागद्वेष स्वरूप महामल्ल शत्रुनो जेणे सर्वथा नाश, स्वशुद्धआत्मिकपरिणामथी कर्योछे. एवा तीर्थंकर महाराजाने चोत्रीश अतिशय अनुक्रमे उत्पन्न थायछे, स्वआचार कल्प अने भक्तिभरथी गमन करी प्रभुनी प्रभुता दर्शाववा माटे चतुर्निकायना देवता देवीओ प्रभुने लोकालोक प्रकाशक केवलज्ञान अने केवलदर्शन उत्पन्न थता अलौकिक विचित्र मनहर देवताइ अष्टमहाप्रातिहार्य युक्त समवसरण नी रचना करेछे ते उपर बाह्य अने अतर्लक्ष्मीवडे सुशोभीत त्रिजगतारक तरणि, पांत्रीस वाणीगुणधारक, परमपूज्य परमपवित्र त्रयोदश गुणस्थानवर्ति श्री देवाधिदेव तीर्थंकर महाराजा वचनातिशये युक्त देवता मनुष्यतिर्यचोत्पन्न बार पर्षद अग्रे मधुर ध्वनिथी बहिरात्मा, अंतरात्मा, परमात्मास्वरूप तेमज देवगुरु धर्म अने नवतत्त्व, षड्द्रव्यनु स्वरूप, भव्योना कल्याणार्थे प्रकाशेछे, अने देशनान्ते साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका रूपचतुर्विधसंघनी स्थापना करेछे, तेमा सर्वथी मुख्य चतुर्विध संघमा मुनिराज छे, धर्मनी अपेक्षाए संघछे, वीतराग आज्ञा मुजब ज्या प्रवर्तन नथी, ते संघ कहेवाय नहीं, मोहजनितभ्रमणाए केटलाक श्रावकना कूळमां उत्पन्न थइ श्रावको साधु साध्वी विना श्रावक वर्गनेज संघ

तरीके अज्ञानथी गणेछे, ए वर्तन वीतरागशास्त्रथकी विरुद्धछे, साधुना सत्तावीस अने श्रावकना एकवीस गुण मळी अडतालीश गुणयुक्त सद्‌ कहेवाय छे ज्ञान दर्शन चारित्रथी भिन्नाभिन्न अने व्यवहारनयथी शुभाशुभ कर्मनो कर्ता तथा भोक्ता, चैतन्यलक्षण युक्तजीवतत्त्वनी प्ररूपणा तीर्थंकरे करीछे. जीवथी विपरीत अजीवतत्त्वनु प्ररूपण तेमने कर्युंछे, एम नव तत्त्वनु प्ररूपण कर्ता वीतराग देवछे, आयुष्य मर्यादा पर्यंत पृथ्वीतळ पावन करी अघातीयां कर्म खपावी अशरीरी अनामी थइ सिद्धस्थानमां पहोंची सादि अनंति स्थिति अजरामर पद भोगवेछे, एवा देवने देव तरीके मानवा, वीतराग आज्ञाधारक पंचाचार, पंचमहाव्रत आराधक गुरुने गुरु तरीके स्वीकारवा, वीतरागकथीतमोक्षमार्ग स्वरूप धर्मने धर्मरूपे स्वीकारवो, आ त्रण तत्त्वनी श्रद्धा गुरु महाराजना उपदेशथी थायछे, माटे गुरु महाराज समकितदायक प्रबळ निमित्त कारणछे, तेमनेज गुरु तरीके सदा स्वीकारी तेमनी आज्ञानुसार चालवु विवेकशून्य अज्ञानवासीत चित्तवाळो मूढपुरुष परमार्थबुद्धिहीन जेटलु मवारी धोळु तेटलु दूध र एवी अज्ञानताथी रोज पशुनी पेठे सर्व मुंडोमां, सर्व धर्मोपदेशकोमां गुरुबुद्धि धारण करेछे ते अज्ञानी आत्मशुद्धि करी शकतो नथी अने भविष्यत् काळे सद्‌गुरुश्रद्धा विना करशे पण नहीं, आत्मतत्त्वज्ञ, अध्यात्मोपयोगी गुरुनु आलंबन अनादिकाळसलग्नअज्ञानने नाश करेछे, सहजानंदी आत्मानुभव मंदिरमां म्हालनार गुरु महाराज प्रत्यक्ष मारा उपकारीछे, अने जिनेश्वर परोक्ष उपकारीछे, एम विवेकदृष्टि जेने प्रत्यक्ष थइ छे ते धर्म पामी शकेछे, गुरु श्रद्धा अने शुद्धान्तःकरणथी गुरु भक्ति करनारथी तेमनो उपकार भव्यात्माने लागेछे, अने श्रद्धा भक्ति, विना उपदेश लागतो नथी, गुरुनी आज्ञा

विना स्वयमेव शास्त्र वांचे तो पण यथायोग्य तत्त्व तेना हृदयमां परिणमे नहीं, अने विपरीत परिणमे तो अपथ्यसेवननी इव उपदेश निष्फळ थाय

परमार्थथी जोता तारक बुद्धिथी गुरुराज उपदेश अर्पेछे, ते उपदेश विनयथी अति हर्षे श्रवण करी आदरवा योग्य आदरो, अने त्याज्यने त्यागो कुगुरुमां गुरुबुद्धि थया विना उपदेश कइ असर करी शकशे नहीं, ए निश्चय जाणवु अने गुरुए जिज्ञासु अने श्रद्धाळुने उपदेश आपवो, पात्र विना उपदेश लागतो नथी.

अज्ञानी मूढ मत कदाग्रही कुगुरुओनी संगतिथी जे लोकोनी बुद्धि विपरीतपणे परिणमीछे, तेमने उपदेशथी असर क्वचित् थाय छे, खारी भूमिमां पतितजळनी जेम निष्फळताछे, तेम खल भवाभिनंदी जीवोने उपदेशनी पण निष्फळताछे, जेना नीचे लख्या प्रमाणे लक्षण होय तेने उपदेश देवो योग्यछे.

१ संसारनी अनित्यताए वासित चित्त होय

२. हुं कोणछुं? क्याथी आव्यो? क्यां जइश? शुं मारे कर्तव्यछे?

३ हुं ते कोण ? हुं अने मारुं ते शु ? ए जाणतो होय अथवा जाणवानी जिज्ञासा होय.

४ भवनो भय लागे एटले जन्म जरा मृत्युथी व्याप्तसंसार बळताअग्नि समान छे तेमां पडीश तो वळी मरीश- एवो जेने भय होय

५. गुरु महाराजनी वाणी उपर पूर्ण विश्वास होय तेम प्रीति होय.

६ सत्य अने असत्यने समजी शकतो होय अने कदाग्रही न होय.

७ गुरु • कथनानुसार प्रवर्तनार होय.

८ कपट वृत्ति जेने होय नहीं, अने सदाचार महत्तियुक्त होय.
९ लोकविरुद्धनो त्याग करनार होय
१० विनय होय अने गुरुनी श्रद्धा सहीत सेवामा तत्पर होय.

इत्यादि लक्षणो जेनामा होय ते उपदेश ग्रहनार उत्तम पात्र भूत श्रावक वा मुनिपणे पण शिष्यो जाणवा.

नीचेना लक्षणवाळाओने उपदेश लागी शकतो नथी.

गाथा.

रत्तो दुठो मूढो--पुव्विवुग्गाहिओअ चत्तारि
उवएसस्स अणरिहा अह्वासएहिं परिवुज्जति ॥१॥

१ ससारनेज सार मानी तेमां अत्यासक्ति धरनार
२ हु कोण छु ? मारे शु कर्तव्य छे ? तेनो पण जेने विचार थाय नहीं.
३ पापना कार्यो करतां भय पामे नहीं,
४ जीवोनो घात करनार धूर्त शठ मूर्खपणु जेनामां होय,
५ गुरुना दोषो जोनार, तेमनी निंदा करनार अने गुरुनी श्रद्धा तथा गुरुनो विनय बहुमानरहीत होय.
६ गुरुमहाराजनी वाणी उपर विश्वास, श्रद्धा, तेमज तेमना उपर प्रीतिरहीत होय.
७ कुगुरु अने सुगुरुनी परीक्षा करवानी जेनामां बुद्धि न होय.
८ कपटी, व्यसनी, तेमज निंदक होय,
९ कुगुरना फदामा फसाएल होय अने दृष्टिरागी होय.
१० जेनु स्थिर चित्त न होय, जेम भमावे तेम भमे, विवेकशून्य हृदय होय.

गुरु करता पोताने मोटो माननार, अने पोतानो फको खरो माननार होय

७५ समजे नहीं अने गुरु उपर द्वेष करे

अविनयी होय

इत्यादि लक्षणयुक्त जीवो होय ते उपदेश देवाने योग्य नथी, गुरुसंगतिथी तेवा जीवोने पण लाभ मळे, एकांत नथी, ानी गुरु महाराज अवसरना जाणछे, माटे स्वपर लाभार्थे करेछे, योग्य लागे तो उपदेश आपे अने अयोग्य लागे तो आपे नहीं, मौन धारण करे, ज्ञान, दर्शन, चारित्र वीर्यादि ध्यानथी भवर्ते, सद्गुरु महाराजा सदा स्वतत्र आत्मोपयोछि, धर्मध्यान अने शुक्लध्यानना योगे आत्मा परमानंद रमण करी तत्पद प्राप्त करे एम गुरुनी प्रवृत्तिछे, एवा ाज्ञासह वर्तवु.

" दुहा "

े त्यागी ज्ञानथी, उपादेयशुं हेत,
रता कर्मने, शाश्वत पद झट लेत. ३२
ने भावकर्म, तेनो करी परिहार,
गे झीलतां, लहीए भवजल पार. ३३
ारीपणुं, रोकी सद्गुरु सेव;
मनडुं करी, पामो शाश्वत मेव. ३४
कर्ता कर्मनो नाश,
ी उपमा, तेना थइए दास. ३५

मूळ विना नहि वृक्ष जग, गुरुगम वण क्यां ज्ञान,
वाचो पोथी पत्र पण, नहीं टळे अज्ञान. ३६
भणवु गणवु मानथी, जन मन रंजन काज,
आत्मलक्ष्यना ध्यान विण, लहे न शिव साम्राज्य ३७
क्रिया कांड कपटे करी, करतो रंजे लोक,
शुष्कज्ञान पण एकलु, जाणो भविजन फोक ३८
लाभालाभे सुख दुःख, शत्रु मित्र सम भाव,
उदासीनता चित्तमां, भवसागरमा नाव ३९
निंदो निंदक नेहथी, पूजो पूजक कोइ,
धूर्तो कहेशे ढोंगीए, समभावे सब जोइ ४०
अंतर्दृष्टिगुणतणी, आतममाही अनुप,
वांछा बहु बोले सुणी, मनमा राखी चुप ४१

भावार्थ–ज्ञानथी त्याज्य वस्तुने त्यागी आदरवा योग्य वस्तु स्वरूपज्ञानाधार आत्मा प्रति प्रीति अंतरात्मायोगे उत्पन्न थइ छे एवा मुनिवरो आत्मानी साथे एकतानथी प्रीति करता छता कर्मनो नाश करी झटिति सिद्धि सौधमां प्रवेशे छे, हे आत्मा जेना योगे तारी अशुद्ध परिणति थइछे, एवु द्रव्यकर्म अने भावकर्मने स्वत शुद्धपरिणतिथी असंख्यातप्रदेशथी दूरकर, समतारूपीनी साथे ध्यान रूप सरोवरमा ,क्रीडा करता तु भवपाथोधि सहेजे उतरी मुक्तिनगर प्राप्त करीश, एम मुनिराज ध्यानमा भावे, अष्टकर्मनो आत्मानी साथे जे बंध तेने द्रव्यकर्म कहे छे, अने राग द्वेषनी परिणतिने भावकर्म कहेछे, आत्मस्वरूपमां रमणता करवाथी द्रव्य

कर्म अने भावकर्मनो नाश थायछे.

हे शिष्य तु परमात्मपदनी अभिलाषा राखतो होय तो स्वच्छंदताचारीयपणु टाळी गुरुना आधीन मन करी सद्‌गुरुनु सेवन कर के जेथी शाश्वतपद पामीश, कर्मरोगनो नाश करणार्थम् गुरु धन्वतरी वैद्य समान छे, तेमना दास थइएतो कर्मनो नाश थाय, वैद्य विना दवाओ पोताने फायदाकारक थती नथी, तेम गुरुनी आज्ञा प्रीति विना गमे तेटला सद्‌व्रतो धारण करीए तो पण यथायोग्य आत्महित थतु नथी

मूळ विन वृक्ष क्या ? अने गुरगम वण आत्मज्ञान क्यां ? श्रावक वर्ग अविद्या तथा अविनयना योगे स्वयगुरु बनी ज्ञानी गुरुनी अपेक्षा राख्या विना पोथी पुस्तक वाचे पण ते ज्ञान सत्यज्ञान तरीके थशे नहीं, पोतानी मेळे वाचेला ज्ञानथी वैराग्यादि गुणो जोइएतेवा प्राप्त थशे नहीं अने शकादि दोषोनु निराकरण थशे नहीं मुनिवर्गन पण गुरुगमद्वारा विनयभक्ति बहु मानथी ज्ञान ग्रहवु योग्य छे, अने तदर्थम् योगवहनादिनु शास्त्रमा अनत ज्ञानी वीतराग भदते भव्यात्माओना हितार्थे प्ररूपण कर्यु छे.

मानथी पूजावाना अर्थे जनमन रजनार्थम् विद्याभ्यास करवो, शास्त्र वाचवा इत्यादि सर्व मोक्षहेतुभूत कार्य नथी, आत्माना हितने माटे भणवु, गणवु, वाचवु, इत्यादि शुद्ध परिणाम थयो नथी त्या सुधी शिव साम्राज्य पामी शकातु नथी बाह्याडबरी क्रियाकाडना कपटथी देशोदेश विचरतो छतो मनुष्योने रजे ते पण आत्मलक्ष्यना उपयोग विना व्यर्थ छे तेमज क्रियाने नहीं माननार, व्रतादिनो खप नही करनार जेने सत्यज्ञान थयु नथी एवा वाक्‌पटुताथीज पडित पद धारण करनार शुष्कज्ञानीनु एकलु ज्ञान पण आत्महित प्रति थतु नथी.

लाभ, अलाभ, सुख, दुःख, शत्रु, मित्र, जीवितव्य, मरण आदि प्राप्त थतां जेनु समचित्त छे अने सांसारिक पदार्थो प्रति उदासीनता जेना हृदयमां वर्तेछे एवा सद्गुरुमुनिवर समारूप समुद्रमां नाव समानछे

निंदक खुशीथी (वेलाशक) एवा मुनिवरनी निंदा करो, अने पूजक भावथी भले पूजो, धूर्तो भले ढोंगी कहे, पण एवा महात्मा सर्वने समभावे निरखे छे बीजाना भला बुरा कहे तेमां पोताने शु ?

ज्ञानिगुरुमहाराजा आत्मानी गुणऋद्धि अतर्दृष्टि योगे नीहाली प्रमुदित थायछे, आत्माना असख्यातप्रदेशोछे, एकेक प्रदेशे अनत ज्ञान, दर्शन, चारित्र, वीर्यादि गुणो सदा शाश्वत भावे रह्याछे, वळी आत्मा पोताना स्वरूपे रुपीछे, पुद्गलनी अपेक्षाए अरूपीछे, ज्ञानरूप उपयोगनी अपेक्षाए साकारछे, दर्शनरूप उपयोगनी अपेक्षाए निराकारछे, वळी शाश्वत आत्मामा उत्पादव्यय अने ध्रुव समये समये वर्तेछे, वळी आत्मामां स्थित अगुरुलघु षट्गुणहानि वृद्धि करेछे, ए आत्मा पुद्गल द्रव्य साथे मिलेछे तोपण ते थकी न्यारोछे, अनत ऋद्धिनो भोक्ता मारा आत्मा विना परद्रव्यनी साथे मारे कइ सबध नथी, मारो आत्मा कर्मे अवरायोछे, पण ते गुणो मारा नष्ट थया नथी, मारा आत्माना गुणोने उपमा आपवी व्यर्थछे, अहो हुं आत्मा अलख्छु, सर्व पदार्थनो हु समये समये ज्ञाता छु, त्रण भुवनमा एवो कोइ पदार्थ नथी के माराथी अजाण्यो होय, हु प्रकाशकछु, अन्य द्रव्य प्रकाश्यछे, शाता अशाता ए हु जाणुछु, पण तेथी हु न्यारो छु, मारु स्वरूप वाच्यावाच्य वैखरी भाषाथी छे, मारा अनता गुणोछे तो हवे मारे परभावमां रमणता केम करवी ? एम विचारी आत्माना गुणो तरफ

पोतानी दृष्टि दीधीछे, जेणे एवा मुनिश्वरनुं शरण थाओ. एवा मुनिवरो आत्मध्यान-ध्याता- आपस्वभावमा विचरेछे, बकवादी- ओना धतींगो साभळी मौन धारण करी सद्गुरुओ विचरे छे, कुगुरुरूप विषधरोनी कुत्सितारुप विषज्वालाथी अज्ञान सर्व मनुष्यो प्रायः मुझाइ गयाछे, कोइ विरला आसन्न कालमा सिद्धिपद पा- मनारा महात्मओ वा तेमना अनुयायी शिष्यो सम्यग्मार्गे गमन करेछे

" दुहा. "

नाटकियानी पेठ ज्यां, धर्मतणो उपदेश;
अंतर्दृष्टि ज्यां नहीं, तेनो मिथ्या वेष. ४२
अहो दुःषम कलिकालमां, विरला सुभगुरु जोय,
बाकी फूट्यो राफडो, सर्पतणो अवलोय; ४३
वेष गच्छ ममता ग्रही, वळी कदाग्रह चित्त;
मतमतांतरमां पडया, दुर्गतिनारीमित्त. ४४

भावार्थ—अंतर्दृष्टिना उपयोग विना नाटकीयानी पेठे ज्यां ध- र्मनो उपदेश साधुनाम धरावी आपेछे तेनो वेष मिथ्याछे.

पचविष ज्या भेगा मळ्याछे एवा आ कलिकालमा विरला शुद्ध मुनियो होयछे, बाकी लौकिक अने लोकोत्तर कुगुरुओनो जाणे राफडो फुट्यो होय अने सर्पो फाटी नीकळे तेनी पेठे फाटी नीकळ्याछे.

वेषनी ममता, गच्छनी ममता वळी कोइ प्रकारनो मनमा कदाग्रह राखी जे साधु राग द्वेषना उदये मतमतांतरमा रक्त थया छता, शुद्ध प्ररुपणा भूळी पोतानी पुष्टिने माटे मोहांध बनी आ- त्मस्वरूपनुं भान भूली परभावमा राचेछे, माचेछे तेवा कुगुरुओ दुर्गति नारीना मित्र जाणवा.

" दुहा "

जलधि भरती ओटमांही, मत्स्यो आकुल थाय,
तीरे आवे प्राण नाश, गच्छतणो ए न्याय. ४५
शरीरपर ममता नहीं, करे शु तेने देह,
गच्छ वस्यो व्यवहारथी, अतर्गुण गण गेह. ४६

भावार्थ-समुद्रमां ज्यारे भरती ओट आवेछे, त्यारे जलप्रवाहना जोरथी मत्स्यो आकुल व्याकुल थायछे, तेमाथी कोइ फटाळीने काठे आवेछे, भरती उतरी जातां जल विना तरफडी मरण पामेछे, वा धीवरो तेने पकडी लेछे, अने दुःखभागी थायछे, तेम गच्छ सिंघाडामा वसतो कोइ मुनि, आवी केवल आत्मनी वात साभळी एकाकी विचरेछे, तो ते आत्महित करी शकतो नथी, माटे गच्छमाहीं वसीने आत्मसाधन करवु, वैरागी, त्यागी गीतार्थ ज्ञानी पोतानी योग्यताथी आत्मस्वरूपना ध्यान माटे एकल विहारी थाय तेनो एकात निषेध नथी.

जे मुनिवरोने शरीरपरथी आत्मज्ञानना बलवडे ममताभाव उठी गयोछे, तो ते मुनिवरोने शरीर राग द्वेषनु कारण थतु नथी तो पश्चात् व्यवहारथी गच्छमां वसेला तथा वसता एवा मुनियोने गच्छ उपर केम ममता थाय अने केम गच्छ राग द्वेषनु कारण थाय ? अलबत थाय नहीं गच्छ एटले साधुनो समुदाय, समूह, तेमा ज्ञानीने केम मोह थाय ? अने अज्ञानी तो गच्छनो स्वीकार करे नहीं, तो पण शरीरपर ममता धारण करे ज्ञानना अभावे सवरना कारणो पण अज्ञानीने आश्रवरूपे परिणमेछे, जेनाथी बंधायछे, तेनाथी ज्ञानी छुटेछे, माटे ज्ञानी गुरु महाराजा अतरमाथी ससार खेलथकी न्यारा रही वर्तेछे, ज्ञानिको भोग

सवी निर्जराको हेतुहे=ज्ञानी भोग कहे तो पण तेथी निर्जरा थायछे. ज्ञानीने कोइना प्रतिबंध नथी, राग द्वेषनु जे कारण लागे तेनाथी दूर रही आत्मध्यान करेछे. श्री यशोविजयजी प्रमुख सुगुरुओ जाणवा.

कपटी मुनिनु लक्षण कहे छे.

" दुहा. "

मनभीतरनी ओरने, वर्ते बाहिर ओर;
कहेणी रहेणी सम नहीं, ए पण चऊटा चोर. ४७

मनमां कइ अने बाहिर आचरण कइ कहेणी प्रमाणे रहेणी न होय, श्रावनी आजीजी करनार होय, कपटपणाथी वर्ते ते पण चउटानो चोर जाणवो, कदापि व्रतादि पाळी शकतो होय नहीं पण प्ररूपणा वीतरागमार्गना अनुसारे करे ते आराधक छे, पण कपटी तो विराधक छे

" दुहा "

योग्य जाणतां खोलता, पेटी:धर्म विशाल;
सेवो साचा दीलथी, सदगुरु महा कृपाल. ॥४८॥

ज्ञानी गुरु महाराजा योग्य जीव जाणीने धर्म रत्ननी पेटी मनोहर विशाळ खोले छे, अने तेना आत्मानु कल्याण करेछे, भव्योने उपदेश द्वारा मोक्ष मार्ग दर्शावे छे, अयोग्य मनुष्यनी आगळ मौन धारण करे छे, जे दृष्टिरागी न होय अने विनयी होय तेनी आगळ योग्यता प्रमाणे अवसरे उपदेश आपेछे, एक सरखो उपदेश प्रत्येक मनुष्यने परिणमतो नथी, माटे योग्यनेज उपदेश देवो, मेघनु जल, सीप, झाड, सर्प आदिना मुखमां पडयु

पतु भिन्न भिन्न परिणमे छे तेम अत्र पण दृष्टांत जाणवु.

कोइ एम कहेशे के-मुनिओए सर्वेने उपदेश आपवो अने उपदेश आपवा माटे तो साधुपणु अंगीकार कर्यु छे, अने न आपे तो अन्य कोण आपे ? तेने प्रत्युत्तरमा कहेवानु के-जेम सेनापति लश्करी सिपाइने तरवार खेलवा मारता शीखवे छे,पण जेनी योग्यता थइ नथी तेवा लघु बालकने कइ हाथमां तरवार (खड्ग) आपतो नथी, ने आपे तो बाळकनो नाश थाय तेम ज्ञानी गुरु योग्यता जेने प्राप्त थइ छे तेने उपदेश आपे छे. उपदेशमां पण पात्रना आधारे फेरफार रहे छे, केटलाक स्थाने संसारमां राचेला माचेला श्रावको विरतिधर्मना भापणरूपे उपदेश आपे छे, पण तेमनु वैराग्य त्याग विना सर्व अलेखे जाणवु. गुरुना उपदेशथी जे वैराग्य थाय छे ते अन्यथी थतो नथी. पंचमारकमां श्री तीर्थंकरादिना अभावे तथा पांचविषना योगे योग्य जीवो अल्प जाणवा माटे हे भव्यात्माओ मोक्षनी प्राप्ति माटे निर्मळ मनथी सद्गुरुनु शरण करो, अने ते फरमावे तेम श्रद्धाथी अंगीकार करशो तो परमपद पामशो

" दुहा. "

वने वने नहीं हस्तियो, युगे युगे नहि देव;
मुड मुंड नहि गुरुपणु, जाणी सद्गुरु सेव ४९
विपय भीख भोगी नहीं, ब्रह्मचारि गुणवंत,
कपट वृत्ति त्यागी सदा, नमु सद्गुरु महंत. ५०

वन वन प्रति हस्तियो होता नथी, अने भरत ऐरवतनो प्रत्येक आरकमां कइ तीर्थंकरोनी उत्पत्ति थती नथी, ते प्रमाणे मस्तक

मुहावी रजोहरण मुहपत्ति झाली लीघेला गृहस्थ जेवामां सर्वमा कइ गुरुपणु होतुं नथी, जीव अजीवनु स्वरूप जाणे नहीं अने दुःखगर्भित वैराग्यथी साधुवेष ग्रहण करी राग द्वेषना फदमा फसाय, हसे, तोफान करे, क्लेशकरे ते सर्व कुगुरुओजाणवा, जे महात्माओ विषयभिक्षाना भोगी नथी, ब्रह्मचारीछे, क्षमादि गुणवतछे, अने कपटवृत्तिनो जेणे त्याग कर्योछे अने जे गाडरीयानी पेठे चालता नथी तेवा सद्गुरुने हु पुनः पुन. नमस्कार करुछु, बाकी वेष धरवा मात्रथी शु ? माटे परीक्षा करी आत्मतत्त्वना उपयोगी गुरुनु शरण करवु, एकगुरुनी आज्ञा प्रमाणे वर्त्तवु, पतिव्रतानी पेठे माथे एक धर्मप्रद गुरु होय, एक गुरुनी भक्ति श्रद्धाथी शिष्यश्रावक सद्गुणधाम बनेछे, अनुभवथी जोता एम जो न वर्त्ताय तो संपूर्ण धर्म पामी शकाय नहीं, कोइ गुरु कंइ कहे अने कोइ गुरु कइ कहे, हवे बेमांथी कोनी आज्ञा मानवी, जेवो जोइए तेवो एकथी अधिक गुरुओपर भक्तिभाव रहे नहीं, घणा पक्का अनुभवीओने आ वाक्य सत्य लागशे, नहीं लागे तेनु भाग्य, बाकी अन्य सुसाधुओ मानवा पूजवा योग्यछे. तेमनी भक्ति करवी अने सदुपदेश सांभळवो आ वात गुरुव्रत ग्रहणनी अपेक्षाएछे.

" दुहा "

धर्मरत्न जेथी मुदा, लहीयुं गुरु रसाळ;
शरण शरण तेनुं सदा, अवर म झखो आळ ॥५१॥
भटकी गुरु गुरु वंदीया, शिर पटक्यु सोवार,
ज्यां त्यां माथु नामियु, लह्यो न किंचित् सार ॥५२॥

भावार्थ—जेनी पासेथी धर्मरत्न समजी समकित ग्रहण कर्यु, हर्षवडे ते गुरुनुं सदा मन वचन-अने कायाए करी शरण अंगी-

कार करवुं, अने भव्यात्माओ करो, अन्य आळपंपाळ करवो नहीं

कुगुरुओमां गुरुनी बुद्धि धारण करी वांधा, तेमना चरणे शतवार शिश पटक्युं अने हराया ढोरनी पेठें ज्यां त्यां माथुं घाल्युं अने माथुं नमाव्युं पण सार कइ पाम्यो नहीं, अने ते प्रमाणे वर्तवाथी आत्महित थवानुं नथी.

यत.

अगीयथ्थ कुसीलेहिं, सग तिविहेण वोसिरे ॥
मुख्खमग्गसिमे विग्घ, पहमि तेणगे जहा ॥१॥

अगीतार्थ अने कुशीलियानो संग त्रिविधे वोसिराववो, पथमां चोरनी पेठे मोक्ष मार्गमां विघ्न करनाराछे.

" दुहा. "

एम अनंता भव भमी, पाम्यां दु ख अपार,
सद्गुरु स्हेजे ओळख्या, तार तार मुज तार ॥५३॥

भावार्थ-एम अनादिकालथी कुगुरुनी संगतियोगे आत्माना अशुद्ध परिणामे, चतुर्गत्यात्मक ससारमां अनंतिवार भ्रमण करी विचित्र शरीर धारण करी ताडन तर्जन, क्षुधा, तृषा, रोग, शोक, वियोगादिथी अनंत दुःख लहयुं, हवे भवितव्यतायोगे सद्गुरुने ओळख्या, जीव आनंद पामी, गुरु विश्वासथी कहेछे के हे गुरु तुं मने तार तार, तार तार ए शब्द पुनः पुन. कथनथी संसार भय साथे मुक्ति मार्गनी अति आकांक्षा जणावी, आत्मार्थी ध्यानी समकित दाता धर्मगुरुनी आज्ञा प्रमाणे वर्तवुं

" परमात्मार्थि गुरुभक्त शिष्योनुं लक्षण कहेछे. "

" दुहा. "

गुरु विनयी भक्ति घणी, श्रद्धा ए मन स्थिर;
शिवपद अर्थी साहसी, मनमां अति गंभीर ॥५४॥

गुरुनो विनय मन वचन अने कायाथी करवामा तत्पर होय, यथाशक्ति भावथी अत्यत भक्ति गुरुनी करनार होय, गुरुक्त तत्त्वने विषे जेनी श्रद्धा स्थिरपणे होय वा गुरुना द्वेषीला इर्ष्यावाळा तथा तेमना प्रतिपक्षी कुगुरुओ तथा कुभक्तो आडुं अवळु समजावे, गुरुना दोषो देखाडे कुयुक्तिथी गुरु महाराजे कहेला तत्त्वनु खंडन करे, वळी एम कहे के-एनामा शो भलीवारछे, एतो कइ जाणतो नथी. कपटीछे, एम पोतानी मरजीमा आवे तेम बोले पण तेथी सुशिष्योनी गुरु उपरनी श्रद्धा जरा मात्र पण कमी थाय नहिं, उलटु सुवर्णने जेम जेम गाळीए तेम तेम दिप्तिमंत थाय तेम गुरु भक्त शिष्योनी श्रद्धा उलटी वधती जाय, अने गुरुओनी सगतिथी श्रद्धा उठे तो पीतळ समान भक्तो जाणवा, एवा भक्तो ४ चार गतिमा भटक्या, भटकेछे, अने भटकशे, श्रद्धा बे प्रकारनी छे, हळदरना रंग समान अने अन्य मजीठ समान, हळदर समान श्रद्धानो कारण पाम्याथी नाश थायछे, माटे गुरु उपर मजीठना रंग समान श्रद्धा थवी जोइए वळी श्रद्धाना बे भेदछे. १ प्रशस्य श्रद्धा, अने २ अप्रशस्य श्रद्धा ते प्रत्येकना पण बे भेद छे, हळदर रंग समान, मजीठ रंग समान, वळी लौकिक गुरु अने लोकोत्तर गुरुनी श्रद्धा जाणवी

वळी श्रद्धा बे प्रकारनी छे, व्यवहार नय गुरु श्रद्धा,-व्यवहार नयथी गुरु अनेक प्रकारनाछे, पापनी विद्या शिखवे ते पाप

दुग्धपानसदृश अयोग्यने तत्त्वोपदेशछे, योग्य अने अयोग्यनी परीक्षा करवी गुरुमहाराजना हस्तमाछे, बिडालना उदरमां खीर टकती नथी तद्वत् अयोग्यना हृदयेधर्मतत्त्व टकतुं न थी अविनयीने गुह्यधर्मतत्त्वरहस्य आपवु आत्महितकर थतु नथी

समति काले धर्मतत्त्वनो उपदेश शाक भाजीपालानी पेठे योग्य अयोग्यनी परीक्षारहीत दृष्टिगोचर थायछे, तेथी वाङ्क्लेश वा अल्पफळनी प्राप्ति थायछे, खेडुत पण भूमीनी परीक्षा करी वाववा योग्य धान्यकाळे वावेछे, तो धर्मरुप बीज योग्यायोग्यनी परीक्षा कर्या विना काळविना कोइपण मनुष्यना हृदयमा रोपवु, ते अनुचित, चिंतनीयछे जगत्मा मनावा पूजावानी लालचे जगतूना प्रवाहमां पडेला गुरुनाम धरावनाराओ गमे तेम उपदेशआपी भोळा जीवोने फसावी पोताना वशमा करी लेइ राचेछे, माचेछे, ते पोतानु तथा अन्यनु यथायोग्य भलु करी शकता नथी सद्गुरु स्वतन्त्रछे, योग्य होय तेहने उपदेश आपे, अन्यथा मौन रहेछे.

कुयुक्ति करनारा अने पोतानी पंडिताइ जणावनारने सद्गुरु अतःकरणथी उपदेश आपता नथी, तेमज गुरुना वचन उपर विश्वास नथी तेनी साथे गुरुजी माथाकूट करता नथी पत्थर उपर कमल उगे तो अविश्वासीने गुरुनो उपदेश लागे. गुरुना उपदेशथी वचमा पोतानु डहापण चलावनार गुरुभक्त कही शकाय नहीं, हालना काळमा गुरुभक्त थवु मुश्केलछे, केटलाक पत्थर समान कुगुरुओछे, पोते ससार समुद्रमा बूडे अने स्वआश्रितोने बुडाडे, ससार समुद्र तरवामा केटलाक पादडा समान गुरुओछे, अने केटलाक वहाण समान छे, एमजाणी सद्गुरुनु अवलबन करवु ए परमार्थ छे.

" दुहा "

समकितदायक सद्गुरु, तेनुं नहि मन भान;
परोपकारी बुद्धि वण, ते भटके अज्ञान. ॥ ६२ ॥

समकित दायक सद्गुरुना उपकारनु जेने भान नथी ते परोपकारिथी अजाण सम्यकत्वनो सार फल पामी शके नहीं, उपकार बुद्धिनी विकलताए गुरना विनयना अभावे राखमा घी होम्या जेवु थाय ते ससार समुद्रनो पार पामी शके नहीं.

" दुहा. "

समकितदायक गुरु अने, दीक्षा गुरुमां भेद;
अतर रवि खजुआ समो, सुशिष्य मनमां वेद. ६३
दीक्षा दायक महामुनि, धर्मगुरु जग जोय,
समजे समजु सानमां, करो न सशय कोय ६४

भावार्थ–सम्यकत्व दायक धर्मगुरु अने दीक्षा गुरुमा घणो भेद छे क्या, रवि अने क्या खद्योत एटलो अतर् हे सुशिष्य मनमा जाण दीक्षा प्रदायक गुर बाहुलताथी धर्मगुर होइ शके छे. कारण के–धर्मप्राप्ति जेनाथी थइ होय ते दीक्षा आपे तो ते होइ शकेछे, समजु सानमा समजशे शसयनु कइ प्रयोजन नथी. धर्मगुरुनो उपकार कोइ पण रीते वळे तेम नथी

" दुहा "

एवा गुरुने सेविए, थइए सद्गुण धाम,
गुण धारी शिष्यो लहे, शिवपुरनो विश्राम. ६५

सद्गुणग्राम भूत गुरुपदपकंज सेवता अनेक गुणधाम भूत

शिष्यो थाय, अने गुणधारी शिष्यो शिवपुरनो विश्राम लइ शके छे, सद्गुणी थनारने प्रथम गुरुनी आवश्यकताछे, दुष्पथथी सुपथे लावनार गुरुमहाराजछे, जेने गुरु नथी ते पोते गुरु थइ शकतो नथी.

" दुहा. "

सहस्र सूर्योदय हुवे, चंद्र उगे शतवार,
दीपक करो हजार पण, अंध न जुवे लगार ६६
ज्ञानी सद्गुरु जो मले, अतिशय दे उपदेश,
मूरखने लागे नहीं, उलटो थावे क्लेश. ६७

भावार्थ-सहस्रगमे सूर्यो प्रकाशे, हजारवार चंद्रनो उदय थाय, हजार दीपक सळगावो, पण जे अंधपुरुषछे ते जरा मात्र पण देखी शकतो नथी. तेम मूर्खात्मा मोहांध जडपुरुषने ज्ञानी सद्गुरु मळे अने अतिशय उपदेश आपे तोपण मगशेलीया पाषाणनी पेठे जरा मात्र असर थती नथी उलटो मूर्खने क्लेश थायछे, अने सद्गुरुने पण वाक्क्लेश अवशेष फल जाणवु

" दुहा "

जडताए जड थइ रहे, गुरुमां कुगुरु बुद्धि,
रासभपुच्छ ग्रही इव, करे न आतम शुद्धि ६८
सद्गुरुनो विश्वास नहि, कुगुरुनो विश्वास,
अज्ञानी पशु आतमा, सर्व दु खनो वास. ६९

भावार्थ-आत्मस्वरूपनी अज्ञानताए जड जेवो थइ जइ दृष्टिरागथी तथा मोहांधपणाथी गुरुस्वरूप समज्या विना कुलनी मर्यादाए गुरुपणु मानतो अज्ञानी जीव गुरुमां अगुरुपणु मानेछे,

अने अवळी परिणतियोगे कुगुरुमां गुरु बुद्धि धारण करेछे, ते पोतानी कुटेवने गद्धापुच्छ ग्रहनारनी इव भवभ्रमण दु.ख राशि पामतां सद्गुरुनो उपदेश लागता पण पोतानी हठ मुकतो नथी. तेवो अज्ञानी जीव पोताना आत्मानी शुद्धि करी शकतो नथी जेने सद्गुरुनो विश्वास नथी अने कुगुरुना वचननो विश्वासछे, ते अज्ञानी पशु आतमा सर्व दु.खनु पात्र बनेछे, अवळी परिणतियोगे अवळा मार्गे भवितव्यतायोगे गमन करेछे. तेवा जीवने योग्यतानी प्राप्ति विना उपदेश पण क्लेशभूत थायछे, राजा, दीवान, शेठ, लक्षाधिपति होय पण योग्यता विना सद्गुरुनो उपदेश असर करतो नथी.

" दुहा "

तर्कशक्ति जेनी घणी, वाणी जस गंभीर,
मोक्षाशा मनमां वशी, धर्मकार्यमां धीर. ७०
एवा शिष्यो पामशे, अनेकान्त सुपथ,
गुरुगम ग्रंथो वांचीने, थाशे महानिग्रंथ. ७१

भावार्थ—जेनी तर्कशक्ति घणी होय, अने वाणी गंभीर होय, खप पडे तेटलु बोले, मोक्षाशा जेना मनमां वशी होय. अने धर्म कृत्यमां मेरुवत् अडगवृत्ति होय, गुरुना वचनो वज्रना टांकणानी पेठेज जेम जेना हृदयमां कोतराता होय, एवा सद्गुणी शिष्यो स्याद्वाद अनेकांत मार्ग पामशे अने स्वच्छंदाचारीपणु तथा अहंपणु त्यागीने गुरुगम ग्रंथोने वांची धारी श्रावकपणु अंगीकार करशे. अथवा शक्ति परिणामयोगे निग्रंथ अवस्था ग्रहण करशे, योग्यता पोतानी केटलीछे अने कया ग्रंथो वाचवा योग्यछे. ते गुरुमहाराज जाणेछे माटे तेमना फरमावेला ग्रंथो वांचवा

एवी हिताकांक्षा धारवी.

" दुहा. "

सदा महानिग्रंथथइ, पाळे पचाचार,
पचमहाव्रत पाळता शुद्ध धरे व्यवहार ७२
निश्चय आत्मस्वरुपमा, रमता रहे निशदीन,
गुणपर्याय विचारने, करतामां लयलीन ७३

भावार्थ–द्रव्यथी धन धान्यादि नवविध परिग्रह त्यागी भावथी राग द्वेषनो त्याग करी निर्ममत्वपणे वायुवत् अप्रतिबद्धपणे सदा विचरे, व्यवहारथी पचमहाव्रत अने ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, तप आचार अने वीर्याचारने पाळे, आदरे, निश्चयनयथी पोताना आत्मस्वरुपमा निशदिन मुनिवर रमे हवे प्रसगत. प्रथम षड्द्रव्यनु स्वरुप बतावेछे

१ धर्मास्तिकाय द्रव्य–चलण सहावो धम्मो,=चालताने सहाय आपवानो गुण धर्मास्तिकायनोछे, ते अजीवद्रव्यछे, अरुपी, अचेतन, अक्रिय, चलनसाह्यगुण तेनो जाणवो माछलु पाणीमा तरेछे तेनो ए स्वभावछे, पण पाणी तेने साह्यकारकछे धर्मास्तिकायना असख्याता प्रदेशोछे, प्रत्येक प्रदेशमां उत्पादव्यय थया करेछे, द्रव्य स्वरुपथी ध्रुवपणु असख्याता प्रदेशोमा अनादि अनतमे भागेछे अगुरु लघुथी प्रत्येक प्रदेशमा षड्गुण हानि वृद्धि थया करेछे धर्मास्तिकायद्रव्य अन्यद्रव्यपणा परिणमतु नथी अने अन्य द्रव्यना गुणोनु घातक नथी, केवलज्ञानवडे धर्मास्तिकाय द्रव्य देखी शकायछे अन्य जीवोने केवलीना वचननी श्रद्धा गम्य छे, धर्मास्तिकायना कोइपण प्रदेशनो नाश थतो नथी, एक ठेकाणेथी अन्य स्थाने तेना प्रदेशो जता नथी, लोकाकाशमां व्यापीने

रहेछे, धर्मास्तिकायने कोइ उत्पन्न करनार नथी, जलभा थलमा ज्या त्या धर्मास्तिकाय व्यापी रह्युछे, तेनामा वर्ण गध रस अने स्पर्श नथी. समये समये अनता जीवोने तथा अनत पुद्गलमय परमाणुओने गमनमा साहाय्य आपेछे. प्रदेशे प्रदेशे अनता गुण अने अनता पर्यायछे. पोताना स्वरूपे धर्मास्तिकाय अस्तिरूपेछे. अने पररूपे नास्तिछे प्रदेशे प्रदेशे अनत स्वगुणनी अस्तिता समये समये परिणमी रहीछे, तेमज धर्मास्तिकायना प्रत्येक प्रदेशे अनत परद्रव्य, परक्षेत्र, परकाल, अने परभावनी नास्तिता परिणमीछे, तेमज प्रदेशे प्रदेशे अनत पर्यायनी समये समये अस्तिता जाणवी तेमज धर्मास्तिकायना असख्यात प्रदेशमा समये समये परद्रव्यना अनत पर्यायनी नास्तिता परिणमी रहीछे, जे समयमा अनत निजगुणनी अस्तिता तेज समयमा अनत परगुणनी नास्तिता जाणवी. जो धर्मास्तिकायमा परद्रव्य, गुणपर्यायनी नास्तिता न रहे तो अन्य द्रव्यरूपे धर्मास्तिकाय परिणमे अने द्रव्य द्रव्यनो भेद रही शके नहीं, माटे स्वगुण स्वद्रव्यनी अस्तिताना समयमा परद्रव्यनी नास्तिता मानवाथी प्रत्येक द्रव्य पोताना स्वरूपे परिणमे, अस्तिपणु धर्मास्तिकायमा रह्युछे, ते पण अवक्तव्यछे, अने अनत नास्तिपणु रह्युछे, ते पण अवक्तव्यछे, एक शब्दनो उच्चार करता असख्याता समय व्यतीत थायछे, तो एक समयमा स्थित अस्तिता अने नास्तितानु कथन अशक्यछे, ज्ञानवडे जाणी वैखरी भाषाथी तेनु स्वरूप कही शकातु नथी, थोडु कही शकाय छे, जेटलु जाणवामा आवे तेटलु वैखरी वाणीथी कही शकातु नथी माटे वक्तव्यावक्तव्यपणु तेमा जाणवु. इत्यादि विचारतां सम्यक्त्व थायछे, वळी धर्मास्तिकाय छे ते द्रव्यपणे नित्यछे,

अने उत्पाद, व्ययनी अपेक्षाए अनित्य छे, द्रव्यार्थिक नयनी अपेक्षाए धर्मास्तिकाय शाश्वतछे, अने पर्यायास्तिकनयनी अपेक्षाए धर्मास्तिकाय अशाश्वतछे, धर्मास्तिकाय ज्ञेयछे, पण तेनामा ज्ञातापणु नथी, जड छे माटे

२ अधर्मास्तिकाय–स्थिर रहेवामा साहाय्यदायक गुण अधर्मास्तिकायनो छे, मनुष्य मार्गमा चालतो थाके छे, त्यारे झाड जेम तेने बेसवामां सहाय्यकारक छ, तेम अधर्मास्तिकायनी साहाय्यथी जीव पुद्गल स्थिर थाय छे, ए द्रव्यना चारगुण छे, अमूर्त, वर्ण, गंध, रस, स्पर्श थकी रहित, जीवत्वथी रहीत माटे अचेतन, विभाविक क्रिया रहित माटे अक्रिय, निश्चयनयनी अपेक्षाएतो सक्रिय छे, स्थिर पदार्थने साहाय्य करे छे, माटे स्थिर साहाय्यगुण अधर्मास्तिकाय असंख्यात प्रदेशमयी छे, लोकाकाशमा व्यापीने रह्युछे, अनादि कालथी छे, माटे तेनो उत्पन्न कर्ता कोइ नथी, कोइ पण काले तेनो अंत नथी, माटे अनंत छे, अधर्मास्तिकायना प्रत्येक प्रदेशमा अगुरु लघुथी समये समये षड्गुण हानि वृद्धि परिणमी रही छे, अधर्मास्तिकाय चर्म चक्षुथी देखी शकातु नथी. अधर्मास्तिकायना चार गुण छे, रुप रहित माटे अमूर्त, अचेतन एटले जीव रहीत, अक्रिय एटले विभाविक क्रिया रहीत, अने स्थिर सहायगुण ए चारगुण अनादि अनंतमे भागे अधर्मास्तिकायमाछे, समये समये अनंत जीवोने तथा पुद्गलोने स्थिति सहाय आपे छे, एकेक प्रदेश अनंता गुण पर्याय रह्या छे अधर्मास्तिकायद्रव्यमां स्वगुण पर्यायनी अस्तिताछे, परगुण पर्यायनी नास्तिता छे, द्रव्यत्वनी अपेक्षाए दरेक अधर्मास्तिकायना प्रदेशो एक सरखा छे, कारण के दरेक प्रदेशमां द्रव्यत्वपणु रह्यु छे, किंतु अगुरुलघुथी थतीषड्गुणहानिवृद्धि प्रदेश प्रदेश प्रति भिन्न भिन्न परिणमी

रही छे. ते अधर्मास्तिकायना प्रदेशमा अनतगुणनी हानी छे, त्या अनत गुणहानी मटीने असंख्यात गुणहानि थाय छे, संख्यात गुणहानि होयछे, त्या अनतगुण हानि थायछे, एम असख्याता प्रदेशोमा षड्गुण हानिवृद्धि समये समये भिन्न भिन्न परिणमवाथी सर्व प्रदेशो अपेक्षाए एक सरखा नथी, एक स्थानथी बीजे ठेकाणे प्रदेशो गमन करता नथी माटे प्रदेशो अचल छे, वळी प्रदेशना कडका थता नथी, माटे अखडछे. अधर्मास्तिकायमा जाणवानो गुण नथी माटे जडछ, पोताना स्वरूपे अधर्मास्तिकायमां अनंत शक्तिछे, तेनी केवली भगवान्ना वचनथी श्रद्धा करवी. आ द्रव्य लोकाकाशमा व्यापक छता कोइ द्रव्यना गुणनु घातक नथी. अने ते अन्य द्रव्यमा परिणमतु नथी, पोताना स्वभावनो त्याग करतु नथी. अधर्मास्तिकायने पुण्य पाप लागी शकतु नथी, परद्रव्यनी साथे परिणम स्वभाववाळा जीवद्रव्यने पुण्य पाप लागी शकेछे. अधर्मास्तिकाय द्रव्य जाणी शकायछे, माटे अधर्मास्तिकाय प्रकाश्यछे, अने ज्ञान प्रकाशक छे, अधर्मास्तिकाय ज्ञेयछे, अने जीव ज्ञाताछे, द्रव्यार्थिक नयापेक्षया अधर्मास्तिकाय शाश्वत छे पर्यायार्थिक नयापेक्षया अधर्मास्तिकाय अशाश्वत छे, अन्य द्रव्य साथे परिणमतु नथी माटे अधर्मास्तिकाय अपरिणामीछे, अधर्मास्तिकाय द्रव्यरूपे नित्य छे. अने पर्यायरूपे अनित्य छे, अनत अस्तित्व धर्मथी युक्त अधर्मास्तिकायछे. आ द्रव्य जाणवा योग्यछे, अने ते आदरवा योग्य नथी फक्त ते द्रव्यनु स्वरूप ज्ञानदृष्टिथी जणायछे, आत्मानी साथे तेने कइ सबध नथी. एकेक प्रदेशे अनत धर्म अनतगुण अनतपर्यायनी अस्तिता छे, अने अधर्मास्तिकायना एकेक प्रदेशमा परद्रव्यना अनतधर्म अनतगुण अने अनतपर्यायनी नास्तिता व्यापी रहीछे, प्रत्येक प्रदेशमा रहेला धर्मनी अस्तिता

तथा परधर्मनी नास्तितानी अपेक्षाए सप्तभंगी उत्पन्न थायछे, जेम जेम सम्यग् ज्ञान थतु जायछे, तेम तेम उपयोगनी एकाग्रताए विशेष ज्ञान थतु जायछे.

३ आकाशास्तिकाय–अधर्मास्तिकायादिकने अवगाहना आपवानो स्वभाव आकाशनोछे, आकाशना बे भेदछे, १ लोकाकाश अने २ अलोकाकाश, जेमां छ द्रव्यनी स्थीति छे, ते लोकाकाश जाणवु, जेमा आकाश सिवाय अन्य पदार्थनी स्थीति नथी तेने अलोकाकाश कहेछे तेना चार गुण छे, अरूपी एटले रूपरहीत, आकाशनु काळु, पीळु, धोळु, नीळु, श्वेतआदि रूप नथी

प्रश्न–आकाशनु चक्षुथी जोता काळु रूप देखायछे, अने तमे केम ना कहोछो ?

उत्तर–आकाश सामु देखता जे कालीमा देखाय छे ते कइ आकाशनी कालीमा नथी किंतु पुद्गलद्रव्यनी कालीमाछे, माटे आकाशनु रूप नथी

प्रश्न–निर्मळ जलथी परिपूर्ण स्थिर सरोवरमा आकाशनु प्रतिबिंब पडेछे, देखो, सरोवर माटे आकाशनु रूप मानवु जोइए

उत्तर–विशेष सूक्ष्मबुद्धिद्वारा परीक्षा करतां अवबोधाशे के आकाशनु प्रतिबिंब सरोवरमा पडतु नथी, अने सरोवरमां जेनु प्रतिबिंब पडेछे ते पुद्गलद्रव्यछे, तेमा जोता माल्लुम पडेछे के–वादळा विगेरेनु प्रतिबिंब सरोवरमा देखायछे, साकारनु प्रतिबिंब पडेछे, निराकारनु प्रतिबिंब पडतु नथी, छ द्रव्यमा एक पुद्गल द्रव्य साकारछे, बाकीना पाच द्रव्य निराकारछे, साकारनु साकारने विषेज प्रतिबिंब पडेछे, आकाश निराकारछे माटे तेनु प्रतिबिंब पडी शकतु नथी.

प्रश्न–आत्माने विषे अन्य द्रव्य भासेछे, त्यारे आत्मामा अन्य द्रव्यनु प्रतिबिंब पड्या विना केम भासे ?

उत्तर–दर्पणमां मुखनुं प्रतिबिंब जेम भासेछे, तेम आत्मामां अन्य पदार्थोना प्रतिबिंब पडतां नथी, ज्ञान गुण पोतानी शक्तिथी सर्व पदार्थोने जाणेछे, तेथी सर्व पदार्थोनां प्रतिबिंब आत्मामा पडतां नथी. ए उपरथी सिद्ध थायछे के–आकाश अरुपी छे, अचेतन एटले जीवरहित, विभाविक क्रियारहीत आकाश जाणवुं. केटलाक मतवादी एम मानेछे के–आकाशथी जळनी उत्पत्ति थइ पण ते मतव्य नथी. कारण के–आकाश निराकार अक्रियछे अने तेनाथी कोइ पण पदार्थनी उत्पत्ति थती नथी, जळादिक साकारछे, अने आकाश निराकारछे, माटे निराकारथी साकार वस्तुनी उत्पत्ति थइ शके नहीं, वळी आकाश अनादि कालनु छे, अने कदी तेनो अंत आववानो नथी माटे अनंत छे, माटे आकाशनो बनावनार कोइ नथी, वळी आकाशनो उत्पन्न करनार कोइ होवो जोइए, एम कोइ कहे तो विकल्प के–आकाशरूप कार्यनु उपादान कारण कोण ? अने निमित्त कारण कोण ? प्रथम पक्ष–आकाशनुं उपादान कारण इश्वर जो कहेशो तो ते संभवतो नथी, कारण के इश्वर ज्ञानवान् छे, अने आकाश जडछे, इश्वरनो ज्ञान गुण आकाशरूप कार्यमां आववो जोइए, पण तेम नथी माटे इश्वर आकाशनु उपादान कारण कहेवाय नहीं, अलबत आकाशनु उपादान कारण कोइ नथी. जेने उपादान कारण नथी तेने निमित्त कारण पण नथी. इश्वर आकाशनुं निमित्त कारण नथी. आकाश अनादि काळथी स्वयंसिद्ध छे, आकाशमां अवगाहना गुणछे. तेथी अन्य द्रव्योने रहेवा माटे

अवकाश आपछे. आकाशना एकेक प्रदेशे अनंता धर्म, अनंता पर्याय रह्या छे आकाश द्रव्यना प्रत्येक प्रदेशो द्रव्यत्व पणाथी एक सरखाछे, अने प्रत्येक प्रदेशमां अगुरु लघुथी षट्गुण हानि वृद्धि समये समये थइ रहीछे तेनी अपेक्षाए एक सरखा नथी आकाशमां स्वद्रव्य स्वक्षेत्र, स्वकाळ, अने स्वभावनी अपेक्षाए अस्तिपणु छे अने परद्रव्य, परक्षेत्र, परकाळ अने परभावनी अपेक्षाए नास्तिपणु छे आकाशमां परद्रव्यनी जे नास्तिता ते पण अस्तिपणे छे. परद्रव्यनी नास्तिता अस्तिपणे आकाशद्रव्यमां न रहे तो अन्यद्रव्यनी अस्तितानो नाश थाय अने अन्यद्रव्य कहेवाय नहीं, जे समयमां स्वद्रव्यादिकनी अस्तिता छे तेज समयमां परद्रव्यादिकनी नास्तिता छे, अस्तिता अने नास्तिता वैखरी वाणीथी कही शकाय सर्वथा माटे अवक्तव्य छे. इत्यादि विचारतां सप्तभंगी उत्पन्न थायछे. आकाशमा जाणवानो स्वभाव नथी. माटे जडछे. वळी तेना प्रदेशना कटका थता नथी माटे अखंडछे. ज्ञानगुणे जणायछे माटे ज्ञेयछे. लोकालोक व्यापी आकाशद्रव्य छे. जळमां थलमां ज्यां त्यां अरुपीपणे आकाशद्रव्य व्यापीने रह्युंछे, आत्मगुणोनु घातक आकाशद्रव्य नथी. अने ते अन्य द्रव्यमां संयोगपणे परिणमतु नथी. अन्य द्रव्यो तेनामा रहेछे. माटे अन्य द्रव्य आधेय छे. आकाश द्रव्य आधार छे. आकाशद्रव्यना स्कंध, देश, प्रदेश, केवलज्ञानथी जाणी शकायछे, आत्माना एक प्रदेशमां ज्ञाननी एवी शक्ति छे के–आकाशद्रव्यना अनंता गुण–अनंता पर्याय, अनंत धर्म एक समयमां जाणी शकेछे.

४ पुद्‌गलास्तिकाय–वर्ण, गंध, रस अने स्पर्श थकी युक्त पु-

द्गलद्रव्यछे, तेना चारगुणछे मूर्त्त अचेतन जीवपणाथकी रहीत. सक्रिय एटले मळवा विखरवारूप क्रिया करेछे, पुद्गलपरमाणु अनतछे. परमाणु बाळ्यो बळे नहीं, भेद्यो भेदाय नहीं, परमाणु दर्शन चक्षु अगोचर जाणवु. द्विपरमाणुं सयोगी स्कधने द्विप्रदेशी स्कध कहेछे. अनंत परमाणु सयोगी स्कध दृष्टिगोचर थायछे, ते व्यवहार परमाणु कहेवायछे. निश्चयनये तो स्कधरुथायछे एक परमाणुमा एक वर्ण एक गंध एक रस अने बे स्पर्श रह्याछे, परमाणुथी बनेला केटलाक स्कधो चक्षुथी देखाय पण हाथमा पकडाय नहीं, केटलाक स्कधोनो स्पर्श ग्रहाय किंतु चक्षुथी देखाय नहीं जेम वायु. केटलाकनो गंधग्रहाय पण चक्षुग्राह्य थइ शकता नथी जेम कस्तुरीना पुद्गल स्कंधो विगेरे. एम विचित्र स्वभावयुक्त पुद्गलस्कधो थायछे. अने विचित्र पदार्थ बनेछे पश्चात् विखरी जायछे. यावन्त पदार्थो चर्मचक्षुथी ग्राह्यछे ते सर्व पुद्गल छे केटलाक पुद्गल स्कधो चर्मचक्षुथी पण अग्राह्य छे, अधकार तथा प्रकाश पण पुद्गल द्रव्यछे. कर्म पण पुद्गल द्रव्यछे, पचश औदारिकादि शरीर पण पुद्गल द्रव्यछे. बादर पदार्थना ज्ञानथी सूक्ष्म पदार्थ स्वरूप अनुमाने जणायछे, पत्थर मृत्तिका आदि सर्व पुद्गल द्रव्य जाणवा. एकेंद्रियथी यावत् पचेंद्रि जीवोए पुद्गल स्कधोनें शरीरपणे ग्रही स्वसत्तामा लीधाछे, ते सर्वपुद्गलद्रव्यछे, पुद्गलद्रव्य जीवद्रव्यना गुणोने आच्छादन करेछे पुद्गलद्रव्यरुपी छता जीवद्रव्यने बाधा करेछे.

प्रश्न–जीवनी अनंति शक्ति छे, तेने पुद्गल द्रव्य शु करी शके ?

उत्तर–अधुना कर्मधारक जीवोनी अनति शक्ति तिरोभावे सत्तामा वर्ते छे, किंतु आविर्भावे शक्ति प्रगट थइ नथी अनादि का-

ळथी आत्माने कर्म लागुछे, तेथी अनादिकाळथी आत्मानी शक्ति तिरोभावे वर्तेछे. जो आविर्भावरूपे शक्ति थइ होय तो कर्मनु कइ जोर्र नथी, माटे कर्मना योगे जीवनी शक्ति अवरारुछे, जेम सूर्यने वादळो आच्छादन करेछे तो सूर्यना प्रकाशनु आच्छादन थायछे, प्रकाश ढंकाइ जायछे, किंतु यदा वादळों विखराइ जायछे त्यारे प्रकाश स्वच्छ थहेछे. एम आत्मा अने कर्म विषे जाणवु आत्मा सूर्य समान छे, अने कर्म वादळा समानछे, दृष्टांत एक देशी जाणवु.

प्रश्न–अरूपी आत्माना गुणोनो उपघातरूपी कर्मथी शी रीते थइ शके?

उत्तर–ब्राह्मी औषधिरूपी, अरूपी बुद्धि शुद्धिना उत्तेजकछे, मदिरा रूपी छतां ज्ञानीना अरूपी ज्ञाननु आच्छादन करी ग्रथिल बनावेछे, तथा रीतो आत्माना असंख्यात प्रदेशे लागेलां ज्ञाना वरणीयादिक कर्मरूपी अरूपी आत्मगुणोनी आविर्भावतानु आच्छादन करेछे.

विषयांतरथी निवृत्त थइ पुद्गल द्रव्यनु स्वरूप कथतां अन्य प्रश्न करेछे

प्रश्न–पृथ्वी, पाणी, वायु विगेरेनो उत्पन्न कर्त्ता इश्वरछे, अने तमे तेने केम अन्य स्वरूपे कथोछो.

उत्तर–पृथ्वी, पाणी, वायु विगेरनो कर्त्ता इश्वर नथी अनादि कालथी ते वस्तुओछे इश्वर अरूपी निरंजनछे तेनाथी रूपी पृथ्वी आदि जगत् बनी शकतु नथी, सर्व द्रव्य पोतपोताना स्वभावे वर्त्तेछे पुद्गल द्रव्यमा जाणवानो स्वभाव नथी माटे जडछे, प्रत्येक परमाणुमा उत्पात, व्यय, अने ध्रुवपणुछे. वर्ण, गंध, रस अने स्पर्शनो परावर्त्तना प्रत्येक परमाणुमां थायछे पुद्गल द्रव्यमा स्वगुण, स्वधर्म, स्वपर्यायनो अस्ति-

ताछे. परद्रव्य, परधर्म, परपर्यायनी नास्तितता पुद्गल द्रव्यमां छे जे समयमां अस्तितताछे, तेज समयमां नास्तितताछे अस्तिता अने नास्तितानुं स्वरूप वक्तव्या वक्तव्य रूपेछे पुद्गल द्रव्य चतुर्दश राजलोकमा व्यापीने रह्युंछे. पुद्गल परमाणुआ अनंताछे पुद्गल द्रव्यने आ जीवे शरीर, आहार, इन्द्रियादिपणे अनंतिवार ग्रहण कर्युं अने मूक्युं पण पुद्गल द्रव्य कोइ काले आत्मानुं थयुं नथी अने थवानुं नथी एनुं विस्तारथी स्वरूप गुरुमुखथी धारवुं.

५ काल–कालना त्रण भेद छे, अतीत काल, अनागत काल अने वर्त्तमान काल, कालनो समय अति सूक्ष्म छे, सर्व द्रव्य उपर कालनी वर्तना वर्ती रहीछे, काल द्रव्य आत्मगुणोनुं घातक नथी.

६ जीवद्रव्यास्तिकाय–जीव द्रव्य अरूपीछे, शरीरधारी जीव व्यवहारनयथी रुपी कहेवाय छे. जीव चेतन छे, पोतानुं स्वरूप निश्चयनयथी अक्रिय छे, अने वळी निश्चयनयथी पोताना धर्मनी क्रिया जीव करेछे, माटे जीव सक्रिय छे, व्यवहारनयथी जीवकर्मनी साथे भळ्यो छतो परद्रव्ययोगे गमनादिक क्रिया करेछे माटे सक्रिय छे. जीवद्रव्य अनंत छे. जीवना बे भेद छे. एक संसारी अने सिद्धना जीवो संसारी जीव पण अनंतछे, अने सिद्धना जीवो पण अनंत छे, ज्ञान. दर्शन, चारित्र, वीर्य, उपयोग ए जीवनुं लक्षणछे जीवमा स्वकीय द्रव्य, क्षेत्र कालादिकनी अस्तिता छे, परद्रव्यना द्रव्य क्षेत्र काळ भावनी जीव द्रव्यमा नास्तितताछे, स्वद्रव्यादिकनी अनंत अस्तिता अने परद्रव्यादिकनी अनंत नास्तिता समये समये जीवद्रव्यमा वर्ते छे. द्रव्यार्थिक नयथी जीव शाश्वतो छे, अने पर्यायार्थिकनयथी जीव अशाश्वतो

छे. जीवमां उत्पाद, व्यय अने ध्रुवपणु व्यापीने रह्यु छे, जीवना असंख्याता प्रदेश छे, एकेक प्रदेशे अनंतज्ञान, अनंतदर्शन, अनंत वीर्य, अनंतभोग, आदि ऋद्धि रहीछे, पंचद्रव्यना द्रव्य, गुण, पर्याय पर्यंत जाणवापणु एक आत्माना प्रदेशमां रह्यु छे तो असंख्याता प्रदेशनी तो वातज शी करेवी? निश्चयनये स्वगुणादिकनो कर्ता आत्मा जाणवो, व्यवहारनयथी कर्मनो कर्ता आत्मा जाणवो. व्यवहारना घणा भेदछे. शुद्ध व्यवहारनय, अशुद्ध व्यवहारनय शुभ व्यवहार, अशुभ व्यवहार, अनुपचरित व्यवहार, उपचरित व्यवहारनय, वळी व्यवहारनयना बे भेदछे. १ सद्भूत व्यवहार, बीजो असद्भूत व्यवहार. एक द्रव्याश्रित ते सद्भूत व्यवहार अने जे परद्रव्यनो आश्रय करे ते असद्भूत व्यवहार नय जाणवो.

प्रथम सद्भूत व्यवहारना बे भेदछे, एक उपचरित सद्भूत व्यवहार अने बीजो अनुपचरित सद्भूत व्यवहारनय. सोपाधिक गुण गुणीनो भेद देखाडे. जेम जीवस्यमतिज्ञान अत्रमतिज्ञान सोपाधिक गुणछे, अने जीव गुणी तेनो भेद देखाड्यो, ते उपचरित प्रथम भेद जाणवो.

तथा निरुपाधिक गुण अने गुणीना भेदे बीजो अनुपचरित सद्भूत व्यवहार जाणवो जेम जीवस्य केवलज्ञानम् जीवनु केवलज्ञान, अत्र केवलज्ञान निरूपाधिक गुणछ, अने जीव गुणी छे, माटे निरुपाधिकपणे गुण गुणीना भेदे बीजो भेद जाणवो

असद्भूत व्यवहारनयना बे भेद छे, एक उपचरित असद्भूत व्यवहार, अने बीजो अनुपचरित असद्भूत व्यवहार जाणवो

प्रथम भेद असंश्लेषितयोगे एटले कल्पित संबंधे होयछे, जेम

आ देवदत्तनु धनछे, अत्र देवदत्त अने धनने उपर उपरनो सबंध छे, स्वस्वामीभावरूप कल्पित संबधछे, ते माटे देवदत्तनुं धन कहेवु ते उपचारथी जाणवु. तथा देवदत्त अने धन ए बे एक द्रव्य नथी, माटे ते धननो आरोप देवदत्तने विषे असद्भूतछे ए उपचरित असद्भूत व्यवहार जाणवो. आत्मानी साथे कर्मसंश्लेषपणुछे, एटले आत्मानी साथे कर्म. तथा देहना संश्लेषपणाना (जोडावा या मळवा) ना योगे अनुपचरित असद्भूत व्यवहार जाणवो.

आत्मानी साथे अष्टकर्मनो संबधछे ते धन संबधनी पेठे कल्पित नथी. वळी औदारिक-वैक्रिय, आहारक, तैजस अने कार्मण शरीरनो आत्मानी साथे संबधछे ते पण धन संबधनी पेठे कल्पित नथी. विपरीत भावनाए निवर्ते नहीं, जावज्जीव रहे तेमाटे ए अनुपचरित अने कर्मादिक भिन्न विषय माटे असद्भूत जाणवो.

अनुपचरित असद्भूत व्यवहारनये जीव कर्मनो कर्त्ता जाणवो, अने उपचरित असद्भूत व्यवहारतः गृह धननो कर्त्ता जाणवो, तथा स्वजाति उपचरित असद्भूत व्यवहारे पुत्र पुत्रीनो कर्त्ता जीव जाणवो पुत्र पुत्री पोतानी जातिना छे, पुत्रादिक जीवना नथी तेम छता जीवना कहेवा ते उपचार, पुत्रादिक पोतानाथी भिन्नछे माटे असद्भूत जाणवो. विजाति उपचरित असद्भूत व्यवहारे धनादिकनो कर्त्ता जीव जाणवो. धन विगेरेनी जीवना करता जुदी जातिछे एटले ते पुद्गल जातिछे, माटे विजाति धनादिक जाणवु, धन विगेरेनो कर्त्ता जीवने कहेवो ते उपचार छे, कल्पितपणुं छे. धनादिक पोतानाथी भिन्न द्रव्यछे माटे असद्भूतपणु तेमा जाणवु.

स्वजाति विजाति उपचरित असद्भूतव्यवहारनयन नगरादिकनो कर्त्ता जीव जाणवो. जीव, अजीव बन्नेनो समास

तेमां थयो अशुद्धनिश्चय नये राग द्वेषनो अशुद्ध स्वभावे जीव कर्त्ता जाणवो.

शुद्धनिश्चयनये स्वकीयनिरुपाधिकज्ञानदर्शनादिक गुणोनो कर्त्ता जीव जाणवो.

आत्मानु केवळज्ञान ते शुद्ध सद्भूत व्यवहार जाणवो, धर्म अने धर्मोना भेदथी ए व्यवहार थयो, तथा मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, आत्मानुछे एम कहीए ते अशुद्ध सद्भूत व्यवहार जाणवो.

परद्रव्यनी परिणति भळवाथी द्रव्यादिकना नवविध उपचा रथी असद्भूत व्यवहार थायछे

१ द्रव्ये द्रव्योपचार, २ गुणे गुणोपचार, ३ पर्याये पर्यायो- पचार ४ द्रव्ये गुणोपचार, ५ द्रव्ये पर्यायोपचार, ६ गुणे द्रव्यो- पचार, ७ पर्याये द्रव्योपचार ८ गुणे पर्यायोपचार ९ पर्याये गुणो पचार. एनु स्वरुप कहे छे

१ द्रव्ये द्रव्योपचार—क्षीरनीरन्यायवत् जीव पुद्गल साथे म ळ्यो छे माटे जीवने पुद्गल कहीए ए जीवद्रव्ये पुद्गल द्र व्यनो उपचार जाणवो

२ गुणे गुणोपचार—भाव लेश्या ते आत्मानो अरूपी गुणछे तेने जे कृष्ण नीलादिक काळी लेश्या कहीएछीए ते कृष्णादि पुद्गल द्रव्यना गुणनो उपचार करीएछीए ए आत्मगुणे पुद्गल गुणनो उपचार जाणवो, इति गुणे गुणोपचार

३ पर्याये पर्यायोपचार—अश्वहस्ति प्रमुख आत्मद्रव्यना असमान जातीय द्रव्यपर्याय तेने स्कंध कहेछ, आत्मपर्याय उपरे पुद्गल पर्याय जे स्कंध तेनो उपचार कहीए छीए ते पर्याये पर्यायोपचार

४ द्रव्ये गुणोपचार—हु गौरवर्णछु एम बोलता हुं एटले आत्म द्रव्य अने गौरपणु ते पुद्गलनु उज्वलतापणु, आत्मद्रव्यमां

गौररूप जे पुद्गलनो गुण तेनो उपचार कर्यो माटे द्रव्ये गुणोपचार जाणवो.

५ द्रव्ये गुणोपचार-हु गौरवर्णछु एम बोलता हु ते आत्मद्रव्य अने देह तो पुद्गल द्रव्यनो सामान्य जातीय पर्याय जाणवो.

६ गुणेद्रव्योपचार-यथा दृष्टांत ए गौर देखायछे, गौरतारूप पुद्गल गुण उपरे आत्मद्रव्यनो उपचार ते गुणे द्रव्योपचार.

७ पर्यायेद्रव्योपचार-देहने आत्मा कहेवो त्या देहरूप पुद्गल पर्यायने विषे आत्मद्रव्यनो उपचार कर्यो ए सातमो भेद जाणवो.

८ गुणेपर्यायोपचार-मतिज्ञान ते पचइंद्रिय अने मनोजन्य छे माटे शरीरज कहीए अत्र मतिज्ञानरूप आत्मगुणने विषे शरीररूप पुद्गल पर्यायनो उपचार कर्यो.

९ पर्यायेगुणोपचार-शरीर ते मतिज्ञानरूप गुणजछे अत्र शरीररूप पर्यायने विषे मतिज्ञानरूप गुणनो उपचार करायछे, ए नवम भेद व्यवहारनये अनेकधा जीव व्यवहरायछे, निश्चय नये सर्व जीवनी सत्ता एक सरखीछे. सर्व वस्तुथी जीव न्यारोछे, अनादि कालथी आत्मानी अशुद्ध परिणतियोगे आत्मा कर्मादिकने ग्रहेछे, यथा मदिरापानथी मुग्ध मनुष्यनी बुद्धि फरी जायछे, तेम कर्मनायोगे आत्मा परस्वभावमां राच्यो माच्योछे, यदा उपयोगनी एकाग्रताए स्वध्यानमा आत्मा रमे तदा कर्मादिकनो नाश थायछे. जे रूद्धिने माटे जीव फाफा मारेछे, ते रुद्धि आत्मामां समायीछे. आत्मा पोतानु स्वरूप ज्ञानवडे जाणेछे अने परद्रव्यनु स्वरूप पण ज्ञानवडे जाणेछे. आत्माना समान कोइ उत्तम वस्तु नथी, आत्मा आदेय, आराध्य पूज्यछे. आत्मानी रुद्धि आत्मस्वरूपना ज्ञानथी प्राप्त जगतनो स्वामी आ प्रत्यक्ष देखाता शरीरमां.

आत्माछे, तेना करता चमत्कारी बीजी कइ वस्तुछे? सुरमणि, कामकुंभ, कामधेनु पण आत्माना आगळ हीसाबमां नथी आत्मा तेज परमात्माछे आत्मा ते निश्चयथी विचारता पोतानो गुरुछे, स्याद्वाद रीते आत्मानी ओळखाण कोइ भाग्यवंत पुन्यने थायछे, आत्मानु स्मरण करवु प्रवृत्ति मार्गमां प्रवृत्ति त्यां सुधी थायछे के ज्यां सुधी आत्मानु ज्ञान तथा रमण नथी, आत्मानु स्वरुप ज्यां सुधी जाण्यु नथी, त्यां सुधी सप्तम अप्रमत्त गुणठाणानी प्राप्ति थती नथी कयुंछे के–

आया सामाईअ आया सामाइयस्स अट्ठे,

वळी कयुंछे के–

जे एग जाणइ, से सव्वं जाणइ;

जे सव्वं जाणइ, से एगं जाणइ ॥१॥

एको भाव सर्वथायेन दृष्ट सर्वेभावा सर्वथातेन दृष्टा·
सर्वेभावाः सर्वथायेन दृष्टा एकोभाव सर्वथातेन दृष्ट २

यथातथ्य एक आत्मानु स्वरूप जेणे जाण्युछे, तेणे सर्व द्रव्यनु स्वरुप जाण्युछे कारण के–ज्यां सुधी भव्यात्मा आत्मानु स्वरुप जाणतो नथी त्यांसुधी अन्य द्रव्योनु स्वरुप जाणी शकतो नथी, सर्व शास्त्रनी रचना पण आत्मज्ञान थकीछे सर्व शास्त्रकारो आत्मानी स्तुति करेछे

स्तोत्रम्–

अनंतदेवेश जगन्निवास, त्वमक्षर त्वपुरुष· पुराण·
त्वमव्यय· शाश्वतधर्मगोप्ता, त्वमस्य विश्वस्य परनिधानम् १

भावार्थ–हे आत्मा तु अनंतछे, तारो कदी अंत नथी, तु आत्मा

देवतानो पण स्वामीछे–चतुर्दश रज्वात्मक लोकमा तारी स्थितिछे. तु असख्यात प्रदेशमयी छे, त्यारा प्रदेशो क्षरे तेम नथी तारु स्वरुप नाश पामवानु नथी. माटे तु अच्युत अने अक्षरछे, अनादि कालनो तु आत्माछे, तु अव्यय स्वरूपछे. सनातन शुद्धधर्ममय तुछे, भव्यात्माओने मोटामां मोटु निधान तुछे. तुज परमेश्वररूपछे. आम पोते मुनिराज शरीरमा व्यापी रहेला आत्मानु ध्यान करे.

" दोहा. "

नव तत्त्व षड् द्रव्यना, ज्ञाने छे उपयोग,
अनत गुणनी रूद्धिनो, कर्त्ता नित्यज भोग ७४
भोगी नहि परभावनो, आत्मस्वरुपे ध्यान,
ध्यान नहिं परभावनुं, देखे चरण निधान. ७५

भावार्थ–जीवतत्त्व, अजीवतत्त्व, पुण्यतत्त्व, पापतत्त्व, आश्रव, सवर, निर्जरा, बध, ने मोक्ष ए नवतत्त्वनु द्रव्य अने भावथी जेने ज्ञान थयुंछे, अने षड्द्रव्यनु द्रव्य, क्षेत्र, काल, भावथी ज्ञान जेने थयुछे, ते ज्ञानी जाणवो नवतत्त्वनो षड्द्रव्यमा अतर्भाव थायछे. षड्द्रव्य विना जगत्मा अन्य कोइ पदार्थ नथी, षड्द्रव्यमा पण एक आत्मद्रव्य पोतानुछे. आत्मद्रव्यनी श्रद्धा थवी मुश्केलछे. कोइक तो आत्माने जल पकजवत् सर्वथा अलिप्तमानी व्यवहार निश्चयनयना ज्ञान विना एकात मिथ्यात्व स्वरुपे आत्मानु ध्यान करता समकित विना चतुर्गत्यात्मक ससारना त्रिविध तापोने पुन पुन प्राप्त करी विवेक शून्यताए ग्रथिलनी पेठें कृत्याकृत्यने नही गणता मोहनीयना उदये नरभवनी निष्फलताए ससारना चतुरशितिलक्ष जीवयोनिना प्रवाहमा रोग शोकथी पीडाता चक्र खाता तणायछे, जेटला विद्वानो मख्यातवत थया, थायछे, अने थशे ते सर्व ज्ञानना प्रताप थकी

अने ते ज्ञान आत्मद्रव्यमा रह्युछे, दुनीयामा जेटला शास्त्रछे ते आत्मामाथी नीकल्याछे अभ्यासादिक ज्ञानना साधनछे, अनंत गुणोनो भोक्ता आत्माछे, आत्मानी ऋद्धि सदाकाल आत्मामा रहीछे, आत्म ऋद्धिनो कदापि नाश थनार नथी. निश्चयनयथी जोता आत्मा परभावनो भोगी नथी आत्मार्थी परभावनु ध्यान निवारी स्वशुद्ध आत्मस्वरुपनु ध्यान करे तो चरणनिधान देखे, क्रियाकांडथी भगवदाज्ञा डोलयालु कपटीओ अज्ञानी जीवने पोताना फंदमा फसावी धर्मना विश्वासमा फसावी पोते पण अज्ञानमा बुडेछे, अने अन्योने पण बुडाडेछे, सिंहना पराक्रमनो अभिमानथी पोतानामा आरोप करनारो शृगाल क्या सुधी कपट वृत्ति चलावी शके आत्मज्ञान तेज धर्मछे, तेज आदेयछे, अधुना पंचमआरना योगे आ भरत क्षेत्रमा कृष्ण पक्षीना जीवोनी बाहुल्यताए गीतार्थना, सद्गुरुना समागम तथा विश्वास विना अने भवाभिनंदीपणाना त्याग विना अशुभ व्यवहारना त्याग विना मुमुक्षुना योग्यगुणो विना अज्ञानी जीवो ज्या त्या दृष्टिरागनी अंधताए विवेकनयनशून्य थया छता टपर टपरथी धर्मनामे टीला टपका करता अने करभ विवाह प्रसंग रासभ प्रशसाना आचरणमा पोतानी वाहवाहमा कृत कृत्यता समजनार अज्ञानी जीवो सद्गुरुनी वाणी विषना प्याला समान लेखवी, कुगुरुनी वाणी अमृतना प्याला लेखवता, कुधारामा सुधारानी बुद्धि माननार, अस्थिर चित्तवाळा पामर प्राणीओ आध्यात्मिक शास्त्रोना ज्ञान विना अने देवगुरु धर्मनी श्रद्धा विना स्वच्छंदाचारीपणाने लीधे आत्मप्रशंसा अने परगुणापकर्षताए अज्ञानश्रद्धाए तत्त्व पाम्या जाणे होयनी ? एम समजमा पराभव प्रवृत्तिथी स्वआयुष्य पूर्ण करी नृभवचिंतामणि रत्नसमान हारी नरकादिक गतिना

मेमान थइ आधि व्याधिनी दुःख श्रेणि परपराने पामेछे.

आत्मार्थे जीव स्वपरवस्तुनो विवेक करी हेयज्ञेय उपादेय समजी गुणठाणानी परिणति समजी व्यवहार निश्चयनयनु स्वरुप गुरुगमद्वारा समजी वैराग्यनी तीक्ष्णताए सद्गुरु आज्ञाभक्ति विनययोगे सालबन अने निरालबन ध्याननी अभिलाषाए अतःकरण शुद्धिपूर्वक स्याद्वाद आत्मिक धर्मनु आराधन करतो जल पकजवत् वर्तन चलावतो व्यवहारमा वर्तेछे, परभाव प्रवृत्तिमूलरागद्वेषमहामलछेदक आत्मस्वभावपरिणतिमा वर्तता भव्यात्माओ ज्ञान ध्यानयोगे क्षयोपशमभावे वा उपशम भावे मोहनीय कर्मनो उच्छेद करी समकित पामी स्वल्पकालमा कर्मक्षय करी केवलज्ञानादि सपदा पामी चउदमु गुणठाणु आयुष्य मर्यादाए उलघी सादि अनति स्थिति पामी अनहद आनदढायक शाश्वत शिवसुख स्वरुप मुक्तिधाम पामी शकेछे. समये समये जीव सात वा आठ कर्म बाधे छे, स्वभावमा रमे तो कर्मबध टळेछे, माटे आत्मतत्त्वनी प्राप्ति अर्थे सद्गुरु वचनामृतनु विनयभक्तियोगे पान करवु एज हिताकाक्षा.

" दुहा "

अखड अक्षय शाश्वतु, देखी आतम रूप,
चित्ते चमक्यो आतमा, अरे हु तो महा भूप.७६

भावार्थ–अखड, अक्षय, शाश्वतस्वरुप पोतानु पोते आत्मा देखी चित्तमा चमक्यो अर्थात् आश्चर्य पाम्यो, अने कहेवा लाग्यो के–अरे हु तो महाभूपछु, अद्यापि पर्यत में पोताने अज्ञानी जाण्यो, हु गरीब छु एवी मने भ्राति हती पण हवे ए भ्राति चाली गइ, हु निर्धनछु एम हु पोताने मानतो हतो पण जाण्यु के–मारा आत्मामा अनत धन रह्युछे, तेनी समति काले खबर पडी, चक्रवर्ति आदि

राजाओने हु महाभूप तीरके स्वीकारतो हतो पण हवे आत्मानु स्वरुप ओळखता मालुम पड्यु के इंद्र, चंद्र, नागेंद्र करता पण आ शरीरमा व्यापक आत्मा महाभूपछे एनी महुताइने कोइ पामी शके तेम नथी स्त्री पुत्रादिकपर जेटली ममता थाय छे तेटली जो आत्मा उपर ममता थाय अने तेनु ध्यान करवामा चित्त लागे तो आत्मा परमात्मस्वरूपने पामे बहिरात्मिसाधुओने शिष्यो करवा उपर जेटली चाहनाछे तेटली जो आत्माना उपर चाहना थाय तो परमात्मपद अवश्य पामी शकाय बाह्यधन तो मळेछे अने पापना उदये विणशी जायछे पण आत्मानु अतर्धन कदापि काळे नाश पामी शकतु नथी. दुनीयाना मनाहमा जे तणायछे ते आत्मिक लक्ष्मी पामी शकता नथी–घणा भव कर्या, घणा शरीर छोड्या, पौद्गलिक माया सर्व नाश पामी किंतु त्रणे कालमा आत्मा चेतन स्वभावेज वर्तेछे माटे आत्मा शाश्वतछे, वाचवा अगर कहेवा मात्रथी नहीं पण ते अनुभवगम्यछे

“ दूहा ”

रझळ्यो हु परदेशमा, लहिया दु ख अनत,
शुभ देखी निजदेशने, शान्त थयो शिवकंत ७७

भावार्थ–पोताना आत्माना असख्यात प्रदेश ते पोताना प्रदेश जाणवा अने पृथ्वीना जे देश ते पुद्गलास्तिकायछे, पुद्गलास्तिकाय द्रव्य जडछे, पृथ्वीना प्रदेशोने पोताना प्रदेश मानी परदेशमा रझळ्यो, क्षुधा पिपसाए ताडनतर्जन छेदनभेदन आदि आत्माए अनत दुःखो सहन कर्या, अने नाना प्रकारना शरीरो धारण कर्या पण दु खनो अत आव्यो नहीं, पण हवे सद्गुरुयोगे आत्मानु स्वरूप जाणतां पोतानो देश ओळख्यो अने आत्मा मुक्तिनो स्वामी शान्त

थयो, ध्यानथी आत्मा अने परमात्मानो भेद टळेछे. कह्युछे के-

आत्मनोहि परमात्मनियो भूद्भेद बुद्धि कृत एव विवादः,
ध्यानसंधि कृदमुव्यपनीय द्रागभेदमनयोर्वितनोति.१

आत्मा अने परमात्मामा भेद बुद्धिनो विवाद हतो, अर्थात् तेमा पंडितना विवादरूप झघडा हता तेने ध्यानरुप संधि पाले ध्यानी पुरुषे जलदीथी बेनु अभेदपणु करी आप्यु, ध्यानमा आत्मा अने परमात्मानो अभेद थाय एटले ध्याननी सिद्धि जाणवी ध्यानीने पौद्गलिक देश उपर क्यांथी ममता होय. भर-निंद्रामा शून्यतानी पेठे ध्यानो पुरुष रागद्वेषशून्य थायछे, खरु सुख ध्यानी पुरुष जाणेछे, शब्दज्ञानियो भले व्याकरण न्यायना वाक्पंडितपणाथी इदंभवति इद न भवति इत्यादिथी भोळा लोकोनी आगळ भ्रमजाळ रचे किंतु आत्मिक सुख मळतु नथी, अने निरर्थक बाह्याचारनिंदकी थइ मनुष्य जन्म हारेछे, एवा शब्द ज्ञानीओने स्वदेशनी ममता थवी मुश्केलछे, शब्दज्ञानियो खंडनमंडननी संकल्प जाळमा पडी आत्मिकसुख प्राप्त करता नथी, अने तेमनु परदेश पर्यटन बंध थतानु नथी, बाह्य क्रियाकांडनी खटपटमा शब्दज्ञानीयो मतभेद चलावी परस्पर राग द्वेष करेछे, तेमनु कल्याण मत कदाग्रहनथी थवु दुर्लभछे स्वदेश अने परदेशनु ज्ञान नथी त्या सुधी जीव मिथ्यात्वी जाणवो आत्मतत्त्वनु ज्ञान थाय त्यारे मनुष्य जन्म लेखे जाणवो, खरेखर आत्मज्ञ महाशयो आत्मानी तात्त्विक शांतताने पामेछे, उपर उपरनी हलदरना रंग समान जे शांतता ते अंते टकी शकती नथी केटलाक जीवो उपरथी बगनी पेठे कपटवृत्तियी शांत देखायछे, अने अंतरमा कपटथी भरेला होय छे, केटलाक जीवो उपरथी देखता शांत जणाता नथी अने अंतरमा खरेखर [illegible], केटलाक जीवो उपरथी पण शांत होयछे अने

अतरमा पण शान्त होयछे, केटलाक अतरथी शांत होता नथी अने उपरथी पण शात होता नथी. शातावस्थानु मुख्य आत्मज्ञानीयो पाम्या, पामेछे, अने पामशे

" दुहा "

परपुद्गलना देशने, मान्या मारा देश,
तेनी ममताए करी, ग्रहिया पुद्गल वेष ७८
ठाम ठाम हु भटकियो, चार गति दुःख खाण,
त्या पण ममता देशनी, कीधी गुणनी हाण ७९

भावार्थ-पौद्गलिक देशने पोताना मानी राग द्वेषथी कर्म ग्रहण करतो छतो विचित्र प्रकारना शरीर धारण कर्या, नाना देहो धारण करी दुःखनी खाणभूत चार गतिमां ठेकाणे ठेकाणे चेतन भटक्यो, अने ज्या ज्या उत्पन्न थयो त्या पण देशनी ममता धारण करी पोतानु भान भूली आत्मगुणनो तिरोभाव कर्यो, आ मारु घर, मारु क्षेत्र, मारी पृथ्वी, आदिना अभिमानथी रशिया जापाननी पेठे हजारो जीवोनो नाश थयो तेनु कारण परपौद्गलिक देशनी ममताछे, अज्ञानी जीवो स्वदेशाभिमानमा एम ए सुधी भण्या होयछे तो पण अज्ञान प्रवाहमा तणाइ जायछे पोतानो देश क्यो छे ते गुरुभक्तो निश्चयत जाणी शकेछे मन बाह्य विषयमा धावेछे, तावत् जीव कर्मनी राशि अशुद्ध परिणामे ग्रहेछे, गुजरात, बगालादि देशो माराछे अने हु एनोछु, आ राज्य मारुछे अने हु एनोछु, आ कुटुब मारुछे, अने हु एनोछु, एवी बुद्धि यावत् थायछे तावत् जाणवु के-चेतन जडता अनुभवेछे, आत्मा अने परमात्म स्वरूपनु ज्ञान थाय तेने ज्ञान कहेछे अने आत्मा अने परमात्मानी ध्यानयोगे ऐक्यता थाय तेने विज्ञान कहेछे.

उक्तञ्च—

अन्य शास्त्रेऽपि क्षेत्र क्षेत्र ज्ञयोर्ज्ञान, तज्ज्ञानं ज्ञानमुच्यते;
विज्ञान चोभयोरैक्यं, क्षेत्रज्ञ परमात्मनोः१

स्वकीय अज्ञानथी आत्मा भटकायछे, अने पोताना ज्ञानथी कर्म विमुक्त आत्मा बनेछे, आत्मानो उद्धार आत्माज करी शकेछे, आत्मानु उपादान कारण आत्माना गुणोछे, उपादाननी शुद्धि अर्थे भव्य जीवो निमित्त हेतु अवलंबी परमात्मपद पामेछे, अभव्य जीवोमा उपादान कारणनी शुद्धि थाय तथा प्रकारनो स्वभाव नथी. निमित्त कारण तो पामेछे, किंतु अभव्य जीवमा भव्य स्वभाव नथी, तेथी उपादान कारण शुद्ध थतु नथी भगवद्गीताना छट्ठा अध्यायना पाचमा श्लोकमा कह्युछे के—

श्लोक.

उद्धरेदात्मनात्मान, नात्मानमवसादयेत्,
आत्मैवह्यात्मनो बन्धु, रात्मैव रिपुरात्मन· १

आत्मा उद्धारवो पोते, आत्माने मारवो नहि,
बधु पोतेज पोतानो, पोतेज रिपु छे सहि. १

आत्मा स्वशुद्धपरिणामयोगे पोते पोतानो उद्धार करेछे अर्थात् परमात्मपद पामेछे, ज्ञपुरुषो कहेछे के—आत्माने भव्यात्माओए मारवो नहीं, पोताना आत्मानो घात करवो तेना समान पाप नथी, अध्यात्मगीतामा कह्युछेके—

स्वगुण रक्षणा तेह धर्म, स्वगुण विध्वसना ते अधर्म,
भाव अध्य - अनुगत प्रवृत्ति, तेहथी होय संसार छित्ति.१

गुणो कर्मयोगे ढकायाछे, तिरोभावे रह्याछे,

तेनु रक्षण करवु एटले ते अनंत गुणोने आविर्भाव करवा, कर्मशत्रुथी अपराधा देवा नहीं तेनु नाम धर्मछे, धर्मना चार भेदछे, १ नामधर्म, २ स्थापनाधर्म, ३ द्रव्यधर्म, ४ भावधर्म कोइनु धर्म एवु नाम आपवु ते नामधर्म, कोइ पण वस्तुमां धर्मनो आरोप करवो ते स्थापनाधर्म, धर्मना हेतुओनु अवलंबन करवु ते द्रव्यधर्म वा उपयोग शून्य जे धर्म ते द्रव्यधर्म जाणवो, आत्मानी उपयोगताए नयनिक्षेपा सप्तभंगीथी आत्मानु अनेकान्त स्वरूप जाणी श्रद्धा करवी, तेनु रक्षण करवु तेनु नाम भावधर्म जाणवो

ते भावधर्म आत्मामा रह्योछे, शुद्ध, सत्य, अखंड, अक्षयरूप भावधर्म अरूपीछे अने ते भव्य जीवोने प्राप्त थायछे, समकितवंत जीवने भावधर्मनी प्राप्ति थायछे, भावधर्म विना सर्व क्रिया निष्फल जाणवी

द्रव्यधर्मना बे भेदछे, लौकिक द्रव्यधर्म बीजो लोकोत्तर द्रव्यधर्म, लौकिक द्रव्य मिथ्यात्वनु कारणछे, भावधर्म सापेक्ष लोकोत्तर द्रव्यधर्म परमात्मपद साधक निमित्त कारणछे, आत्मीय गुणोनु रक्षण ते धर्म, अने आत्माना गुणोनो नाश करवो एटले आत्माना गुणो तिरोभावे वर्ताय तेम रागद्वेषयोगे ज्ञानावरणीयादि कर्म ग्रहण कराय तेनु नाम अधर्म जाणवो, नाम अध्यात्म, स्थापना अध्यात्म, द्रव्य अध्यात्म अने भाव अध्यात्म ए चार ४ निक्षेपाए अध्यात्म जाणवु आदना ३ त्रण अध्यात्म अनुपयोगी जाणवा, भाव अध्यात्मथकी कर्मकलंक नाश पामेछे माटे भाव अध्यात्म अनुगत प्रवृत्ति थाय तो तेथी संसारनो उच्छेद थायछे, माटे ज्ञानी पुरुषो कहे छे के आत्माने मारवो नहीं, आत्मानी जो अशुद्ध परिणति थइ तो आत्माए आत्माने मार्यो कहेवायछे, आत्मा पोते पोतानो वधुछे, एम कहेवाथी सिद्ध थयु के पोतानु भलु करवा पोते आत्मा समर्थ

छे, राग द्वेपने आत्मा जीते तो आत्मा बधु समानछे, सगा सहोदर बधुनी ममताथी आपणा पोताना आत्माने रागद्वेष लाग्याछे ते दूर थता नथी, माटे बीजाने बधु तरीके मानवा ए तो ससार व्यवहारनी कल्पनाछे, व्यवहारिक कार्योमा सहोदर बधुनी जरुरछे, किंतु आत्मा परमात्मस्वरूपमय थाय तेमा तो आत्माज पोते बधुछे, त्या अन्यनु कश्च चालतु नथी, रागद्वेपना प्रवाहमा आत्मा अशुद्ध परिणामथी वहेछे तो आत्मा पोते पोतानो शत्रुछे एम जाणवु आत्मा परभाव त्यागी स्वभावमा रमे तो आत्मानो कोइ शत्रु नथी, आत्मा विना आत्मानो शत्रु अन्य कोइ व्यवहारथी कल्पना मात्र जाणवो. राग द्वेपे ससारमा राचवु माचवु, तथा आत्मानी अज्ञानताथी मिथ्यात्व परिणतिए करी आत्माने परमात्मपद पामवामा आत्मा शत्रुभूतछे, यावत् जीव समकित पाम्यो नथी अने मिथ्यात्व भावे रमी परने पोतानु मानेछे तावत् तात्त्विक सुख पामी शकतो नथी, माटे आत्मिक असख्यातप्रदेशमा ध्यान देवु.

" दुहा. "

धर्माऽधर्माऽकाशना, प्रदेश हान न लेश;
पुद्गलना जे देश छे, दे अज्ञानी क्लेश ८०

धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकायना प्रदेशथी आत्मगुणोनी हानि लेशमात्र पण थती नथी, पण पुद्गल स्कधो अज्ञानीने क्लेश आपेछे

धम्मा धम्मा गासा तिन्निवि ए ए अणाइया ।
अपज्जवसियाचेव सव्वद्ध तु वियाहिया

धर्म, अधर्म अने आकाश ए त्रण द्रव्य अनादि कालनाछे अने अनतछे १४ ... लोक व्यापि धर्मास्तिकायछे, अधर्मास्तिकाय

पण चउद राजलोक व्यापीछे, आकाशास्तिकाय लोकालोक व्यापी छे अशुद्ध परिणति योगे आत्मा पुद्गलास्तिकायना स्कंधोने ज्ञानावरणीयादि अष्टविधकर्मराशिरूप बनावी ग्रहण करी संसारमां परिभ्रमण करेछे

आत्मा शुद्धस्वरूप जोता अरूपीछे, छतां रूपी एवा कर्मथी आत्माना अनंतगुणोनु आच्छादन थायछे, आत्माना एकेक प्रदेशे अनंति कर्मवर्गणाओ लागीछे, किंतु आत्माना आठ रुचक प्रदेशे कोइ कर्म लागतु नथी ते आठ रुचक प्रदेश सिद्ध समान सदाकाल निर्मल अनादि कालनाछे, ए आठ रूचक प्रदेशे पण जो कर्म लागे तो जीवनु जीवत्वपणु चाल्यु जाय रूचक प्रदेशनो एवो स्वभावछे के तेने कोइ कर्म लागी शके नहीं, जेम जेम एकेंद्रियादिक भवनु उल्लंघन करी उच्च गतिमां आवेछे तेम तेम तरतमयोगे सामान्यतः मतिज्ञान श्रुतज्ञाननी प्राप्ति थायछे

शिष्यप्रश्न—आत्माना असंख्यात प्रदेशो शी रीते कहेवाय ? असंख्यात प्रदेश कहेवाथी आत्माना असंख्यात भाग थया त्यारे आत्माना खंड थया अने अखंड आत्मा कहेवाशे नहिं माटे आत्माना असंख्यात प्रदेशो कहेवा ते शीरीते=

सद्गुरु—आत्मा असंख्यातप्रदेश मळी कहेवायछे, असंख्यात प्रदेश कहेता आत्माना असंख्याता भाग थइ शकता नथी कारणके प्रदेशो एक एकथी जुदा पडता नथी, प्रदेशो बाळ्या बळता नथी, छेद्या छेदाता नथी, हण्या हणाता नथी केवली केवली समुद्घात करे त्यारे आत्माना प्रदेशो लोक प्रमाण विस्तारेछे छता पण प्रदेशो एकमेकनी साथे नित्य संबंधथी संबंधितछे तेथी असंख्यात प्रदेशो मळी आत्मा कहेवामां कोइ जातनु दूषण नथी आवतु, आत्माना प्रदेशो अरूपीछे, तेथी

असख्य प्रदेशात्मक आत्मा पण अरूपी कहेवायछे. आत्माना खंड कोइनाथी पाडी शकाता नथी, अने कोइ काळे खंड थता नथी. माटे अखंड आत्मा कहेवायछे, असख्यातप्रदेशो कल्पना मात्र नथी पण ते सत्यछे. कल्पना मात्र कहेवामां प्रत्यक्ष प्रमाण नथी, अनुमान प्रमाण नथी, उपमान प्रमाण पण नथी. अने आगम प्रमाणमा तो आप्तपुरुष श्री सर्वज्ञ वाक्य प्रमाण कहेवायछे—श्री सर्वज्ञ भगवते कह्युछे के—लोगागासतुल्लापएसा माटे लोकाकाशना जेटला आत्माना प्रदेशछे एम सत्य श्रद्धा करवी.

प्रश्न—कोइ एक गिरोलीनी पुछडी कपाइ जाइ त्यारे एक तरफ पुछडी कुदेछे. उछळेछे, अने एक तरफ धड उछळेछे त्यारे जीव बेमां समजवो के एकमां ?

उत्तर—पुछडी अने धडमां एम बेमां आत्माना असख्य प्रदेशो होवाथी बेमां अरेमाए जीव कहेवाय छे. केटलाक प्रदेशो पुछडीना भागमां रहेला होयछे तेथी ते हालेछे पण धडना भागमां ते सर्व प्रदेशो भळी जायछे त्यारे पुछडी हालती नथी ते समये धडमां जीव कहेवायछे ए उपरथी सिद्ध थायछे के आत्माना प्रदेशोथी एवो बनाव बने छे, सूक्ष्मबुद्धि अने गुरुगमथी आ दृष्टान्त मनन करवु. ज्ञानावरणीय कर्म सर्व जीवने एक सरखु होय तो सर्व जीव एक सरखा ज्ञानवाळा होवा जोइए पण ज्ञान एक सरखु होतु नथी माटे ज्ञाननु प्रतिबधक ज्ञानावरणीय कर्म जीव जीव प्रत्ये भिन्न भिन्न नाना प्रकारनु होयछे तेथी तेना क्षयोपशम भावे प्रत्येक जीवने भिन्न भिन्न प्रकारनु ज्ञान थायछे.
... ज्ञानावरणीयकर्म पचविधछे, ज्ञानावरणीयादि

अष्टकर्म आत्माना अष्ट गुणोनु आच्छादन करेछे. अष्टकर्मना नाशथी अष्ट गुणो आविर्भाव थायछे, यद्यपि जो के कर्म बलवान्छे तथापि आत्मा ज्ञानयोगे स्वस्वरूपमा रमे तो क्षणमा कर्मनो नाश करी शकायछे. भगवद्गीतामा पण कयुंछे के—

अध्याय चोथो श्लोक ३७ मो

यथैधांसि समिद्धोऽग्नि, र्भस्मसात् कुरुतेऽर्जुन
ज्ञानाग्नि सर्व कर्माणि, भस्मसात् कुरुते तथा. ३७
नहि ज्ञानेन सदृश, पवित्र मिह विद्यते,
तत्स्वय योग संसिद्ध कालेनात्मनि विंदति ३८
अपिचेदसि पापेभ्य , सर्वेभ्य पापकृत्तम
सर्वज्ञानप्लवेनैव, वृजिन संतरिष्यसि ३९

भावार्थ—महामेरुना ओळंघनारने वालुका जेम लघ्यछे, अग्नि काष्ट समूहने बाळी भस्म करेछे तेम ज्ञानरूप अग्नि सर्व कर्मोने बाळी भस्म करेछे आत्मानु अनेकांतपणे यथातथ्य ज्ञान थाय तो कर्मनो नाश थायछे परम पुरुषार्थ साधन ज्ञान समान कोइ नथी, अपवित्रने पण ज्ञान पवित्र करेछे, माटे ज्ञान सदृश अन्य कोइ पवित्र नथी, ज्ञानी सर्व पापनो नाश करेछे, हु आत्मा परमात्मा स्वरूपछु एम स्वसत्ताने भव्यात्मा ध्यावेछे

मोटामा मोटु पाप करनारो तु होइश तो पण हे अर्जुन तु ज्ञान नौकाथी सर्व पाप तरी जाइश एम कृष्ण कहेछे.

शिष्य—आ ठेकाणे तमो केम भगवद् गीतानो दाखलो आपोछो ?

जैन—जैनधर्म एक देशी नथी पण सर्व देशीछे, जैनोमा जेम ज्ञाननु महात्म्य कथ्युछे, तेम गीतामां पणछे ते जणाववा माटे साक्षी

आपीछे अन्य शास्त्रना श्लोकोने समकिती जीव अनेकान्तनयनी अपेक्षाए ग्रहण करी समकित रूपे परिणमावेछे, एक शरीर त्यागी अन्य शरीर धारण करवानु कारण कइ पण होवु जोइए. ते कारण कर्मछे, अने कर्म आत्माथी भिन्नछे, भिन्नछे त्यारे ते चैतन्य नथी, विपरीत जड द्रव्य सिद्ध ठर्युं, माटे तेनो पुद्गलास्तिकाय द्रव्यमा अतर्भाव थायछे. लोहचुनक पोतामा रहेली शक्तिवडे जेमसोयने पोतानी भणी खेंचेछे तेम आत्मा अशुद्ध परिणतियोगे स्वक्षयोग्य पुद्गलोने राग द्वेषयोगे कर्मरूपे ग्रहण करेछे. अने कर्मथकी चार गतिना दु ख जीव पामे छे. नैश्चयिक शुद्ध आत्मिक स्वरूप ध्यावे अने आत्म ने सर्व थकी न्यारो माने अने परवस्तु उपरथी अहममतभाव उठाडे तो सिद्ध बुद्ध परमात्म स्वरूपमय आत्मा थाय.

" दुहो "

वर्ण पांच जेमां रह्या, गंध दोय ज्यां खास;
पांचे रसनी स्थीति ज्यां, स्पर्श आठनो वास ८१
एवा पर्यायो रह्या, तेहिज पुद्गल द्रव्य,
व्याप्युं लोकाकाशमां, कर्त्ता नहि कोइ भव्य. ८२
काल अनादिथी रह्युं, रहेशे काल अनंत,
नित्यानित्यपणे सदा, रूपी द्रव्य कहंत ८३

भावार्थ–पाच वर्ण, बे गध, पाच रस, अने आठ स्पर्शरूप पर्यायो जेमा रह्याछे, तेने पुद्गलद्रव्य कहेछे, ते लोकाकाशमा व्याप्युछे, पण अलोकाकाशमा पुद्गलद्रव्य नथी, पुद्गलद्रव्य अनादिकालथीछे, अने अनत काळ सुधी रहेशे, द्रव्यार्थिक नये पुद्गलद्रव्य नित्यछे, अने पर्यायार्थिक नये पुद्गलद्रव्य अनित्यछे, पुद्गल द्रव्यरूपीछे.

" दुहा "

घटपट वस्तु जे दिसे, ते सहु पुद्गल जाण।
ते आतमथी भिन्न छे, शास्त्र वचन प्रमाण. ८४
पुद्गल देशे म्हालतां, मार्यो चेतन जाय,
तेमां ममता मानता, मरी मरी दुःख पाय ८५
पृथ्वी थइ नहि कोयनी, कोटी करे उपाय,
लक्ष उपायो लखरे, नहि आकाश झलाय. ८६
पुद्गल वस्तु कारमी, घर हाटा ने म्हेल,
सोनु रुपु धन सहु, पुद्गलना छे खेल ८७
द्रष्टा पुद्गलनो सदा, सुख दुःखनो जे जाण,
वास वस्यो पुद्गल विषे, आतम गुणनी खाण. ८८
पुद्गल जे देखाय छे, तेथी चेतन भिन्न,
कर्त्ता चेतन कर्मनो, परपरिणति रस पीन ८९
आत्माऽसख्य प्रदेश छे, प्रति प्रदेशे ज्ञान;
अनत जिनवर भाषिछु, छति पर्याये जान ९०
विशेप सामान्ये करी, दो भेदे उपयोग,
असख्यात प्रदेशथी, वर्त्ते निजगुण भोग. ९१
अस्ति धर्म अनतनो, भोगी आतम राय,
नास्ति धर्म अनत त्यांय, समय समय वर्ताय ९२
उज्वल आत्मप्रदेश छे, समता रस भडार,
तेनो कर्त्ता आतमा, शुद्धनये निर्धार ९३

वसतां तेह प्रदेशमां, रमतां समता संग,
सुखसागरमां उछ्ळे, हर्षानंद तरंग. ९४
ममता पर परदेशनी, भागी जागी ज्योत,
सहजे आत्म स्वरूपनो, थयो महा उद्योत. ९५
भिन्न जाति पुद्गल तणी, मारी तेथी भिन्न;
भिन्न जातिशुं संग श्यो, तेथी थइयो खिन्न. ९६
संग अनादि कालथी, तेने मानी मित्र,
राग द्वेषना योगथी, अहियां देह विचित्र. ९७
दुग्धनीरसंयोगवत्, आतम पुद्गल संग,
थयो अनादि कालथी, करतां कर्म कुढंग ९८
तेथी अवळी परिणते, कर्त्ता कर्म कहाउ,
सवळी परिणति योगथी, शुद्ध निरंजन थाउ. ९९
पुद्गल खावुं पहेरवुं, पुद्गल वसति महेल,
वास वसी तेमां मुधा, मानी सुखनी स्हेल. १००
रमुं हवे शुं बाह्यमां, जेनी कूडी चाल,
संगे तेनी माहरे, थवुं पडयुं बेहाल. १०१
मित्र नहि ते माहरो, अवळो तास सहाव,
हाय हाय तस संगथी, बनिया एह बनाव. १०२

भावार्थ—आ प्रत्यक्ष घट पट दंडादि वस्तु चक्षुना विषय गोचर थायछे. ते पौद्गलिक वस्तु जाणवी अने ते आत्म द्रव्यथी भिन्नछे. एम श्री तीर्थंकर महाराजा शास्त्रमां कथेछे.

पृथ्वी आदिक रूपे स्थित उपवन, गिरि, वस्त्रादि, गुजरात, पंजाब, इग्लांड, युरोप, अमेरिकादि देशोमां मारापणानी बुद्धियी राची माची तल्लीन बनी तेमा म्हालतां चेतन मायें जायछे, देश, गृह, धनादिकमां मारापणानी बुद्धि धारतो मृत्यु पामी पुन: पुनः तद्गत वासना योगे जन्म धारण करी आधि व्याधि उपाधिनां दुःखो पामेछे हे चेतन शुं तृष्णा जाळमां फसायछे ? स्वभावाभावरूप अज्ञानतम: राशिमा विवेक नयन शून्यात्मा अत्र तत्र ऐहिक सुखनी भ्रान्तिए भ्रमण करतो, मनोराज्यनी सङ्कल्प विकल्प श्रेणिए चडयो छतो धूम्र इन्द्र ग्रहण पुरुषवत् क्षणिक तुच्छ सर्वदा जड पृथ्वीने पोतानी मानी तदर्थे सहस्रश: जीव घातक बनी शोफा-पुरुषवत् स्वमहत्वतामां अन्य भव्यात्माओने पर्वतारोहण पुरुष दृष्टिवत् लघु गणी पारमार्थिक तत्त्व शून्यात्मा क्षणिक तुच्छ स्वार्थमां राची परवस्तुमां ममतानो दृढ भाव सकल्पी रात्री दिवस तिल-पीलक यन्त्र वृषभवत् असदाचरणोमा स्वकाल अज्ञानी पशुवत् निर्गमेछे, पोतानाथी अत्यंत भिन्न पृथ्वी कोइनी थइ नथी, अने थवानी नथी मारी मारी मानवी ए केवल भ्रांतिछे, लक्ष उपायो करता पण आकाश हाथमां झाली शकातु नथी तेम कोटि उपायो करतां पण पृथ्वी देश, घरबार पोतानां थवानां नथी, देश, घरने जीव मूकी परभवमा चाल्यो जायछे, जे घर हाट म्हेल बधावतां रक्षण करता चेतने जरा पण शांति लीधी नहीं, ते घर हाट मूकी मरण समये जीव टगमग जोतो जीववानी सहस्रश: आशाओ करतो पण परभवमा चाल्यो जायछे, साथे कोइ पण वस्तु आवती नथी, ज्यां जे वस्तु हती ते त्याने त्या रही, अनंता भव कर्या पण कोइ वस्तु साथे आवी नहीं, तो आ भवमा हु कइ वस्तु पोतानी साथे लइ जइश ? हा अलबत कोइ पण वस्तु पोतानी साथे आवनार

नथी, पौद्‌गलिक वस्तु उपर शो राग अने द्वेष करवो ? केटलीक वस्तुओ मळेछे अने केटलीक वस्तुओ नाश पामेछे, सगा सबधी सगेनी प्रीति पण स्वार्थना लीधे क्षणिकछे. खरी वस्तु आत्माछे, बाह्य पदार्थोमां मारापणानी बुद्धि थायछे तेनो नाश थइ अतर आत्मतत्त्वमां मारापणानी बुद्धि थाय तो परमात्मपद पामी शकाय. घर हाट म्हेल आदि पौद्‌गलिक वस्तु क्यारमांछे, सुवर्ण, रुपु, मोती, हीरा आदि सहु धन जे कहेवायछे ते कारमुछे, हे जीव तेमा तु शु ममता धारण करेछे ? जेनो सयोग तेनो अवश्य वियोग थवानोछे, पूर्वोक्त पुद्गलनो दृष्टा अने सुख दु खनो ज्ञाता आत्मा देहरूप पुद्गलमा वस्योछे, अनतगुणनो धणी आत्माछे, पाच प्रकारना शरीरथी आत्मा भिन्नछे, पर परिणतिमा लीन थएलो चेतन व्यवहारथी कर्मनो कर्त्ता जाणवो

आत्माना असख्याता प्रदेशछे, प्रत्येक प्रदेशे अनतु ज्ञान श्री जिनवरे कह्युछे. आत्मामा अनत धर्मनी अस्तिता रहीछे, तेमज आत्मामा अनत धर्मनी नास्तिता रहीछे, अस्ति अने नास्ति धर्म समये समये आत्मामां वर्तेछे, सत्ताए ससारी जीवोना प्रदेश निर्मळ सिद्ध समान जाणवा अने ते समता रसनो भडारछे, शुद्धनयथी स्वज्ञानादिक गुणनो कर्त्ता आत्मा जाणवो

आत्माना असख्यात प्रदेशमा रमता असख्यप्रदेशरूप आत्मा पोते पोताना स्वरूपे स्थिर थता अने शत्रु मित्रपर समपणु ते रूप समता साधे रमता क्षणे क्षणे अनत अनतगणु सुख थायछे, आत्म स्वरूपनो स्ववीर्य याने उद्योत थता परप्रदेशनी ममता नष्ट थइ अने जाण्यु के–पुद्गलनी जाति माराथी भिन्नछे, अने हु तेथी भिन्नछु, तो मारे पुद्गल जातिथी शो लाभ ? अने तेनो सग केम करवो जोइए ? अरेरे हु अनादि कालथी तेनी सगतिथी खिन्न थयो.

तर्के नरक गति दीये, जेने नाहि निज भान,
शब्दशास्त्रथी भिन्नछे, आतमपद गुणवान् ११५
कथा पुराणी बहु करे, जन मन रजे भाट,
वाद वाघरी घेरछे, धर्म विना सहु वात ११६
क्रियाकाड नवि मुक्ति दे, जो नाहि आतमभान,
आत्मोपयोगी साधुने, धर्मक्रिया गुणखाण ११७

भावार्थ–चतुर्गति सबधी चतुराशिति लक्ष जीवयोनिमां आ प्रत्यक्ष शरीरनिष्पत्तीने जन्म मरण करी अनत दु ख पाम्यो

पुद्गल ममता वा अरुचिथी जीवनी परिणति रागद्वेषमय थइ जायछे, रुचि अरुचि पण पुद्गलना सबधेछे, पुद्गल सबधे शोक थायछे, देशधनादिक पुद्गलनी लालसाए दुनियाना जीवो सहस्रश' जीवोना प्राणनी आहुति युद्धाग्निमां होमेछे रुशिया, जापान, विगेरे युद्ध करेछे ते पण पुद्गलनी लालसाथी जाणवी महमद गीजनीवत् नृपो पुद्गल लालसामा रक्त बनी शोफा पुरुषवत् स्वमहत्वनी भ्रमणामा भूली तत्त्व विवेचन विवेकशून्य अत करणवाळाओ अजागल स्तनवत् स्वआयुष्यनी निष्फलता करेछे

पुद्गल द्रव्य आत्मगुण विरोधीछे, तेनी मित्रता करता स्वकीय गुणनी हानि थया विना रहेती नथी, पुद्गलथी पोताने भिन्न नहीं माननार अज्ञानी मूढात्मा रणना रोझ समान ज्ञानशून्य जाणवो

आहार, पाणी आदि पुद्गलने अनता जीवोए भोगव्यु तेज पुद्गलने आ जीव भक्षण करेछे, अनता सिद्ध भगवतोए ससारावस्थामा अनता भव करी पुद्गल स्कधोने खाधा, पीधा, वळी

तेज पुद्‌गल द्रव्यने अभव्यादि जीवोए पण पोताना भोगमां ग्रह्या माटे पुद्‌गल सर्व जीवोनी वमन करेली ऐंठ जाणवी. ते ऐंठने हे जीव! तें अनंतिवार चूथी, हाल पण चूथेछे, भविष्यकाले पण कोण जाणे शु थशे? हजी तु केम चेततो नथी, तारी अनंति ऋद्धि तारी पासेछे ते मूर्क ने तु ऐंठ चुथे ते तारी ओछी अज्ञानता! अरे जीव तु जरा मात्र पण शरमातो नथी, शु तने भिक्षुकनी पेठें पुद्‌गल ऐंठ चुथवाथी तृप्ति वळवानीछे? ना कदी नहीं, जेटला पुद्‌गल ऐंठ चुथेछे ते गमे तो इद्र, चद्र, नरेंद्रादिक होय तो पण भिखारीना सरखा जाणवा

प्रश्न–हे सद्‌गुरु! त्रयोदश गुणस्थानवर्ति श्रीतीर्थकर केवली पण आहार पाणी ग्रहण करेछे तेथी ते पण शु भिक्षुक जाणवा?

उत्तर–हे शिष्य–श्री त्रयोदश गुणस्थान वर्त्ति तीर्थकर महाराजे मोहनीय, अतराय, ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, ए चार ४ कर्मनो सर्वथा क्षायिक भावे क्षय कर्योछे, वेदनीयादिक चार अघातीयां कर्म अवशेष रह्याछे, क्षुधा लागवी, तृषा लागवी ए वेदनीयकर्मनो विषयछे, मोहनीय कर्मना अभावे क्षुधा वेदनीयना उदये क्षुधा शांत्यर्थम् गृहभाटकवत् आहारादिकनु ग्रहण करेछे, तेथी पुद्गल ऐंठ चुथी कहेवाय नहीं, ममताभावे आहारादिक जे ग्रहण करेछे ते पुद्गल ऐंठ चुथनारा जाणवा

मुनिराजो के जे स्वस्वभावमां रमनारा अने परस्वभावना *त्याग करनारा कदाग्रह त्याग करनारा शत्रु मित्र सम* दर्शक अध्यात्मनिष्ठ चित्तवृत्तिवतो पुद्गलने माटे क्षुधा तृषा शातिने माटे आहार पानादि ग्रहण करेछे, पण तेमा राचता नथी तेथी ते पुद्गलनी ऐंठ चुथनारा जाणवा नहीं, मेवा मिष्टान्न आदि भक्षण करतो ... ते भक्षण करवानी जेना मनमा लालसाछे, अने

गतिरूप संसार तेनो नाश करनार जे ध्यान तेने सेवो, तेनो आदर करो, तेना उपर राग धरो. अने ध्यानवंत पुरुषोनी संगति करो के जेथी मति श्रुतज्ञाननी स्फूर्ति थाय जे ध्याननु अवलंबन करतां प्रसन्नचंद्र राजर्षि कर्मग्रंथी छेदी मोक्षे गया ते ध्याननु अवलंबन करवाथी मनुष्य जन्मनी साफल्यता जाणवी

श्लोक

आतुरैरपि जडैरपि साक्षात्, सुत्यजाहि विषयानतुरागः
ध्यानवास्तु परमद्युतिदर्शी, तृप्तिमाप्य नतमृच्छति भूय॰२

भावार्थ–कामातुर अने जड पुरुषोवडे पण कारण पामी पचेंद्रियना विषयो त्यजायछे जेमके–कोइने स्त्री भोगववीछे पण वेद-खानामाछे, तेथी सुखे विषय त्यागे कोइ रोगी दवाखावाना प्रसंगे घरी पाळेछे, तेथी शाकादिकनो सुखे त्याग करेछे, पण ते विषयनो कारणीभूत जे राग तेनो नाश थतो नथी राग दशा त्यागवी दुर्घटछे किंतु ध्यानवंत पुरुष तो मात्र परमात्म स्वरूपने देखनारछे तेथी ते ध्यानमां तृप्ति मानी पुद्गल वस्तुने न्यारी गणी आत्म स्वरूपमा मग्न थयो छतो अत्यंत आनंद भोगवेछे, तेवी ध्यान दशा पामी फरीथी विषयनु मूल कारण रागदशाने वांछतो नथी, कारणके ध्यानीने विषयमा थती जे सुखनी भ्रांति ते टळीछे तेथी राग थाय नहीं

श्लोक

यानिशा सकलभूतगणानां,
ध्यानिनो दिनमहोत्सव सएप॰ ।
यत्र जाग्रति च तेऽभिनिविष्टा,
ध्यानिनो भवति तत्र सुषुप्ति ३

सर्व प्राणीने निद्रामां जे रात्रि जायछे, ते रात्रि ध्यानदशावंत मुनिने दिवसना महोत्सवरूपछे, अहो ध्यानिनी केटली उत्तमता तेनुं सुख अनुपमछे. अने ससारी जीव विषयमा लीन थइ जे वेलाए जागेछे ते वेळा ध्यानवाळा मुनिराजने शयनरूपछे, एमां केटलो भेदछे ते विचारवो.

श्लोक

बध्यते न हि कषायसमुत्थैर्मानसैर्नतनतभूपनमद्भिः
अत्यनिष्टविषयैरपि दु.खै ध्यानवान् निभृतमात्मनिलीनः१

भावार्थ– यानवान् पुरुष .रागद्वेषरूप कषाय जनित मनथी बधातो नथी. ध्यानीने नृपतितति आवी नमस्कार करे तोपण तेनुं चित्त डोलातु नथी, अर्थात् तेमा मननी स्थिरता पूर्वना जेवी बनी रहेछे अत्यत अनिष्ट विषयना दु खे पण निश्चलपणु छोडे नहीं तेने आत्मामां लीन जाणवो.

श्लोक.

स्पष्टदृष्टसुखसंभृतमिष्टं, ध्यानमस्तु शिवशर्मगरिष्ठं ।
नास्तिकस्तु निहतो यदिन,स्यादेवमादि नयवाङ्मयदंडात्

भावार्थ–स्पष्टदृष्टसुखे भर्यु एवु इष्ट ध्यान ते मोक्षना सुख करतां पण अधिकछे, पण ज्यांसुधी शास्त्रना दड थकी नास्तिक भावने अतिशयपणे हण्यो नथी त्यां सुधी नथी, पण नास्तिक भावे रहित जे ज्ञान ते मोक्षछे

श्लोक

ज्ञातेप्यात्मनि नोभूयो ज्ञातव्यमवशिष्यते ।
अज्ञानपुनरेतास्मिन् ज्ञानमन्यानिरर्थकम् ॥१॥

जेने आत्माने जाण्यो तेने पुन, किंचित् अन्य जाणवानु रहु नथी, अने यावत् आत्माने जाण्यो नथी तावत अन्य सर्व जाण्यु निरर्थक छे

श्लोक.

नवानामपि तत्त्वानां, ज्ञानमात्मप्रसिद्धये,
येनाजीवादयो भावा स्वभेदप्रतियोगिन १

नवतत्त्वनु ज्ञान पण आत्मज्ञान प्रगट कराने माटेछे, कारण के अजीवादिक जे भाव ते पण आत्मज्ञानवडे समायछे

श्लोक

एक एवहि तत्रात्मा, स्वभाव समवस्थित ।
ज्ञानदर्शनचारित्र, लक्षणप्रतिपादित १
प्रभा नैर्मल्यशक्तीना, यथा रत्नान्नभिन्नता,
ज्ञानदर्शनचारित्र, लक्षणाना तथात्मन २
आत्मनो लक्षणाना च, व्यवहारो हि भिन्नता ।
षष्ठ्यादिव्यपदेशेन, मन्यते न तु निश्चय ३
घटस्वरूपमित्यत्र, यथा भेदो विकल्पज ।
आत्मनश्च गुणाना च, तथा भेदो न तात्त्विक ४

त्या आत्मा एक पोते स्वस्वभावपणे रह्योछे, ते आत्मा ज्ञान, दर्शन, चारित्ररूप लक्षणे करी युक्तछे

रत्ननी कांति अने निर्मलता शक्ति वड रत्न थकी भिन्न नथी तेम ज्ञान, दर्शन, चारित्र लक्षणथी आत्मा भिन नथी, आत्मा अने आत्मानु लक्षण ए ने व्यवहारे जुदाछे ते षष्ठी विभक्तिना व्यपदेशथी मनायछे किंतु निश्चयथी नहीं

जेम घट अने घटनु रूप तेनो भेद् विकल्प थायछे ते प्रमाणे आत्मा अने आत्माना गुणोनो भेद तात्त्विक नथी.

श्लोक

वस्तुतस्तु गुणानां तद्रूपं न स्वात्मन पृथक्
आत्मास्यादन्यथानात्मा, ज्ञानाद्यपि जडं भवेत्॥

भावार्थ–वस्तुतः जोता गुणोनु अने आत्मानु रूप जुदु नथी यदि भिन्न करीए तो आत्मा ते अनात्मा थाय ज्ञानादिक पण जड थाय.

श्लोक

मन्यते व्यवहारस्तु, भूतग्रामादिभेदतः ।
जन्मादेश्च व्यवस्थातो, मिथो नानात्वमात्मनां १
न चैतन्निश्चये युक्तं, भूतग्रामो यतोऽखिलः
नामकर्मप्रकृतिज· स्वभावोनात्मनः पुनः २

जन्मावस्था बाल, युवान, वृद्ध, स्त्री, पुरुष, नपुसक आदि भेदथी आत्माओनु विचित्रपणु व्यवहारनयवालो मानेछे, पण ए वात निश्चयनये जोता युक्त नथी अर्थात् सत्य नथी, ते नय एम कहे छे के–जीवने सर्व अवस्था नामकर्मना स्वभावथी प्रगटेछे पण ते आत्मानो स्वभाव नथी.

श्लोक

जन्मादिकोऽपिनियत· परिणामो हि कर्मणा,
न च . [illegible] द स्यादात्मन्यविकारिणि

निश्चयनयथी जोतां जन्म जरा मरणादिक परिणाम ते आत्मानो नथी पण ते कर्मनो परिणामछे माटे अविकारी आत्माने विषे कर्मनो वास्तविक संबध नथी.

श्लोक

यथा तैमिरकश्चद्र, मप्येक मन्यते द्विधा,
अनिश्चयकृतोन्माद स्तथात्मानमनेकधा २

भावार्थ–जेम तिमिर रोग वाळो एक चद्रने बे तरीके मानेछे तेम निश्चयनयना ज्ञान विनानो उन्मादक प्राणी आत्माने अनेक प्रकारे मानेछे.

श्लोक.

व्यवहारविमूढस्तु, हेतूंतानेव मन्यते ।
बाह्यक्रियारतस्वान्त स्तत्वं गूढ न पश्यति १

भावार्थ–व्यवहारनयमां रक्त विमूढात्मा परपर्यायने पोताना फलहेतु मानेछे माटे जेनु मन बाह्य क्रियामां रक्तछे तेवा प्राणी गुप्त तत्वने देखी शकता नथी.

श्लोक

अज्ञानी तपसा जन्म, कोटिभि कर्मयन्नयेत् ।
अन्तं ज्ञानतपो युक्त, तत्क्षणेनैव संहरेत् ॥

ज्ञानविना एककोटि भवसुधी अज्ञानी जेटलां तप करे ते तपमां जेटला कर्मनो क्षय न थाय तेटला कर्मोने एक क्षणमां ज्ञान सहित तपश्चर्याए खपावे

श्लोक

तद्ध्यान सा स्तुतिर्भक्ति सैवोक्ता परमात्मन· ।
पुण्यपाप विहीनस्य, यद्रूपस्यानुचितन ॥

शरीररूपलावण्य, वप्रछत्रध्वजादिभिः ।
वर्णितैर्वीतरागस्य, वास्तवीनोपवर्णना ॥

पुण्यपापरहित परमात्माना स्वरूपनु चिंतवन करवु तेने ध्यान कहेवु अने स्तुति तथा भक्ति पण तेज जाणवी.

पण शरीरना वर्ण लावण्य-वप्र, छत्र ध्वजाओथी परमात्माओने करी परमात्माने वखाणवा एवी जे स्तुति ते वस्तुत वास्तविक स्तुति नथी

श्लोक

व्यवहार स्तुतिः सेय वीतरागात्मवर्तिनां ।
ज्ञानादीनां गुणानां तु, वर्णना निश्चयस्तुतिः ॥
पुरादिवर्णनात् राज, स्तुतिः स्यादुपचारतः ।
तत्त्वत· शौर्यगांभीर्य धैर्यादि गुणवर्णनात् ॥

श्री तीर्थंकरना शरीरादिकनु वर्णन करवु एवी जे स्तुति ते व्यवहारे जाणवी. अर्थात् ते व्यवहार स्तुति जाणवी. पण वीतराग परमात्माना ज्ञानादिक गुण प्रशसवा अने ते गुणो पोताना आत्मामां सत्ताए रह्याछे एम जाणी तेनु ध्यान करवु. तेज खरी स्तुति छे परमात्म स्वरूप हु छु, एम सतत दृढ निश्चयथी चिंतववु ते निश्चय स्तुति जाणवी.

जेम देश नगरादिकना वर्णनथी राजने वखाणेलो ते उपचारे स्तुति जाणवी अने राजानु बल गांभीर्य धैर्यादिक गुणोनुं वर्णन ते निश्चय स्तुति जाणवी

श्लोक

पुण्य पाप विनिर्मुक्तं तत्त्वतस्त्वविकल्पकं ।
नित्यं ब्रह्म सदा ध्येयमेषा शुद्धनयस्थितिः ॥

क्षमा खड्ग करे यस्य, दुर्जन: किं करिष्यति;
अतृणे पतितो वन्हि स्वयमेवोपशाम्यति ८

क्षमा एज भव्यात्माओनो नाथ जाणवो, माता पिता मित्र समान पण क्षमा जाणवी. क्षमा एज मोटी शोभाछे क्षमा एज कीर्त्ति जाणवी. कारण के जेनामा क्षमा नथी अने क्रोधे करी धमधमायमान सदा रहेछे तेनी कीर्त्ति जगमां थती नथी क्षमाथी कीर्त्ति उत्पन्न थायछे क्षमा तेज सत्य जाणवु क्रोधीमां सत्य क्यांथी होय. क्षमा एज मोटी पवित्रताछे. क्षमा विना ज्ञान पण लेखे नथी दान पण लेखे नथी क्षमा रहीत साधु होय तो ते नामनो साधु जाणवो, ज्यां क्षमा नथी त्यां गभीरता रहेती नथी. क्षमा एज मोटु तेजछे, सुखकारक आनंदमडा पण क्षमाछे, जे क्रोधी होय ते आनंद क्याथी पामे ? क्रोधीना अनेक वैरियो दुनीयामां होयछे तेथी क्रोधीने निरांते उंघ पण आवती नथी वळी क्रोधी मनुष्यनो कोइ मित्र पण होतो नथी कारण के ज्या त्या क्रोधथी तेना उपर अप्रीति जलनी दृष्टि थया करेछे, क्षमा कल्याणकारीछे, जे मनुष्यमां क्षमा नथी ते पोताना तथा परना आत्मानो घातक बनेछे. क्षमा मोटी पूजाछे कर्मरूप रोगथी रहीत थवा माटे क्षमा पथ्यछे क्षमा एज मोटु हितछे क्षमा ए मोटु दानछे जेनामा क्षमाछे ते पोताना आत्माने ज्ञान दर्शन चारित्र गुणोनु दान आपेछे क्षमा तुल्य अन्य कोइ तप नथी कुरगडु ऋषिए क्षमारूप तपथी आत्महितनी सिद्धि करी श्री वीरभगवाने क्षमावडे अनेक उपसर्गो सहन कर्या, श्री मेतार्यमुनिए क्षमाथी आत्महित साध्यु श्री स्कंधकसूरिना शिष्योने घाणीमां घाली पील्या पण तेमणे क्षमाथी कर्म शत्रुनो पराजय करी आत्मिक लक्ष्मी प्राप्त करी समरादित्य केवळीए साधु अवस्थामां क्षमाए करी घोर उपसर्ग सहन कर्या. क्षमाधारक अनेक मुनिवरोए

परमात्मपद प्राप्त कर्युं भविष्यत् काले पण करशे, अतात्मा क्रोधरूप अग्नि सळगी रह्योछे अने बाह्यथी छठ अठ्ठम विगेरे करे तोपण आत्महित थतुं नथी. क्रोध नरकनुं बारणुंछे. क्रोध फणीधर सर्प समानछे ते क्षमारूप नागदमनी औषधीथी वश थायछे. क्षमाना समान तप नथी, संतोष समान सुख नथी दया समान धर्म नथी.

काम अने क्रोध सहीत जे प्राणीछे ते जगलमां जोगी थइ वास करशे तो पण शुं थयु ? अलवत कइ नहीं. अथवा जेणे काम क्रोध जीत्याछे ते अरण्यमां जइ शुं करशे ? अलबत् कइ नहीं। काम क्रोधनो तें जय कर्योछे तो तुं अरण्यमां जइ शुं करीश ? जेनुं चित्त काम क्रोधादिक कषाय सहीतछे तो तेने कषायला वस्त्र पहेरवावडे करीशुं ? अथवा जो चित्तमां काम क्रोधादिक कषायनी उत्पत्ति नथी तो तेवा पुरुषने कशायला वस्त्र पहेरवाथी शुं ? अर्थात् कइ नहीं

जेणे इंद्रियो दमी नथी तेने अरण्य थकी शुं ? तथा अदातने आश्रमोवडे करी शुं ? अर्थात् कइ नहीं. जेने इंद्रियोने जीतीछे एवो दान्त पुरुष जे ठेकाणे वसे ते अरण्य तथा आश्रम जाणवुं, माटे भव्यात्माओ क्षमा धारण करो. क्षमा रूप खड्ग जेना हाथमांछे तेने दुर्जन शुं करशे ? अर्थात् कइ नहीं, तृण विनानी जगाए पडेलो अगारो पोतानी मेळे शान्त थइ जायछे, तेम आपणा उपर अन्य पुरुषे क्रोध कर्यो पण आपणे क्रोध करीशुं नहीं अने क्षमा राखीशुं तो अन्य पुरुषे आपणा उपर वरसावेलो क्रोध पोतानी मेळे शान्त थशे.

श्लोक.

क्रोधान्धाः पश्य निघ्नति पितरं मातर गुरुम् ।
सुहृदं. ... द्वारा नात्मानमपि निर्घृणाः ॥ १

हे भव्य देख क्रोधान्ध जीवो पिता माता अने गुरुनो पण-नाश करेछे स्वजन मित्र सहोदर स्त्री तथा पोताना आत्मानो पण निष्ठुर पुरुषो क्रोधवशे घात करेछे. माटे क्रोधने त्यागी क्षमा धारण करवी, भव्य प्राणी क्षमा धारण करी सामायक समभाव स्वरूप करे आत्मा अने आत्माना गुणो ज्ञान दर्शन चारित्रादिकनु स्वरूप मनमा विचारे—

यत. श्लोक

नचात्मन पृथक्ज्ञाना, दि त्रय विद्यते क्वचित् ।
ज्ञानादि त्रय मेवात्मा, नास्य कापि परा भिदा ॥१॥
आत्मानमात्मना वेत्ति, मोहत्यागाद्य आत्मनि ।
तदेव तस्य चारित्र । तज्ज्ञान तच्च दर्शनम्- ॥१॥

आत्माथी पृथक् ज्ञानादिनिक नथी, ज्ञानादिक स्वरूप आत्मा छे, व्यवहारथी तेनो भेद जाणवो

श्री हरिभद्रसूरियोगप्रदीपमां सामायिकनु लक्षण कहेछे.

श्लोक

अतीत च भविष्य च यन्न शोचति मानसं ।
तत् सामायिक मित्याहु, र्निर्वातस्थानदीपवत् १
निस्सग यन्निराकार, निराभास निराश्रय ।
पुण्यपापविनिर्मुक्त, मन सामायिक स्मृत ॥२॥
गते शोको न यस्यास्ति नैव हर्ष समागते ।
शत्रु मित्र सम चित्त, सामायिक मिहोदित ॥३॥

भावार्थ अतीतकाळमां जे थइ गयु, अनागत संबंधी वा पाप-संबंधी तेनो विकल्प संकल्प करे नहीं, वा अतीतकाळ संबंधी कोइ

घात याद करे नहीं. साराश के अतीतकाल सबधी शोक करे नहीं. तेम भविष्यकाल सबधो स्व अने पर आश्रयी विकल्प संकल्प करी शोक करे नहीं. विकल्प सकल्प रहीत आत्मानी स्वउपयोगे अवस्थीति–तेने सामायिक कहेछे कोनी पेठे ते दर्शावेछे, वायु रहीत दीवानी ज्योतिनी पेठे दीवाने वायु लागता ज्योति चचळ थायछे, तेम आत्मामां पण विकल्प सकल्प थता आत्मा चचल थइ परस्वभावमां पडेछे. माटे एकाग्रचित्ते स्थिरपणे एक आत्मस्वरूपमा उपयोग राखवो ते सामायिक जाणवु मनमा कोइ पण वस्तु चिंतववी नहीं, मननी साथे कोइ पण वस्तुनो सग थाय नहीं. अर्थात् मन अन्य वस्तुना संगथी रहीत होय, कोइपण वस्तुनो आकार मनमा चिंतववो नहीं, मनमा कोइ पण वस्तुनो आभास रहे नहीं. कोइपण वस्तुना आश्रय रहीत मन निराश्रित होय, मन पुण्य अने पापना व्यापार रहीत होय, मनने आत्म स्वरूपमा लीन करी देवु, जेम भरउघमा कोइ पण वस्तुना व्यापार रहीत बाह्यथी देखता जणायछे, तेम भरउघनी पेठे परवस्तुने भूली अखड निर्मल आत्म स्वरूपमा आत्म स्वभावे जागवु, अने परस्वभावनी चिंतवना करवी नहीं अने तेने सामायिक कहेछे

गतकाल, गतअवस्था, गतवस्तु आदिने विषे मनमा शोक थाय नहीं, अने आवतो काल, आवनार भावीकाले वस्तुना इष्ट सयोग तेनो मनमा हर्ष थाय नहीं, अने शत्रु तथा मित्र उपर समचित्त होय एवी जे आत्मानी अवस्था तेने सामायिक कहेछे. आ उपरना त्रण श्लोको कषाकोष ग्रथमा कथाछे जे भव्यात्माओने क्षमावडे तथा समपणे सामायक वर्तेछे तेमने क्रोधादिक शत्रुओ पराभव करी शकता नथी.

भव्यात्माए मुक्तिपदनी चाहना राखवा अदेखाइनो - नाश क

रवो जोइए अदेखाइ रूप नागण हृदयमां पेसतां आत्माना गुणो हणायछे परना गुणो सांभळी तथा परजीवनी कीर्ति सांभळी प्राणी विचारे छे के-हाय, हाय ते माराथी वधारे वखणायछे लोकोमां तेने वधारे मान मळेछे, पनी जो भूल थाइ वा तेना उपर कइ कलंक चढे तो ठीक थाय एम पाप विचार करी लोकोनी आगळ निंदा करे. खोटां कलंको चढाववां. ए सर्व अदेखाइनुं फळछे नागण कदापि कोइने करडे तो सारी पण अदेखाइरूप नागिणी जे प्राणीने डसेछे तेनुं आ भवमां तथा परभवमां पण खराब थायछे, अदेखाइ ज्यां सुधी हृदयमांहि त्यां सुधी आत्मज्ञान थतुं नथी वकील वकीलनी साथे अदेखाइ, साधु साधुनी साथे अदेखाइ, वेपारी वेपारीनी अदेखाइ, नोकर नोकरने अदेखाइ साथे रहेवालो समजवे, माटे आत्मार्थी प्राणी मनमां विचारे के-मर्द प्राणी, पोताना कर्मयोगे शाता वा अशाता भोगवेछे कोइनी कीर्ति थाय तेमां मारे शा कारणथी अदेखाइ करवी ? जेवां कर्म ते प्रमाणे यश वा अपयश थया करेछे, तेमां मारे शुं ? यश वा अपयश, मान वा अपमान ए कइ आत्मिक वस्तु नथी हुं आत्मा तेनाथी भिन्नछुं, हुं कर्मयोगे कोइ वखत राजी थयो ते वखत पाचकोड कीर्ति गाइ, पण तेमांनुं आजे कइ नथी वळी कोइ भवमां अपमान पण घणां थयां हशे पण तेमांनुं हाल कइ नथी जे पोतानी वस्तु नथी तेमां अहंभाव सकळी मम रति अरति करवी जोइए, कयुंछे के-

कबहिक काजी कबहिक पाजी, कबहिक हुआ अपभ्राजी,
कबहिक जगमें कीर्ति गाजी, सब पुद्गलकी बाजी आप स्व० ?

धवळशेठ श्रीश्रीपाळनी अदेखाइथी अंते मरण पाम्या अने दुर्गतिमां गया धवलशेठे अदेखाइथी शुं शुं कृत्य कर्युं नथी, दुनीयामां अदेखाइ करनारनी पडवी थया विना रहेतो नथी. अदेखा-

इथी निंदा कपट हिंसा, असत्यादि दोषो उत्पन्न थायछे, विशेषे शुं कहेवु ? आत्मार्थी पुरुषे अदेखाइनो नाश करवो. तेनो नाश करवा सत पुरुषोनी सगति करवी.

जे पुरुषने मानदशा होयछे ते मानी कहेवायछे, मानी पुरुष कृत्य अकृत्यने विचारतो नथी, तथा तेने जरा पण शान्ति मळती नथी अने ते विद्या धन पामी शकतो नथी, लघुताथी प्रभुता थाय माटे लघुता भावी माननो नाश करवो. रावण दुर्योधनादि पुरुषोए मानथी दुःखराशि ग्रहण करी. गमे तो राजा होय. करोडाधिपति होय तोपण मान दशा ज्यारे टूटे त्यारे कल्याण थायछे, बाहुबल मुनिवरने मान केवलज्ञानमा विघ्नकारक थयो. अने ज्यारे मान दशा छोडी त्यारे केवलज्ञान उत्पन्न थयुं श्री यशोविजयजी उपाध्याय मान नामना पाप स्थानकनी सझायमा कहेछे के—

विनयश्रुत तपशील त्रिगुण हणे सवे, माने ते ज्ञाननो भजक होय भवोभवे;
लुपक छेक विवेक नयणनो मानछे, एहने छंडे तास न दुःख रहे पछे.

इत्यादि विचारी भव्य पुरुषोए मानदशा त्यागी आत्मस्वरुपमा आयुष्य गाळवु मायास्वरुप कथाकोश ग्रंथे आ प्रमाणे छे.

माया परित्याग महो विधाय, सदार्जव साधुजना विधत्ते
यथैहिका मुष्मिक कामितानां, सिद्धिर्भवेद्दः परमार्थशुद्धा

यतः श्लोक.

दंपती पितरः पुत्राः सोदर्य्याः सुहृदो निजाः ।
ईशा भृत्यास्तथान्येऽपि माययाऽन्योऽन्य वंचकाः ॥१॥
सर्वं जिम्हं मृत्युपद मार्जवं ब्रह्मण· पदं ।
एतावान् ज्ञान विषयः प्रलापः किं करिष्यति. ॥२॥

समग्र विद्या वैदुष्येऽ, विगतासु कलासुच ।
धन्यानामुपजायेत । बालकानामिवार्जव ॥३॥
अज्ञानामपि बालानां, आर्जवं प्रीतिहेतवे ।
किं पुन सर्व शास्त्रार्थ परिनिष्ठित चेतसां. ॥४॥
श्रुताब्धि पारमाप्तोपि । गौतमो गणभृद्वर ।
अहो शैक्ष इवाश्रोपीत आर्जवाद्भगवद्गिर ॥५॥
अशेषमपि दुःकर्म रुग्वा लोचनया क्षिपेत् ।
कुटिलालोचनां कुर्वन् अल्पीयोपि विवर्धयेत् ॥६॥
काये वचसि चित्तेच समतात् कुटिलात्मनां ।
न मोक्ष किं तु मोक्ष स्यात् सर्वत्रा कुटिलात्मनां ७
तप क्रिया ज्ञान विचक्षणा अपि ।
कौटिल्यमेकं न परित्यजत ॥
दुर्योनि दु खानि लभाति ते नरा ।
'साध्वी यथा वीरमतीति नाम्नी. ॥ ८ ॥

अहो आ जगतमां जे खरेखरा गुणोथी साधुजनोछे ते कपटना त्याग करी सरलताने धारण करेछे, आ भव अने परभव संबंधी इच्छित कार्योनी सिद्धि सरलताथी थायछे अने परमार्थथी विचारतां धर्मनो अधिकारी पण निष्कपटी भव्यात्माछे स्त्रीओ पिताओ, पुत्रो, मित्रो सहोदरो, स्वामीसेवक आदि मायावडे परस्पर वंचक जाणवा मृत्युने देनार (मृत्युपद)' कपट जाणवुं सरलता धर्मनुं स्थान आत्माने हितकारकछे.

समग्रविद्याएकरी विद्वान होय अने सर्वकलानो वेत्ता होय तोपण कपटनो त्याग थवो मुश्केलछे. धन्यछे एवा पुरुषोने के नाना भोळा बाळकोनी पेठे सरलताने धारण करेछे.

जेने तत्त्वनु ज्ञान नथी एवा बालकोनी सरलता पण मीति माटे थायछे तो जे सर्व शास्त्रार्थना पारगामीछे, एवा पडितोनी सरलता आत्माने विशेष हितकारी थाय तेमा शु कहेवु ?

श्रुतज्ञाननो दरियो एवा गौतम गणधरे पण सरलताथी भगवाननी वाणी साभळी अहो केवी आश्चर्यता ?

सरलपणे आलोचना करवाथी घणा कर्मने प्राणी खपावेछे, कुटिलताथी आलोचना करतो अल्प पापी होय तो पण प्राणी पापने वधारेछे, जेनी कायामा मनमा वचनमा कुटिलताछे, एवा जीवो उत्कृष्ट तप तपे, आकरी क्रिया करे, वैराग्यरगमा झील्या होय एवा देखाय तोपण तेनो आत्मा कर्मरहीत थइ मोक्षपद पामतो नथी, मायाए रहीत जीवोनो मोक्ष थायछे एमा सदेह नथी. विचित्र प्रकारना तप अने विचित्र प्रकारनी धर्म सबधी क्रिया अने ज्ञानमा विचक्षण एवा पुरुषो पण एक समग्रदुःखमूलभूता कुटिलताने सेवता दुर्योनिमा उपजी विचित्र प्रकारना भयकर दुःखोना भागी थायछे. जेम वीरमती नामनी साध्वी कुटिलताथी दुःख पामी तेम कपटी पुरुषो पण धर्म विषयमा कुटिलता करी चतुर्गतिरूप ससारमा परिभ्रमण करेछे, माटे आत्मार्थि पुरुषोए मने करी वचने करी तथा कायाए करी कुटिलतानो त्याग करवो, निष्कपटी मनुष्यने धर्म परिणमेछे. उदायीराजानो घातक बाह्यथी साधु अने अत्यत विनयवत एवो विनयरत्न कुटिलताथी मरी नरकमा गयो, तेम तेनी पेठे जे धर्माचारमा बाह्यथी जुदा आचरण अने मनमा जुदु एम करशे ते धर्मरत्न पामी शकशे नहीं. अने दुःखना

भागी थशे भावधर्मनी प्राप्ति कोइ विरला जीवोने थायछे. द्रव्य धर्म तो कपटी पण आदरेछे, आत्मज्ञानी समकिती जीवने भावधर्मनी प्राप्ति थायछे, सारांश के मायानो त्याग करशे ते परमात्मपद पामवाने योग्य थशे. श्रीयशोविजयजी उपाध्याय कहेछे के–

श्लोक.

दंभेन व्रतमास्थाय, यो वांछति परपद ।
लोहनाव समारुह्य, सोऽब्धेः पारयियासति ॥१॥
केश लोचधरा शय्या, भिक्षा ब्रह्मव्रतादिक ।
दंभेन दुष्यते सर्व, त्रासेनेव महामणिः ॥२॥
सुत्यज रस लापट्य, सुत्यज देह भूषण ।
सुत्यजा कामभोगाद्या, दुस्त्यज दंभसेवनम् ३
स्वदोष निन्हवो लोक, पूजास्यात् गौरव तथा ।
इयतैव कदर्थ्यंते, दंभेन व्रत बालिशा ४
अहो मोहस्य माहात्म्य, दीक्षा भागवतीमपि ।
दंभेन यद् विलुपति, कज्जलेनेव रूपक ५
आत्मोत्कर्षात् ततोदंभात्, परेषा चापवादत ।
बध्नाति कठिन कर्म, बाधक योग जन्मन ६

कपटवृत्तिथी पचमहाव्रत ग्रही जे जीवो परमपदने वांछे छे, ते जीवो लोहनी नावमा बेसी समुद्रनो पार पामवा इच्छता होय तेम जाणवा

केशनु लुंचन करवु साधुने महेल छे, सूर्यसामी दृष्टि राखी आतापना लेवी सहेलछे, पृथ्वीने विषे शयन करवु, लज्जानो

त्याग, गृहे गृहे भिक्षा मागवी, काम विकारने जीतो ब्रह्मचर्य पाळवु आदि सर्व सहेलछे किंतु साधुने कपटनो त्याग करवो मुश्केलछे सर्व व्रत, तप क्रियादि कपटथी दुषित थायछे. जेम सुंदर निर्मल मणिने डाघलागवाथी तेनी कांति मंद थायछे तेनी पेठे अत्र समजवु.

रसनु लोलपीपणु सुखे त्यागी शकाय, देह भूषण पण त्यागी शकाय. कामभोगादिने पण सुखे त्यागी शकाय पण कपटनो त्याग करवो घणो विकटछे. जेम जेम विद्वत्ता वृद्धि पामे तेम तेम आत्म उपयोगी शून्य मुनि कपटमा पोतानी विद्यानो उपयोग करे छे कपटभाव त्यागवाथी सुख थायछे, कोइ प्राणी मान पूजानो लालचे उपरथी बाह्य चारित्र शुद्ध पाळे, पंचसमितिनो बाह्यथी खप करे, त्रण गुप्तिनो बाह्यथी सारी रीते खप करे उपरथी एवो वैराग्य जणावे के लोको तेना उपर फीदा फीदा थइ जाय पण अंतरमां आत्मानो उपयोग होय नहीं अने अभ्यंतर निर्मल परिणाम न होय पोताना गच्छनो मतनो पक्ष सबल करवानी लालसा बनी रही होय, आत्मा अने परमात्मानु स्वरूप शुं छे ? तेनो तो विचार पण करे नहीं, व्याख्यान वाणीथी हजारो जीवोने रंजन करे, बोलवानी कळा एवी होय के जेथी बिचारा मुग्ध जीवोने वश करी दृष्टी रागीया करे, एवो साधु कपटवृत्तिथी परमात्म स्वरुप पामी शकतो नथी. ज्यारे साधुनी पण आवी स्थीति छे तो अल्पज्ञ संसारना खाडामा पतित थावकवर्गतो भाग्ये कपटनो त्याग करी शके कपट रुप काळो नाग जे भव्यना हृदयमां पर निंदा, स्वमहत्वता, परापकर्षरुप फणीवडे करी सहीत वसतो होय ते प्राणी दुःखनी परंपराने पामेछे अल्पज्ञ पुरुषो कपटीयोना कपटने [illegible] नथी, जे मुनि बाह्य क्षणिक मान पूजा कीर्तिनी [illegible] आगळ ठीकठाक आवरण देखाडी रंजन

करे ते श्रावकनी आगळ एवु बोलेके ते भद्रिक महामुनि तेमने जाणे पण पोतानामा कइ होय नहीं

श्री चिदानदजी महाराज कहेछे के—

कथनी कथे सहु कोइ, रहेणी अति दुर्लभ होइ,
जब रहेणीका घर पावे, तब कहेणी लेखे आवे १

निष्कपटी अने कपटी साधुओनी परीक्षा करवी दुर्घटछे, महा बुद्धिना धणी एवा अभयकुमार सरखा कपटी वेश्या श्राविकानु कपट जाणी शक्या नहीं, तो बाळजीवोनु शु कहेवु ? जेने मान पूजा कीर्तिनी लालच गइछे एवा पुरुषोने धन्यछे, विवेकी सुज्ञ पुरुष हसनी पेठे कपटी अने निष्कपटी साधुओनी परीक्षा करी देछे, कपटी एम धारेछे के हु अन्यने छेतरु छु पण कपटथी तेना आत्माने कर्म छेतरी पोताने वश करेछे ते जाणी शकतो नथी आखी दुनीयामा कपटजाळ मोह राजाए पाथरीछे तेमा मनुष्यादिक रूप माछला बिचारां अतत्ना अज्ञाने सपडायछे. अने विविध दुःख पामेछे, जेने खरेखरु निज आत्मानु ज्ञान थायछे ते कपटजाळने छेदी नाखेछे, निष्कपटी पुरुषोनी वाणीमा द्विधाभाव रहेतो नथी, निष्कपटी मनुष्य जेवु होय तेवु कहेछे. कपटीनी वृत्ति काक सदृशछे पोताना दोषने गोपवनार लोक पोतानु गौरव मान पूजा जेम थाय तेम दभथी आचरण करेछे, अहो केटली अज्ञानता ? जेनो अते त्याग करवानोछे तेनामा मुझावु ए बालजीवोनु लक्षणछे प्राणी मनमा परमार्थबुद्धिथी विचारे तो कपट करवानु कइ कारण नथी एम विश्वास थाय गुरुमहाराजने पण कपटी शिष्यनो विश्वास आवतो नथी ज्ञानी गुरुराजनी पासे जड कोइ प्राणी कपटथी पृच्छा करे तो ते तुरत जाणी लेछे अने तेथी पृच्छकने अयोग्य जाणी मौन धारेछे, कपटी एवु जाणीने कपट

करेछे के, हु युक्ति रचु छु, हु कळा करुछु, हु वोलुछु, ते अन्य कोइ जाणतु नथी पण याद राख के प्रथम तो कपटने जाणनार तारा शरीरमा रहेलो तारो आत्माछे. बीजु सिद्ध भगवत ज्ञाने करी तारु कपट जाणी रयाछे, कोनाथी छानु तारु कपटछे. हे मूर्ख जीव ! तु चार घडीना चादरणानी पेठे आ दुनीयामां थोडो काल रही परभवमा चाल्यो जनारछे, तारा शरीरनी खाख थइ जशे, हाडकाना चूरेचूरा थइ जशे. करेला कर्म परभवमां भोगववा पडशे. तु तारी मेळे विचार तो तारा आत्मा न्यायाधीशनी पेठे न्याय करी आपशे, कपट विनानी तारी केटली जींदगी गइ ? तेनो विचार कर–तारु कपट कदापि तु अत्र छानु राखीश पण परभवमा केम छूटीश ? राजा, राणा, शेठ, गरीब आदि सर्व कपट करशे तो ते तेनु फल भोगवशे. पोताना आत्माने सुबुद्धि-थी प्रश्न करो के हे आत्मा तने कपट प्रियछे ? त्यारे आत्मा तर-फथी विचार थशे के कपट करवु ते महापापछे

- अहो मोहराजानु माहात्म्य तो जुओ के प्राणी श्री तीर्थंक-रोक्त भागवती दीक्षाने पण काजळे करी चित्रामणनो जेम लोप थाय तेम कपटे करी लोपी नाखेछे

पोताना आत्मानी वडाइ करे, घणु कपट धरे अने पारका अवर्णवाद बोले तेथी प्राणी कठीन कर्म बांधेछे, तेवा पुरुषो योगी-ना जन्मने वाघ करनाराछे ते शुद्ध चारित्र पामी शके नहीं. श्री यशोविजयजी उपाध्यायजी "माया" विषे कहे छे के—

नवमास उपवासीया सुणो सताजी ।
शीत लीए कृश अन्न गुणवंताजी ॥
गर्भ अनंता पामशे सुणो सताजी ।

आरभ्यते पूरयितु, लोभगर्तो यथा यथा ।
तथा तथा महच्चित्रं, मुहुरेषो विवर्धते १३
लोभस्त्यक्तो यदि तदा, तपोभिरफलैरल
लोभस्त्यक्तोनचेत्तर्हि, तपोभिरफलैरल १४
लोभमूलानि पापानि, रसमूलानि व्याधय
स्नेहमूलानि दु खानि, त्रीणित्यक्त्वा सुखीभव १५

सर्व दोषनु स्थान लोभछे, गुणनो ग्रास करवाने लोभ राक्षस समान छे व्यसनरुप वल्ली कदभूत लोभ जाणवो एम सर्वार्थनो बाधक लोभ जाणवो निर्धन सो रुपीयाने इच्छे, अने सो रुपीया मळे हजारनी इच्छा, अने हजारनो अधिपति थये लाखनी इच्छा थाय लक्षमळे करोडनी इच्छा थाय कोटीश्वर नृप रद्धि चाहे, राजा चक्रवर्तिनी पदवी इच्छे अने चक्रवर्ती देवतानी ऋद्धि चाहे छे, देवताने इद्रनी पदवानो लोभ रहे छे एम मूलमा लघु अने अते वृद्धिने पामनार लोभ शरावनी पेठे जाणवो

पापनु मूळ हिंसा अने कर्मनु मूळ जेम मिथ्यात्व, अने रोगोने विषे जेम राजरोग (क्षयरोग) सर्व रोगनु मूळछे तेम लोभ सर्व पापनो गुरु छे अहो लोभनु साम्राज्यतो जुओ पृथ्वीने विषे एक छत्र लोभनु राज्यछे, वृक्षो पण निधानने पामी मूळीए करी सताडेछे

द्रव्यना लोभमा द्वीन्द्रियादि जीवो पण सपडायाछे पूर्व भवना निधान उपर मूर्च्छावडे अधिरोहण करे छे

सर्प, उदर, गिरोली प्रमुख पण धनना लोभमा पूर्व भवनी मूर्छाना योगे फसायछे. अने निधानना उपर वास करेछे

भूत प्रेत पिशाच यक्षादिक पण धनना अधिष्टाना तरीके रहे छे, अहो लोभनी केवी सत्ताके देवताओ सरखा पण धनादिकनी मूर्छाए नीच योनिमा अवतरेछे भोग मोग मुनिवरो के जे उपशा-

न्तमोह गुणठाणे क्रोधादिकने क्षीनी चढ्याछे तो पण तेमने लोभ धक्को देइ पाडी नाखेछे

लोभथी राजाओ ठाकोरो विगेरे गामनी सीमोनी तकरारमा हरसाल क्लेश करी वैर धारण करी लडी मरेछे, जुओ प्रत्यक्ष रुशीया अने जापान देश लोभना कारण माटे मोटी मोटी हाल लडाइओ करी अने तेमा लाखो जीवोनो संहार थयो.

लोभरूपी खाडाने पूरवा माटे जेम जेम प्रयत्न करीये छीए तेम तेम वृद्धि पामेछे. अहो केवु आश्चर्य ?

लोभ त्याग्यो तो तपवडे पण शु ? अर्थात् लोभना नाशथी तप तपवानी कइ जरूर नथी अने कदापि जो लोभ हृदयमा छे तो तपश्चर्यावडे करीने शु ? अर्थात् कइ नहीं लोभ मूळ भूत पाप कृत्य जाणवा, रसमूळ भूत व्याधियो जाणवी स्नेह मूल दुःखो जाणवा, एटले स्नेहथी सर्व दुःखो उत्पन्न थायछे, माटे हे प्राणी ए त्रण वस्तुओनो त्याग करी तु सुखी था.

लोभथी कपट थाय लोभथी जीवहिंसा थाय, लोभथी असत्य वचन बोलवु पडे, लोभथी चोरी करवानु मन थाय. लोभथी कृत्य अकृत्यनु भान रहे नहीं. लोभथी लज्जा दूर रहे, लोभथी धर्मनाश पामे, लोभथी विवेकनो नाश थायछे. लोभी पुरुषने सुखे निद्रा पण आवती नथी, लोभी पुरुष गरज वखते गधेडाने पण बाप कहेछे लोभी पुरुष सदा पारकु खरात्र चाहेछे, लोभी पुरुष मातापिताने पण छेतरेछे, लोभी पुरुष साधु पुरुषनु पण अपमान करेछे, मम्मण शेठ जेवा लोभी पुरुषो परभवमा पण सुख पामी शकता नथी, आ दुनीयामा लोभी पुरुष शु शु कृत्य करी शकता नथी. लोभी पुरुष धनने माटे घात करेछे तेनु मरण इच्छेछे, जुओ लोभ वशे धवल शेठ राजाने मारवा माटे गया, पण खोटे ते पडे

तेनी पेठे पोते मरण पाम्या अरे दुर्गतिमा गया लोभथकी सागर शेठ समुद्रमां बूडी मरण पाम्या लोभथी पुत्र पोताना पिताना राज्यने माटे घात करेछे, करावेछे, वाछे, लोभी पुरुषनी पासे लाखो रुपैया होय तो पण पुरते सुखी थई सकता नथी, लोभी पुरुष पापकर्मथी जरा मात्र पण डरतो नथी साधुओने वस्त्र पात्र शिष्यादिकनो लोभ होय छे ज्ञानी पासे तेमांनु कई नथी. ज्ञानी वस्त्र पात्रादिक राखे छे छता ते उपर मोह राखतो नथी ज्ञानी मनमा एम विचारे छे के हु कई वस्तुनो लोभ करु जे वस्तुनो लोभ थाय छे ते वस्तुक्षणीकछे अने मारी नथी, राज्य धन, कुटुंब, पुत्र, पुत्रीओ, घर, हाट, वस्त्र, विगेरे वस्तुओ आत्मानी नथी अने आत्मानी साथे आवनार पण नथी फक्त अज्ञानताए जीव परवस्तुने पोतानी मानी तेना लोभमा विचित्र दु खो पामेछे मरी गया बाद सर्व वस्तुओ ज्या हशे त्यानी त्या रेहेशे. माटे अरे जीव जरातो विचार ! ! पृथ्वी, घर, हाट, राज्य, लक्ष्मी मूकी घणा मनुष्यो चालया गया तेम तु पण एक दिवस सर्व मूकीने चाल्यो जवानो, जे कायामा सारु सारु मिष्टान्न तु भरेछे, जे कायामा तु वस्योछे, जे कायावडे तु हाली चाली शकेछे, जे कायाने तु हवरावे धोवरावेछे ते काया पण अते तारी थवानी नथी तो तु लोभ शा माटे करेछे ? धूमाडाना बाचक भरवा जेम नकामाछे ते परवस्तुने पोतानी मानी लोभ करवो ते पण खोटोछे खारु जल पीवाथी जेम तृप्ति वळती नथी तेम लोभ करवाथी शान्ति सुख मळता नथी माटे अमृत समान संतोष गुणनु हे जीव तु सेवन कर के जेथी शान्ति सुख मळे.



संतोप स्वरूप

श्लोक=कथाकोप ग्रंथे

यथा नृणां चक्रवर्ती, सुराणां पाक शासनः
तथा गुणानां सर्वेपां, संतोप परमोगुण १
संतोपयुक्तस्य ःयते रसंतुष्टस्य चक्रिण.
तुल्यासंमितोमन्ये प्रकर्प सुख दु खयो॰ २

३

ां ।

। ४

इद्र, तेम सर्व
यतिना जेटलु
मन करवावडे
क्तिवी सुखनुं
र एवा सतोप
कोमा शयन
सुखी जाणवो
ख होतु नथी.
. सतोप अ
वा समर्थछे.
सतोपी मोटा
। नथी आ-

त्मज्ञान थया विना तात्त्विक संतोष थतो नथी माटे आत्मज्ञान क रतां सर्व दोषो नाश पामशे चक्रवर्ती सरखा मोटा राजाओ पण लक्ष्मीनो त्याग करी सुखी थया

आत्मार्थी भव्योए पारकी निंदानो त्याग करवो, कारण के निंदक चंडालछे निंदक मोटो पापीछे नाम दइने निंदा करे तो अधम जाणवो परमा भूल होय पण तेना पुठे निंदा करवाथी कइ फायदो थतो नथी पापमा शक्तिवाळा पुरुषोने निंदा करवानो स्वभावछे. गंगाजलमा स्नान करनार होय, अडसठ तीर्थनी यात्रा करे किंतु जो ते निंदक छे तो ते अपवित्र अने दुष्ट जाणवो, वडा दूर पुरुषो निंदा करता नथी. निंदक कागडाना करता पण भूंडोछे. अदेखाइथी निंदा उत्पन्न थायछे अने निंदाथी क्लेश उत्पन्न थायछे अने ते सामा पुरुषना जाणवामा आवे तो परस्पर वैर थथायछे, निंदक आभवमा तथा परभवमा पण दुःख पामेछे, निंदा करवाथी मित्रनी मित्राइ पण तूटेछे

जो तमे गुणी थवाने चाहताहो के मनुष्यनी धोळी बाजू तरफ दृष्टियो पण काळी बाजु तरफ दृष्टि यो नहीं, हालना वखतमा कोइ सर्व गुणी नथी, कोइ पुरुषनी कोइ निंदा करे तो तेने मनमा एम विचारवु के भले ए निंदे हु जो सारो मनुष्य छु तो तेनी निंदाथी मारे शु ? निंदकना उपर मारे केम क्रोध करवो जोइए ? सामा मनुष्यनु हित इच्छवु होय तो तेना गुण गावा कोइ निंदक निंदा करे तो उलटु निंदकनामा जे गुण होय ते आपणे वखाणवो पण खराब लागणीथी साम्रु तेनु बुरु करवा प्रयत्न करवो नहीं कोइ आपणा उपर दुष्टता करे तो पण आपणे तेनी तरफ शुभ भावना राखवी, तेनु सारु करवा शुभ संकल्प करवो एम करवाथी सामो पुरुष पण दुष्टतानो त्याग करशे आ नियमनो अनु-

भव करवाथी खातरी थशे

आत्मज्ञानीओ कोइनी पण निंदा करता नथी तेओ तो आत्म स्वरूपमा तल्लीन रहेछे परना तरफ दृष्टि देता नथी अने कदापि उपकारने माटे परतरफ दृष्टिछे तो पण आत्महितथी अन्य प्रवृत्ति करता नथी.

कोइ विरला जगत्मा आत्म तत्त्वनी शोधमा स्वकाल निर्गमन करेछे, अने कोइ विरला परमात्मपदने पामेछे, सत्य तरफ प्राय' दुनीया प्रवृत्ति करती नथी पण असत्य तरफ करेछे ते उपर एक दृष्टात मुसलमानी धर्ममा प्रगट थयु छे ते एवी रीते के कोइ एक महान् पादशाहना वखतमा एक फकीरे प्रश्न कर्यो के—हे पादशाह आ सब खलक बुरे रस्तेपर क्यु चल रही हे ? त्यारे एना उत्तरमा पादशाहे फकीरने विज्ञप्ति करी कह्यु के—आपकु मेरा मुकाममें दो वर्षतक रहेना चाहिए. जब आपका सवालका जवाब में देनेकु शक्तिमान होउगा—आ उपरथी फकीर बावा त्या रह्या के तुरत पादशाहे पोताना राज्यमाना तमाम अमीर उमरावोने बोलावी हुकम आप्यो के—अमारा खजानामाथी तमाम लक्ष्मी खर्ची एक महा मोटो बाग बनाववो जोइए ने ते बागमा तमाम सृष्टिनी सर्व वस्तुओ प्रगट करीदेवी बाद तमाम जगत्मानी सर्व प्रजाने ते बाग जोवा बोलाववी, ने तेमनो तमाम खर्च तेमनी जग्यापर पहोंचाड्या सुधीनो आपणे करवो जोइए आवा प्रकारनो हुकम मळता सर्व कचेरी मडळे तावडतोब आखी पृथ्वीमा रहेला तमाम कारीगरोने बोलाव्या ने तेमना कह्या प्रमाणे असख्य जातना साधनो पुरा पाडवा लाग्या. जे उपरथी बसे कोसनी वचमा जमीन पहाड समुद्र नाना प्रकारना तमाम दुनीयामा रहेला पशुपक्षीओ तथा अढारभार

वनस्पति, मेवाना झाड, विचित्र प्रकारना अमूल्य वस्त्र रत्न इत्यादि भातभातना पक्वान्न, बागमा फरवाना मनोहर लताना मडपोवाळा रस्ता, ठेकाणे ठेकाणे सुदर वेश्याओ नाटक करे तेम गोठवण थइ, स्थळे स्थळे विचित्र प्रकारना नाटक तेमज खेलाडुओनी गोठवण थइ, साकरीया पाणी, गुलाबजल लोकोना उपभोगने माटे तैयार क-राव्या अनेक तरेहना जानवरोना तमासानी रमतनी गोठवण थइ. बाग जोनाराने बेसवाने माटे अनेक खुरशीओ आदिनी सगवड थइ बागमा सुदर सरोवरो हवा खावाने माटे बधाव्या अने ते सरोवरनी आसपास चारे तरफ लीमडा ववराव्या. घटा करावी, ठेकाणे ठेकाणे पाणीना फुवारा मूकी दीधा, विशेष शु ? अपर-पार तेनी शोभा जाण जगतनी वस्तुओथी बनावी दीधी, अने रा-जवर्गे पादशाहने खबर आपी पादशाहे जगतमा एवी जाहेरात् खबर आपी के-मारा बसो कोशना बागना मध्यभागमा एक महे-ल में रचावेलो छे, ते महेलमा अमुक दिवसे बपोरना त्रण वागे हु एक कलाक सताइ रहीश, तेवामा जे पुरुष मने शोधी काढशे तेने हु मारी तमाम पादशाही आपी देइश एवी रीतनी जाहेर खबर दुनीयामा फेलावी दीधी ठरावेल दिवसे तमाम लोको बा-दशाही बाग जोवा आव्या तमाम प्रजा बाग जोवा मशगुल थइ कोइ फुलना झाडो जोवा लाग्या कोइ वाघसिंहादि पशु-ओने जोवा लाग्या, केटलाक शोखीन तळावनी शोभा जोवा लाग्या अने ठडो पवन खावा लाग्या, नाटक जोवाना रसीया ना-टक जोवामा लीन थया मेवाना रसीया मेवा खावा लाग्या कोइ पुरुषे बीजा पुरुषने कह्यु के-भाइ चालो आपणे बादशाहने शोधी काढीए, त्यारे सामा पुरुषे जवाब आप्यो के-तु तो घेलो थयो छे, शु राजा ते महेलमा सताय ? एने एनु राज्य व्हालु छे

माटे आपणे तो वेश्याओनो नाश जोवामा आनद मानीशु–कोइ व्याकरण शास्त्रना विद्वाने नैयायिकने कह्यु–हे नैयायिक तु बादशाह महेल्मा सताणो छे ते वातने खरी वात माने छे के खोटी त्यारे नैयायिके कह्यु के–बादशाह वाक्य प्रमाण वा अप्रमाण वा, तस्य वाक्य सत्य वा असत्य वा एतत् कार्यस्य किं प्रयोजन, इदृश पूर्वं न भूत, कदापि बादशाह गाडो थयो हशे, कदापि महेलमा तेने शोधवा जता बादशाह मारी नाखे तथा वळी एक एवी शका थाय छे के–बादशाह महेलमा छे तेमा शु प्रमाण ? प्रत्यक्ष प्रमाण प्रत्यक्ष विरुद्ध छे अनुमान प्रमाणमा कोइ हेतु अव्यभिचारी सिद्ध थतो नथी, उपमान प्रमाण पण सादृश्यना अभावथी बाधितछे. आगम प्रमाणनी पण अत्र सिद्धि थती नथी, माटे अमो तो बादशाहने शोधवानु वध राखी आ प्रत्यक्ष देखाती वस्तुओ जोवामा आनद मानीशु, त्यारे व्याकरणशास्त्रवेत्ताए कह्यु सत्य सत्य भवता कथन पादशाह वाक्य प्रमाणीभूत मया न ज्ञायते–कोइ सगा सबधीनी वातो करवा लाग्या, बागनी मनोहरतानी एवी खुबी हती के पगले पगले विचित्र जोवानु मळे, खावानु मळे, केटलाक तो वृक्ष तळे सूइ गया, केटलाकएक बीजाने वस्तुओ ओळखाववा लाग्या, केटलाक रुपैया खर्ची टीकीटो करावी तमासा जोवा लाग्या, केटलाक एम विचारवा लाग्या के बादशाह बुद्धिमान् छे, तेनी ओछी माया नथी ते एवो सताणो हशे के आपणा हाथमा आववो मुश्केलछे, माटे आपणा करता होइए ते करो. केटलाक एम चिंतववा लाग्या के ज्यारे आ बागमा पण एवी भूलवणी चुकवणी छे के आपणे भूला पडीयेछीये तो बादशाहना महेल्मा तो बहु भूलवणी चुकवणी हशे के जेथी शोधवाने बदले आपणे डीए तो भ्रष्ट थइए. केटलाक सुदर पक्षीओ

तथाच श्री हेमसूरिपादाः

प्राणभूत चरित्रस्य, परब्रह्मैककारण,
समाचरन् ब्रह्मचर्य, पूजितैरपि पूज्यते २

तथा च दशमांगे श्री प्रश्न व्याकरणे यस्य ब्रह्मचर्यस्य नामानि गुणार्थैवमुच्यते तथाहि जबू एचोय वभचेर उत्तम तव नियम णाण दसण चरित्त सम्मत्त विणयमूल गुणप्पहाणजुत्त हिमवत महत तेय मत्त पसथ्थ गभीर थिमितमज्झ अज्जव साहुजणा चरित मोक्ख मग्ग विसुद्ध सिद्धिगति निलय सासत मव्वावाह अपुण भव पसथ्थ सोम शुभ सिव मयल मक्खर कर जति वरमा रक्खिय सुसाहस्सहिय नवरि मुणिवरेहि महा पुरिस धीर सूर धम्मिय धितिमताणय सया सुविसुद्ध भव्व भव्वजण सगुचिण निसकिय निभ्भय निसुस निरायास निरुवलेव निव्वुइ घर नियम निप्पकप तव सजम मूल दलियणेग पचमहव्वय सुरक्खिय समिति गुत्ति जाणवर कवाड सुकयरक्खण दिण्ण फलिह सणद्धोध्धयिअ दुग्गतिपह सुगतिपह देसगं च लोगुत्तम च वयमिण पउमसर तलाग पालिभूय महा सगडअर तुब भूअ महाविडिम रुक्ख खधभूत महानगर पागार कवाड फलिह भूअ रज्जपिणद्धोव इदकेउ विसुद्धणेग गुणसपिणद्ध, जम्मिअ भग्गम्मि होइ सहसा सव्वसभग्गसद्धिय महिय चुण्णिय कुशल्लि तपल्हट्ट पडिअ खडिय परिसडिय विणासियअ विणयसील तव नियम गुण समूह त बभ भगवत गहगण णक्खत्त तारगाण वा जहाउलुपति मणिमुत्त सिलप्पवाल रत्त रयणागराणव जहा समुद्दो वेरुलि उव्वेव जह मणीण जह मउडो चेव भूसणाण वथ्थाण चेवक्खोम जुअल अरविंद चेव पुप्फ जेट्ठ गोसीसचेव चदणाण हिमवता चेव ओसहीण सीतो आचेव निम्मगाण उदहीसु जहासयभूरमणो रुयगवरो चेव मडलि अपव्वयाण पवरे एरावणो इव कुजराअ सीहोव्व ज

हामिगाण पवरो पन्नगाण चेव वेणुदेवे धरणे जणपण इंदराया कप्पाण चेव बभलोए सभासु अजह भवे सुहम्मो ठितीसु लवसत्त मगासव्वपवरा दाणाण चेव अभयदाण किमिराओ चेव कंबला-ण सघयणे चेव वज्जरिसभे सठाणे चेव चउरसेझाणेसुअ परमसु-कझाण णाणेसुअ परम केवल सिद्ध लेसासुअ परमसुक्वलेसा तिथ्थकरो जहचेव मुणीण वासेसु जहा महाविदेहे गिरिरायाचेव मदरवरे वणेसु जहा नदणवण परच दुमेसु जह जबू सुदसणा वी-सुजसा जीसे नामेण अय दीवो तुरगावती रहउती नरवती जहवीसु ते चेव राया रहिए चेव महारह मते एव अणेग गुणा अहीणा भ-वति एकम्मि बभचेरे जम्मिअ आराहि अ वयमिण सच सील तवो ओय विणओय सजमोय खती मुत्ति तहेव इह लोइअ पारलोइय जसोकित्तिय पच्चओय तम्हा निहुएण बभचेर चरिअव्व सव्वओ विसुद्ध जावजीवाए. इत्यादि महिमा ब्रह्मचर्य व्रतनो कह्यो छे.

" दुहा. "

आतम सुखनी चाहतो, विषयेच्छा परिहार,
विषयेच्छा मनमां घणी,तो शु ? आतम विचार. १
आत्म स्वरूपे ध्यानतो, विषयेच्छानो नाश.
प्रतिपक्षी बे धर्मनो, नहीं एकत्र निवास. २
बे साथे वर्ते नहीं, वर्ते त्यां छे दंभ;
भोगज कर्माधीनथी, त्यां शुं होय अचंभ. ३
दुर्गंधीनी कोथळी, मळमूत्रे भरी देह;
एहवी,अपवित्रतानुं गेह.
सहु, श्रवे अशुची नित्य;

मोह करे शु जीवडा, समज समज तु चित्त ५
भोग रोग सममानतो, स्वप्ने पण नहीं आश,
अनित्य आ ससारमां, क्याथी तेनो वास ६
दुर्लभ आत्मस्वरूपनी, वातो करवी सहेले,
किंतु आत्म स्वरूपनी, प्राप्तिछे मुस्केल ७

निंद्रा, आल्स्य, असत्यादि दूषणो निवारी निःसगी थइ आत्म तत्त्वनी खोज करनार आत्मतत्त्व पामी शकेछे आत्मतत्त्वनी वातो करवी सहेलछे पण आत्म तत्त्वनी प्राप्ति थवी मुश्केलछे कोइ विरला प्राणी आत्मा उपर रुचि करेछे.

आ चेतन अज्ञानयोगे भ्रमित थइ कदापि चलित थइ जाय छे. एवु आत्म स्वरुप भूली गयो तेथी परवस्तुमा मोह पाम्यो, अशुद्ध परिणतिथी ओदारिका, वेक्रिय आहारक, तेजस, कार्मणादि शरीरो धारण करी तेना योगे ताडनतर्जन छेदन भेदनादिक दुःखो ल्ह्यां, हवे जो तने सुखनी आशा थइ होय तो हे आत्मन् चेत चेत समय चाल्यो जायछे मनना मनोरथ मनमा रहेशे, सद्गुरु सगे रही आत्म स्वरुप समज अने तेना ध्यानमा रहेता आश्रवनु दूरी करण थशे अने अतर् तत्त्वोपयोगे सवरनी प्राप्ति थशे तार स्वरुप तु देखे एटले तारो मोक्ष थशे

श्री देवचद्रजी पण कहेछे के–

" दुहा "

तत्त्वते आत्म स्वरूपछे, शुद्ध धर्म पण तेह,
परभावानुग चेतना, कर्म गेहछे एह १
तजीपर परिणति रमणता, भज निज भाव विशुद्ध

आत्म भावथी एकता, परमानंद प्रसिद्ध २
स्याद्वाद गुण परिणमन, रमता समता संग;
साधे सुद्धानंदता, निर्विकल्प रसरंग ३
मोक्ष साधनतणु मूळ जे, सम्यग्दर्शन ज्ञान;
वस्तु धर्म अवबोध विणु, तुस खंडण समान. ४
आत्मबोध विणु जे क्रिया, तेतो बालक चाल,
तत्त्वार्थनी वृत्तिम, लेजो वचन सभाल. ५

इत्यादिथी पण आत्मज्ञाननी खास जरूरछे, आ जगत्मा राग द्वेषव्यापी गयोछे ते आत्माना अज्ञानने लीवे जाणवो. आ शरीरमा रहेला आत्माना सरखा अन्य शरीरोमा पण रहेला आत्माओछे एम जो जाणवामां श्रद्धा पूर्वक आवे तो कोइ दुःख कोइ जीवने आपे नहीं, अने कोइ जीवना उपर कोइ जीव वैर राखे नहीं. आत्मज्ञानी सर्व जीवने सिद्धसमान गणे तो पछी कया जीवनी साथे ते विरोध करे ? अलबत कोइ जीवनी साथे ते विरोध करे नहीं, ए वातनो अनुभव करवाथी मालम पडशे, आत्मिक शुद्धानंद पण त्यारे अनुभवमा आवशे राग द्वेषथी जेनु मलीन छे तेने सुख मलतु नथी जगत्मा तात्त्विक सुखना भोक्ता आत्मज्ञानी मुनिवरोछे. तेमने स्त्री नथी पण समता रूपही भावथी जाणवी राजाओ शेठीयाओ, वकीलो, डाक्तरो, ज्यारे ताप आदिना निवारण माटे छत्री धारण करेछे तो तेना बदले आत्मज्ञानी मुनिवरो क्षमारूप छत्रीने धारण करेछे क्षमारूप छत्रीथी क्रोधरूप ताप लागतो नथी, अने अदेखाइरूप उष्ण पवन तो जरा मात्र लागतो नथी वळी मोहरूप मेघनी दृष्टिथी पडेलु तृष्णारूप पाणी तेने क्षमा छत्रीथी झीली श-

कायछे, अन्य राजाओ पादशाहो ज्यारे एक देश वे देशना मालिक होयछे त्यारे मुनिराज तेना करतां पण अधिक पोताना आत्माना असख्यात प्रदेशना मालीक होयछे. ज्यारे अन्य राजाओ घणी लक्ष्मी भेगी करेछे त्यारे मुनिराज आत्मानी ज्ञान दर्शन चारित्र लक्ष्मी भेगी करेछे. तफावत एटलो के राजानी लक्ष्मी खोटी, क्षणिक छे अने मुनिनी लक्ष्मी सत्य अने अचल अखूटछे, राजा पादशाहने मनवचन कायाए करी संतोष रहेतो नथी त्यारे मुनिने मनवचन कायाए करी संतोष रहेछे राजा ज्यारे न्हान्हि शत्रुओनी साथे युद्ध करेछे, त्यारे मुनीश्वर रागद्वेषरूप शत्रुओनी साथे युद्ध करेछे, राजाओ ज्यारे बागमां क्रीडा करेछे त्यारे मुनीश्वरो धर्मध्यानरूप बागमां क्रीडा करेछे–धर्मध्यानरूप बाग केवो छे ते कहेछे–धर्मध्यानरूप बागनी चारे तरफ उदासीनतारूप वाड करेली छे ज्ञानरूप कूपधर्म ध्यानरूप बागमां शोभी रहेल्छे संवेगादिक वनस्पति त्यां खीली रहीछे त्यां मुनिराज स्थिर चित्तरूप आसन उपर बेसी विचरेछे ते बागनी शोभा अनहदछे तेनी सुगंधीथी अनेक जातना रोगो नाश पामेछे ए बागनी अंदर क्षुद्र प्राणीओ प्रवेश करी शक्ता नथी जेनी योग्यता होय ते त्यां जइ शकेछे जगतनी मोह मायामां फसायला प्राणीओने ते बागनु सुख थतु नथी, वळी ए बागमां एक चारित्ररूप महेल शोभी रह्योछे तेनी अंदर जन्म जरा मरणनां दु ख नाशक अनेक औषधो रह्यांछे तेनो मुनीश्वर उपयोग करी शकेछे अने ते औषधोनु भक्षण करी अजरामरपद पामेछे वळी ते बागमां रहेला ज्ञानकूपमांथी मुनिश्वर जळपान करेछे ज्यां परोपाधिरूप तापतो आवी शक्तो नथी वळी ते बागनी असख्यात प्रदेशरूप जमीन स्वच्छ निर्मळ्छे मुनीश्वरनी साथे शुद्ध चेतना रहेछे. वळी ते मुनीश्वर आत्मा अने परमात्मानी ऐक्यतारूप भांगने कायारूप ख-

लमा घूंटी मनरूप प्यालाथी पीवेछे. तेथी शुद्ध चेतनारूप नीशो मुनीश्वर महाराजने एवो चढे छे के ते वखते अगम निगम दर्शाय छे. अने ते समये शरीर अने शरीरीनु पण भान रहेतु नथी अने ते वखते अनहद आनद थायछे. आवा मुनिराजने मुख थायछे ते अनत छे. श्री यशोविजयजी उपाध्याय अध्यात्मसारमा कहेछे के—

श्लोक.

कान्ताधर सधा स्वादात्, यूनां यज्जायते सुखं ।
बिंदुः पार्श्वे तदध्यात्म शास्त्रस्वादसुखोदधेः १
अध्यात्मशास्त्र सभूत-संतोष सुख शालिनः
गणयंति न राजान नश्रीदंनापि वासवम्. २

भावार्थ—स्त्रीना अधर रूप अमृतना स्वादथी युवान पुरुषोने जे सुख थायछे तेतो भ्रमणा मात्र छे, तात्त्विक मुख नथी, ते सुख तो अध्यात्म शास्त्रना स्वादथी उत्पन्न थयेलु दरिया समान सुख तेनी आगळ बिंदु समान छे. अध्यात्म शास्त्रथी उत्पन्न थयेलु संतोष रूप सुखना भोक्ता जे प्राणी छे ते प्राणी राजाने तथा धनदने तथा इन्द्र सरखाने पण लेखामा गणता नथी.

श्लोक

रसो भोगावधिः कामे, सद्भक्ष्ये भोजनावधिः
अध्यात्म शास्त्र सेवाया रसो निरवधि पुन. १

कामने विषे भोगवता सुधी रसछे, मिष्ट भोजनने विषे जमवाना वखत पर्यंत मधुरपणुछे पण अध्यात्म शास्त्रनी सेवानो जे रस ते तो निरवधि छे. कारण के अध्यात्मशास्त्रनो रस - प्रारभ ... प्रतिदिन वृद्धि पामेछे. ते रस कोइ वखत बदलातो

नथी, ज्यारे आत्मानंदी मुनिराजने अनंत सुख थायछे त्यारे सिद्ध भगवंतोने अनंत सुख छे तेमां शुं कहेवुं ? अनुभवथी सुखनी प्रतीति थायछे वळी मुनीश्वर उपर कहेला पण नगरमां सदाकाळ वास करेछे, तेमने कोइ जातनी स्पृहा नथी आवा मुनींद्रना राग- नी तोले राजा वा शाहुकारोना राग आवी शकता नथी राजाने तो मनुष्य सेवेछे किंतु मुनीश्वरने सुर असुर इंद्रादिक पण सेवेछे राजाने परशत्रु थकी भय रहेछे किंतु मुनीश्वरने भय होतो नथी. राजानी पासे अनेक सुभटो होयछे त्यारे मुनीश्वर रूपी राजानी पासे क्षमा, वैराग्य, ज्ञान, दर्शन चारित्रादि अनेक सुभटो होयछे राजानी लक्ष्मी जन्मांतरमां साथे आवती नथी. पण मुनींद्रनी लक्ष्मी तो परभवमां साथे आवेछे अने मोक्षमां पण साथे रहेछे, राजा पोताना देशमां पूजायछे, अने मुनींद्र तो ज्यां विचरे त्यां पूजायछे राजा वैभव छतां दुखी थायछे, अने आत्मज्ञानी मुनीश्वर तो वैभव विना पण अंतर् वैभवथी सुखी रहेछे, राजाने पोताना राज्यथी संतोष रहेतो नथी. अने मुनींद्रने तो सदा संतोष छे राजाने आ भवमां तथा परभवमां क्लेश सहन करवो पडेछे, अने मुनीश्वरने आ भव तथा परभवमां सुखनी प्राप्ति थायछे, राजा संसारमां प्रवृत्ति करेछे त्यारे मुनीश्वर प्रवृत्तिनो त्याग करेछे, राजा हाथी उपर बसी बखतरथी शोभा पामतो तीक्ष्ण भालाने धारण करेछे त्यारे मुनीश्वर संवेग रूप हाथी उपर बेठा थका ब्रह्मचर्यरूप बखतरथी शोभा पामता ध्यानरूप तीक्ष्ण भालाथी रागद्वेष रूप शत्रुनो शिरच्छेद करेछे, मुनीश्वरने तो कोइ शत्रु नथी किंतु व्यवहारथी शत्रुनी कल्पना जाणवी. पोते पोताना आत्म स्वभावमां रमेछे एटले स्वतः राग द्वेषनो क्षय थायछे, राजाने जरापण शांति मळती नथी, अने मुनीश्वरतो सदा शान्तिमां रहेछे राजा ज्यारे नाशवन्तु उपर ममता

राखेछे त्यारे मुनीश्वर अंतर्धन उपर ममता राखेछे. क्यां मेरु अने क्या सरसवनो दाणो, क्या सागर अने क्या तळाव, क्या रात्रि अने क्या दिवस एटलो तफावत आत्मज्ञानी मुनीश्वर अने राजा वच्चे जाणवो. दुनियामा आत्मज्ञानी मुनिसदृश अन्य कोइ सुखी नथी, शेठ, वकील, बारीष्टरादि लोको तत्त्वथी विचारता सत्य सुख भोगवता नथी. सत्य सुखनी प्राप्ति तो आत्मज्ञानीने थायछे. अत र्दृष्टिना अभावे बाह्यदृष्टिजीवो सत्य सुखनो अनुभव करी शकता नथी. आत्मज्ञानी मुनि सदा निर्भय रहेछे, अहो ते जीवता जीवन्मुक्तनी दशाने अनुभवेछे. आत्मज्ञान विना खडनमडननी विद्वत्ताथी आत्महित थतु नथी दुनीया ज्यारे परपरिणतिमा म्हालेछे त्यारे मुनीश्वर स्वपरिणतिमा म्हालेछे

, आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति स पश्यति

आ वाक्यनो अनुभव पण आत्मज्ञानी मुनीश्वर करी शकेछे. शुष्कज्ञानी जीवो वाक्पटुताथी आत्मज्ञानीनो डोळ भले बतावो पण तेना अनुभवथी थतु सुख ते पामी शकता नथी आत्माना केवल ज्ञानादिगुणोनी प्राप्ति आत्मार्थिने थायछे.

ससारी जीवने ज्ञान दर्शन चारित्रादिक ऋद्धि सर्व तिरोभावे छे. ते तिरोभाव ऋद्धिनो आविर्भाव थाय, तेज आत्मानु परमात्म पद जाणवु ते परमात्मनो हु दास एटले उपासकछु ते परमात्मपद जेणे ओळख्यु अने परमात्मपदमा जेनु एकाग्र चित्तथी ध्यान वर्तेछे. तेने साधुपद ग्रयु एम जाणवु. अने शुद्धज्ञान पण ते पाम्यो एम जाणवु नाम, स्थापना, द्रव्य, भाव ए चार निक्षेपे साधु जाणवा.

कोइनु साधु एवु नाम ते नाम साधु, स्थापना करीए ते स्थापना साधु तथा जे पचमहाव्रत पाळे क्रियानुष्ठान करे शुद्ध आहार ग्रहण करे ... ननो जेवो उपयोग जोइए तेवो उपयोग न

होय ते द्रव्य साधु जाणवा. जे भाव सवरपणे मोक्षनो साधक थइ भाव साधुनी करणी करे ते भाव निक्षेपे साधु जाणवा.

कोइ जीवनो ज्ञान एहवो नाम ते नामज्ञान तथा जे पुस्तकमां अक्षररूपे लख्युछे ते स्थापना ज्ञान, अने उपयोग विना सिद्धान्तनो भणवो अथवा अन्यमतिनां सर्व शास्त्र भणवा तथा शरीरादिक ते सर्व द्रव्यज्ञान अने नवतत्त्वनो नय निक्षेपाए जाणवा अने आत्मतत्त्व आदरवु ते भावज्ञान जाणवु. ए आगमसारमां कह्युछे शुद्ध ज्ञाननी प्राप्ति पचमकालमां कोइक महा पुरुषने थायछे ज्ञानना पच प्रकारछे. १ मतिज्ञान, २ श्रुतज्ञान, ३ अवधिज्ञान, ४ मन पर्यवज्ञान देवर्द्धि वाचक कहेछे के–पाठ से किंत मइनाण दुविहं मइनाण पन्नत्त तजहा सुयनिस्सिय च असुयनिस्सिय च सेकित असुयनिस्सिय असुयनिस्सिय चउविह पन्नत्त तजहा उप्पत्तिया वेणइया कम्मिया परिणामिया बुद्धि चउव्विहा पन्नत्ता.

भावार्थ–मतिज्ञान बे प्रकारेछे. श्रुतनिश्रित मतिज्ञान, बीजु अश्रुतनिश्रित मतिज्ञान प्रायशः श्रुतज्ञानना अभ्यास विना सहज क्षयोपशमवशे जे उत्पन्न थाय तेने अश्रुतनिश्रित कहे छे ते चार प्रकारनुछे उत्पादिकी बुद्धि, वैनयिकी बुद्धि, पारिणामिकी बुद्धि तथा कर्मजा बुद्धि

पोतानी मेळे उत्पन्न थाय ते औत्पातिकी बुद्धि अने गुरुनो विनय शुश्रुषा सेवा करतां आवे ते वैनयिकी बुद्धि, कर्म करता उपजे जे ते कार्मिकी बुद्धि अने परिणामते दीर्घकालनु पूर्वापर अर्थनु अवलोकन करता उपजे ते पारिणामिकी बुद्धि

पूर्वश्रुत परिकर्मित मतिना उत्पादकालने विषे शास्त्रार्थ पर्यालोचन करनाज जे उत्पन्न थाय तेने श्रुतनिश्रित मतिज्ञान कहेछे तेना

चार प्रकारछे. अवग्रह, इहा, अपाय अने धारणा तेमां अवग्रह बे भेदेछे. व्यंजनावग्रह, अर्थावग्रह. किंचित् एटले आ शुंछे ? एवो (अव्यक्त) अप्रगट ज्ञानरूप अर्थावग्रह थायछे. तेनी पूर्वे अत्यंत अव्यक्ततर (अति छानु जे ज्ञान) होयछे तेने व्यंजनावग्रह कहेछे. वंजणवग्गहचउहा=एटले व्यंजनावग्रह चार प्रकारेछे. ते नीचे मुजब-मणनयण विणिंदिय चउक्का=मन तथा नयन ए बे विना बाकीनी चार ४ इंद्रियोने आश्रयी चार भेदेछे श्री नंदीसूत्र पाठ. से किंत वंजणुग्गहे चउव्विहे पन्नत्ते तंजहा, सोइंदिय वंजणुग्गहे घाणिंदिय वंजणुग्गहे, रसेंदिय वंजणुग्गहे, फासिंदिय वंजणुग्गहे= श्रोत, घ्राण, जिव्हा, स्पर्शेन्द्रिय व्यंजनावग्रह जाणवो. मन तथा नयन ए बे इंद्रियो अप्राप्यकारीछे. चक्षुरिन्द्रिय छे ते विषयदेश प्रति जाइने देखती नथी, तेम प्राप्त अर्थनु अवलंबन करती नथी, तेम मननु पण जाणवु.

आ कइपणछे ? एवु अनिर्धारित सामान्यरूप अव्यक्तपणे अर्थनु जे ग्रहण तेने अर्थावग्रह कहेछे, ते पांच इंद्रियो अने मने करी छ प्रकारनोछे श्रोतेंद्रियार्थावग्रह, चक्षुरिंद्रियार्थावग्रह, घ्राणेंद्रियार्थावग्रह, रसनेंद्रियार्थावग्रह, स्पर्शनेंद्रियार्थावग्रह तथा मानसार्थावग्रह. अवग्रहगृहीत वस्तुने विषे जे धर्मनी गवेषणा करवी एटले आ स्थाणुछे ? अथवा पुरुषछे ? तेमां पण हाल संध्याकालछे अने महा अरण्यछे, वळी सूर्य पण आथम्योछे, माटे पुरुष नथी. इत्यादि व्यतिरेक धर्मनु निराकरण करवु अने एने पक्षीओ भजेछे. वळ्‍मायी वांकुछे, अने कोटर सहितछे, इत्यादिक अन्वय धर्मनो अंगीकार करवो, एवु जे ज्ञान विशेष तेने इहा कहेछे. ए पण पंच इंद्रियो अने मने करी छ प्रकारेछे. तथा इहित वस्तुने विषे आ [illegible]णुजछे, एवो एक कोटिना निश्चयरूप जे बोध तेने

अपाय कहेछे स्थाणुरेवाय इत्यात्मकरूपो अपाय. तथा निश्चित वस्तुने विषे अविच्युतिपणे अथवा स्मृतिपणे अथवा वासनापणे जे धारण करवु तेने धारणा कहे छे. ते पण पचइंद्रियो अने मने करी छ प्रकारे छे एम छने चारे गुणता चोवीस भेद अने व्यजनावग्रहना चार भेदवता २८ अट्ठावीस भेद मतिज्ञानना जाणवा एमां चार भेद अश्रुत निश्रितना भेळवता बत्रीस भेद थाय छे तथा जाति स्मरण पण अतीत कालना सन्नी पचेंद्रियना सख्याता भव देखे. मतिज्ञाननोज ते भेद जाणवो श्री आचारांग सूत्रनी टीकामा जातिस्मरण ज्ञानने धारणानो भेद कह्यो छे-यतः जातिस्मरण स्त्वाभिनिबोधिक ज्ञान विशेषमिति कोइ एक सभामा घणा पुरुषो बेठाछे ते वखते शख, तथा भेरी, रणशिगु, आदि वाजींत्र वागवा लाग्यांश्रोताजनोए सर्व वाजिंत्रनो शब्द समकाले साभल्या छतां सर्वनी क्षयोपशमनी विचित्रताथी अधिक न्यूनादिक साभळवामा आवेछे जेमके कोइने तो शख भेरी आदि वाजींत्रनो शब्द भिन्न भिन्न सामळवामां आवेछे तेना जाणवामां एम आवे के अमुक भेरीओ आटला शख वागेछे एम जणाय तेने बहु कहेछे १ कोइने मात्र वाजींत्र वागेछे एम जणाय तेने अबहु जाणवो २ तथा ते शब्दमां पण कोइकने मधुर मन्द्रत्वादि बहुपर्यायोपेते जे शखादिकध्वनि पृथक् पृथक् घणा प्रकारे साभळ्वामां आवेछे तेने बहुविध कहीए ३ कोइने एक बे पर्यायोपेत ते ध्वनि साभळ्यामां आवेछे ते अबहुविध जाणवो ४ कोइकने तुरत ते नाद साभळवामां आवे छे ते क्षिप्र जाणवो ५ कोइक विचारी विचारी घणी वार पाछळथी जाणे ते अक्षिप्र जाणवा ६ ध्वजारूप लिंगेकरीजेम देवकुल ओळखायछे तेम लिंग सहितजाणे तेने निश्चित कहेछे. ७

कोइ उक्त प्रकारे लिंगरहीत जाणे तेने अनिश्रित कहेछे. ८
कोइने शसयरहीत समळायछे तेने असदिग्ध कहेछे. ९
कोइने शसयसहीत समळायछे तेने सदिग्ध कहेछे. १०

कोइके एक वेळा सामळी ग्रहण करी लीधेलु ते सदा सर्वदा स्मरण रहे पण वीसरे नही तेने ध्रुव कहेछे ११. अने कोइक एकवार ग्रहण करेलु सर्वदा स्मरणमा रहे नहीं तेने अध्रुव कहेछे. १२ एवी रीते चार भेदे ज्ञान थायछे तेने पूर्वोक्त अट्ठावीश भेदोथी गुणतां त्रणशेने छत्रीश भेद मतिज्ञानना थाय. तथा तेमां अश्रुत निश्रितना चार भेद मेळवीए तो त्रणसेने चाळीस भेद मतिज्ञानना थायछे अर्थावग्रह एक समय प्रमाणछे. इहा अने अपाय अतर्मुहूर्त्त प्रमाणछे. धारणा सख्यात असंख्याता काल सुधीछे अथवा द्रव्यक्षेत्र कालभावथी मतिज्ञान चार प्रकारनुछे.

मतिज्ञानी आदेशथी सर्व द्रव्य जाणे पण देखे नही.
क्षेत्रथकी सर्व क्षेत्र लोकालोक जाणे पण देखे नही.
कालथकी आदेशे सर्व काल जाणे पण देखे नही.
भावथकी आदेशे सर्व भाव जाणे पण देखे नही.

श्रुतज्ञान स्वरूप

श्रुतज्ञान चौद तथा वीश प्रकारनुंछे चौद भेद कहेछे—

गाथा.

अक्खर सन्नी सम्मं, साईयं खलु सपज्जवसिय च।
गमियं [illegible] डु, सत्तविए ए सपडिवक्खा

वर्तेछे त्यारे द्वादशांगी रूप श्रुत होयछे, अने ते तीर्थनो विच्छेद थवाथी ते श्रुतनो पण विच्छेद थायछे. तेथी ते सादि सपर्यवसित जाणवु. महाविदेहमा तीर्थनो विच्छेद श्रुतनो पण विच्छेद थतो नथी तेथी त्या अनादि अपर्यवसितश्रुत जाणवु कालथी उत्सर्पिणि तथा अवसर्पिणीमा चोथे तथा पाचमे आरे श्रुतज्ञान होय अने छठ्ठे आरे विच्छेद थायछे तेथी सादि सपर्यवसित जाणवु. महाविदेह क्षेत्रमा एवु कालचक्र नहीं होवाने लीये त्यां श्रुत ज्ञान पण अनादि अपर्यवसित जाणवु.

भावथी–भव्यसिद्धिआ जीवने ज्यारे सम्यक्त्वनी प्राप्ति थाय छे त्यारे आदि अने केवलज्ञाननी प्राप्ति थायछे त्यारे अंत होवाथी सादि सपर्यवसित श्रुतज्ञान जाणवु.

११ अग्यारमु गमिकश्रुत ते ज्या सूत्रना सरखा आलावा आवे ते जाणवु दृष्टिवाद सूत्रमां जाणवु

१२ बारमु अगमिक श्रुत अणसरखा अक्षरोना आलावा होय ते जाणवु

१३ तेरमु अग प्रविष्ट ते द्वादशांगीरूप जाणवु.

१४ चौदमु अग बाह्यश्रुत ते आवश्यक तथा दशवैकालिक जाणु तथा श्रुतज्ञानना वीश भेद पण कर्मग्रंथ विगेरेथी जाणी लेवा

अवधिज्ञान स्वरूप.

अनुगामी, वर्धमान, प्रतिपाति, अप्रतिपाति, हीयमान, अननुगामी ए छ प्रकार गुण प्रत्यय अवधिज्ञानना छे. उक्तंच नन्द्यध्ययने " त समासओ छव्विह पनच तजहा आणुगामिय अणाणुगामिय, वड्ढमाणय, हीयमाणय, पडिवाइ, अपडिवाइ.

१ प्रथम जे ठेकाणे अवधिज्ञान उत्पन्न थयु होय ते ठेकाणु मूकीने बीजे देशांतर मनुष्य जाय त्यां लोचननी पेठे जे साथे आवे तेने अनुगामिक अवधिज्ञान कहेछे ज्यां पुरुष जाय त्यां साथे आवे ते.

२ बीजु जे ठेकाणे रह्या अवधिज्ञान उत्पन्न थयु होय ते स्थानके आवे तेवारेज होय. पण अन्यत्र स्थाने जाय तेवारे साथे न होय तेने अननुगामि अवधिज्ञान कहेछे.

से किंत णाणुगामीय अ.हीनाण ओहीन्नाण तंजहा नामएगेइ पुरिसेगममह जोइठाण काउ तस्सेव जोइठाणस्स परि पेर तेसुपरिहिंडमाणे परिहिंडमाणे परिघोलमाणे तमेव जोइठाण पासइ अन्नथ्थगए न पासइ एतमेव अणाणु गामिय ओहिनाण जथ्थेव समुपज्जइ तथ्थेव संखिज्जाणि वा असंखिज्जाणि वा जोयणाइ पासइ न अन्नथ्थ.

भाष्यकारोप्याह–अणुगामिउ अणुगच्छइ गच्छत लोयण जहा जहा पुरिस इयरोउ नाणु गच्छइ ठियप्पइवव्वगच्छत–इति.

३ त्रीजु जे वृद्धि पामे तेने वर्द्धमानअवधिज्ञान कहेछे, जेमके शकटिअग्निमां जेम जेम बलतण नाखीये तेम तेम वधती ज्वाला थायछे तेनी पेठे यथायोग्य प्रशस्त अतिप्रशस्ततर अध्यवसायने लीधे पूर्वावस्थाथी ते उत्तरोत्तर समय समय वधतु वधतु जाय तेने वर्धमान अवधिज्ञान कहेछे अर्थात् प्रथम उपजती वखते अंगुलना असंख्यातमा भाग जेटलु क्षेत्र जाणे देखे पश्चात् वधता वधता यावत् अलोकाकाशने विषे लोक जेवडा असंख्याता खांडवा देखे.

४ चोथु पूर्वे शु[illegible] घणु उपजे पश्चात् तथाविध

सामग्रीनो अभाव थयाथी पडता परिणामे करी हानि पामे तेने हीयमान अवधिज्ञान कहेछे

५ पाचमु सरव्याता असरव्याता योजन उत्कृष्टपणे यावत् समग्र लोक देखीने पण पडे एटले जे आव्यु जाय तेने प्रतिपाति कहेछे.

६ छठु जे उत्पन्न थया पछी क्षीणताने न पामे ते लोक समग्र देखीने अलोकना एक प्रदेशने देखे ते अप्रतिपाति ज्ञान जाणवु ते ज्ञान आव्यु जाय नहीं

प्रश्न–हीयमान अने प्रतिपाति ए बन्नेना लक्षणो तो सरखांछे तेम छता जूदा बतावबानु शु कारणछे ?

उत्तर–पूर्वावस्थाथी हळवे हळवे पडतु जाय एटले क्षीणताने पामे ते हीयमान कहेवायछे अने जे दिव्यात प्रदीपनी पेठे एक कालने विषेज निर्मूल थायछे ते प्रतिपाति कहेवायछे अवधिज्ञानना असरव्यात भेदछे, वळी अवधिज्ञानना चार प्रकारछे तथा चार

तसमासओ चउव्विह पन्नत्त तजहा दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ दव्वओण ओहीनाणी जहन्नेण अणताइ रुविदव्वाइ जाणइ पासइ उक्कोसेण सव्व रुविदव्वाइ जाणइ पासइ, खित्तओण ओहीन्नाणी जहन्नेण अगुलस्स असखेज्जभाग उक्कोसेण असखिज्जाइ अलोए लोयप्पमाण मित्ताइ खडाइ जाणइ पासइ कालओण ओहिन्नाणी जहन्नेण आवलियाए असखिज्जभाग उक्कोसेण असखिज्जाओ उस्सप्पिणी अवसप्पिणी अतीय च अणागय च काल जाणइ पासइ भावओण ओहिन्नाणी जहन्नेणवि अणते भावे जाणइ पासइ उक्कोसेण वि अणतेभावे जाणइ पासइ सव्वभावाण अणतभाग

अवधिज्ञानी द्रव्यथी जघन्यपणे अनतारूपी द्रव्यने जाणे देखे

उत्कृष्टपणे सर्वरूपी द्रव्यने जाणे देखे ते द्रव्यथी अवधिज्ञान.

क्षेत्रथी जघन्यपणे अंगुलनो असख्यातमो भाग जाणे देखे अने उत्कृष्टपणे अलोकाकाशने विषे लोकप्रमाण असख्याता खाडवा जाणे देखे.

कालथी अवधिज्ञानी जघन्यपणे आवलिकानो असख्यातमो भाग जाणे, देखे अने उत्कृष्टथी असख्याती उत्सर्पिणी अवसर्पिणी पर्यंत अतीतकाल अनागतकाल जाणे देखे ते कालावधि ज्ञान.

भावथी अवधिज्ञानी जघन्यपणे अनतभावने जाणे देखे अने उत्कृष्टथी पण अनता भावने जाणे देखे ते भावावधिज्ञान जाणवु

मन पर्यवज्ञानस्वरूपं.

मन.पर्यव ज्ञानना बे भेदछे. एक रजुमति, बीजो विपुलमति अमुक पुरुषे घट चिंतव्योछे एम सामान्यपणे मननो अध्यवसाय ग्रहे ते रजुमति जाणवु

तथा अमुक पुरुषे घट चिंतव्योछे ते द्रव्यथी सुवर्णनोछे, क्षेत्रथी पाटलीपुरनोछे. कालथकी शीतकालनोछे, अने भावथी पीतवर्ण सुकुमाल द्रव्यादि विशेष ग्राहिणीमति तेने विपुलमति ज्ञान कहेछे

अथवा मन पर्यवज्ञान ४ चार प्रकारनुछे, द्रव्य, क्षेत्र, काल तथा भावथी उक्तंच त समासओ चउव्विह पन्नत्त तजहा दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ दव्वओण रिउमइण ते अणतपएसिए खधे जाणइ पासइ ते चेव विउलमइ अब्भहियतराए विमलतराए जाणइ पासइ.

भावार्थ-द्रव्यथी रजुमति अनत प्रदेशी अनता स्कध जाणे देखे अने विपुलमति तेहिज स्कध काइक अधिकेरा विशुद्धपणे जाणे

रजुमति नीचे रत्नप्रभा पृथ्वीनु क्षुल्लक प्रतर लगे

शमभाव सहित विचित्रदर्शनभेदे अपुनर्बंधी जे चोथुं गुणठाणु तेनी जे क्रिया ते पण यद्यपि धर्मना विघ्नने करनारीछे, तो पण भला आशय थकी अशुद्ध क्रिया करे ते पण शुद्ध कहेवाय.जेम ताम्र रसानुवेधे सुवर्णताने पामेछे, तेम अत्र समजवु, अन्योऽन्य क्रिया, विषक्रिया, गरलक्रिया, तद्धेतुक्रिया, अमृतक्रिया ए पंच प्रकारनी क्रिया जाणवी. तेमांनी आद्य त्रण क्रिया त्याज्य जाणवी. तद्धेतु, अने अमृत क्रियानी प्राप्तिथी मुक्ति थायछे, अनेकान्त मार्गमां कदाग्रह करवो नहीं, समयसिंधुनु बिंदुग्रही सकलावु ते व्यर्थ छे, मतकदाग्रहग्रस्तमना जीवोनी रागद्वेषयोगे सर्व क्रिया दुःखनु धाम एटले स्थान छे, स्वात्मोत्कर्ष मान पूजा कीर्त्तिने माटे परात्मापकर्षकारक क्रियावादी स्वात्महित निरपेक्ष पणाने लीधे साधन साध्य बुद्धि शून्यताथी परमात्म पद साधी शकतो नथी, सापेक्षपणे व्यवहार निश्चय पूर्वक जिनाज्ञा सहित तद्धेतु अमृत क्रियानु अवलंबन करीने भव्यात्माओ अखंड निर्मल शाश्वत सुखमय शिवस्थाननी प्राप्ति करे छे, जे भव्यो क्रियानु अजीरणने निंदा तेनु सेवन करेछे ते मुक्तिपन्ना अधिकारी थता नथी, अ-मुकमां अमुक दोषछे, अमुक तो आम करेछे, इत्यादि परभाव परिणति ज्यां सुधीछे त्यां सुधी आर्त्तध्यान अने रौद्र ध्याननी क्रिया जाणवी. अतर्दृष्टि थता धर्मध्याननी क्रिया थइ शकेछे, जगत्मां रोगो अनेक प्रकारना होयछे, तेमज औषधो पण अनेक प्रकारनांछे, कोइने उधरस थइ होय ते अमुक औषधथी मटे अने ते उधरस कोइने ते दवाथी मटती नथी सूरतथी विहार करता मीयागाम आव्या, त्यां श्री दुर्लभविजयजी साथे दीपविजयजी तपस्वी हता तेमने उधरस घणी हती, तेम ताव पण हतो ते गाममां मोटा मोटां मरचां खा-वाथी उधरस मटी तो भव्यात्माओने समजवानु के भावरोगी जी-

या अनेक प्रकारनाछे, कर्मरोग पण अनेक प्रकारनाछे, तेना उपर धर्मना औषधो पण अनेक प्रकारनाछे, कर्मरोगने टाळनार सद्गुरु वैद्यो पण अनेक प्रकारनाछे, कोइ जीवने कोइ धर्म औषधथी लाभ थाय, कोइ जीवने कोइ मुनीश्वर वैद्यथी लाभ थाय, माटे पक्षपात करी एकान्तमतरूप कदाग्रहनु अवलबन करवु नहीं, पचमारके अल्पपुण्यवत बहुपापकर्मीजीवो प्रायश. धर्मनुनाम धरावी मारा तारा पणानी बुद्धि धारण करी पक्षपातरुपविषनु पान करी अनतभवभ्रमण करनारा थशे. अज्ञानरूप निद्रामा सुतेलाने तो सद्गुरु महाराज सहेलाइथी उठाडी शकेछे किंतु जे मत कदाग्रह पक्षपातरूप दारुनु पान करीन अज्ञानरूप निद्रामा सुइ रहेलाछे ते पुरूषने तो गुरूमहाराज पचीश लाकडीओ मारीने आत्मस्वरूपे जगाडवाने समर्थ नथी. कारणके ते बिलकुल बेशुद्ध बनी गयाछे, सत्यतत्त्व समजवाने शक्तिमान्छे किंतु जेणे मतकदाग्रह रूप मदिरानु पान कर्युछे, एवा पुरूपनी आगळ सत्यतत्त्वनी हित शिखामण गुरूमहाराजा आपेतो ते व्यर्थ जायछे, उलटु ते गुरुमहाराजने पण निंद्य वचन सभळावेछे, केटलाक जीवो तो एवा होयछेके पोताना मतमा नेठु ते खरू अन्य सर्व खोटु मानेछे तेवा जीवोने ज्ञानी गुरूमहाराज बहु प्रयासे सत्यमार्गे दोरेछे, व्यवहार अने निश्चय नयना जाण ज्ञानी गुरूमहाराजा क्रियावडे कर्मनो नाश करेछे, ए परमार्थ

"दुहा"

आत्मोपयोगी साधुने, किरिया सद्गुण धाम;
मतकदाग्रह लालचु, सहु किरीया दु.ख ठाम. ११८
जलनी उपाधियकी, जुदी अवस्था थाय,
तेवी जे जननी थती, भवमां ते भटकाय. ११९

उपादान समजे नहीं, समजे नहीं निमित्त,
कारण कार्य समजे नहीं, तत्त्वे शुं शुभ चित्त. १२०
द्रव्यभाव समजे नहीं, वर्ते बाह्याचार,
अनुपयोगिआत्मनो, पामे नहि भवपार १२१

भावार्थ-प्रथम दूहानो अर्थ उपर लखायोछे जलनी उपाधिथी जेम भिन्न भिन्न अवस्थाओ थायछे-एटले जेम जलमां लाल रंग नाखीए लाल देखायछे पीळो रंग नाखीए तो जल पीळु देखाय छे, लीलो रंग नाखीए तो जल लीलु देखायछे, एटले जल अन्यनी साथे मिश्र थवाथी व्यवहारथी स्वशुद्ध रूपनो त्याग करेछे. तेम जे जीवो असत् संगतिरूप उपाधिना योगे जेवा मळ्या तेवा थइ जायछे, ते भवमां अटकेछे, अर्थात् सारांशके-जे जीव पादरीनी संगतथी तेना उपदेशवडे इशुने पूज्यमाने, अने ख्रीस्ति धर्म स्वीकारे, कदापि ते जीवने कोइ बौध गुरुनी संगति थइ बौधे कह्यु ख्रीस्ति धर्म तो अनार्य धर्मछे, ते धर्मथी मुक्ति मळती नथी, बौध धर्म सत्यछे माटे ते स्वीकार. त्यारे तेना उपदेशथी बौध धर्म स्वीकारे, वळी तेने कोइ मुसलमान मळ्यो तेणे कह्यु बुद्ध धर्म तो खोटोछे, सत्य धर्म तो खुदाकाहै, बुद्ध धर्ममें तो अमुक जूठा कहाहै, ओ तो काफरोंका धर्म है, इसलिये खुदाका धर्म मानेगा तो दोझखमे पडेगा नहीं, एम मुसलमानना उपदेशथी मुसलमान धर्म स्वीकार्यो. त्यारे ते पुरुषने कोइ वेदांति मळ्यो. वेदांतीए कह्यु सर्व धर्मनुं मूळ वेदान्त छे, वेदथी मुक्तिनी प्राप्ति थायछे इत्यादि कथनथी वेदधर्मनो स्वीकार कर्यो त्यारे कोइ कालीकाना भक्ते कह्यु. अरे मनुष्य तु कालिकानो भक्तथा, कालिका पुत्र धन स्त्री वैभवने आपनारीछे, माटे कालिका नेज खरीछे, वेदथी तो कइ सुख मळतु नथी,

इत्यादि कथनथी कालिकानो भक्त थयो, त्यारे वळी नास्तिकवादी तेने मळयो तेणे कह्यु भला मनुष्य तने धर्म धुताराओ छेतरेछे केमके जे वस्तु आपणी आंखे देखाती नथी. ते वस्तुनी इच्छा राखवी ते व्यर्थछे, कालिका तो पत्थरनी मूर्त्ति छे ते कइ फल आपवा समर्थ नथी इत्यादि कथनथी नास्तिक थाय इत्यादि अवस्था जे मनुष्यनी थायछे ते कदापि आत्मसुख पामी शकतो नथी. कारण के ते अज्ञानी अविवेकी अने श्रद्धा रहीतछे, तेथी भवभ्रमण कर्या करेछे.

वळी जे भव्यो उपादान कारणने समजता नथी अने निमित्त कारणनु स्वरूप पण जाणता नथी, अमुक कार्य अने तेनु कारण अमुक ते पण समजी शकता नथी साधन अमुक अने साध्य अमुक ते पण समजी शकता नथी एवा अज्ञानी जीवोनु तत्त्वमा चित्त होतु नथी.

द्रव्य अने भावथी चारित्रने समजता न होय फक्त ओघदृष्टिथी बाह्याचारमा धर्म मानी प्रवर्त्ते, आत्मतत्त्वनो उपयोग होय नहीं तेवा जीवो भवनो पार पामी शके नहीं श्री यशोविजयजी उपाध्याय कहेछे के-

ढाळ.

ज्यां लगें आतम तत्त्वनुं, लक्षण नवि जाण्यु,
त्यां लगें गुणठाणुं भलु, किम आवे ताण्यु आतम॰१

ए प्रमाणे विचारता आत्म तत्त्वावबोध विना क्रिया मुक्तिमार्गप्रतिकारणीभूत थती नथी हु क्रिया कोने माटे करुछुं, क्रियाथी शुं थायछे, क्रियानो कर्त्ता कोणछे ? एनी यथायोग्य समजण विना अनुपयोगताए परमात्मपदस्वरूपप्राप्त्यसंसिद्धि थइ

शकती नथी, उलटु ते अनुपयोगताए क्रिया करी अन्य फल प्राप्त करेछे यथा विनायक प्रकुर्वाणो, रचयामास वानर । विनायकनी मूर्त्ति बनावता वांदरो रच्यो तेनी पेठे-आत्मानी अज्ञानताए अन्यो-न्य,विष, गरल, ए त्रण क्रियानु सेवन थायछे-अने ए त्रण क्रियाथी जीव अशुध्धपरिणतियोगे शुभाशुभ कर्मपुद्गलो ग्रही अनेक जन्म ग्रहतो त्रिविध तापथी पीडातो छतो दु ख संततिनो भोगी बनेछे जड चेतनतु विशेषत भेद ज्ञान थयु नथी त्या सुधी बहिरात्मपणु टळतु नथी अने बहिरात्मयोगे चेतन जड जेवो भासेछे, अने अज्ञानी जीव परवस्तुमा अहत्व परिणाम धारतो जडता अनुभवेछे-श्री यशोविजयजी उपाध्याय कहेछे के-

हु एहनो ए माहरो, ए हु एणी बुद्धि,
चेतन जडता अनुभवे, न विमासे शुद्धि आतम १
आतम अज्ञाने करी, जे भव दुःख लहीए,
आतम ज्ञाने ते टळे, एम मन सद्दहीए आतम २

आत्माना अज्ञानथी जे भवदु'ख परपरा पमायछे, ते भव दु'ख परपरानो नाश आत्मज्ञान थतां थायछे अर्थात् आत्मज्ञान थता अनादि काळथी परमा परिणमन थयुछे ते टळेछे रागद्वेष योगे जीव परवस्तुमा परिणमेछे अने यदा रागद्वेषनी परिणति टळेछे, तदा आत्मा परवस्तुमा परिणमतो नथी ज्या सुधी सम्यग् रीत्या आत्मस्वरूप जाण्यु नथी त्या सुधी जीव रागद्वेष परिणामे मोहीं बनेछे आत्मज्ञानथी रागद्वेषनी परिणति उद्भवेछे, आत्मज्ञाने सहज स्वभावे रमतां रागद्वेषनी परिणति नाश पामेछे, आत्मोपयोगे स्थिरता थता निर्विकार अखंड शाश्वत सुख भोगवाय

आत्मोपयोगी साधुने सर्व धार्मिक क्रिया सुखनी खानि

भूत थायछे, अज्ञानीने संवरना हेतुओ आश्रवरूपे परिणमेछे अने स्याद्वादरूपे जेणे आत्मतत्त्व जाण्युछे एवा ज्ञानीने आश्रवना हेतुओ पण संवररूपे परिणमेछे, एम ज्ञानीओनु कथनछे–प्रथम कोइ अपेक्षाए अजीवतत्त्वनु ज्ञान करवु जोइए. कारणे अजीवने अवबोधतां सहेजे तेथी भिन्नजीव जाण्यो जायछे, जीवाजीवादि नवतत्त्वोनो सम्यगवबोध भेदज्ञान थवामा मुख्य हेतुछे.—

आत्मज्ञानथी मुनिवर्यो मुक्तिपद प्राप्त करेछे. कलिकाल सर्वज्ञ श्री हेमचंद्र पण कहेछे के—

श्लोक.—योगशास्त्रे

मोक्षः कर्मक्षयादेव, सचात्मज्ञानतो भवेत् ।
ज्ञानसाध्यं मतं तच्च, तद्ध्यानं हितमात्मनः १
न साम्येन विना ध्यानं,नध्याने न विना च तत् ।
निःकंपं जायते तस्माद्,द्वयमन्योन्य कारणम् २

मोक्षपद प्राप्ति कर्माष्टकक्षयत थायछे, अने भवसतति वृद्धि कारणीभूतकर्माष्टकनो क्षय आत्मज्ञानथी थायछे. इत्यादिथी विचारता आत्मज्ञान थवु एज सर्व शास्त्रनो स्पष्ट रहस्यभूत उद्देश समजायछे. मतिज्ञान अने श्रुतज्ञानना योगे अस्ति नास्ति धर्ममय आत्मानु ध्यान थायछे, अने ध्यान पण आत्मानुसमजवु ध्यानयोगे स्थिरता प्रगटता अनंत सुख अनुभवी आत्मा बनेछे, अने अनुभव ज्ञानयोगे भव्यात्मा सुखनो आस्वादी बनेछे कोइ वस्तुपर राग नहीं अने कोइ वस्तुपर द्वेष नहीं एवी आत्मानी अवस्थाने साम्य अवस्था कहेछे. सूर्यना समान ज्ञान गुणे प्रकाशी आत्मा समजवो सूर्य अभ्रथी आच्छादित थतां तेना किरणोना प्रकाशनु पण आच्छादन थायछे,

परस्वभाव रमणतामा तत्पर, वळी जेना हृदयमां विषयवासनानो राग सदा वस्यो रहेतो होय. तेवा कुगुरुओ कृष्णसर्पसदृश जाणवा, तेनो धर्माभिलाषी जीवोए त्याग करवो जोइए. कृष्ण सर्प संगतिथी एकवार मृत्यु थायछे, अने एवा कुगुरुनी संगतिथी मिथ्यातत्त्वोपदेश पामता रागद्वेष परिणति योगे अनेक जन्ममरण करवा पडेछे. वळी जे गुरु नाम धरावता ब्रह्मचर्यव्रत पाळवानो उपदेश आपेछे. अने अतरमां स्त्रीनो वासछे एवा कृष्णसर्प सदृश कुगुरुनी संगति करवी नहीं. विषयना जे रागी होयछे तेनी संगतिथी आत्मा निर्विषयी बनतो नथी. विषयो विषना करतां पण अति दुःखदायकछे कह्युं छे के–

श्लोक.

विषस्य विषयाणा च, दृश्यते महदतर
उपभुक्त विष हंति, विषया स्मरणादपि ॥ १ ॥

विष अने विषयोनु महद् अंतर देखायछे, विष तो खाधु छतुं प्राणनो नाश करेछे अने कामादिक विषयो तो स्मरण मात्रथी आत्माना गुणोने हणेछे तो जे विषयना संगी होय तेनी संगतिथी आत्महित थतु नथी तेवा कुगुरुओनी पण निंदा करवी नहीं. मनमा एम चिंतववु के ए विषयना भिखारी अशुद्ध परिणतियोगे हेयज्ञेय उपादेय विवेक शून्य चित्तवाळा थइ चिंतामणि रत्नसमान आत्मधर्मनो अनादर करी परपुद्गलरूप एंठवाडनी रावीमाची रह्याछे, ए तेमनी भवितव्यतानो वांकछे. एम विचारी माध्यस्थपणे वर्ता तेमनी संगति त्यागवी कुगुरुनु लक्षण जणाववानु मुख्य कारण ए छे के–भव्यजीवो जेवु आलंबन मळे तेवा थइ जायछे. सारु मळे तो आत्मा सारा रस्ते वळेछे अने नठारु आलंबन

मळे तो आत्मा अधोगति भाक् थायछे माटे भव्यजीवो असत्य आलंबननो त्याग करी सत्य सद्गुरुरूप निमित्त कारणनु अवलंबन करे, एज हिताकाशछे.

" दुहा. "

विषय त्याग वैराग्यता, वनितानो नहि संग;
धन कंचननो त्याग जास, नमीए सद्गुरु चंग. १२४
विषयाशा मनमां मटी, मन मर्कट वश जास,
भवभीरु भ्रमणा मटी, तेना थइए दास. १२५

सुगुरु लक्षण कथेछे—जेओए विषयनो त्याग कर्योछे. अने जेमनुं मन वैराग्यथी सतत वासीत थयुछे. अने जे वनितानो संग करता नथी धन कंचन ए उपाधिछे. तेथी विकल्प संकल्प उद्भवेछे. एम जाणी जेणे त्याग कर्योछे, एटले व[illegible] परिग्रहनो त्याग कर्योछे. एवा सुंदरगुरुने नमस्कार करीए, विषयनी आशा तृष्णाना अंकुरा जेना हृदयमा उत्पन्न थता नथी. अने जेणे मन रूप माकडु वश कर्युंछे. अशुद्ध राग द्वेषनी परिणति योगे मनमां आर्तध्यान वा रौद्रध्यान थायछे, ते मन वश करवाथी थतु नथी. चित्तने वश करता विकल्प संकल्पनो नाश थायछे. मन वश करवु ते अत्यंत दुर्जयछे कोइ धनुष्यधारी स्वबुद्धि विचक्षणताथी राधावेध सहज मात्रमा साधी शके तेवो पण मनने पोताना वशमा करी शकतो नथी.

यत श्लोक

चित्तमेवहि संसारो, रागादि क्लेशवासितं ।
तथैव त[illegible]क, भवान्त इति कथ्यते ॥१॥

[illegible] वासीत चित्त तेज संसारछे, अने [illegible]

दिकथी रहित मन थता भवान्त कषायछे. एवु चित्त पण जेणे वश कर्युंछे एवा सुगुरुमहामुनिराजने देखी प्राणी पण शान्त भावने पामेछे. तेमना उपदेशथी अनेक जीवोने सर्वज्ञ कथीत तत्वनी श्रद्धा थायछे. कोइ श्रावक व्रत अंगीकार करेछे. कोइ साधु व्रत अंगीकार करेछे, वळी जे सद्गुरु ज्ञान दर्शन चारित्रथी मोक्ष सुख आराधेछे, ते सद्गुरु मुनिराज चोराशी उपमाए बिराजीत होयछे ते ग्रंथान्तरथी जाणवी वळी मुनिराज अनेक उपमाओने धारण करनाराछे यथा गाथा

कसें सखे जीवे, गयणे वाउय सारए सलिले ॥
पुक्खरपत्ते कुम्मे, विहग खग्गेय भारंडे ॥१॥

कंसपात्र समान उज्जवळ, शंख, जीव, गगन, वायु, शरद्ऋतु जल, कमलपत्र, काचबो, पक्षी, खड्गी, भारंडपक्षी, हाथी, वृषभ, सिंह, मेरुपर्वत, समुद्र चंद्र, सूर्य, सुवर्ण, पृथ्वी, अग्निनी आदि उपमाओने धारण करनार मुनीश्वर जाणवा वळी मुनीश्वर लक्षण कथे छे-भवभीरु-एटले संसारमा अनेक प्रकारना दुःख भर्याछे ज्या सुधी संसारछे त्या सुधी तात्विक सुख नथी पुन पुनः रागद्वेषथी बीता होय माटे रागद्वेषने सेवे नहीं भ्रमणा मटी-जड वस्तुमां आत्मबुद्धि हती ते टळी हु अने मारु आवी भ्रमणारूप बुद्धि परवस्तुमा थती हती, ते भ्रमणा बुद्धिनो जेणे नाश कर्योछे, एवा महात्मामुनीश्वर आत्मतत्त्व साधी शकेछे, वळी जे पुरुष शिष्यभाव तथा वैराग्यथी रहितछे एवा अनधिकारी पुरुषने प्रायः उपदेश देवा पण प्रवृत्ति करता नथी. अ य शास्त्रोमा पण कह्युछे के—

श्लोक

नापृष्ट. कस्यचित् ब्रूया । न्नचान्यायेन पृच्छत ॥
जानन्नपिच मेधावी, जडवल्लोकमाचरेत् ॥ १ ॥

विद्वान् मुनिवर्य प्रश्न कर्या विना कोइनी साथे बोले नहीं, अन्यायथी पृच्छकने पण उपदेश करे नहीं, किंतु सर्वतत्त्वनो जाण छतो पण मेधावी जगतमा जडनी पेठ विचरे वळी जे मुमुक्षु मुनिनी आत्मज्ञान तरफ धारणाछे, अनेक प्रकारनी वासनाओथी वासित चित्त ज्या सुधी होयछे त्या सुधी आत्मस्वरूप प्रतिलक्ष लागतु नथी जेम मलीन दर्पणमा प्रतिबिंब स्वच्छ पडी शकतु नथी. ज्यारे दर्पणने राख विगरेथी स्वच्छ कीधुं त्यारे तेनी अदर स्पष्ट प्रतिबिंब भासेछे तेम मनोरूप दर्पण रागद्वेष तेमज अनेक प्रकारनी वासनाओथी युक्त होयछे त्या सुधी तेनामा आत्मस्वरूप भासतु नथी, पण ज्यारे रागद्वेष इच्छा वासनारूप मलीनतानो नाश थाय छे त्यारे आत्मस्वरूप भासेछे, निर्मल चित्त जेनु थयुछे एवा मुनिवर्यो आत्मतत्त्वना अधिकारीछे.अन्य के जेना मन ममत्व वासनाथी मलीनछे एवा पुरुषो गृहस्थो–तत्त्व प्राप्तिमा अधिकारी नथी.

वळी मुनीश्वर निंदा वा स्तुतिथी संतुष्ट थाय नहीं. कारण के मायाना फदमा पडेली दुनीया दोरंगीछे, कोइ कइ कहे अने कोइ कइ कहे, लोक कीर्ति अने लोकनी स्तुति अर्थे जे आचरण आचर्वा ते मायानी वृद्धिने माटेछे पण आत्मसुख माटे नथी. माटे लोककीर्ति स्तुतिरूप वासनानो मुनि त्याग करे.–स्वकीय आत्मानु हित करवु तेज योग्य छे,

यतः श्लोक

विद्यते न खलुकश्चिदुपायः। सर्वलोक परितोषकरो यः।
सर्वथा स्वहितमाचरणीयं। किं करिष्यति जनोबहुजल्पः

आ ... एवो कोइ उपाय नथी के जेथी सर्व लोक
स्तुति ... मतत्त्वार्थि पुरुषे लोकवासनानो सर्वथा

माटे तेवा जीवो वहिर् दृष्टिपणाथी चिदानन्द आत्मामा सदा रहेला धर्मने प्राप्त करी शकता नथी जात्यभिमानी जीवनी अंतर्दृष्टि थती नथी, तेतो क्षणे क्षणे हु ब्राह्मण छु, हु क्षत्रीयछु, हु वाणियोछु, छु एवी बुद्धि धारण करेछे, पण हु ब्राह्मण नथी, हु वणिक् नथी, हु क्षत्रिय नथी, एवी बुद्धि धारण करी शकतो नथी, श्री यशोविजयजी उपाध्याय पण समाधिशतकमा कहेछे के—

" दुहा. "

जाति देह आश्रित रहे, भवको कारण देह ॥
तातें भव छेदे नहीं, जातिपक्षरति जेह ॥ १ ॥

इत्यादिकथी विचारता पण जात्यभिमानी आत्मधर्म साधी शकतो नथी, माटे आत्मधर्मार्थी मुमुक्षु जनोए आत्मानु स्वरूप स मजवु, अने बाह्य जात्याभिमानरूपभ्रमबुद्धि त्यागी अंतर्दृष्टिथी आत्मधर्म साधवो, परमार्थ शिक्षा इत्येव

" दुहा. "

लिंग देह उपर रहे, आतमथी छे भिन्न;
तेमा शु रगाइये, रंगातां दु:ख दीन. १२८
वर्णाश्रमना भेदथी, माने जे मन धर्म,
सत्य धर्म ते नवि ग्रहे, बांधे उलटा कर्म. १२९

भावार्थ—पुरुषलिंग वा स्त्रीलिंग आदि लिंग देहाश्रित छे, देह ज्यारे आत्माथी भिन्न छे, अलग्नत आत्मानी देह नथी त्यारे लिंग आत्मनु कहेवायज केम ? पुरुषादि त्रणे लिंगो आत्माने कर्मोपाधिना संबधथीज कहेवाय छे, हु पुरुष ए अभिमान मनुष्य धारण करतो मायान्ध बनी हु असंख्यप्रदेशी आत्मा एवो विवेक

भूली जाय छे, पुरुष लिंग प्राप्त थयु ए कर्मना उदयथी छे, तेमां अहता धारण करवी ते अज्ञानी जीवनु लक्षण छे, पुरुष वा स्त्रीना अध्यासथी वधाता आपणु आत्मानु शुद्ध स्वरुप भूलीएछीए, हु अने मारु ए अभिमानथी त्रण जगत्मा कोइ आत्मानंदानुभवी थयो नथी अने थवानो नथी माटे वस्तुत प्रियधर्मसाधक भव्यात्माओ लिंग अध्यासथी केम परमा रगावु जोइए ? अर्थात् कदी पण लिंगाभ्यास मनमा स्फुरवा देवो नहीं, अने एमा जो रगाशु तो दुःख वडे दीन एटले गरीब अवस्था प्राप्त थशे एमा सशय नथी. कोइ मर्द पुरुषने चपालाल, नपुसक कहे तो त्वरित तेना मनमा आवशे के मने नपुंसक कहेनार कोण ? एम सकल्प थता क्रोधनो आविर्भाव थता मुख तोबरा जेवु फुली जशे. वखते चपालालने त्रण चार अपशब्दो पण समळावे, परस्पर एक बीजानो अपकर्ष करवा बाकी राखे नहीं, ए लिंगाभिमाननु फळ छे. माटे विवेकनयनाधिष्ठाताओए परमात्मपद प्राप्त्यर्थ अन्तर्दृष्टि साधी एतादृश अभिमानने त्यजवो, ज्या सुधी लिंगाभ्यास छे त्यासुधी जीव हु परमात्मा छु एवी दृढ भावना धारण करवाना अभावे जन्म मरणनी उपाधि सचय सग्रहेछे.

वर्ण, तेमज आश्रमभेदे जे आत्मिकशुद्धधर्मनो भेद मानेछे, ते शुद्ध शाश्वत आत्मधर्म प्राप्त करतो नथी, सत्यधर्म तेवा व्यवहारजडजनथी समजातो नथी. अने कदापि तेवा पुरुषनी आगळ कोइ सत्य धर्मनु दर्शावे तोपण कदाग्रहग्रस्त थवाथी वचनामृतो पण तेने विषवत् परिणमेछे, अनेसत्य धर्म ते आत्मानो पोताना सहज स्वभावे सदाकाळ पोतानाथी जरामात्र पण दूर नथी तेने अज्ञानान्धजीव विपरीत दृष्टिथी जाणी शकतो नथी.—जडमा आत्म धर्मना [illegible] कर्मसग्रही तेना उदये अधोगति भजे छे, श्री

यशोविजयजी उपाध्याय पण समाधि शतकमा कहेछे के—

लिंग देह आश्रित रहे, भवको कारण देह,
ताते भव छेदे नहीं, लिंग पक्षरत जेह. १
जाति लिंगके पक्षमे, जिनकूं है दृढ राग,
ताते भव छेदे नहीं, जाति पक्ष रति जेह २

जाति लिंगना पक्षमा जेने दृढ राग छे ते भवान्त कदापि करी शकता नथी आत्माने जाति नथी के लिंग नथी जेम स्वप्नमा अनेक प्रकारनी जातियो तथा लिंगो धारण करायछे, अने ते जागीने जोता कइ भासतु नथी, तेम जाति अने लिंगाध्यास पण ज्यारे आत्माभिमुख चेतना थायछे त्यारे स्वप्नवत् लागेछे. हु पुरुष वा स्त्री नथी आ मत्रनो मनमा १००८ वार जाप जरा श्रद्धा राखीने जिज्ञासु कर, पछे तारा मनमा केवा प्रकारना विचारो आवेछे ते विचार अने पहेलाना विचारोमा केटलो फेर पडेछे ते विवेकथी विचार एकवार आ मत्रप्रयोग श्रद्धाथी जे अजमावशे तेने अनुभवनी मालुम पडशे, हु चपालाल, मनसुखलाल नथी एम अर्ध कलाक पर्यंत धारणा करवाथी प्रथमनी अवस्था अने चालती अवस्थाना विचारोमा एक मोटो भेद पडतो पोताने मालुम पडशे, अने आत्म धर्म प्राप्त करवानी जिज्ञासानो उद्भव थशे. शु त्यारे जाति लिंग मानवु खोटु छे, तो कोइ पोताने अमुक जातोवाळो कहीने बोलावे तो बोलवु नहीं ? वा कोइ कहे के तु पुरुष छे के स्त्री छे ? त्यारे एम कहेवु के हु तो पुरुष वा स्त्री पण नथी आम जो वर्ताए तो चाले केम ? तेना प्रत्युत्तरमा समजवानु के—अतरथी जाति वा लिंगनो अध्यास धारण करवो नही ? व्यवहारथी जाति वा लिंगना व्यवहारो कराय छे तेम करवा, पण अतरथी पोताना

मानवा नहीं. तेमज जाति वा लिंग आश्रित धर्म मानवो नहीं, धर्म आत्मानो अने धर्मी आत्मा अरुपी छे अने ते देह तथा जातिथी भिन्न समजवो. ए ज परमार्थ.

कुलाचारनी रीतमां, जे माने मन धर्म,
धर्म मर्म समजे नहीं, ले नहीं शाश्वत शर्म.१३०

भावार्थ—जे भव्यो अज्ञानदशाथी पोताना कूलना आचारमां धर्म मानेछे ते धर्म मर्म समजता नथी अने धर्मज्ञानना अभावे शाश्वत शर्म पामी शकता नथी. कूलाचारनी प्रवृत्ति दरेकनी भिन्न भिन्न होयछे, अने ते प्रमाणे सर्व मनुष्योनी प्रवृत्ति थया करेछे, ज्ञानी पुरुषो कूलाचारनी रीतिमा धर्म मानता नथी. प्रायः कूलाचारनी रीति जे देशमा जे धर्म चालतो होय तेनी मिश्रताथी थइ होय छे;—जैनोनी कूलाचारनी रीति जैन धर्म फीलोसोफीथी मिश्रितछे, माटे जैनोनी कूलाचारनी रीतिमा धर्मना हेतुओमानो अतर्भाव वर्त्ते छे. माटे तेनाथी विपरीत वर्तवु नहीं—बाल जीवोने कूलाचारनी रीति पण व्यवहारथी धर्म साधनमा कारणी भूतछे आ वचन बोलवामां दीर्घदृष्टिथी विचार करता घणो उडो परमार्थ समायोछे, ते अर्धदग्ध उपलक डोळ घालु जनोना जाणवामा आवशे नहीं,—जैन धर्मनी सत्यताथी ते धर्म जे लोको आचरेछे तेनी कूलाचारनी रीति पण धर्मकारणमिश्रित होयछे, माटे श्रावकना कूलाचारे पण जे धर्मनी श्रद्धा—आचार ते श्रेयस्कर छे, जेम कोइ कूवामा पाणी (जल) ना होय अर्थात् सुकाइ गयु होय तो पण ते खोदवा गाळवाथी जलनी सेरो फूटी कूवामा पाणि नीकळशे,—तेम जैन धर्म पण कूलाचारथी पाळता ज्ञानीगुरुनो सम यता तेनु रहस्य समजातां—समकीतनी प्राप्ति थशे, माटे समजु भव्यजनोए आ बाबतनो विचार [illegible] समय प्रथमना जेवो नथी, माटे जैनीओए

नहीं समजता पण लौकिक देवगुरुनो त्याग तेमज देवपूजा-गुरुवंदन जैन देरासरे जवु अन्यत्र नहीं, ए विगेरे ओघथी पळातो आचार पण धर्मनुं अंग जाणी त्यागवो नहीं, ज्ञानियोनी दृष्टिमां ते इतरो छे, पण बालजीवोने तेथी चढवानु छे, श्रावक कुळमां उत्पन्न थएलो माणस एटलु तो समजशे के अरे हु तो जैन छु, मारो धर्म जैन छे, एम मानी अन्य धर्म मानशे नहीं, तेम गुरुनो संग थता समजतो थशे-कुळथी पण जैन धर्म पाळनार, कुळमां उत्पन्न थनार विशेष धर्म समजशे नहीं तो पण मारो जैन धर्म छे एटलु पण धर्माभिमान आवशे माटे सापेक्षपणे विचारतां व्यवहारनयथी श्रावक कुळा-चारमां प्रवृत्त थनारने धर्मनो प्राप्तिने, अन्य कुळमां उत्पन्न थना रने माटे नहीं,-एकांत वादीओ कुळाचारमां धर्म मानेछे तेना नि-षेधपर आ वचन छे जाति संबंधी पण अतर् अभिमान त्याग क-रवो कोइ एम चिंतवे के आपणे वर्णावर्ण गण्याविना ब्रेड भगी रबीस्ति विगेरे सर्वनी साथे खावु पीवु, तेथी आपणो आत्मानो भ-भडातो नथी, त्यारे तेनी साथे खावा पीवामां शो दोषछे ? आम कोइ सहेल भ्रष्ट बुद्धिथी कहे तेनो प्रत्युत्तर के जे जातोनी साथे खावापीवानो व्यवहार नथी तेनी साथे खावाथी जाति अभिमान टळ्यु कइ कहेवातु नथी, पण अतरमा जाति अभिमान बिलकुल नहीं रहेवाथी अभिमान टळ्यु कहेवाय छे जाति अभिमान ज्यारी उत्पन्न थायछे त्याथी तेनो नाश करवो जोइए एज मुख्य परमार्थछे, इत्यादि घणु कहेवानु छे पण विस्तारभयथी लख्युं नथी, द्रव्य, क्षेत्र, काल, भावनो विचार करी चालवु

हवे कुसाधु संबधी कहेछे.

" दुहा "

सत्य धर्म समजे नहीं, दे उलटो उपदेश,
धर्म मर्म समज्या विना, अंतरमां व्हे क्लेश. १३१
स्त्रीविषयाशक्ति घणी, त्याग विराग न लेश,
मन चञ्चल जेनुं सदा, लजवे साधु वेष. १३२
शिष्य थइने रीसथी, वर्ते गुरुनी साथ,
आत्महित ते नाहि करे, विनयी ले शिवपाथ. १३३
कपटी काळा कागडा, कुगुरु कर्मचंडाल,
संगकदी करवो नहीं, भवतस अरहट्ट माळ १३४

तत्त्वनो उपदेश अज्ञानी कुगुरूओ सत्य आपी शकता नथी. अने उलटा कर्म ग्रहेछे ते जणावेछे

भावार्थ—आत्मानुं स्वरूप सम्यग् जाण्या विना जे गुरू एवु नाम धरावेछे, ते कुगुरू जाणवा, धर्मनो मर्म जरा मात्र समज्या विना आत्मापरमात्मानो उपदेश आपवा तैयार थइ जायछे, जीव, अजीव, पुण्य, पाप, आश्रव, संवर, निर्जरा, मोक्ष, इत्यादिनु किंचिदपि ज्ञान होय नहीं, तेम छता उपदेश आपे तेवा कुगुरूओ मनमा क्लेश पामेछे, अने पोते पण बूडेछे, अने बीजाने पण बूडाडेछे, आ वचन लौकिक कुगुरू अने लोकोत्तर कुगुरूना उपदेशने उद्देशी कह्युछे, सामान्यनीति शिक्षण हितशिक्षा तो परस्पर मनुष्यो एक बीजाने आपेछे, तेनु आ ठेकाणे ग्रहण कर्युं नथी. फक्त धर्मना उपदेश माटे लखवानुछे, धर्मनो उपदेश आपवाने साधुओने अधिकार छे, संसारमा राचीमाची रहेला श्रावकोने तो धर्मनो उपदेश आप-

संसारी अवळा फरे, सवळा फरे फकीर,
नमो नमो ते सद्गुरु, भयभंजन वडवीर   १३८

भावार्थ—हे आत्मा सद्गुरु सघळा आत्मतत्व समजी बाह्यनी एटले धन, धान्य, क्षेत्र, स्त्री, पुत्र, गृह, हाट, राज्यादि जे पर वस्तु तेनी ममता त्यजी हे चेतन तु तारा अंतर्धनने देख-ज्ञान दर्शनचारित्र रुप अंतर् धन आत्मानी अंदर रह्युछे तेने हे आत्मा निहाळ, अंतर् धन ताराथी दूर वा भिन्न नथी, अंतर् धननी प्राप्तिथी अपूर्व शान्तिनो भोगी आत्मा बनेछे, अंतर्धन विना क्षायिक सुखनी प्राप्ति कदी थवानी नथी दरेक ग्रंथोमा आत्म स्वरुपना हितने माटे विवेचन छे, सात नयथी सम्यग् आत्मानु स्वरूप जाणवु एकांत पक्षथी आत्म स्वरुप जे जाणेछे ते सम्यग् परमात्मपदनी प्राप्ति सन्मुख थइ शकता नथी आत्मानु ध्यान मनन करवाथी आत्मगुणोनो आविर्भाव थायछे, ते संबधी श्री देवचंद्रजीए आत्मस्तुति नीचे प्रमाणे करीछे

स्तवन--ध्यानदीपिका

गुण अनंत धर जीवने, वचे भवमे कर्म-धगेनिज भावना-ए टेक.

राग द्वेष सुख हि वहट्या. शत्रु हणु धरी ध्यान. धरो०
आतम लखो निज ज्ञानथु, टाळी कर्म अज्ञान ध० २
कर्म हणु तिम ध्यानथु, जेम न पडु भवमाहे ध०
भवज्वर अज्ञाने नडया, नवि दीठो शिव राह. ध० ३
परमातम जग गुरु ठग्यो, निरस विषयने संग. ध०
सर्वज्ञ आतम नवी नेखीयो, भ्रम अज्ञाने रंग ध० ४
आत्म स्वरूप पिछाणवा, ज्ञान दृष्टिए करी देख ध०
पंच ध्येय अरु आत्मा, ज्ञान गुण एक लेख ध० ५

नित्य छतोंछे सहजे ते, केवल गुण मुज माहि. ध०
मोह दाह त्या पीडवे, ज्ञान अमृत ज्या नाहि. ध० ६
कर्म उदय चउगति भमु, निश्चय सिद्ध स्वरूप. ध०
कर्मने भजु केम हु, अनत चतुष्टय भूप. ध० ७
तजी आशा निज शक्तिशु, हु आनद स्वभाव. ध०
छेद अज्ञान अनादिनो, आम लह्यो निज दाव. ध० ८
एम जाणी धीरज धरी, रागादि मल खोय ध०
ध्यावे आतम शक्तिशु, धर्म शुक्ल ध्यान होय. ध० ९
ध्यान ध्येय स्वरूपथी, ध्यावो स्ववेद ध्यान ध०
कर्महीन सर्वज्ञता, निर्मल शील भगवान. ध० १०
जड चेतन जीवादि ए, येय स्वभाव पिछाणि ध०
ध्यान लहो मन स्थिर करो, ज्ञान ध्याए आणि. ध० ११
परमेश्वर परमात्मा, ध्येय अरूपी देव. ध०
द्रव्यार्थिक नय शाश्वतो, ए परमातम सेव ध० १२
भवद्रुम क्षयकर शुद्धछे, ज्ञान थकी पर भिन्न ध०
जगत् सकल आदर्श ज्यु, जीर्ण ज्योतिमय. ध० १३
दर्शन ज्ञान आनदमय, अक्षर विगत-विकार. ध०
इद्रि विणु निकल गुणी, शान्त जाण शिवगार ध० १४
शुद्ध अष्ट गुण युक्तछे, निर्मल अमेय अभेय ध०
पर त्यागी अक्षय गुणी, ज्ञानीने आदेय. ध० १५
अणुथी पण जे सूक्ष्मछे, थभथी पण जे वृद्ध, ध०
जगत् पूज्य निर्भय सदा, परमातम शिव सिद्ध. ध० १६
ध्याने कर्म सहु गळे, जगगुरु अमल अरूप. ध०
जिण जाणे सहु जाणीये, जाय अविद्या धूप. ध० १७
तत्त्व . . . धीर हुवे, जाणे निज अनुभूति.

घगे ध्येय ज्ञेय आदेय ते, अतर आतम भूत. ध० १८
वचन अगोचर भ्रम विना, चिनवीं सहज अनत ध०
जास ज्ञानमें अज्ञज्यु, भावे द्रव्य अनत ध० १९
आत्म ज्ञानथी आत्मने, जाण्या थाये सिद्धि. ध०
मुनि तन्मय गुण तिहा लहे, तजी ग्रहीका नहीं लब्धि. ध० २०
लीन थइ ग्रहे एकता, ध्यावा ध्यान सु ध्येय ध०
परमात्मा अतरात्मा, एक अभिन्न अमेय. ध० २१
कटमे कट कर्त्ता तणी, दिसे दुविधा रीति ध०
पण ध्यान ध्येय ए आत्मा, एथी नवीय परतीत ध० २२
भवमें भम्यो अज्ञानथी, विण लाधा निज नाण ध०
परम ज्योति जग दु.खहरु, तेहिज अनुभव जाण ध० २३
भावे एम निज भावना, ध्यान बीज गुणधाम ध०
देवचद्र सुख सागरु, ध्यान अमूलख पाम ध० २४

श्री देवचद्रजी पण ए प्रमाणे आत्म स्वरूपनु वर्णन करेछे. गुण विशिष्ट आत्माने ससार चक्रमा वर्तता आत्मस्वरूपनी अनुपयोगताए परस्वभावमा रमणपणाथी परपुद्‌गलरूप जे कर्म तेनु ग्रहण समय समय प्रति थतु जायछे, माटे हे चेतन स्वस्वरूप रमणता रुप निजभावनानो दृढ प्रयास अने स्थिरताथी आदर कर. अनादि कालथी तु परभाव एटले पुद्‌गल द्रव्यना वर्ण, गध, रस स्पर्श, मय पर्यायोनी लालचमा–तृष्णामा, ग्रहणमा, ममत्वमा, पराभिमुख चेतना करी अशुद्ध परिणति धारी, स्वभाव भूली लोभायो पण परवस्तु पोतानी थइ नहीं उलटु राग द्वेषनायोगे पुद्‌गल द्रव्यने आकर्षी कर्मरूप परिणमावी अनेक योनिमा विचित्र देहो धारी स्वऋद्धिनु आच्छादन करी परपुद्‌गल भोगी थइ राजा जेवो पण तु

रक्त बन्यो, राग द्वेषरूप शत्रुने हणी आत्मीयध्यानमा प्रवृत्त थाउ, अने ज्ञान शक्तियी निजस्वरूप जाणुं. आत्मज्ञान थता परमा वधाएलो अज्ञानाभ्यास स्वतः दूर थायछे, आत्मा निर्मल थता परमात्मा कहेवायछे–तेनु स्वरूप कहेछे.

श्लोक

साकारं निर्गताकार, निष्क्रिय परमाक्षरं ।
निर्विकल्पं च निःकप, नित्य मानन्दमन्दिरम् १

आत्मा ज्ञानरूप उपयोगथी साकारछे, तथा दर्शनरूप उपयोगथी निराकारछे तथा आत्मा निष्क्रिय निश्चय नयथी जाणवो

प्रश्न–शरीरस्थ आत्मा सक्रियछे, अनेक प्रकारनी खावा पीवानी गमनागमननी क्रिया करेछे, छता ते निष्क्रिय केम जाणवो ?

उत्तर–ज्या सुधी जीवना प्रदेशोनी साथे कर्म लाग्युछे त्या सुधी ते सक्रियछे–अने कर्मनो नाश सर्वथा थता निर्मल सिद्ध शुद्ध परमात्मा निष्क्रियछे. शरीरस्थ आत्मा व्यवहार नयथी सक्रियछे कर्मनो सगछे माटे, अने निश्चयनयथी अक्रिय जाणवो. वस्तुत आत्मानु जेवु स्वरूप होय तेवु निश्चयनय वर्णवे छे, माटे आत्मानु वस्तुतः ध्यान करता निष्क्रिय भाववो, अने छे पण निष्क्रिय.

परमाक्षर–क्षर एटले खरवु, पोतानु स्वरूप बदलवु परम एटले सर्वोत्कृष्टपणे पोतानु स्वरूप नहि फेरवनार आत्माछे, अनादि कालथी विभाव दशायोगे भवचक्रमा आत्मा परिभ्रमेछे तोपण तेना असख्यात प्रदेशमाथी एक प्रदेश पण खरी गयो नहि, तेमज अनत गुणोमानो एक गुण पण खरी गयो नथी, माटे आत्मा अक्षर, [illegible] जाणवो. यद्यपि आत्माना प्रदेशोनु तथा गुणोनु

कर्मथी आच्छादन थयुछे तोपण प्रदेशो तथा गुणोनो नाश थयो नथी तेम पण थवानो पण नथी त्रण कालमा अक्षय रूप आत्माछे.

प्रश्न—परमाक्षर असंख्यात प्रदेशी आत्मा कीडी अने हाथीना शरीरमा एक सरखो केम मनाय ? कीडीनु शरीर छोडी ज्यारे हाथीनु शरीर धारण करे त्यारे तेनो विकास थयो, अने ज्यारे हाथीनु शरीर त्यागी कीडीनु शरीर धारण करे त्यारे आत्मानो संकोच थयो, असंख्य प्रदेशी आत्मानो संकोच विकास थयो त्यारे ते नाना शरीरमा लघु अने मोटा शरीरमा महान् थयो त्यारे आत्मानु एकसरखु रूप रह्यु नहीं, देहमात्र व्यापी जीव थयो तेनु केम ?

उत्तर— गाथा

जह पउम राय रयण, खित्त खीरं पभासयदि खीरं ॥
तह देही देहथ्थो, सदेहमत्तं पभासयदि १

छाया

यथा पद्मराग रत्न, क्षिप्त क्षीरे प्रभासयति क्षीरं,
तथा देही देहस्थ, स्सदेह मात्र प्रभासयति १

भावार्थ—पद्मरागरत्न दुग्धथी भरेला वासणमा नाखीए तो ते रत्नमा एवो गुण छे के-तेनी प्रभाथी सर्व दुग्ध तद्वर्णमय थइ रहेछे जो नानी वाटकीमा दुग्ध भरी अंदर पद्मरागरत्न नाखीए तो पद्मरागना रंग सरखु सर्व दूध थइ जायछे तेमज मोटु कुंडु होय तेमां दूध भरी पद्मराग रत्न नाखीए तो ते रत्ननी प्रभा तेटला सर्व दूधमा व्यापी जायछे तथा संसारी जीव पण अनादि कालथी कषायोद्वारा मलीन थतो शरीरमा रहेछे शरीरमा असंख्यात प्रदेशोवडे व्याप्त थइ रहेछे, स्निग्ध पौष्टिक आहारथी जेम जेम शरीर

वृद्धि पामेछे, तेम तेम शरीरनी अंदर रहेला आत्मप्रदेशो पण तेटला शरीरमा व्याप्त थायछे, मोटा शरीरमां जीवप्रदेशो विस्तारपूर्वक रहेछे, नाना शरीरमा शरीरने व्यापी रहे तेवी रीते आत्मप्रदेशो रहेछे, असंख्यात प्रदेशनी व्यक्ति स्वरूप जीव जाणवो, जो के आत्मा शरीरादि परद्रव्यथी जुदोछे तोपण संसार अवस्थामा अनादि कर्म संबंधथी नाना प्रकारना विभाव भाव धारण करेछे ते विभाव भावोथी नवीन कर्मबंध थायछे, वळी ते बांधेला कर्मोना उदयथी फरी एक देहथी देहान्तर धारण करेछे, अने तेम अशुद्धकारक चक्रथी संसारवृद्धि पामेछे, संसार अवस्थामा जीव कर्मसहित होय छे अने मोक्षदशामा कर्मरहित आत्मा सादि अनंतभगें सदा समये समये अनंत सुख भोगवतो वर्तेछे, संसारी यद्यपि आत्माछे तोपण तेनी सत्ताथी अक्षरछे, तथा सत्तातः निर्विकल्प आत्मा जाणवो, विकल्प संकल्प मनना योगे थायछे, विकल्प संकल्प योगे राग द्वेपमा आत्मा परिणमेछे, हु आत्मा ज्यारे विकल्प रहीतछु तो केम विकल्प संकल्प करु ? परभावमा रमता विकल्पादि उद्भवेछे, माटे परभावमा रमणता निवारवी, बाह्यदृष्टि योगे आत्मा परभावमा परिणमेछे माटे मुमुक्षु भव्यजनोए बाह्यदृष्टि प्रचार वारवा माटे अंतर्दृष्टिथी आत्मधर्म तरफ क्षणे क्षणे लक्ष्य आपवु, अंतर्दृष्टि थता बाह्यवस्तुमा परिणमेलो मननो वेग अटकता मन अंतरात्मा प्रति वळेछे, एम प्रतिदिन सतत दृढ अभ्यास थता पोतानी ऋद्धिनो स्वयं अनुभव थायछे कह्यु छे के:—

श्लोक

बहिर्दृष्टि प्रचारेषु, मुद्रितेषु महात्मनः ।
अंतरेवावभासते, स्फुटा॰ सर्वा॰ समृद्धय॰ ॥ १ ॥

महात्माने बहिर्दृष्टिना प्रचारो बंध थए छते पोताना आत्मामां

आत्माथी न्याराछे, चक्षुथी देखाता आकारो अने स्वप्नमां देखाता आकारो पुद्गल द्रव्यनाछे, अने पुद्गल द्रव्यथी आत्मा त्रणे कालमां निश्चयनयतः जोता भिन्नछे, माटे भिन्न वस्तुमां आत्मपणानी बुद्धि भ्रांति मात्रछे, माटे जेवी स्वप्नमां देखाता पदार्थोमां मारापणानी बुद्धि खोटी तेना सरखीज चक्षुथी देखाता पदार्थोमां मारापणानी बुद्धि खोटी जाणवी.

प्रश्न—त्यारे चक्षुथी देखाता सर्व पदार्थो असत्य समजवा ? अने जो ते असत्यछे तो तेमां ममत्व भाव केम उत्पन्न थायछे ?

प्रत्युत्तर—चक्षुथी देखाता सर्व पदार्थो पुद्गलना पर्यायोरूपे सत्य एटले अस्तित्व युक्त जाणवा, अने ते पुद्गल पर्यायरूप पदार्थो आत्मस्वरूपे नथी एटले आत्माथी भिन्नछे, आत्मपणु तेमां कइ नथी माटे 'आत्मअपेक्षाए ते असत्य जाणवा, आत्मद्रव्यमां पुद्गल पर्यायरूप पदार्थोनु अस्तित्व नथी किंतु आत्मद्रव्यमां पुद्गल पर्यायरूप पदार्थोनी नास्तिता सदा समये समये परिणमी रहीछे, तदपेक्षया असत्य जाणवा, अने पुद्गलरूपे ते सत्य जाणवा, माटे पुद्गल वस्तुओ ज्ञानदृष्टिथी जोता आत्माथी अत्यंत भिन्नछे तेमां मारापणानी बुद्धि अज्ञान तथा मोहथी उत्पन्न थायछे, ज्यारे अज्ञान नाश थतां ज्ञान प्रगटेछे त्यारे मोहनो नाश थतां परवस्तुमां थती अहंममत्वबुद्धि नाश पामेछे

शंका—ज्यारे आ प्रत्यक्ष देखातु शरीर पोतानु नथी एम जाण्यु त्यारे कोइ शरीरनो घात करे तो शु करवा देवो ?

समाधान—कोइ शरीरनो घात करे तो बिलकुल करवा देवो नही. अने उलटु शरीरनु संरक्षण करवु यत शरीरमात्र खलु धर्म

साधन प्रथम तो शरीरज धर्म साधनमां कारणीभूतछे. यतः कह्यु छे के–

श्लोक.

शरीरं धर्मसंयुक्तं, रक्षणीयं प्रयत्नतः
शरीराज्जायते धर्मः पर्वतात्सलिलं यथा· १

भावार्थ–धर्म सयुक्त एवा शरीरनु यत्न पूर्वक रक्षण करवु, कारण के जेम पर्वतथी नदी उत्पन्न थाय छे तेम शरीरथी धर्मनु साधन थाय छे ने वळी कह्यु छे के शरीरच पुद्गल धर्मत्वात् आहाराधार–शरीर पुद्गल रुपछे माटे ते आहारना आधारे रहेछे कह्युछे के–

गाथा.

देहो अ पुग्गलमओ । आहाराइ विरहिओ न भवे॥
तय भावे नय नाण । नाणेण विणा कओ तित्थं· १

भावार्थ–देह एटले शरीर पुद्गलमयछे, अने ते शरीर आहार विना होतु नथी. तेना अभावे ज्ञान नथी अने ज्ञान विना तीर्थ नथी. पूर्वे बार वर्षनी दुकाली पडी हती त्यारे आहारना अभावे श्रुत ज्ञाननी विस्मृति घणी थइ गइ माटे आहार पण श्रुत ज्ञानना अभ्यासमां चारित्र पालनमां कारणीभूतछे. अने आहार विना ज्ञान नाश पामेछे, आहार पुनः बे प्रकारनोछे, सावद्य आहार अने निरवद्याहार–जीवमय जे आहार ते सावद्याहार, अने जीव रहित जे आहार ते निरवद्याहार–सावद्यआहार भक्षणथी कर्म बंध-थायछे माटे मोक्षाभिलाषिजीवोए निरवद्याहारनु ग्रहण करवु, तेमां मुनिराज तो सर्वथा सावद्याहारना त्यागी होयछे, सावद्यआहार" निमि [illegible] नरक पर्यंत गमन करेछे यतः कह्युछे के–

गाथा

आहार निमित्तेण, जीवा गच्छति सत्तमिं पुढवीं ।
तडुल जस आहरण, भणियं सुत्ते जिणदेहिं· १

भावार्थ-आहारनो अभिलाषी तडुल तत्स्य बीजा जीवोने भक्षण करवानी इच्छामात्रथी सातमी नरक सुधी जायछे. माटे भवभीरु मुनिवर्यो शुद्धआहार सयमार्थे ग्रहण करेछे, यतियोने आहार शुद्धि अति दुष्कराछे कह्यु छे के-

गाथा

आहारे खलु सुद्धी, दुलहा समणाण समणधम्ममि ।
ववहारे खलु सुद्धी, दुलहा गेहीण गिहधम्मे १

श्रमणोने श्रमण धर्ममा वर्तता निर्दोष आहारनी प्राप्ति दुर्लभछे, तेम गृहस्थोने गृहस्थावासमा वर्तता व्यापारादिमां व्यवहार सुधी दुर्लभाछे. शुद्ध आहारथी शरीरनु पोपण सयमार्थम् श्रमणो करेछे मसगथी आहारनु विवेचन करी शरीर धर्मसाधनमां कारणी भूत छे एम सिद्ध कर्यु, धर्मीजीवोनु शरीर धर्म माटेछे तेम पापी जीवोनु शरीर पाप माटे जाणवु चतुरशीति लक्ष जीवयोने परिभ्रमण करता दुष्प्राप्य मनुष्य शरीर चिंतामणि रत्न जेवु पामी जे मनुष्यो खावा पीवामा तेमज विषय सुख भोगववामा, मोज मजा मारवामा शरीरनी सार्थकता समजेछे, ते जीवो मूढ अविवेकी पशु समान जाणवा देवताना शरीर करता मनुष्य शरीर अत्यत उपयोगीछे मनुष्य शरीरथी मोक्ष प्राप्ति थायछे, बीजा शरीरथी मोक्ष प्राप्ति थती नथी, माटेशरीरनु आहारादिकथी पोपण करवु रोगादिक थये छते रोगनाशार्थे औषध दवा करवी. कोइ शरीरनो घात करे ता करवा देवो नहिं कारण के शरीर विना धर्म साधन थतु नथी

शरीर मारूछे एम मानवु नही, कारण के ते पुद्गलछे शरीरथी न्यारो आत्मा भाववो, शरीर आत्म धर्मनी प्राप्तिमा निमित्त कारणछे एव, उपरना प्रश्ननो उत्तर थयो.

प्रश्न–गजसुकुमाल मुनीश्वरे श्मशानमा शरीर घातनो उपसर्ग केम सह्यो ? केम तेमणे शरीरनो घात करवा दीधो ?

प्रत्युत्तर–गजसुकुमालेतो काउसग्ग कर्यो हतो अने एवी तेमनी श्रद्धा हती के शरीरना उपसर्गथी पण चळशु नहीं. सर्व जीवोने माटे एवी स्थीति नथी. अतरथी भिन्नपणे आत्मभावमां वर्तवु ? व्यवहारथी तेनु सरक्षण करवु, गज सुकुमालनी एवी भवितव्यता हती. तेमज तेनी अतर्भावना प्रवर्द्धमान हती, तेथी एवी स्थीति बनी. एकात जैनमार्ग नथी तेथी शका करवी नहीं, काल, स्वभाव, नियति, कर्म, अने उद्यम ए पच कारणोथी मोक्षरूप कार्यनी सिद्धि थायछे, शरीरनी सार्थकता व्रतधारण तपश्चर्या विगेरेथी छे अते शरीर आत्मानु थयु नथी अने थशे पण नही. नित्य पर्व सम शरीरनी लालना पालना करवामात्रथी आत्महित थतु नथी पण तेथी धर्मना कार्य करवाथी आत्महित थायछे ? त्रण धन दरेक मनुष्यनी पासे रहेछे, प्रथम बाह्य धन. सुवर्ण, रूपु, जवाहीर, रत्न, राज्य विगेरे जाणवु, ते बाह्य धन अनित्य चचल जाणवु, कोइनी पासे बाह्य धन विशेषछे तो कोइनी पासे स्तोकछे ए बाह्य धननी अपेक्षाए गरीब तवगरमा भेद पडेछे, बाह्य धनने माटे अनेक प्रकारना उद्योगो क्लेशो देशोदेश परिभ्रमण आदि उपाधियो वेठवी पडेछे. किंतु ए बाह्य धननो ढगलो मरती वखते साथे लेइ गयो नथी अने लेइ जवानो नथी. बाह्य धननी ममताए अह

निश आर्तध्यान अने रौद्रध्यानमा आत्मा परिणमी अनेक प्रकारनां कर्म बांधेछे. अने बहिर्भावे राचीमाची अनेक जन्मनी वृद्धि करेछे

जेम कुभकार चक्रने एकवार वेग आपेछे तेथी ते चक्र चकरचकर घणी वखत सुधी भम्या करेछे तेम मनने आर्तध्यान, रौद्रध्यानना चिंतवननो एकवार वेग आप्याथी घणा वखत सुधी आर्तध्यानादिमा परिणमी रहेछे रागद्वेषनो वेग आत्माने आपवाथी घणा काल सुधी आत्मा रागद्वेष वेग जोरे ससारमां परिभ्रमण करेछे, माटे अत्र सार ए ग्रहवानोछे के–धर्मनो वेगजो आत्माने आपवामां आवे तो मुक्तिपद आत्मा पामे, तत्पद अर्थे सदाकाल एम भाववु के-देखाती वस्तुओमां हु नथी. त्यारे मारे कचन कामीनीने केम मारी मानवी ? वा मनमां तेनु चिंतन केम थवा देवु कारण के ते वस्तुओ पोतानी नथी तो निरर्थक ते सबधी विचार मारे केम करवो घटे ? हु एटले आत्मा जेमां नथी तेमां रागद्वेषथी परिणमवु मारे केम घटे. कदापि जाणोके शरीर निर्वाह आदि अर्थे ते वस्तुओनु ग्रहण करवु पडे तोपण उदासीन भावे ग्रहण करवु अतरथी ते वस्तुओथी हु न्यारोछु एवा उपयोगनी स्थिरताए रहु पण तेमा रागद्वेषथी परिणमवु योग्य नथी. संसारनां कार्यो करु पण तेमा लपटाउ नहीं एवी रीते वर्तवु तेज आत्माने हितकारीछे, देखाती वस्तुओ पुद्गलना पर्यायो जाणवा, पुद्गलनो सडण पडण, विध्वसन स्वभावछे पुद्गलना पर्यायो अनेक आकाररूपे देखायछे अने पाछा विखरी जायछे जेम सध्या समये पुद्गलना पर्यायो अनेक रगरूपे परिणमेछे अने क्षणमा नष्ट थइ जायछे तेम चक्षुथी देखाती वस्तुओ विचित्र वर्ण गध रस स्पर्शमय देखायछे अने पछी ते पाछी जुदा आकाररूपे परिणमी

भिन्नवर्ण गंध रस स्पर्शने धारण करेछे शरीर पण पुद्गलछे माटे ते मारू नहीं अने हु तेनो नथी, पुद्गलनी भिन्न जातिछे. अने आत्मानी भिन्न जातिछे तेनी जाति भिन्न अने जेनो धर्म भिन्न जेनी वर्तना भिन्न ते एक कदी होय नहीं. हु आत्मा पुद्गलमा त्यारे केम होउ ? जो के संसारमा कर्मनायोगे हु पुद्गलथी वस्यो छु तो पण पुद्गलथी निश्चय नयथी जोता हु न्यारो छु. ए त्रीजा विषयनो अल्प विचार कर्यो.

चतुर्थ विषय विचार-हु क्याथी आव्यो क्या जाइश ? हु आत्मा क्यांथी एटले कया स्थानमाथी अत्र मनुष्य गतिमा आव्यो, अने हवे आ शरीरनो उत्सर्ग कर्या बाद क्यां जाइश ते मनथी स्थिरचितथी विचार करता एम सिद्ध थायछे के पूर्व भवमा कोइ पण में सारु कृत्य करेलु. सिद्धान्तमा पण कथ्युछे के-जे जीव सरल हृदयी होय, परोपकारी होय, दयालु होय, धर्मार्थी होय, कोइ जीवनो घात करनार होय नहिं ते जीव मरीने मनुष्य थायछे. अर्थात् शुभभावनायुक्तजीव मरीने मनुष्य गति प्राप्त करेछे, तपश्चर्यावत, व्रती, परोपकारी, ब्रह्मचर्यादि गुण विशिष्ट जीव देवगति प्राप्त करेछे, पापी, महारंभी, कृतघ्न, कपटी, हिंसा असत्यादिथी युक्त जीव नरक गति पामेछे, कपटवत पापादि युक्त जीव तिर्यचनी गति प्राप्त करेछे माटे ते उपरथी विचारतां सिध्ध थायछे के पूर्व भवमा कइ सारा कृत्य करेला के जेना योगे मनुष्य शरीर ग्रही तेमा वश्यो छु. जेने जाति स्मरण ज्ञान उत्पन्न थायछे ते पोतानो पूर्वभव यथातथ्य जाणेछे, जाति स्मरण मति ज्ञाननो भेदछे, समतिराजा पूर्वे द्रुमकनो जीव हता. मिष्टान्न भक्षण लालचथी श्री आर्य सुहस्ति आचार्यजीने साधु थवानी विनति करी, गुरु महाराजे योग्य जाणी लाभनी खातर साधु वेष समर्प्यो,

त्यांथी शुभ भावना योगे मृत्यु पामी समति राजा तरीके थया, समति राजाना भवमा गुरु महाराजने देखी पूर्व भवनी यादी आवी, अनेक जिनबिंब भराव्या, अनार्य देशमा जेवाके अफगानिस्तान बलुचिस्तान, इरान,अरबस्तान, तिबेट विगेरे स्थाने श्रावकोने साधु वेष समर्पी जैन धर्मनो बोध देवा मोकल्या घणा राजाओने जैन धर्मी कर्या अवंति सुकुमाळ पण उज्जयिनी नगरीमा आचार्य श्री आर्य सुहस्तिना योगे जाति स्मरण ज्ञान पाम्या. हाल पण जे स्थाने अवंति सुकुमाल स्वर्गस्थ थया त्या अवंति सुकुमाल पार्श्वनाथ नामनु जिनमंदिरछे, सुदर्शना पूर्वभवमां समलिकाहती ते तद्भवमां पंच परमेष्टि मंत्र श्रवण करी मृत्यु पामी सिंहलद्वीप नृप पुत्रिका थइ त्या रुषभदास शेठना मुखथी नमो अरिहंताण पद सांभळी इहापोह करता जातिस्मरण ज्ञान पामी भरुअच्च नगरमां जिन मंदिर तथा मुनिवर्गोने वंदन करवा आवी पूर्वभवमां भरुअच्च नगरनी बाहर् ज्यां मरण पामी हती त्यां श्री ज्ञानभानु नामना आचार्य पधार्या हता तेमणे सुदर्शनाने उपदेश दीधो सुदर्शनाए समलिका विहार बधाव्यो, मतिज्ञाननी उत्कृष्टि स्थिति छासठ सागरोपमनी छे पाठ-कालमसख सखच धारणा मतिज्ञाननो धारणा नामनो भेदछे तेनो असख्यात सख्यातो काल जाणवो,जाति स्मरण ए धारणामा भळेछे, अर्थावग्रहतो एक समयनो जाणवो उत्कृष्ट अने जघन्यथी इहा अपायनो काल अतर्मुहूर्त्तनो जाणवो. समकिती जीवने मतिज्ञान होयछे अने मिथ्यात्वी जीवने मति अज्ञान होयछे सम्यग् रीत्या तत्त्वबोध थया विना तत्त्वज्ञान तरफ लक्ष वळतु नथी, सम्यग् तत्त्वनी श्रद्धा विना मतिज्ञान उत्पन्न थतु नथी हवे मूळ विषय उपर आवीये देवता पूर्वभव जाणी शकेछे, नारकीना जीव पोतानो पूर्वभव जाणेछे, हालना

वखतमा जाति स्मरणज्ञान उत्पन्न थवानो निषेध नथी. केटलाक सद्गुरु सगतिहीन अनार्यमति अज्ञानी आत्मानो पुनर्जन्म मानता नथी एवा नास्तिक शिरोमणि ज्ञानदृष्टि शून्य जीवो परमपद पामी शकता नथी. जीव पण अनादि कालथी आ ससारमाछे अने जीवने कर्मपण अनादिकालथी लाग्याछे ते कर्मनायोगे अवतारो ग्रहण करवा पडेछे तेनी साबी-तीना हेतुओ-नीचे मुजब.

१ जोड कहेवाता छोकरा नानपणमा एक सरखा होवा छता अने तेमने एक सरखी रीते उछेरवामा आव्या छता पाछळ-थी तेओना विचार आचारमा भिन्नता पडेछे तेनु कारण कर्म जाणवु.

२ पिता पुत्रना देखावनु सदृशपणु छता बन्नेनी अक्कल अने वि-चारमा जे आसमान जमीननो तफावत जोवामां आवेछे तेनु कारण पण कर्म जाणवु.

३ एक मावापना बे पुत्रो छता एकने कविता बनाववानी सहेजे शक्ति उत्पन्न थायछे अने बीजो अभ्यास करता पण कम बुद्धिमान् अने कविता करी शकतो नथी तेनु कारण पण कर्म जाववु कारण के एकने ज्ञानावरणीय कर्मनो क्षयोपशम थयो छे अने बीजाने थयो नथी.

४ आ पृथ्वीमां एक दु.खी, अने बीजो सुखी एक जन्मथी अध, लुलो, लगडो, बधिर, वा भीखारीना पेटे ज न्मी मरण पर्यंत दुःख पामनार थायछे, त्यारे बीजो मनुष्य देहथी सुखी सारा कुळमा पेदा थयेलो, धनथी सुखी बुध्धिमान्, तथा मान सन्मान पामनार जोवामा आवछे तेनु कारण जीवे पूर्व भवमा करेला पाप पुण्य तेनु फल जाणवु.

एम थवानु कारण इश्वरना हाथमाछे एम कहीए तो आपणे इश्वरने गेर इन्साफी अने दया विनानो ठेरवीए छीए, कर्मथी ज आवा अवतारो बनेछे. इश्वरने सुख दुःख आपनारो मानवु ए न्यायथी विरुध्ध तेमज महा अज्ञान जाणवु. इश्वर कोइने सुख दुःख आपतो नथी. जीव, पुण्य, पाप रुप कर्मना अनुसारे सुख दु ख पामेछे एम श्री तीर्थंकर भगवान् कहेछे, तीर्थंकर केवळ ज्ञानीछे माटे ते सत्य पदार्थ स्वरूप कथेछे. माटे तेमना वचन उपर विश्वास राखवो. पुनर्जन्म सिध्धि सर्व प्रमाण सिध्धछे, चोराशी लाख जीवयोनिमां परिभ्रमण करतो जीव महापुण्योदये मनुष्य जन्म पामेछे.अमूल्य चिंतामणि समान मानवतनु पामी भवोदधिनो पार पामवो एज कर्तव्यछे ससाररूप समुद्र तरवा मनुष्यावतार एक वहाण समान छे. मनुष्यरूप वहाणमां आत्म रूप उतारु बेठोछे आत्मोपयोग रुप खलासी वहाणने चलवेतो वहाण सम्यग् मार्गे चाले समुद्रमा तृष्णा रप मोटी भमरीओ आवेछे तेमा वहाणने बुडवा नहीं देतां शु धोपयोग रुप खलासी समुद्र पार वहाण उतारे माटे हे चेतन तु शुध्धोपयोगनो आदर कर के जेथी तु अनत शाश्वत सुख पामे

॥ कया जाइश—परभवना पुण्यथी मानसिक शक्तिवाळं मानव तनु प्राप्त थयुछे ते आयुष्यनी मर्यादा सुधी अते रहेछे. पश्चात् ते शरीरमांथी आत्मा जुदो पडेछे कोइ आत्मा महापाप करी नरक गतिमां सचरेछे नरको सातछे, पहेली करतां बीजी नरकमां विशेप दु खछे, बीजी करतां त्रीजीमां विशेप दुःख जाणवु. सर्व करतां सातमी नरकमा विशेप दुःख भोगववु पडेछे, उत्कृष्ट तेत्रीस सागरोपमनु आयुष्य सातमी नरकना जीवानेछे जे जीवो हजारो गायो भेंसो बकराने रेंसी नांखेछे अने तेथी पोतानु गुजरान च-

लावेछे तेवा जीवो प्रायः नरकगतिना मेमान थइ त्यां दुर्गंधमय खराबशरीरोने पामी असह्य दुःख क्षणेक्षणे भोगवेछे, विविध प्रकारनी क्षेत्र वेदनाओ भोगवेछे, जे जीवो हजारो माछलीओनु भक्षण करेछे अने रात्रिदिवस तेमने मारवानो उद्यम करी रह्याछे तेवा जीवो नरकगतिमा गमन करेछे. मरती वखते तेवा जीवोनी लेश्या बगडे छे, अने नरकमा दुःख पामता तेवा जीवोने मुकाववा कोइ जतुं नथी. त्यां नरकमा महारौरव दुःख पामेछे, करेला पापोमाथी छुटता नथी जे जीवो शिकार रमी हजारो पखी पशुने मारी तेना मासथी पापी पेट भरेछे अने सदाकाल तेवा पापी शिकारकृत्यमा राचीमाची रहेछे तेवा जीवो प्रायः नरकगतिमा परमाधामीनी करेली वेदनाओ, बूमो चीसो पाडता भोगवेछे, सागरोपम वर्ष सुधी नरकमा रहेछे, ते जीवोने जरामात्र पण सुख नथी आख मींचीने उघाडीए तेटली वखत पर्यंत पण नरकमा सुख नथी जे जीवो मासथी पापी पेट भरी आनद मानेछे तथा परस्त्री लपटी होयछे तेवा जीवो प्रायः नरकगतिमा जायछे, रौद्रध्यानना चार ४ पायामा वर्ततो जीव क्रूरपरिणामयोगे नरकमा गमन करेछे. माटे हे आत्मा तु जो उपरोक्त हेतुओनु सेवन करीशतो नरकगतिमा जाइश असख्य जीवो रौद्र परिणामने धारण करता नरकगतिमा गया अने अनेक जायछे अने जशे. तु मनथी तारू वर्तन तपासीजो, तु रात्रीदिवस केवा प्रकारना विचारो धारण करेछे, तु रात्रीदिवस पापना केवा केवा कृत्य कोछ वारे तेवु उगे आ कहेवतने याद राख तें अज्ञानथी नरकगतिमा जवाय तेवा पापो कर्या होय तो हवे ते बाबतनो पश्चात्ताप करवो घटेछे, अने गीतार्थगुरू पार्श्वे आलोचना लेवी घटेछे. प्रायश्चित्त विना पापनी शुद्धि थती नथी जेने भवनी भीति उत्पन्न थइ होय ते प्रायश्चित्त ग्रहेछे, मान ल-

ज्ञानो त्याग थाय अने वैराग्य प्रगटे त्यारे प्रायश्चित्त लेवायछे, जे जे गुप्त पापो कर्यां होय तेने बीजानी आगळ कहेवाथी जीव डरेछे वा लज्जा पामेछे पण मोक्षाभिलाषी जीवोए गुरू पासे लोकवासना त्याग करी प्रायश्चित्त ग्रहण करवु व्रतभगनु प्राय-श्चित्त ग्रहनार जीव आराधक जाणवो, मनमा शल्य राखवु नहीं कहु छे के—

गाथा

ससल्लो जइवि कट्ठुग्ग, घोर वीर तव चरे।
दिव्ववास सहस्स तु, तओवि त तस्स निप्फल १
सल्लुद्धरण निमित्त, गीयस्स नेसणाउ उक्कोसा।
जोयण सयाइ सत्तउ, बारस वरिसाइ २
आलोअणा परिणओ, सम्म सपट्ठिओ गुरु सगासे।
जइ अतरावि काल, करिज्ज आराहगो तहवि ३
लज्जाइगारवेण, बहुस्सुअ मएणवाविदुच्चरिअ।
जो न कहेइ गुरुण, नहु सो आराहगो भणिओ ४
जह बालो जपतो, कज्जमकज्ज च उज्जुअ भणइ।
त तह आलोइज्जा, मायामयविप्पमुक्कोअ ५
न वि त सत्थं व विसवर, दुप्पउत्तो न कुणइ वेआलो।
ज त च दुप्पउत्त, सप्पो व पमाइओ कुद्धो ६

माटे उपरोक्त भावार्थ समजी सद्गुरु पार्श्वे कृत पापोनी व्रत भगोनी आलोचना लेवी गुरु गीतार्थ जाणवा तेमनी पासे आलोचना लेवी सातसे योजन तथा बार वर्ष सुधी गभीर

गीतार्थ पासे आलोचना लेवानी तीव्रेच्छा राखवी, तथा आलोचना लेनार पण आत्मार्थी तत्त्वनो अभिलाषी होवो जोइए गुरुनी पार्श्वे पापनो पश्चात्ताप करतो प्राणी कर्मथी हळवो थायछे अने निर्मल थयेलो निशल्य भव्यात्मा सत्पथे चालेछे, जेम कोइना उदरमा बगाड थइ ते अशक्त थयो होय तो ते माणस वैद्यने नाडी देखाडेछे, वैद्य तेनी वर्तणुक पुछी लेछे, कया कया पदार्थो खावामा आव्या हता ते पुछेछे त्यारे रोगी पण सर्व वात कहेछे पश्चात् वैद्य तेना शरीने सारु करवा प्रथम मळ शुद्धि जुलाब आपेछे. पश्चात् बीजी दवाओ आपेछे, तेम गुरु महाराज पण अनेक प्रकारना पापोनी आलोचना रूप जुलाब आपी तेनु हृदय शुद्ध करेछे पश्चात् आत्महितने माटे अन्य मार्गो, व्रतो बतावेछे माटे हे चेतन तु हवे विचार कर अने नरकना हेतुओ दूर कर श्रीवीरभगवान्नी मळीए साधना वाळ जेटला धणी कर्या एम प्रभुनी पासे पश्चाताप कर्यो तेथी सर्व पाप जतु रह्यु, हे चेतन आर्तध्यान जो मनमा करीश तो तिर्यंचनी गतिमा जाइश धर्मध्यानथी देवगति मनुष्यगति प्राप्त थायछे अने शुक्ल ध्यानथी मोक्ष स्थान प्राप्त थायछे माटे चेतन-चारे गतिना द्वार तारे माटे खुलाछे, जेवां कृत्य करीश तेवी गतिमा जाइश-आयुष्य पूर्ण थता, देवता मनुष्य तिर्यंच अने नरक ए चार गतिमाथी गमे ते गतिमा कर्मानुसारे तु जाइश-एक गतिमाथी नीकळी बीजीमा, बीजीमाथी नीकळी त्रीजीमा, एम अनादि कालथी तु चतुर्गतिमा परिभ्रमण करेछे. चतुर्गतिमा परिभ्रमण करावनार कर्मछे कर्माष्टक प्रकृति रूप द्रव्यकर्म जाणवु. राग अने द्वेष रूप भावकर्म जाणवु, राग अगर द्वेषना विचारो कर्याथी जीव पुद्गल स्कन्धोने कर्म रूप परिणमावी ग्रहण करेछे.

केवल ज्ञान उत्पन्न थायछे तेवा तीर्थंकर महाराजाओ पण चारित्र अंगीकार करेछे अने गृहस्थावासनो त्याग करेछे. तो बीजा भव्यजीवोने चारित्र विना मुक्ति शी रीते मळे ? अने वळी शास्त्रमां पण कहुछे के-

गाथा

दंसण नाण जुओ विहु। न कुणइ कम्मख्खय चरण रहिओ।
नाणरुइ जुओ विज्जुव्व । किरिय रहिओ अरोगत्त १

भावार्थ-दर्शन अने ज्ञानवडे सहितपण प्राणी चारित्र विना कर्मनो क्षय करतो नथी. जाणकार वैद्य क्रियाहीनपणाथी रोग रहित थाय नहीं तेनी पेठे-वळी कहु छे के-

गाथा

बहुभव कयंपि कम्म । खवइ चरित्तमप्पकालंमि ।
चिर संचि इंधण भर । खणेण निद्दहइ जह जलणो१
एग दिवसंपि जीवो । पव्वज्ज मुवागओ अनन्नमणो।
जय वि न पावइ मुख्ख। अवस्स वेमाणिओ होइ २
अव्वत्त ता एग दिण। अंतमुहुत्तंपि चारु चरण जुओ।
खवइ असंखिज्ज भव । ज्जियंपि जीवो बहु कम्म ३
सुइरंपि चरण विणा। न दिंति नाण च दंसण सिव।
वरचरित्त जुयाइ । खणेण ताइ सिव फलाइ । ४

भावार्थ-बहु भवना कर्यां कर्मने चारित्र अल्प कालमां क्षय करेछे घणा कालनो संचित इंधण समूहने जेम अग्नि बाळी भस्म करेछे तेनी पेठे अन्यत्र चित्त नथी अने आत्मरमणतामां चित्तवाळु

केवळ ज्ञान उत्पन्न थायछे तेवा तीर्थंकर महाराजाओ पण चारित्र अंगीकार करेछे अने गृहस्थावासनो त्याग करेछे. तो बीजा भव्यजीवोने चारित्र विना मुक्ति शी रीते मळे? अने वळी शास्त्रमां पण कह्युछे के—

गाथा

दंसण नाण जुओ विहु। न कुणइ कम्मक्खय चरण रहिओ।
नाणरुइ जुओ विज्जु व्व। किरिय रहिओ अरोगत्त १

भावार्थ—दर्शन अने ज्ञानवडे सहितपण प्राणी चारित्र विना कर्मनो क्षय करतो नथी जाणनार वैद्य क्रियाहीनपणाथी रोग रहित थाय नहीं तेनी पेठे—वळी कह्यु छे के—

गाथा.

बहुभव कयंपि कम्म। खवइ चरित्तमप्पकालंमि।
चिर संचि इंधण भरं। खणेण निद्दहइ जह जलणो१
एग दिवसंपि जीवो। पव्वज्ज मुवागओ अनन्नमणो।
जय वि न पावइ मुक्खं। अवस्स वेमाणिओ होइ २
अंथवा ता एग दिणं। अंतमुहुत्तंपि चारु चरण जुओ।
खवइ असंखिज्ज भव। ज्जियंपि जीवो बहु कम्म ३
सुइरंपि चरण विणा। न दिंति नाण च दंसण सिवं।
वरचारित्त जुयाइ। खणेण ताइ सिव फलाइ। ४

भावार्थ—बहु भवना कर्या कर्मने चारित्र अल्प काळमां क्षय करेछे घणा काळनो संचित इंधण समूहने जेम अग्नि बाळी भस्मकरेछे तेनी पेठे अन्यत्र चित्त नथी अने आत्मरमणतामां चित्तवाळु

प्रथम अभ्यासमां मनविचार करतां वश रहेतुं नथी माटे तेने करवा उद्यम तो जोइए माटे आत्मस्वरूप चिंतवनमां मनने दोरवु. एटले मन बहिरनी हजारो वस्तुओमां भटकतुं पोतानी मेळे वश थशे. मनने बहिरनी वस्तुओमां भटकवाथी जेवो आनंद मेळवे छे तेवो पहेला मळशे नहीं. जेम नाना छोकराने निशाळे जतां जेवुं कटाळा भरेलुं लागे छे तेम तथा कोइ पक्षीने प्रथम पांजरामां पुरवामां आवे छे त्यारे जेम कटाळा भरेलुं तेने लागे छे तेम पेला छोकराने ज्यारे निशाळमां भणतां समजण पडे छे त्यारे कंटाळो थतो नथी अने पक्षीने जेम पांजरामां खावा पीवानो आनंद थाय छे तथा तेना धणीनी साथे हळी मळी जाय छे त्यारे स्थिर थाय छे तेम मन पण आत्मध्यानमां प्रथम कटाळी जाय छे पण ज्यारे तेने स्थिर आत्मध्यानमां करवामां आवे छे त्यारे कइक स्थिर थाय छे. अने अंते तेना उपर काबु मेळवी शकाय छे अने ते वासना विषयोमां भटकतुं नथी अने शान्त जेवुं थइ जाय छे पश्चात् निर्विकल्पमय आत्मस्वरूपमां स्थिर उपयोगदृष्टिनी धारा वृद्धि पामे छे तेथी भव्यात्मा आत्माना असंख्यप्रदेशे लागेला घणां कर्म निर्जरावे छे, अने निराधार स्वपर प्रकाशक बने माटे परमपदनी चाहना करनार प्रथम मनोजय करवो आवश्यक छे श्री आनंदघनजी महायोगी कहे छे के—

श्री कुंथुनाथजीना स्तवनमां—

मन साध्युं तेणें सघळुं साध्युं एह वात नहि खोटी.
[illegible]म कहे साध्युं ते नवि मानुं, ए कइ वात छे मोटी हो, कुंथुजिन०

जेणे मन वश कर्युं तेणे मुक्ति सुख वश कर्युं एम कहेवुं अतिशयोक्ति भर्युं नथी माटे पहेला तो दरेक अभ्यासीए मन काबुमां राखवुं, जेम घोडाओ गाडी गमे त्यां घसडी जाय छे माटे तेओने काबुमां राखवा पडे छे, तेम इंद्रियो रूपी घोडाओ आ शरीररूपी

गाडीने पोताने गमे त्या नहिं खेंची जाय ते मारु अंदर बेठेला आत्माए तेओने काबुमा राखवानाछे, प्रथम अवस्थामा मनने काबुमा राखवानी जेम जेम वधारे कोशेश करवामा आवेछे तेम तेम नहीं जोइता विचारो धमधोकार थया करेछे, सारा, नठारा, उच, धनना, स्त्रीना, वेपारना हजारो विचारोथवानु कारण समजी काढी खप विना विचार थवा देवो नहीं, सारा सारा पुस्तको वाचवामा आवे त्या सुधी मन ते काममा रोकाइ रहेछे, अने खराब विचारोनो नाश थायछे, खराब विचारो महारोगोना करता पण भूंडाछे, मोटा रोगो तो एक भवमा पीडा करेछे, किंतु खराब विचारोथी माठी असरो थइ घणा चीकणा कर्म बधाय छे, माटे अतरूना खराब विचारो माटे विशेष लक्ष आपवानी जरुरछे अने तेवा अशुभ विचारमय आर्त्तध्यान अने रौद्र ध्याननु स्वरूप शास्त्रमा कह्युछे, आर्त ध्यान अने रौद्र ध्याननु मूळ कारण अज्ञान, रागद्वेष अने मोहछे, अज्ञान ए महा शत्रुछे अज्ञाननो नाश करवा सद्गुरु उपदेश वारवार साभळवो अने तेनो विचार करवो षड्द्रव्योनु स्वरुप धारवु. जड चेतननो विभाग करवो तेथी स्व अने परनी समजण पडता भेद ज्ञान प्रगट थशे समकित प्रगट थवानु मुख्य कारण भेद ज्ञानछे जड अने चेतन ते वस्तु भिन्न भिन्न छे एटला मात्रथी भेद ज्ञान मानी खुशी थवु नहिं पण आगळ वधी अतरथी सदाकाळ बे वस्तुओ न्यारी समजवी. हवे रागद्वेष ए बे मोटा भुतछे, राग ए चूडेलछे अने द्वेष ए जन्दछे. ए बे ज्या सुधी माणसमां छे त्यां सुधी विचारो मनुष्य सदाकाल दुःखीयो जाणवो, चूडेल जेम मनुष्यनु रुधिर चुसी लेछे, तेम रागरूप चुडेलथी आत्मानी अनंति रुद्धि कर्मावरणथी आच्छादन थती जायछे, जन्द जेम माणसना शरीरमा पेसी अनेक तोफान करेछे, माणसनु भान भूलावेछे. तेम

द्वेषरूपी जन्द आत्माने वळग्यो छतो अनेक प्रकारनां तोफान करे छे अने आत्मानु भान भुलावेछे, चूडेल अने जन्दने कोइ महा उस्ताद मन्त्र यादी काढेछे तेम आत्माने लागेली रागरूपी चूडेल अने द्वेषरूप जन्द ते उस्ताद गीतार्थ गुरुना उपदेशरूप मन्त्रथी दूर थायछे त्यारे आत्मा अत्यत सुखी थायछे आ ठेकाणे शिष्यना आत्माभा रहेला रागद्वेषने काढवामा गुरु बलवान् निमित्त कारण जाणवा, अने उपादन कारण तो शिष्यना आत्मानी शुद्ध परिणति जाणवी आत्मानी शुद्ध परिणति थाय त्यारे आत्मा निर्मळ थइने निश्चय नयथी कहेवातु जे पोतानु शुद्ध स्वरूप, तन्मय आत्मा लोक अने अलोक तेना केवलज्ञानमा प्रकाशेछे. ज्ञानाव नाश पामेछे त्यारे अनतज्ञान उत्पन्न थायछे.

प्रश्न-ज्ञानावरणीय कर्म क्या रहेतु हशे ? अने तेनु थतु हशे ?

प्रत्युत्तर-ज्ञाननु जे आच्छादन करे ते ज्ञानाव पच प्रकारछे पच प्रकारनु ज्ञान आच्छादन वरणीय कर्म पण पच प्रकारनु जाणवु आत्मा अशुद्ध परिणतियोगे ज्ञाननु पोताना असख्य प्रदेशोनी साथे क्षीर नीरनी ए उपरथी स्पष्ट समजाशे के क्षीर नीरना पेठे ज्ञानावरणीय कर्म आत्माना प्रदेशोनी ते ज्ञानावरणीय कर्मनु ग्रहण अज्ञानयोगे ग्रहण थायछे

जेम सूर्यना किरणोनो प्रकाश वादळाना छे, तेम आत्मानु सूर्य सदृश जे ज्ञान ते ज्ञानावरणीय थायछे. तेथी आत्मज्ञान स्वपर प्रकाशकरूप कार्य करी

हवे ज्यारे ज्ञानावरणीयकर्मनो नाश थायछे त्यारे अनतज्ञान उत्पन्न थायछे, दर्शनावरणीय कर्मनो सर्वथा नाश थवाथी अनत दर्शन उत्पन्न थायछे. तथा शाता अने अशाता वेदनीयनो सर्वथा क्षय थवाथी अनत अव्याबाध सुख उत्पन्न थायछे मोहनीय कर्मनो सर्वथा क्षय थवाथी क्षायिक सम्यक्त्वनी तथा चारित्रनी प्राप्ति थायछे, आयुष्य कर्मनो क्षय थवाथी आत्मा सादि अनत स्थिति पामेछे साराश के—आयुष्य कर्मथी मुक्त थयेलो जीव सिद्धशिलानी उपर एक योजनना २४ चोवीस भाग करीए तेमाना त्रेवीस भाग मूकी चोवीसमा भागे एक समयमा सिद्धिस्थानमा जीव विराजेछे त्या गयानी आदिछे पण त्याथी पडवानु नथी माटे अत नथी माटे सादि अनतमा भागे सिद्धमा मुक्त थएल मुक्तात्मा रहेछे. नामकर्मना नाशथी आत्मा पोतानु अरूपीपद आविर्भाव करेछे गोत्रकर्मना नाशथी आत्मा अगुरु लघुगुण प्राप्त करेछे अतराय कर्मना नाशथी आत्मा सहज जे अनतवीर्य तेने प्रगट करेछे एम ए आठ कर्मना नाशथी आत्मा अष्टगुणने प्रगट करेछे अने परमात्मारूपे थायछे, पचमीगति मोक्ष तेनी प्राप्ति कर्मना क्षयथीछे, एम जीवने चारे गतियोमा जवाना कारणो बताव्या तेमज पचमीगतिमा जवानो मार्ग याने उपाय बताव्यो आत्मा जेवु वर्तन चलावशे तेवी गतिमा जशे ए स्पष्ट वात छे क्याथी आव्योने क्या जाइश ? ए सबधी विचार लख्यो, हवे पचम विषय सबधी विचार लखेछे

पचमविषय–मनुष्य जन्मनी साफल्यता शाथी–पचमगति साध्य करवाथी मनुष्य जन्मनी साफल्यता थायछे पुण्यपापक्षयान्मुक्ति पुण्य अने पापना क्षयथी मुक्ति पद मळेछे शुभ कर्मने पुण्य कयेछे अने अशुभ कर्मने पाप कयेछे. शुभ वा अशुभ कर्म पौद्गलिक छे, बे प्रकारना कर्मने पण आश्रव कहेछे. शुभपुण्य-

गाथा.

कुंडल विगमो मउड्ड प्पाओ कणगं अवठियं जहा ॥
तहसव्वेवि पयथ्था, जीवोनेओ पुणो एव ॥ १ ॥

कुडलरूप पर्यायपणे सुवर्णनो नाश अने तेनो ज्यारे मुकुट बनाव्यो त्यारे मुकुटरूप पर्यायपणे सोनानो उत्पाद, अने सुवर्णपणे ध्रौव्यता कुडलमा तेम मुकुटमा पण बनी रहीछे, सोनु कायम बनी रह्युछे सुवर्णमा सुवर्णना पर्यायोनो एटले आकारोनो उत्पाद व्यय थया करेछे. तेम अत्र जीवद्रव्यमा पण अनत गुणोनो उत्पात व्यय समये समये थया करेछे. एम धर्मास्तिकायद्रव्य, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, पुद्गलास्तिकाय अने उपचारे कालमा पण उत्पाद व्यय थया करेछे, अने ध्रौव्यतापणु सदा अवस्थित छे, षड्द्रव्य द्रव्यार्थिकनयापेक्षया नित्य जाणवा अने पर्यायार्थिकनयापेक्षया अनित्य जाणवा, जीवे धारण करेला मोटा शरीरमा वा नाना शरीरमा आत्माना असख्यात प्रदेशो सरखा जाणवा–ते वात दृष्टातथी दर्शावेछे–

गाथा

सकोय विकोएहिं, पईवकतिव्व मल्लगगिहेसु ॥
हथ्थिस्सव कुथुस्सव, पएससखा समाचेव ॥ १ ॥

मृत्तिकाना नाना वा मोटा कुडामा दीपकनी काति सकोच अने विकाशे करी युक्त जेमछे. एटले नाना कुडामा दीपकनी काति सकोचपणे रहेछे, अने तेज पाछी दीपकनी काति मोटा कुडामा विकाशपणे रहेछे, तेम जीव पण हाथीनु शरीर पामता तेमा आत्माना प्रदेशोना विकाशथी सर्व शरीरने व्यापी रहेछे तेम कुथुवानु शरीर जीव ज्यारे ग्रहेछे त्यारे तेटला शरीरमा जीवना असख्यातप्रदेशो

भाश्रव कहेवाय छे अने पापने अशुभाश्रव कहेवायछे आत्माने अनादि कालथी आश्रव एटले कर्म लाग्युछे, क्षीरनीरवत् आत्मा अने कर्मनो संबंध थयोछे. आत्माना असंख्याता प्रदेशो छे तेमां प्रति प्रदेशे अनंति कर्मनी वर्गणाओ लागीछे एकेक वर्गणा मध्ये अनंता पुद्गलपरमाणुछे एम अनंता परमाणु जीव साथे लाग्याछे वर्णगंधरस अने स्पर्शमय परमाणुओनी वर्गणाओ जाणवी, जीवद्रव्यने लागेला परमाणुथकी अनंत गुणा परमाणुओ छूटाछे–कर्म सहित आत्मद्रव्य पण सत्ताथी सिद्ध परमात्मा समानछे. जीव द्रव्य नित्य पणछे अने अनित्य पणछे कह्युछे केः–

गाथा

निच्चानिच सरूवा, भावा सव्वेवि ताव तियलोए ॥
उप्पाय विगम ठिइ धम्म, सगया ते पुणो एव ॥१॥
पुव्वभवपज्जएण, विगमोइह भवगएण उप्पत्ती ॥
जीव दव्वेण ठिइ, निच्चा निच्चत्तमेवतु ॥ २ ॥

नित्य अने अनित्य स्वरूपी सर्वे पदार्थो त्रिलोकमां वर्तता उत्पादव्यय अने ध्रौव्यता धर्ममय जाणवा, एक पदार्थमां उत्पादव्यय ध्रौव्यता केवी रीते थायछे ते दर्शावेछे–

यथा जीवद्रव्यमां पूर्व भवना पर्यायनो विनाश अने आभवना पर्यायथी उत्पाद अने जीव द्रव्यत्वपणे ध्रौव्यता एम त्रण धर्ममय जीव पदार्थ जाणवो, जीव द्रव्यमां गतिपर्यायथी उत्पाद व्यय ध्रौव्यता दर्शावी, आत्माना संसारावस्थामां अशुद्धपर्याय जाणवा वली स्थूलदृष्टांते उत्पाद व्यय ध्रौव्यता वर्णवेछे–

वादी तने केवलज्ञान थयुछे के एम कही शके. ना. त्यारे असंख्यात प्रदेश आत्माना छे एम श्रद्धा कर. मति कल्पनाथी कइ काम थतु नथी वळी हे शंकावादी सूक्ष्मदृष्टिथी समज के ज्या आत्माना प्रदेशोछे ते आत्माना प्रदेशोने व्यापीने ज्ञान अनंतगणु रह्युछे, प्रति प्रदेशे अनंतु ज्ञान रह्युछे. मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मन पर्यवज्ञान अने केवलज्ञान ए पंच-मांनु कोइपण ज्ञान आत्माना प्रदेशोने त्यागीने रहेतु नथी. हवे आत्मानो असंख्यात प्रदेश न मानीए नहींतो एक मोटो विरोध आवेछे.-

शिष्य -हे सद्गुरो आत्माना असंख्यात प्रदेशो मानीए नहीं तो मोटो शो विरोध आवेछे-ते कृपा करीने कहो.

सद्गुरु-प्रथमतो केवली केवलीसमुद्घात करेछे. लोकाकाश प्रमाण आत्माना प्रदेशो कर्मनु परिशाटन करवा विस्तारेछे अने कर्म भोगवी लेछे ते वातनो विरोध आवेछे एक प्रदेश लोकाकाश प्रमाण विस्तारातो नथी तेथी शी रीते कर्मनु प-रिशाटन करे नागो पलाळे शु अने नीचोवे शु एवी वात थइ, वळी बीजो विरोध ए आवेछे के-ज्यारे चतुर्दशपूर्वी शंका पुछवा माटे आहारकशरीर, लब्धिथी बनावी सीमंधर स्वामी पासे मोकलेछे त्या जड ते शरीर शंका पुछी तीर्थंकर सीमं-धरस्वामी पासेथी उत्तर लेइ जलदी आवेछे. हवे कहो के-चउदपूर्वीए बनावीने मोकलेलु जे आहारक शरीर तेमा आ-त्माना प्रदेशो खरा के नहि ?

शिष्य- हा सद्गुरो ते आहारक शरीरमा आत्माना प्रदेशो होवा जोइए- जो ते आहारक शरीरमा आत्माना प्रदेशो न होयतो ज्ञान विना भगवान्ने प्रश्न शी रीते पूछे. अने भगवान्

व्यापीने रहेछे. कर्म संयुक्त संसारी जीव शरीरमां वस्योछे तेनी अपेक्षाए नानामां नानु अंगुलना असंख्यातमा भागनु शरीर धारण करेछे माटे अंगुल असंख्यातमा भाग जेवडो आत्मा कहेवायछे अने केवली समुद्घात करता जीव लोकप्रमाण असंख्यात प्रदेशो विस्तारेछे माटे तदपेक्षायी लोकप्रमाण आत्मा कहेवायछे मोक्ष दशामां आत्मा अक्रिय थवाथी एकरुपे आत्मनी स्थीति रहेछे शुद्धबुद्ध सिद्ध परमात्मामां पण उत्पाद व्यय ध्रौव्यता रही रहेछे.

प्रश्न—हे सद्गुरो! संसारावस्थामां शरीर प्रमाणे आत्माना प्रदेशोनो संकोच विकोच थायछे त्यारे आत्माना प्रदेशो एक बीजा प्रदेशथी जुदा पडता हशे के केम—,

प्रत्युत्तर—तेवी स्थितिमां जो के आत्माना प्रदेशोनो संकोच विकाश थायछे तोपण प्रत्येक प्रदेशो एक बीजा प्रदेशोनी साथे नित्य संबंधे संबंधितछे तेथी आत्माना प्रदेशो संकोच विकाशताने पामेछे तोपण एक बीजाथी जुदा पडता नथी. अग्निना तणखाओनी पेठे सर्वथा भिन्न आत्माना प्रदेशो जो पडे तो असंख्यात प्रदेश मळीने एक आत्मा कहेवाय नहीं, अने आत्मापणु नष्ट थइ जाय माटे अरूपी आत्माना, प्रदेशो संकोचविकाशने संसारी अवस्थामां पामेछे तोपण तादात्म्य संबंधे संबंधीत होवाथी कोइ कालमां जुदा पड्या नथी अने पडशे पण नहीं. एवो प्रदेशोमां स्वभाव रह्योछे ते केवलीना ज्ञानगम्यछे, अनुभवीओ ए वातने सम्यग् अनुभवेछे

प्रश्न—आत्माना असंख्यात प्रदेशने ठेकाणे एक प्रदेश मानीए तो कइ हरकत आवे,

उत्तर—हा हरकत आवेछे, श्री सर्वज्ञ महाराजे आत्माना असंख्यात प्रदेश दीठा छे तेथी एक प्रदेश केम मानी शकाय, हे शका-

पणु घटे नहीं. एम पण सिद्ध थयु. चउदपूर्वीना आहारक शरीरना दृष्टांतथी बन्ने शरीरमा आत्मप्रदेशो असंख्याता छे एम सिद्ध थयु अने एक प्रदेशआत्मानो मानवामा बाध आवेछे ते पण सिद्ध कर्युं. युक्त अने युजान योगियो पण अनेक शरीर धारण करे छे तेमा पण आत्माना असंख्य प्रदेशो जाणवा तीर्थंकर महाराजे लोकाकाश प्रमाण आत्माना प्रदेशो कह्याछे ते वात पण सिद्ध ठरी, अने ते सिद्धछे. हवे आत्माना प्रदेशो सबन्धी वर्णन करेछे. आत्माना एकेक प्रदेशे अनंता पर्याय रह्याछे, ज्ञान पण प्रति प्रदेशे अनंतु सदाकाळ शाश्वत समये समये वर्तेछे.

प्रश्न—आत्माना दरेक प्रदेशे जुदु जुदु अनंतज्ञान छे एम मानीए तो एक प्रदेश जुदु जाणवारुप कार्य करे. त्यारे आत्मानो कइक जुदु जाणवारुप कार्य करे. त्रीजो प्रदेश वळी कइ जुदु जाणे. त्यारे एक जाणनार आत्मा रह्यो नहीं.

उत्तर—जो के आत्माना प्रत्येक प्रदेशे अनंतज्ञान सत्ताभावे रह्युछे तो पण असंख्यात प्रदेशो मळी एक उपयोग वर्तेछे, पण प्रत्येक प्रदेशनो जुदो जुदो उपयोग वर्ततो नथी ते कइ बाध आवतो नथी असंख्य प्रदेशो मळी एक आत्मा कहेवायछे, माटे आत्मापणु नष्ट थतु नथी. असंख्यप्रदेशो मळी एक समये निर्मल सिद्धात्माने एक उपयोग होयछे तेथी एकज आत्मा जाणवो.

कोइक आचार्य युगपत् उपयोग मानेछे. तथा चतत्पाठः

गाथा.

केइ भणंति जुगव, जाणइ पासइ केवलीनिअमा ॥
अन्ने एगतरिअं, इच्छांति सुउवएसेणं ॥ १ ॥

वाणीथी उत्तर आपे ते आहारक शरीरमा आत्माना प्रदेशोना होयतो समजी शकाय ते विना उत्तरनो अर्थ शी रीते समजे अने उत्तर अमुक प्रकारनो छे ते कोण धारण करी शके—माटे अवश्य आहारक शरीरमा आत्माना प्रदेशो मानवाज जोइए श्री तीर्थंकर भगवाने जे वात कही छे ते सत्यज छे—अनतज्ञानी सर्व पदार्थनु बराबर स्वरूप जाणे छे

सुगुरु—ज्यारे चउदपूर्वीए आहारक शरीर अत्रथी बनावी महाविदेह क्षेत्रमा मोकल्यु त्यारे—बे शरीर थया एकतो चउदपूर्वीनु सात धातुथी बनेलु औदारिक शरीर अने बीजु महाविदेह क्षेत्रमा मोकलेलु आहारक शरीर

हवे बन्ने शरीरमा आत्माना प्रदेशो खराके नहीं—

शिष्य—हा गुरुजी बन्ने शरीरमा आत्माना प्रदेशो छे औदारिक शरीरथी तो चउद पूर्वी व्याख्यान वाचेछे ते समजवु त्या पण ज्ञान छे नहीं तो व्याख्यान शी रीते वचाय वळी समजवु के—यत्र यत्रज्ञान तत्र तत्र आत्म प्रदेशा। ज्या ज्या ज्ञाननो सद्भाव छे त्या त्या आत्माना प्रदेशो जाणवा बन्ने शरीरमा जो आत्मप्रदेशो होय नही तो बन्ने शरीरमा ज्ञान होय नहीं माटे बन्ने शरीरमा ज्ञानथी आत्माना प्रदेशो छे एम नक्की यथार्थ सिद्ध स्पष्ट मालुम पडयु—

सुगुरु—हवे ते बन्ने शरीरमा आत्मप्रदेशो छे एम सिद्ध थयु हवे समजो के एक प्रदेशी आत्मा होय तो बन्ने शरीरमा ज्ञाननो सद्भाव शी रीते होय, एक प्रदेश जो आत्मानो होत तो एवो बनाव बने नहीं अने लब्धिथी बीजां शरीर धारण करवामा बाधो आवे वैक्रिय शरीर पण धारण करी शकाय नहीं आत्माना असख्य प्रदेशो मान्या सिवाय बन्ने शरीरमां जाणवा-

शत एटले सो तातणानो छेते आविभागपणे छता पर्यायछे
अने ते दोरडायी अनेक कार्य थाय, अनेक वस्तुओ बधाय
अने ते अनेकने आधार थाय. तेने सामर्थ्य पर्याय कहीए,
छतिरूप जे पर्याय तेतो वस्तुरुपछे अने सामर्थ्य पर्याय तो
प्रवर्तन रूप एटले कार्यरूपछे तेम अत्र ज्ञानना छति पर्याय-
मा अने सामर्थ्य पर्यायमा पण समजवु-

जिज्ञासु–श्री सर्वज्ञे पड्द्रव्यनी वहार कोइ वस्तु नथी एम कथ्यु
छे अने नैयायिक शोळ पदार्थ कहेछे. तेनु केम ?

सुगुरु–पड्द्रव्यरूप छ पदार्थोनी अदर शोळ पदार्थनो समावेश
थायछे तेथी छ पदार्थ सत्य जाणवा. प्रथम नैयायिक प्रमा-
णने भिन्न पदार्थ कहेछे ते युक्त नथी कारण के प्रमाण जे-
टलाछे तेटला ज्ञानछे अने ज्ञानतो आत्मानो गुणछे तेने भिन्न
पदार्थ कहेवाय नहि. प्रमेयपणु पण पड्द्रव्योनी वहार नथी.
बीजा प्रयोजन सिद्धातादिक ते सर्व जीवद्रव्यनी प्रवृत्ति
जाणवी माटे भिन्न पदार्थ कहेवाय नहीं,

जिज्ञासु--वैशेषिक द्रव्यगुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय
अने अभाव ए सात पदार्थ कहेछे. तेनो पड्द्रव्यनी अदर स-
मावेश थायछे के पड्द्रव्यथी भिन्न पदार्थछे तेनी यथार्थ स्प-
ष्ट समजण आपो.

सुगुरु–हे जिज्ञासु स्थिर दृष्टि राखी साभळ गुणने पदार्थ बीजो
कहेवाय नहीं. गुण तेतो द्रव्यमा रह्याछे. तेथी गुणने भिन्न
पदार्थ कहेवाय नहीं, तथा कर्म ते द्रव्यनु कार्यछे तथा सामा-
न्य विशेष ए वे तो द्रव्य मध्ये परिणमनछे. वळी समवायने
पण द्रव्यमा समायछे, अने अभावतो अछताने
कहेवाय ते अछताने पदार्थ मानवो घटतो नथी अभावछे

केचित् सिद्धसेनाचार्य वगेरे कहेछे के—युगपत् एककाला वच्छेदन केवल ज्ञानी जाणेछे देखेछे–अन्ये जिन भद्रक्षमाश्रमण वगेरे एक समये केवल ज्ञानी जाणेछे अने बीजा समये देखेछे. एटले एक समये ज्ञानोपयोग अने बीजा समये दर्शनोपयोग एम क्रमवर्तिपणे इच्छेछे–आगमना अनुसारे तेम इच्छेछे आ बे पक्षनी नंदिसूत्रमां घणी चर्चाछे त्यांथी विस्तार विशेष जोइ लेवो.

जिज्ञासु—केवल ज्ञान विना मतिज्ञानी, श्रुतज्ञानी, अवधिज्ञानी, मन पर्यव ज्ञानीने एक समये ज्ञानोपयोग अने बीजा समये दर्शनोपयोगे होय के नही

सुगुरु—केवलज्ञानी विना बीजा ज्ञानवाळाओने एक समये ज्ञानोपयोग अने बीजा समये दर्शनोपयोग व्यक्त होतो नथी

जिज्ञासु—आत्मज्ञानना छतिपर्याय अने सामर्थ्य पर्याय केवी रीते समजवा ?

सुगुरु—आत्माना असंख्यात प्रदेश पैकी प्रतिप्रदेशे छतापणे अनंत अनंत ज्ञान रहुछे ते ज्ञाननो त्रिकालमा कदीपण नाश थनार नथी ते ज्ञानना छतिपर्याय जाणवा, अने ज्ञानमा ज्ञेय पदार्थनो भासनपणो तेथी ज्ञानना सामर्थ्य पर्याय जाणवा ज्ञेयपदार्थो अनंताछे अने ते समये समये ज्ञानमा भासेछे, माटे ज्ञेय जे अनंत पदार्थो तेनी भासता कार्य करणशक्तिवाळा जे ज्ञानना पर्यायो ते ज्ञानना सामर्थ्य पर्याय जाणवा छति पर्यायथी सामर्थ्य पर्याय अनंत गुण विशेष जाणवा सामर्थ्य पर्याय ते कार्यरूपछे तथा च महाभाष्ये—यावतो ज्ञेया' तावत एवज्ञानपर्यायाः' ते च आस्तिरूपाः प्रतिवस्तुनि अनंता ततोप्यनंतगुणा सामर्थ्यपर्याया. जेम एक दोरडो

भावार्थ–सकलशास्त्रमा पक्ष बेछे. १ जातिपक्ष २ बीजो व्यक्तिपक्ष जाति एटले सामान्य अने व्यक्ति एटले विशेप. एवा वच नथी जाणवु सामान्ये एटल जातिपक्षमा सर्व पदार्थोनु नित्यपणु जाणवु कारणके जातिपक्ष सत्तानु प्रतिपादन करवामा तत्परछे ते हेतुथी जेमके गोत्व, अश्वत्व, गायपणु अने अश्वपणु ए नित्यछे. पण व्यक्तिरूप जे गौ घोडो ते अनित्यछे जे आ जातिपक्षछ ते जैनोनो द्रव्यार्थिक नयछे. अने जे व्यक्तिपक्षछे. तेज जैनोनो पर्यायार्थिक नयछे. जातिपक्ष द्रव्यनुं ग्रहण करेछे अने व्यक्तिपक्ष पर्यायोनु ग्रहण करेछे जातिपक्ष ए सामान्य अने व्यक्तिपक्ष ए विशेप छे माटे ते बेनो नयमा समावेश थवाथी सामान्य विशेप पड्द्रव्यथी भिन्न पदार्थ नथी.

जिज्ञासु–पृथिवी, अप, तेज, वायु, ए चार विना बाकीना पच नित्य कह्याछे. तो जैनोना स्याद्वादपक्ष प्रमाणे नित्य अनित्य ए बे पक्ष प्रत्येक द्रव्यमा घट्या नहीं. ने तमो घटावोछो ते केवी रीते ते समजावो

सुगुरू–हे भव्य सामळ, प्रत्येक वस्तुमा ज्ञानदृष्टिथी जोता नित्य अने अनित्यपणु रह्युछे. पृथिवी, अप, तेज अने वायु कार्यरूप न्यायशास्त्रमा अनित्य कह्याछे अने परमाणुरूप नित्य कह्याछे. आकाश स्वस्वरूपे त्रणकालमा एकरूपछे माटे तदपेक्षया नित्यछे अने=(घटाकाशोनष्टः पटाकाशोनष्टः) घटाकाश नष्ट थयु पटाकाश नष्ट थयु, एवी रीते घटपटनी उपाधिथी अनित्य पक्षपणु आकाशमा आव्यु. दिशाकालमा पण तेवी रीते नित्यानित्यपणु घटयु=आत्मापितस्यमते सच-देहेंद्रियव्यतिरिक्त' विभुर्नित्यश्चेति वचनात् तत्र कौंडिन्य न्यायेन पारिशिष्यानुमानेन देशाश्रिनोनित्यएवेति=आत्मा

ते वस्तुनो व्यतिरेक धर्मछे माटे वैशेषिक मतपण षड्द्रव्यमां समाइ जायछे. वळी वैशेषिक द्रव्यना पृथिवी अप, तेज वायु आकाश. काल, दिशा, आत्मा, मन ए नव भेद कहेछे ते सवथी समजवु के–पृथ्वी, अप, अग्नि वायु एतो एकेंद्रिय जीव जाणवा, पृथ्वीरूप शरीर धारण करी जे जीवो रह्याछे ते पृथ्वीकायना जीवो समजवा, अने शरीरतो पुद्गल द्रव्यमां आव्यु एम ए चार पण आत्मद्रव्य ठर्या पण कर्म-योगे शरीर भेदे नाम जुदा पड्याछे दिशीतो आकाशमां मळी जायछे अने आकाश ए आकाशास्तिकाय द्रव्य जाणवु मनतो आत्मानु संसारीपणामां उपयोग प्रवर्तवानु द्वारछे तेथी ते भिन्न द्रव्य कहेवाय नहीं वैशेषिक मतवाळी सामान्य विशेष ए बेने भिन्न पदार्थ मानेछे ते पण युक्त नथी–

गाथा

तथाहि सकलशास्त्रे पक्षद्वय,
जातिपक्षो व्यक्तिपक्षश्च तत्रजाति·
सामान्य व्यक्तिस्तुविशेष·
इतिवचनात् सामान्येतुसर्वेषामेव
नित्यत्वं सत्ताप्रतिपादनपरत्वात्
यथागोत्वाश्वत्वादिक नित्य नतु गौर
श्वोवानित्य व्यक्तिपक्षेत्वनित्यमेव
यस्तुजातिपक्ष सत्वस्माक
जैनानां द्रव्यार्थिकनय व्यक्तिपक्ष·
स्त्वस्माक पर्यायार्थिकनय

अनित्य तेम अस्तित्व नास्तित्व तथा उपादेय, अनुपादेय तेमज अभिलाप्य अने अनभिलाप्य धर्मनो समावेश, ए विरुद्ध धर्मोनी स्थिति तेनु नाम स्याद्वाद जाणवु.

ए प्रमाणे स्याद्वादनु लक्षण कही प्रस्तुतविषय वर्णन करीए. तथा वेदांती सांख्य ते एकज आत्मा अद्वैतपणे एकज द्रव्य मानेछे, ते पण युक्ति युक्त नथी केमके शरीरजे आ चर्मचक्षुथी देखायछे वा औदारिक, वैक्रिय, आहारक, तैजस अने कार्मण ए पंच प्रकारना शरीर तो पुद्गलास्तिकायपणेछे माटे रूपीछे, तेमज पुद्गल द्रव्यना स्कंधो जे जुदी जुदी आकृतिरूपेछे ते एक केम थाय. तथा आत्मा अने शरीरनो आधार ते आकाश जाणवु अवगाहो आगास इति वचनात् बीजा द्रव्योने रहेवा अवकाश आपवो ते आकाशनु लक्षणछे अने ते सर्वत्र प्रसिद्धछे. ते आकाश द्रव्यने जुदु मानवु जोइए आत्मा भिन्न ठर्यो पुद्गलद्रव्य भिन्न ठर्युं. आकाशद्रव्य भिन्न ठर्युं. तो एकज आत्माछे आत्मा विना अन्य वस्तु नथी. एवो अद्वैतवाद सिद्ध ठर्यो नहीं वळी अद्वैतवादमा एकज आत्माछे. पण अनेक आत्मा नथी एवु मनायछे. तो अनेक आत्मानी शास्त्र युक्ति, अनुभवथी सिद्धि आगळ करवामा आवशे. अद्वैतवादी आत्मानु अस्तित्व मानेछे माटे ते वादनो समावेश आत्मद्रव्यमा करवामा आवेछे, माटे षड्द्रव्यनी बाहार कोइ वस्तु नथी एम सिद्ध ठर्युं.

षड् द्रव्यनी अंदर बौद्धदर्शननो समावेश.

बौद्धदर्शनने समये समये नवा नवापणे आकाश १ काल २ जीव ३ पुद्गल ४ ए चार द्रव्य मानेछे. ते वादी प्रति कहेवानु के-जीव अने पुद्गल एकज क्षेत्रे केम रहेता नथी. ते तो चलनादिभाव पामेछे. माटे तेना अपेक्षाकारणरूप, धर्मास्तिकाय अने अधर्मा-

पण वैशेषिकना मतमा देहथकी भिन्न जे आत्मा ते विभु अने नित्यछे त्या कांडिन्य न्यायवडे जोता देहमा रहेलो आत्मा अनित्य कह्योछे स्याद्वाद मतमा अशुद्ध पर्याये तथा शुद्धपर्याये आत्माना नित्यानित्यपणु स्वीकार्युछे मनमा पण नित्यानित्यपणु रह्युछे. देहना अनित्यपणाथी मननु पण अनित्यपणु जाणवु. देहाश्रितमनः देहाश्रित मनछे माटे, पुद्गलरूपे देहनु पण नित्यपणु छे तेम मननु पण पुद्गलरूपे नित्यपणुछे पुद्गल परमाणुओमा पण द्रव्यार्थिकनयनी अपेक्षाए नित्यपणुछे कारण के-परमाणुरूप पुद्गलनो कदी त्रिकालमा पण नाश थतो नथी तेम पुद्गलरूप परमाणुओमां पण वर्ण, गंध, रस अने स्पर्श समये समये फर्या करेछे माटे पर्यायार्थिकनयनी अपेक्षाए तेमा अनित्यपणु जाणवु

जिज्ञासु—स्याद्वाद एटले शु ? ते समजावो.

सुगुरु—एकस्मिन् वस्तुनि विरुद्धधर्मद्वय समावेश स्याद्वाद. एक वस्तुमा परस्पर विरुद्ध बे धर्मनो समावेश ते स्याद्वाद जाणवो अथवा वस्तु स्वरूप प्रतिपादन पर श्रुतविकल्प स्याद्वाद' भावार्थ—वस्तुनु यथार्थ स्वरूप प्रतिपादन करवामा पर एवो श्रुतनो विकल्प स्याद्वाद जाणवो अथवा विरुद्धधर्मद्वय प्रतिपादन परोवक्तुरभिप्राय विशेष स्याद्वाद अथवा तो एक वस्तुमा विरुद्ध धर्म बेने प्रतिपादन करवामां तत्पर एवो वक्तानो अभिप्राय विशेष तने स्याद्वाद जाणवो. तथा एकस्मिन् जीवाजीवादौ विरुद्धयद्धर्म द्वय नित्यानित्यास्तित्व नास्तित्वोपादेयानुपादेयाभिलाप्यानभिलाप्यादि लक्षण तस्य समावेश समाश्रय. स्याद्वाद इत्यर्थ

तथा जीव अजीव आदि पदार्थमां विरुद्ध जे धर्मद्वय—नित्य

अनित्य तेम अस्तित्व नास्तित्व तथा उपादेय, अनुपादेय तेमज अभिलाप्य अने अनभिलाप्य धर्मनो समावेश, ए विरुद्ध धर्मोनी स्थिति तेनु नाम स्याद्वाद जाणवु

ए प्रमाणे स्याद्वादनु लक्षण कही प्रस्तुतविषय वर्णन करीए.

तथा वेदांती सारय ते एकज आत्मा अद्वैतपणे एकज द्रव्य मानेछे, ते पण युक्ति युक्त नथी केमके शरीरजे आ चर्मचक्षुथी देखायछे वा औदारिक, वैक्रिय, आहारक, तैजस अने कार्मण ए पच प्रकारना शरीर तो पुद्गलास्तिकायपणेछे माटे रूपीछे, तेमज पुद्गल द्रव्यना स्कधो जे जुदी जुदी आकृतिरूपेछे ते एक केम थाय. तथा आत्मा अने शरीरनो आधार ते आकाश जाणवु. अवगाहो आगास इति वचनात्. बीजा द्रव्योने रहेवा अवकाश आपवो ते आकाशनु लक्षणछे अने ते सर्वत्र प्रसिद्धछे. ने आकाश द्रव्यने जुदु मानवु जोइए आत्मा भिन्न ठर्यो. पुद्गलद्रव्य भिन्न ठर्यु. आकाशद्रव्य भिन्न ठर्यु तो एकज आत्माछे आत्मा विना अन्य वस्तु नथी. एवो अद्वैतवाद सिद्ध ठर्यो नही. वळी अद्वैतवादमा एकज आत्माछे. पण अनेक आत्मा नथी एवु मनायछे. तो अनेक आत्मानी शास्त्र युक्ति, अनुभवथी सिद्धि आगळ करवामा आवशे. अद्वैतवादी आत्मानु अस्तित्व मानेछे माटे ते वादनो समावेश आत्मद्रव्यमा करवामा आवेछे, माटे षड्द्रव्यनी बाहार कोइ वस्तु नथी एम सिद्ध ठर्यु.

षड् द्रव्यनी अंदर बौद्धदर्शननो समावेश.

बौद्धदर्शनने समये समये नवा नवापणे आकाश १ काल २ जीव ३ पुद्गल ४ ए चार द्रव्य मानेछे. ते वादी प्रति कहेवानु केजीव अने पुद्गल एकज क्षेत्रे केम रहेता नथी. ते तो चलनादिभाव पामेछे. माटे तेना अपेक्षाकारणरूप, धर्मास्तिकाय अने अधर्मा-

स्तिकाय. ए बे द्रव्य पण मानवां जोइए तथा केटलाक संसार चक्रनो कर्त्ता एक परमेश्वर मानेछे ते पण मृषा समजवु. निर्मल राग द्वेषातीत प्रभु, विभु, परमात्मा, परना सुख दुःखनो कर्त्ता थाय नहीं. वळी जगत्कर्त्ता इश्वर नथी. एनो विस्तार अग्रे कर-वामां आवशे हाल तो आत्मानु स्वरूप वर्णवनाप्रसंगे अन्य चर्चा चाली. हवे आत्म स्वरूप विषयनु वर्णन करीए आपणे नवी स-मजवु के आत्मद्रव्य बीजा पंचद्रव्यथी न्यारुछे अनादि कालथी अशुद्ध परिणतियोगे पुद्गलद्रव्यने परमाणुओ तेना स्कधो कर्मरूप परिणमी आत्मानी साथे क्षीरनीर पेठे परिणम्युछे मन, वाणी, लेश्या, शरीर, संस्थान ए सर्व पुद्गल समजवु अष्टकर्मनी वर्गणा-ओ पण पुद्गलछे.

अष्ट वर्गणानु स्वरूप लखेछे

औदारिकवर्गणा, वैक्रियवर्गणा, आहारकवर्गणा तैजसवर्गणा, भाषावर्गणा, श्वासोश्वासवर्गणा, मनोवर्गणा, कार्मणवर्गणा, बे पर-माणु भेगा थाय त्यारे द्वयणुक स्कध कहेवायछे. त्रण परमाणु भेगा थाय त्यारे त्र्यणुक स्कध थाय एम संख्याता परमाणु मिले त्यारे संख्याताणुकस्कध थाय तेमज असंख्याता परमाणुओ भेगा थाय त्यारे असंख्याताणुकस्कध थायछे, तथा तेमज अनंतपरमा णुओनो स्कध थायते अनंताणुकस्कध थाय, एटला सर्व स्कध ते जीवने ग्रहण करवा लायक नथी, पण ज्यारे अभव्यथी अनंतगुण अधिक परमाणुओ भेगा थइ जे स्कध थाय त्यारे तेनी औदारिक शरीरने लेवा योग्य वर्गणा थाय

एमज औदारिकथी अनंतगुणा अधिकवर्गणामां दल भेगा थाय. त्यारे वैक्रियवर्गणा थाय. वळी वैक्रियथी अनंतगुणा परमा-णु मळे त्यारे आहारकवर्गणा थाय एम, सर्व वर्गणाना एकेकवी

अनतगुणा अधिक परमाणु मळे त्यारे उपरनी वर्गणाओ अनुक्रमे थाय एटले पहेलीथी बीजी वर्गणा. बीजीथी त्रीजी, त्रीजीथी चोथी, अने चोथीथी पाचमी, अने पाचमीथी छट्ठी, छट्ठीथी सातमी, मनोवर्गणा थी आठमी कार्मण वर्गणामा अनतगुणा परमाणुआ अधिक जाणवा आठ वर्गणाओमा औदारिक, वैक्रिय, आहारक, अने तैजस, ए चार वर्गणाओ बादरछे ए चार बादर वर्गणाओमा पाच वर्ण बे गध, पाच रस, अने आठस्पर्श, ए वीश गुण जाणवा तथा भाषावर्गणा. श्वासोश्वास वर्गणा तेम मनोवर्गणा ए चार वर्गणा सूक्ष्मछे, ए चार सूक्ष्मवर्गणामा पाच वर्ण, बे गध, पाच रस, अने चार स्पर्श, ए सोल गुण रह्याछे, अने एक परमाणुमा एक वर्ण एक गध, एक रस, अने बे स्पर्श, ए पाच गुणछे ए अष्ट वर्गणा ससारी आत्माने लागीछे. अने तेमां पण समये समये उत्पाद व्ययध्रुवता परिणमी रहीछे. ते वर्गणामा पण अगुरु लघुथी षड्गुण हानिवृद्धि समये समये परिणमी रहीछे. ए आठ वर्गणामा आत्मानु कइनथी पुद्गलद्रव्य अने आत्मद्रव्य बे भेगा थइ परिणमेछे–पुद्गल परमाणुआ अनतछे.

हवे प्रसगे पुद्गलनु स्वरूप लखेछे–

पुद्गलस्वरूप,

वर्णादिक गुणो वृद्धि पामे. गळी जाय. खरी जाय एवो जेमा स्वभावछे. तेने पुद्गलास्तिकाय द्रव्य जाणवु मूलद्रव्य पुद्गलास्तिकाय परमाणुरूप अवबोधवु–द्व्यणुक आदि जेटला स्कधछे तेनु मूल कारण जाणवु. एटले घट, पट, दड, चक्र, वस्त्र, पात्र, कपाट, इट, पत्थर. आदि पुद्गलनी आकृतियोनु मूल उपादानकारण परमाणुओ छे. तेवा रूपे परमाणुआ परिणम्याछे, बीजा पण तेमां निमित्त आदि कारणो मळेछे. छ प्रकारना पुद्गल स्कधो छे १ बादरबादर २ बादर ३ बादरसूक्ष्म ४ सूक्ष्मबादर ५ सूक्ष्म ६ सूक्ष्मसूक्ष्म

१ पुद्गलपिंडना ने खंड कर्या पोते फरी मळे नहीं ते काष्ट पाषाणादिक बादर बादर भेद प्रथम जाणवो

२ पुद्गल स्कंध खडखड कर्या पोतानी मेळे परस्पर एकमेक थई जाय एवा दुग्ध, घी, तेल वगेरेने बादर कहेछे.

३ जे पुद्गल स्कंधो देखवामा स्थूल होय-खडखड करवामां आवे नहीं हस्तादिकथी ग्रहण थाय नहिं, एवा धूप, चंद्र, चांदनी, आदिपुद्गलबादरसूक्ष्म कहायछे आयातम पुद्गलो पणजाणवां

४ जे स्कंधो सूक्ष्मछे किंतु स्थूलोपलभ होय स्पर्श, रस, गंध वर्ण, शब्द विगेरे सूक्ष्म बादर जाणवा.

५ जे पुद्गल स्कंधो अति सूक्ष्मछे इन्द्रियोना ग्रहवामा, आवता नथी एवा कर्मवर्गणादिक सूक्ष्मपुद्गल कहेवायछे

६ कर्मवर्गणाओथी पण अतिसूक्ष्म द्वयणुकस्कंध आदि सूक्ष्मसूक्ष्म कहेवायछे.

पूर्वोक्त स्कंधोनु मूलकारण परमाणुछे, परमाणु शब्दरहीतछे जोके स्कंधोना मिलापथी शब्दरूप पर्यायने धारण करेछे तो पण व्यक्तरूप शब्दपर्यायथी रहीतछे वळी परमाणु अविभागी एटले भाग रहीतछे पृथिवी, अप अग्नि, वायु ए चारनु कारण परमाणुओछे अर्थात् पृथिवी अप अग्नि वायु ए चार भूतो पण परमाणुओथी पेदा थायछे वळी परमाणु परिणमन स्वभाववाळोछे. परमाणु अशब्द छे तोपण शब्दनु कारणछे परमाणु पोते द्रव्यछे अने तेमा वर्ण, गंध रस अने स्पर्श ए चार गुणोछे अने ते मूर्त कहेवायछे पृथिवी जाति परमाणुओमा चारे गुणोनी मुख्यताछे. जलमां गंध गुणनी गौणता, अने बाकीना त्रण गुणोनी मुख्यताछे अग्निमां गंध अने रस गुणनी गौणताछे, अने स्पर्श वर्णनी मुख्यताछे वायुमा त्रण गुणोनी गौणताछे, अने स्पर्श गुणनी मुख्यताछे

इन्द्रियो वडे उपभोग्य पदार्थो, तथा पाच प्रकारनी द्रव्येन्द्रिय तथा औदारिक वैक्रिय आहारक तेजस अने कार्मण ए पच प्रकारना शरीर तथा पौद्गलीक द्रव्य मन तथा द्रव्यकर्म नोकर्म विगेरे मूर्त पदार्थ पुद्गल द्रव्य जाणवु ए पुद्गल द्रव्य द्रव्यार्थिक नयथी शाश्वतछे, अने पर्यायार्थिक नयथी अशाश्वतछे वस्तुतः पुद्गल द्रव्यथी आत्मा न्यारोछे. परपरिणति परिणामी थता पुद्गल ग्राहक पुद्गल भोगी थइ छते प्रति समये नवा कर्म बाधवे ससारी थयाछे, ज्यारे आत्मा स्वस्वरूप ग्राहक तथा स्वस्वरूप भोगी थाय त्यारे सर्वकर्म रहीत थइ परम ज्ञानमयी-परम दर्शनमयी परमानद मयी सिद्ध,बुद्ध अनाहारी,अशरीरी, अयोगी, अलेशी, अनाकारी, निःप्रयासी, अविनाशी,अज,अविचल, विमल स्वरूप,सुखनो भोगी सिद्ध परमात्मा थाय, माटे सर्व जगत् जीवनी ऐंठतुल्य पुद्गलना भोगनो त्याग करी स्वआत्मा स्वरूप भोगी पणाना रसीया थइ स्वस्वरूप अनुभवथी चेतना योगे निजगुण स्थिरतारूप चारित्रनी प्राप्ती करवी. एज मनुष्य जन्म पाम्यानी साफल्यता जाणवी.

षष्ठविषय--धर्म क्या रहेछे अने तेना हेतुओ कोण,

विचार-ससाररूपी कूपमा पडता प्राणिओने धारी राखे तेने धर्म कहेछे. धर्मना बे भेदछे व्यवहारधर्म अने निश्चयधर्म,

प्रश्न--ज्यारे धर्म एकजछे, त्यारे तेना बे भेद केम कथन कर्या

उत्तर--जो के आत्मामा स्थित धर्मरूप कार्य निश्चयता कारण विना थती नथी. माटे सर्वज्ञ प्रभुए व्यवहार धर्म अने निश्चयधर्म एवे प्रकारनो धर्म कथ्योछे. व्यवहारथीजे धर्मछे ते निश्चय जे शुद्ध आत्मिक धर्म तेने प्रगटाववामा कारणछे. व्यवहार धर्म ते साधनछे अने आत्मिक धर्म ते साध्यछे माटे धर्मना पण कारण कार्यनी सापेक्षता ए बे भेदछे,

प्रश्न–निश्चय नयथी शुद्ध आत्मानोज ज्यारे धर्मछे तो व्यवहार धर्म आदरवानुं शु कारण छे. एक फक्त निश्चय आत्मिक धर्म आदरवो जोइए.

उत्तर–व्यवहारधर्म विना निश्चयधर्म प्रगट थतो नथी जेमके-आ जरीना दाणामा उगवानी घणी सारी शक्ति रहीछे तोपण जलनो संयोग थता उगी नीकळेछे. तेम व्यवहारधर्म विना निश्चय धर्मनी प्राप्ति थती नथी–

प्रश्न–मरुदेवी माताए व्यवहारधर्म आदर्यो नहोतो. तेम छता केम तेमने निश्चय आत्मधर्मनी सिद्धि थइ

प्रत्युत्तर–कारण विना कार्यनी निष्पत्ति थती नथी. तेतो अवश्य समजवु जोके मरुदेवी माताए देशथीना सर्वथी चारित्र ग्रहु नहोतु तोपण व्यवहारधर्मने अवलम्ब्यो हतो तेथीज निश्चय आत्मिक धर्मने प्रगटाव्यो

जिज्ञासु–हे सद्गुरो मरुदेवी माताए कयो व्यवहार धर्म आदर्यो हतो. ते समजावो.

सुगुरु–मरुदेवी माता प्रथम श्री ऋषभदेव भगवानना दर्शन करवा चाल्या ए पण व्यवहारधर्मछे तेमज मरुदेव माताए मनवचन अने काया ए त्रण योगनी गुप्ति करी, एटले मनवचन अने कायानाॅ व्यापारोने परभावमां जता अटकाव्या. धर्म ध्यान ध्यायु ते रुप व्यवहारथी उत्तम ध्याने चडया. शुक्ल ध्यानध्यायी अतकृत् केवली थइ मोक्षमा गया–पुत्रप्रेम नाश थवानु कारण मरुदेवी माताने समवसरण थयु ते पण व्यवहार, तेमज तेथी संसारनी असारता उद्‌भवी, ते पण व्यवहारथी उत्पन्न थइ मनवचयकायाना खराब आश्रवना व्यापार रोक्या. अनुक्रमे धर्मध्यानादि ध्यावता रोकाणा, पश्चात् शुक्ल ध्यान ध्यावतां निश्चय आत्मिक धर्म प्रगटयो, ते आत्मिक धर्म

रूप कार्यमा मनवचन कायानी गुप्ति तथा धर्मध्यानरूप व्यवहार धर्म मरुदेवी माताने थइ गयो, मनोगुप्ति वचनगुप्ति अने काया गुप्तिरूप तथा धर्मध्यानरूप व्यवहारधर्मने कारणता निश्चयधर्म रूप कार्यमाछे, व्यवहारधर्म घणा प्रकारेछे. तेनी विचित्रता सुगुरुना मुखथी साभळी अनेकातधर्म ग्रहवो. वळी भरतराजाने पण धर्मध्यानरूप व्यवहारधर्म केवल ज्ञान प्रगटवामां निमित्त कारणीभूत हतो. निश्चयं धर्मतो अरूपीछे, ते व्यवहार धर्मनी मदतथी प्रगट थायछे. उपादान कारणनी शुद्धिमा निमित्त कारण बलवत्तरछे. एम समजवु साराश के मरुदेवी माता वा भरत चक्रवर्ति पण नीचला गुणठाणानु छोडवु अने उपरना गुणठाणे चढवु ते रूप शुद्ध व्यवहार पाम्या हता.

जिज्ञासु प्रश्न--जो एमछे तो व्यवहारधर्म कोने कहेछे ते समजावो.

सुगुरु-पच महाव्रत उचरवा. सर्व विरतिधर्म देशविरतिधर्म अलबत साधुधर्म. श्रावकधर्म ए व्यवहारणी धर्म जाणवो. ए व्यवहारधर्म निश्चयधर्मनी प्राप्ति करावी आपेछे. निश्चयथी संपूर्ण निरावरण परमात्मपदनी प्राप्ति कराव्या बाद व्यवहार रहेतो नथी.

शिष्यप्रश्न--आत्मा परमात्मारूप थाय तेमा कया कया कारणोनी जरुरछे.

सुगुरु-उपादान कारण. अने असाधारण कारण अपेक्षाकारण निमित्तकारण. ए चार कारणथी कार्यनी सिद्धि थायछे.

शिष्यप्रश्न-आत्मा सिद्धपणु पामे तेमा पामे तेमां उपादान कोने समजवु

सुगुरु-सिद्धतारूप कार्य ते आत्मानु अभेद स्वरूपछे. सिद्धतारूप कार्यनो कर्त्ता आत्मा पोतेजछे अने सिद्धपणु आत्मानु कार्य समजवु. अधुना सिद्धता प्रगटाववी तेज कर्तव्यधर्मछे. सिद्ध-

यथा

घटस्थ उत्पत्तौ अपेक्षा कारण व्योमादिं अपेक्षते तेनविना तद्भावाभावात् निर्व्यापारं अपेक्षाकारण इति तत्त्वार्थवृत्तौ

हवे आत्मा कर्मक्षय करी मुक्तिपद पामे तेमा अपेक्षा कारण दर्शावेछे.

मनुष्यगति प्रथम वज्ररूषभनाराच संघयण, पचेंद्रियपणु इत्यादि सिद्धिरूप कार्यनु अपेक्षाकारण जाणवु

निमित्त कारणनी प्राप्ति विना अपेक्षाकारण लेखे आवतु नथी. जे भव्यजीवे निमित्तकारण आचर्यु नथी तेनी मनुष्यगति अपेक्षा-कारणमा गणाती नथी. श्रीदेवगुरुना पुष्ट निमित्ते उपादानकारणने तरतमयोगे प्रगटावतो असाधारण कारणताए चढतो मनुष्यादिक अपेक्षा कारणपणे करी तत्त्वानदरूप कार्यनो कर्त्ता आत्मा थाय.

उपादानादिक त्रणनी कारणता निमित्तना अवलबनथी प्रगटे छे माटे भव्यप्राणी निर्दोषपणे शुद्ध निमित्तकारणने सेवे. अने शुद्ध निमित्त कारणीभूत शुद्ध देव, तथा सुगुरुना सेवनथी कर्त्ता-पणु स्मरे, अने कर्त्तापणु स्मरण करी स्वकार्य करे

श्री आप्तमीमांसामां त्रण कारण कह्यांछे

समवायासमवायि निमित्तभेदात्

समवायी कारणते अपेक्षाए उपादानकारण जाणवु अने असम वायि कारण ते नामातर असाधारण कारण कहेवायछे तथा निमित्त कारणना बे भेद जाणवा एक निमित्तकारण बीजु अपेक्षाकारण– वली कारणना बे भेद शास्त्रमा कह्याछे एक उपादानकारण, बीजु निमित्तकारण जाणवु घटदृष्टातमा घटरूप भिन्न कार्यनो कर्त्ता कुभकार घटथी भिन्नछे, तेम सिद्धतारूप अभिन्न कार्यनो कर्त्ता पण कार्यथी अभिन्नछे ज्ञाननो कर्त्ता आत्माछे तेम सपूर्ण

सिद्धतारूप कार्यनो कर्त्ता पण आत्माछे कर्त्ता आत्मा ज्यारे कारणनीयोगवाइ पामे त्यारे कार्यनी सिद्धि नीपजावे एकलो कर्त्ता कारण सामग्री विना कार्य करी शके नहीं एवी स्वभावता जाणवी.

उपर प्रमाणे आत्मा परमात्मपद पामे तेमां जे जे कारणो जोइए. तेनु यत्किंचित् स्वरूप दर्शाव्यु

शिष्य--हे सुगुरो ! पूर्वोक्त कारणोमांथी व्यवहार धर्मरूप केटला कारण जाणवा

सुगुरु-हे शिष्य स्वस्थ चित्तथी सांभळ-जे कारणो कार्य सिद्धि थता रहेता नथी. अने कार्य सिद्धिमां अवश्य कारणी भूत छे, ते कारणोनी प्राप्तिने व्यवहार धर्म कहेछे. निमित्त कारणनी सेवना तथा असाधारण कारणनी प्रवर्तना पण व्यवहार धर्म कथायछे नीचेना गुणस्थानकनु छोडवु अने उपरना गुणस्थानकनु आदरवु ते शुद्धव्यवहार धर्म जाणवो. वळी साधुधर्म वा श्रावकधर्म पणव्यवहार नयथी धर्म कथायछे व्यवहार धर्म कारणछे, अने निश्चय धर्म कार्यछे कारण अनेक छे अने कार्य एकछे माटे असख्ययोग जिनेश्वर भगवाने कथ्याछे. तेमां पण नवपदनी मुख्यता जाणवी. जेजे अंशे निरूपाधिपणु तेते अंशे धर्मनी प्राप्ति जाणवी.

शिष्य--मनुष्यगति विना आत्मा सिद्धतारूप कार्य अन्य गतिमां प्राप्त करी शके के नहीं.

सुगुरु-मनुष्यगति विना सिद्धतारूप कार्यनी सिद्धि थती नथी. प्रथमतो एकेंद्रियमां अपेक्षाकारणरूप नरगति प्रथम संघयण नथी. तथा निमित्त कारण पण नथी. द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय. चतुरिन्द्रिय, मां अपेक्षा कारण नथी. पचेंद्रियना चार भेदछे. प्रथम देवता समकिती होयछे तेमने क्षयोपशमभावनु मतिज्ञान तथा श्रुत-

परपारिणतिना द्वार रोकेछे. आत्माना गुण पर्यायनु चिंतवन करेछे पोताना आत्मामां अनंतऋद्धि शोधेछे उज्ज्वल ध्यान ध्यावेछे, अने ज्ञानीओ मनमां थता अनेक सकल्पविकल्पो दूर करी आत्मस्वभावमा मग्न रहेछे, प्रतिदिन उच्चस्थितिने भोगवेछे. सहज ज्ञानियी थतु तात्त्विक सुख ते प्राप्त करी शकेछे मननी थती चपलतानो त्याग करवो मनसबंधी प्रथम पण कहेवामा आव्युछे तेथी अत्र विशेष वर्णन करवु योग्य नथी तोपण प्रसंगवशात् कहेवानु के मन चपल अने अस्थिरछे ते ज्यां जाय त्याथी पाछु वाळीने आत्मानी साथे वश करवु

मन ज्या सुधी स्थिर रहे नही त्या सुधी शास्त्रोक्तक्रिया जेटली करीए तेटली सफल थाय नहि. श्रीयशोविजयजी उपाध्याय कहेछेके-

श्लोक

या निश्चयैकलीनानां, क्रिया नातिप्रयोजना ॥
व्यवहार दशास्थानां ताएवाति गुणावहा ॥ १ ॥

भावार्थ-जेनु मन निश्चयमा लीनछे तेने क्रियानु प्रयोजन नथी व्यवहार दशावाळाने क्रिया अति गुणकारीछे. मन वश करवाथी बधाना कर्म अटकेछे, ज्ञानी थइने फरता एवा पुरुषोथी पण मन जीतातु नथी अभ्यासथी मन जीतायछे, महा अनुभवी योगीओना शिष्यो मन वश करी शकेछे पुस्तक, पोथी, पुराण, वांचवाथी पण जे मन वश थतु नथी, ते मन सुगुरु महाराजनी गुप्त अर्पली कुंचीओथी धीरे धीरे वश थायछे पुस्तक सिद्धांतमा लखेला विषयोने जाणी सुगुरुए परिणामिकी बुद्धिथी जे अनुभव मेळव्यो होयछे ते शिष्यो के जे गुरुना सदाने माटे विश्वासी होयछे तेने मळेछे. माटे सुगुरुनु शरण करी आत्मिक धर्मनी प्राप्ति करवी.

कर्मनो क्षय करता आत्मिकधर्मनी आविर्भावता थायछे. काया पुद्गलछे, वचन पुद्गलछे, मनपुद्गलछे, धर्म तो निश्चयथी चेतनगत जाणवो, आत्मामा धर्म रहेछे ते आत्मिक धर्म आत्मस्वभावे स्थिर थता प्रगटेछे. निश्चयथी आत्मा अरूपीछे, अने आत्मामा रहेलो धर्म पण अरूपीछे. असख्य प्रदेश आत्माना छे, प्रतिप्रदेशे अनत अनत धर्म व्यापी रह्योछे, तात्विक आत्मिक धर्मथी अनत सुखनी प्राप्ति थायछे कर्मनो क्षय करी जे भव्यो सिद्धिपद पाम्याछे तेमने शुद्ध आविर्भावे आत्मिक धर्म प्रगट्योछे, जे जीवो कर्म सहीतछे तेमने तिरोभावे आत्मिक धर्म जाणवो जे वस्तु मूळमा वस्तुतः सत्पणे नथी तेनी उत्पत्ति थती नथी. कारण के-

नासतो वियतेभावो

साराश के-असत्नु उत्पन्न थवापणु नथी.

शिष्य—जेम असत्नु उत्पन्न थवापणु नथी. तेम सत् जे वस्तु त्रिकालमा वर्तती होय तेनी उत्पत्ति कहेवी ए पण अयुक्तछे कारण के-जे वस्तुनो उत्पाद थाय ते वस्तु प्रथम होय नहीं. यथा घट तेनो उत्पाद थयो तो ते प्रथम नहोतो. तेम जो आत्माना धर्मने सत् मानवामा आवे तो ते त्रिकालमा वियमानपणाथी तेनी उत्पत्ति थइ एम कहेवु असत्य ठरेछे अने जो आत्माना शुद्ध धर्मने असत् कहेवामा आवे तो तेनी उत्पत्ति असत्य ठरेछे माटे हे सुगुरो कृपा करी यथार्थ स्वरूप समजावशो

सुगुरू—हे शिष्य! एकाग्र चित्तथी श्रवण कर. असत् पदार्थनी तो त्रिकालमा पण उत्पत्ति थती नथी, हवे सत्वस्तुनो विचार,

माप्ति थाये नहीं कारण के तेमा जैन दर्शननी भजनाछे एक अग-नय पक्षथी पामीए पण सर्वांगे माप्ति थाय नहीं जेम सघळी नदीओ समुद्रमां होय पण नदीओमां समुद्रनी भजना जाणवी सारांश के- जे नदी समुद्रमा मळी तेमा समुद्रनी भरतीओटनु पाणी आवे एवी रीते नदीओमा समुद्र एकदेशे संभवेछे. तेवी रीते समुद्रनी उपमाने धारण करनार जिनवरनां ए षड्दर्शन ते अंग जाणवा. एकांते नयनु कथन करता मिथ्यात्व लागे—कह्यु छे के—

एगंते होइ मिच्छत्त

एकांते मिथ्यात्वपणु होय—माटे हितशिक्षा निर्ग्रंथ प्रवचन कथे छे के—एकांतपक्ष आत्म हितकारक नथी व्यवहारनय अने निश्चयनय अवलंबी आत्म धर्मरूप सा धना साधक बनवु साध्यनी सिद्धि करवी मुश्केलछे वातो करवी सहजछे माटे आत्मिक हितेच्छुओए प्रमाद त्याग करवो अने व्यवहार निश्चयधर्मनु साधन करवु. सप्तनय सप्त-भंगी चारनिक्षेपा षड्द्रव्य, गुणपर्याय—उत्सर्ग अपवादथी परिपूर्ण स्याद्वादमतने कोइ वीरला भव्य पुरुषो सम्यग रीत्या जाणी शकेछे. केटलाक विचित्र मार्गनी भ्रमणाओमा गोथां खायछे केटलाक ज्ञान ज्ञान पोकारी ज्ञानी नाम धरावी शुद्ध धर्मरूप क्रिया तरफ अरुचि मार्ग दर्शावे छे अने क्रियानु उथ्थापन करेछे, तेथी स्वआत्मानो उद्धार करी शकता नथी सप्तनयोथी परिपूर्ण वीतराग धर्मने सत्गुरु अने सत्श्रद्धा विना अवगाहवो मुश्केलछे माटे भव्य पुरुषो प्रभुना धर्मनो मार्ग समजी निश्चयदृष्टि हृदयमा धारण करी व्यवहार मार्गे चालेछे

श्रीयशोविजयजी वचनामृत.

निश्चय दृष्टि चित्त धरीजी—चाले जे व्यवहार—इत्यादि
श्री यशोविजयजी विद्वान् हता. संवत् १७४०
मी लगभग हि दर्शनना वान्या

हता. अध्यात्मज्ञानदृष्टि पण धरावता हता, जेमणे शास्त्रवार्ता समुच्चय आदि शतग्रंथ बनाव्या ते महा पुरुष पण निश्चय दृष्टि हृदयमा धारण करी व्यवहार मार्गे चालवानी खास भलामण करेछे. हालमा अध्यात्मनी किंचित् वात साभळी व्यवहार मार्गथी विरुद्ध चाली डोळघाल्लु अध्यात्मी बनी जनाराओ करता विशेष ज्ञानी नहोता. एम केम कहेवाय ? ना तेओ महा ज्ञानी हता. माटे व्यवहार धर्म मार्गनु यथाविधि यथाशक्ति आराधन करता हता–

भगवान् सर्वज्ञानी कहेछे के–

जइ जिणमयं पवज्जह, तामा ववहारनिच्छए मुयह,
ववहारनओ छेए, तित्थुच्छेओ जओ भणिओ १

जो तु जिनदर्शनने अंगीकार करे तो व्यवहार अने निश्चयने मूकीश नहीं. कारण के–व्यवहार नयनो उच्छेद कर्याथी तीर्थनो उच्छेद कर्यो कहेवायछे, माटे महात्मा थवानी इच्छा होय तो प्रभुनी शिक्षा धारवी. मानवी,

केटलाक ज्ञाननी आकांक्षा विना अंध श्रद्धावाननी पेठे क्रिया करेछे. ते क्रिया जड जाणवी तेमनो धर्मव्यवहार फोनोग्राफवत् जाणवो.

कोइ एम कहेशे के–बराबर वस्तुनु स्वरूप समजीने अमे क्रिया करीशु–ज्या सुधी ज्ञान नथी त्या सुधी क्रिया शा कामनी ? प्रत्युत्तरमां समजवानु–एम बोलवामा पण समजवानी घणी तारतम्यता समाइछे. प्रथम विकल्प थशे के कया ज्ञाननी प्राप्तिथी क्रिया करवी. मतिश्रुतज्ञाननी प्राप्तिथी वा केवलज्ञाननी प्राप्तिथी

मतिश्रुतज्ञान थया बाद क्रिया करवी एम कहेता पण विचारवानु के—गणधरोना जेवु मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, तेवु ज्ञान हालना वखतमा नथी त्यारे कहो के चउदपूर्वी वा दशपूर्वधारी जेवु मतिज्ञान तेवु ज्ञान पण हालना वखतमा नथी त्यारे हालमां मतिज्ञान

श्रुतज्ञान तरतमताए थोडु अपेक्षाए कहेवाय हवे ज्ञाननेज माननारा कहशे के, केवु ज्ञान यथार्थी क्रिया करशो, ते बतावो, वा कहो के, ज्यां मतिज्ञान अने श्रुतज्ञान होय त्यां क्रिया होय के नहीं. अने वळी विचारो के मतिज्ञानी अने श्रुतज्ञानी क्रिया विना शु करे माटे क्रियानो स्वीकार करवो योग्यछे क्रिया विना एकलु ज्ञान शु करे क्रिया ज्ञानिनी पासे होयछे शास्त्रमा पण—

ज्ञान क्रियाभ्या मोक्ष

ज्ञान अने क्रियाथी मोक्षछे, ज्ञानाभ्यासरूपक्रिया विना ज्ञाननो पण क्षयोपशम थतो नथी. त्या पण क्रियानी जरूरछे. कोइ एम कहेशे के, मति वा श्रुतज्ञान थयु एम प्रत्यक्ष जणाशे एटले क्रिया करीशु. तेना उत्तरमां समजवानु केवलज्ञान प्रत्यक्षज्ञानछे, मतिज्ञान अने श्रुतज्ञान परोक्षज्ञानछे. मति वा श्रुत छे के नहीं ते अनुमानथी जाणी शकाय केवलज्ञानी कइ कहेवातो कोइ आवनाना नथी. माटे भव्य जीवोए ज्ञान श्रद्धाथी जाणी धर्मध्यानादि कारक क्रियामा प्रवर्तवु—

आलेखक—कोइ स्थळे ज्ञाननी विशेषता वा क्रियानी न्यूनता लखे तोपण ते कोइना आदरभणीया कोइना निषेध भणी नथी किंतु बन्नेना स्वीकार माटेछे एम समजवु एकज स्थळे सर्वनु स्वरूप एकज वखते वर्णवी शकातु नथी तेथी जेजे स्थळे जेनु जेनु स्वरूप वर्णन करवामा आवे ते नयनी सापेक्षताए ते ग्रहण करवु व्यवहार धर्म अने निश्चयधर्म सदा जयवता वर्तेछे सद्गुरुपासेथी एनु स्वरूप समजवु. मति मदतायी शकादि उत्पन्न थायतो पण सर्वज्ञ वीरना वचनमां सत्यता मानछे मतिदोष काढी सत्शास्त्रनो गुरु आमतां पूर्वक अभ्यास करवो केटलीक बातोमां तो श्रद्धाज राखवी पडेछे. केवलज्ञानथी जाणेला पदार्थोनु स्वरूप तेने अल्पमति ज्ञानी

जीव बराबर शी रीते समजी शके, माटे जिनवचनमां जरा मात्र शंकानो अवकाश नथी एम श्रद्धा करवी मोक्षार्थी जीवने घटेछे.

उपर प्रमाणे यथा मतिलेशथी व्यवहार निश्चयधर्म वा धर्म क्या रहेछे ते दर्शाव्युं.

सप्तम विषय.

हु संसारमा जन्म मरण पामुछु तेनु शु कारण ?

प्रत्युत्तर–कर्म, कर्म ए आत्मा नथी आत्माथी भिन्न द्रव्यछे. आत्मानी साथे अनादिकालथी लाग्युछे. जेनी आदिनथी तेनो अनादिकाळ समजवो–

प्रश्न–कर्म आत्मानी साथे पोते पोतानी मेळे लाग्याछे वा कोइए लगाड्याछे

उत्तर–कर्म पुद्गल स्कंध स्वरूपछे. जडछे खरवा मिळवा रूपक्रिया करेछे अनादिकालथी आत्मानी अशुद्धि परिणतियोगे कर्म ग्रहायछे, परमात्मा आत्मानी साथे कर्म लगाडतो नथी अर्थात् आत्मा पोते अशुद्ध भावथी कर्मने ग्रहेछे अशुद्ध परिणति आत्माथी न्यारी नथी तेथी आत्माज पोते कर्मनो कर्त्ता तथा भोक्ता कहेवायछे.

आत्मानी साथे अन्य कोइ कर्म लगाडतु नथी केटलाक जीवो इश्वर जीवनी साथे कर्म लगाडेछे एम मानेछे पण ते युक्तिहीन तथा सर्वज्ञनामत विरुद्ध वातछे. कारण के परमेश्वरने शु प्रयोजन छे के ते जीवोनी साथे कर्म लगावे. अलबत रागद्वेष रहीत प्रभुने कइपण प्रयोजन नथी के ते जीवोनी साथे कर्म लगाडी शके वळी परमेश्वर कहो के परमात्मा सिद्ध, तेओए कर्मनो नाश कर्योछे, कर्मनो [illegible] नाश थता सिद्ध परमात्मा कहेवायछे, त्यारे

समजवानु के, जे सिद्ध, परमेश्वर कर्मातीतछे अक्रियछे कोइपण प्रकारनी क्रिया करता नथी. ते बीजाने कर्म लगाडवानी क्रिया करे ते शशशृंगवत् असत्यवात ठरेछे

प्रश्न–त्यारे शु सिध्ध परमात्मा कोइपण प्रकारनी क्रिया नथी करता.

प्रत्युत्तर–ना, पौदगलिक कोइपण प्रकारनी क्रिया सिध्ध परमेश्वर करता नथी, पोताना शुध्धस्वभावे तेमनी सदाकाल स्थितिछे कर्मछे ते तो पौदगलिकछे. पौदगलिक भावथी भिन्न प्रभुयाने सिध्धने भिन्न पुद्गलद्रव्यनी क्रियाने प्रभु परमेश्वर करता नथी, प्रभुतो अरूपीछे एवा प्रभुथी कर्म जीवोने लगाववु त्रिकालमा पण बनेज नहीं

सिध्ध परमात्मा शुध्ध स्वस्वभावे सक्रियछे एटले स्वभाव रमणतारूपवा षड्गुणगुणहानिवृध्धिरूपक्रियाना कर्त्ता सिध्धात्माछे

प्रश्न-सिध्ध परमेश्वर, जीवो कर्म सारां वा नठारा कर्म करेछे तेनो इन्साफ आपेछे के नहीं

प्रत्युत्तर–सिध्ध परमात्मा वा जेने निरंजन निराकार ब्रह्म वा इश्वर कहेछे ते कर्म प्रपंचथी अत्यंत भिन्नछे ने तेथी ते जीवोने कर्यां कर्म प्रमाणे इन्साफ (न्याय) करी सुखदु ख आपता नथी सारांसे जीवोए जे कर्म कर्या छे तदनुसारे सुख दु ख भोगाववा जीवोने सारा खोटा उच्च पशु, पक्षी, माणस, अधादिना अवतार परमेश्वर आपता नथी

प्रश्न–त्यारे जीवो सारा वा खोटां कर्म करे ते पोतानी मेळे शी रींते भोगवे.

उत्तर–जे क्रियानो कर्त्ता जीव पोतेछे ते क्रियानु फळ भोगवनार पण जीव पोते जाणवो. जेम कोइ मनुष्य तालपुट विष भक्ष

णनी क्रिया पोत करे तो ते क्रियाथी प्राणनाशरूप थतु फल पण पोते भोगवेछे. हवे कहो के तेमा न्याय कर्त्ता कोण इश्वर वा क्रियानो कर्त्ता, इश्वरे मनुष्यना प्राणनो नाश कर्यो वा तालपुट विषे प्राणनो नाश कर्यो अलवत कहेवु पडशे के विषमांज एवी शक्ति रहीछे के ते प्राणनो नाश करेछे, प्रत्यक्ष ते सि ध्ध वातछे. इश्वर न्याय करेछे एम मानवु ते केवल मृषा, प्रमाणविरूध्ध कल्पना मात्रछे, निरजन निराकार इश्वर सिध्धात्माने शु प्रयोजन छे के कर्मना फलोदयने भोगवावे.

वळी ते उपर बे विकल्प करीएछीए के कर्म पोते फल आपवामा स्वतत्रछे के परतत्र प्रथम पक्षमा कर्म पोतेज सारू वा खोटु आपवामा स्वतत्रछे. एम स्वीकारता इश्वर जीवोने कर्याकर्म प्रमाणे न्याय आपेछे ते वात खोटी आकाश कुसुमवत् ठरी कर्ममा ज सारू वा नठारूं फल आपवानी शक्ति रहीछे तो ते प्रमाणे कर्मथी सुख दुःख फल मळशे. पोतानी मेळे जेम पुरूषनु वीर्य अने स्त्रीनु रेतस् ए बेन ।सयोगमा गर्भ उत्पन्न करवानी शक्ति रहीछे तथा जेम अग्निमा स्वाभाविक दाहकशक्ति रहीछे तेथी अग्निनो अगारो हाथमां लइएतो पोतानी मेळे हाथ बळे, हाथने बाळवामां दाहकस्वरूप न्याय पोते करेछे. तेमा इश्वर कइ न्याय करतो नथी. तेम कर्म पोते स्वतत्र रीत्या फल आपवा समर्थछे त्या इश्वरने न्याय कर्त्ता मानवो केवल भ्रमणा अने अज्ञान अने मिथ्यात्व समजवुं कर्ममाज शातावा अशातारूप फल आपवानी शक्ति छे एम सत्य छे, अने एम ज्ञान दृष्टिथी देखायछे. सर्वज्ञने असत्य वदवानु कइ कारण नथी हवे बीजो पक्ष लइए, कर्म फल आपवामां परतत्र छे एटले ते इश्वरना तात्रामांछे. इश्वरनी इच्छा प्रमाणे कर्म फल आपी शकेछे एम मानीएतो इश्वर अन्यायी प्रपची दयाहीन ठरेछे

आशंका तेम करता इश्वर अन्यायी दयाहीन प्रपची शीरीते ठरे वारु?

समाधान–कर्म फल आपवामा परतत्रछे तेम लागवामा पण परतत्र, जे परतंत्र होय ते सदाय फलोदयमां तथा लागवामां परतत्र रहेछे, जेम तरवार बीजाने लागवामां तथा तेनो प्राण लेवामा सदाय परतत्र रहीने कार्य करेछे मनुष्य हाथमां तरवार ग्रहीने अन्यने मारे त्यारे तेना प्राणनो नाश थायछे, तरवार पोतानी मेळे उंची थइ मारवानी क्रिया करी शकती नथी, कारण के ते कर्त्ताथी प्रवर्तेछे माटे परतत्रछे तेम कर्म इश्वरना ताबामा रही प्रवर्तता होय तो प्रथम जीवोने इश्वरे कर्म लगाडया एम कहीएतो पहेला जीव कर्मरहीत हता त्यारे तेमने शा माटे कर्म लगाड्यां ? कइपण अपराध विना कर्म लगाड्याथी इश्वर अन्यायी पातकी ठरे. वळी कर्मरहीत पहेला जीवो हता तेओने कर्म लगाडवाथी इश्वर प्रभुनु शु कल्याण थवानु हतु अलबत कइ नही, वळी इश्वरनामा जीवोने कर्म लगावानी शक्ति नित्यछे के अनित्यछे, जोते कर्म लगाडवानी शक्तिने नित्य मानीए तो सदाय इश्वरजीवोने कर्म लगाडया करशे जीवो कदी कर्मरहीत थशे नहीं तो प्रभुने भजवु इत्यादि सर्व व्यर्थ कल्पना मात्र थइपडे वळी इश्वरमां कर्म लगाडवानी शक्ति अनित्यछे एम कहीए तो अनित्य शक्तिनो आधारी भूत इश्वरपण अनित्य ठरेछे, निराकार साकार इश्वर मानवामां कोइ प्रमाण नथी निराकार इश्वर सिध्धने मानतां निराकार इश्वरने कोइपण जातनी इच्छा नथी तेथी ते कर्म लगाडवानी उपाधिमां केम पडे

वळी निराकार इश्वरने जो इच्छा कहीए तो इच्छा अधुराने होयछे, पण पूर्णने होती नथी इच्छा मानवाथी इश्वरनी पूर्णतानो

नाश थायछे. वळी समजवानु के–इच्छा राग विना होती नथी अने ज्यां राग होयछे त्यां सदाय द्वेष रह्योछे. रागी द्वेषी होयते कर्म सहीत होय अने कर्म सहीत होयते संसारी कहेवायछे, ससारी थवाथी इश्वरपणु नष्ट थयु, कर्म कलंक नाश करी निरजन निराकार पद् पामवाथी इश्वरताछे– कर्म ए कइ बोलवा मात्र शब्द नथी, कर्म पुद्गल परमाणुओनो स्कधथी बनेलुछे. अने ते रूपीछे. कर्म लागवाथी आत्माना गुणो ढकायाछे. हवे कहो के–कर्मथी रहीत एवा इश्वरमां कर्म लगाडवानी शक्ति मानवी ए केटली भूलनी वातछे, जे पोते कर्म रहीत थयाछे ते बीजाने केम कर्म लगाडे, कर्म लगाडवानी शक्ति इश्वरमा कल्पवी ते आकाश कुसुमवत् असत्य कल्पना मात्रछे. तेमज इश्वरनामा सुख दुःख भोगाववानी शक्ति मानवी ते पण कल्पना मात्र शश शृगवत् वातछे.

कर्म पोतानी मेळे लाग्यां एम मानता इश्वर कर्त्ता हर्ता नथी एम सिध्ध थयु. हवे जीवने कर्म पोतानी मेळे लाग्यां एम मानतां तर्क थशेके–कर्म लगाडया विना पोतानी मेळे शी रीते लाग्यां अने ते क्यारथी लाग्यां–तेनु समाधान सूक्ष्म विचारथी थशेके–कर्म अनादि काळथी जीवने लाग्याछे. जीव अनादि काळथीछे. जेनी आदि होय उत्पन्न थवापणे ते वस्तुनो अत पण हायछे, जे वस्तुनो आदि अने अतछे. ते अनित्य होयछे अने जे अनित्य हायछे ते कार्यछे अने जे कार्य पणे वस्तुछे ते विनाशीछे जेम घट उत्पन्न थयानी आदिछे तो तेनो अत एटले नाश होयछे, आत्मा कहो के चेतन वा जीव तेनी उत्पन्न थवानी आदि नथी अर्थात् आत्मा द्रव्यार्थिकनयापेक्षाए कोइनाथी उत्पन्न थयो नथी, अने जे वस्तु उत्पन्न थइ नथी ते अनादि काळथीछे, जेम आकाश जे वस्तु अनादि काळथीछे तेनो पण नथी, माटे अनादि अनतछे. आत्माना

प्रदेशमय व्यक्ति द्रव्यार्थिक नयनी अपेक्षाए अनादि अनतछे, कोइ पण कालमां आत्माना असख्यात प्रदेश पैकी एक प्रदेश पण खर-वानो नथी. आत्मा कहो के जीव ते त्रिकालमां पोताना रूपे सत्छे अने जे वस्तु सत्छे ते नित्यछे, आत्मा सत्छे माटे ते नित्यछे,

प्रागभावाप्रतियोगित्व नित्यत्व

प्राग्भावनु जे अप्रतियोगी होयते नित्य जेटला कार्य रुप प-दार्थों घट पट दंडादिकछे ते पर्यायार्थिक नयनी अपेक्षाए अनित्य जाणवा-कारणके घटपटादिक पदार्थो प्रागभावना प्रतियोगीछे. आत्मा वा चेतन प्राग्भावनो अप्रतियोगीछे माटे आत्मा नित्य जाणवो-द्रव्यार्थिक नय द्रव्यत्व पणाने ग्रहेछे माटे द्रव्यार्थिक नयनी अपेक्षाए आत्मा नित्यरूप जाणवो ससारमा चार गतिमा परिभ्र-मण करनारा अनत आत्माओनु द्रव्यपणु त्रिकाल एक स्वरूपछे माटे ते द्रव्यार्थिक नयनी अपेक्षाए नित्य जाणवा, हवे आत्मा अ-नादि अनत नित्यछे, तेम सिध कर्यु, ते आत्माने अनादिकालथी कर्म लाग्याछे ते वातनु विवेचन करायछे आत्मा अनादिकाळथी छे एम सर्वज्ञ श्री वीरप्रभुना वचनथी जाण्यु तेम कर्म पण अनादि-काळथी आत्माने लाग्युछे एम सर्वज्ञ श्री महावीरना वचनथी जणायु, वीर प्रभु सर्वज्ञ अने रागद्वेषथी सर्वथा रहित हता माटे तेमना वच-ननो पूर्ण विश्वास भव्यजीवने थाय एमा कइ आश्चर्य नथी,

आप्तोक्त वाक्य प्रमाण

श्री वीरप्रभु त्रिकाल सर्वज्ञानी आप्त हता. माटे तेमनु वाक्य प्रमाणीभूत जाणवु कर्म अनादिकालथी जीवने लाग्यां एमां आगम प्रमाण पण सिध्ध थयुं कोइ जीव राजा थायछे, कोइ रक था-यछे, कोइ जन्मथी अधा बधिर अवतरेछे कोइ-रोगीतो कोइ-भोगी इत्यादि सर्व पुण्यपापनु फल प्रत्यक्ष देखवामां आवेछे माटे तेमां

प्रत्यक्ष प्रमाण पण सिध्ध करेछे. (भोगायतन शरीर) सुख दुःख भोगववानु स्थान शरीरछे, अने ते प्रमाणे दरेक जीव क्षणिक सुख तथा दुःख शरीरादिकथी भोगवेछे एम प्रत्यक्ष जोवामा आवेछे. तो ते सुख दुःखनु कारण कर्म–पुण्य पापरूप आत्मानी साथे लाग्यु छे एम अनुमान थायछे जेम कोइ शहेरपासे नदीछे तेमा जलनी रेल आवीछे. शहेरनी आसपासतो मेघ वरस्यो नथी. ते उपरथी एम अनुमान थायछे के–ज्या त्या अत्यत मेघनी वृष्टि थवी जोइए. कारणके नदीमां रेल रूप कार्य देखायछे ते मेघनी वृष्टि विना होय नहीं अहीं तो मेघनी वृष्टि थइ नथी. तेथी अनुमान थायछे के पर्वतमा दूरे खुन मेघ वृष्टि थइ हशे, तेम कर्मनो बाबतमा पण अनुमान थायछे के– भोग रोग सुख दु ख रूप कार्य फलतो प्रत्यक्ष देखवामा आवेछे माटे तेनु कारण कर्म होवु जोइए. पुण्य पाप विना शाता तथा अशाता वेदनीय होय नहीं, ए अनुभव सिध वातछे, वळी कहेछे के–जेम कोइ वृक्षना कोटरमा अग्नि सळगेछे अदरना भागमां अग्नि बळेछे बाहिर देखाती नथी बाहिरतो फक्त धूम देखायछे ते उपरथी अनुमान थायछे के–

यत्रयत्र धूम स्तत्रतत्र वन्हिः

ज्यां ज्यां धूम होयछे त्या त्यां अग्नि होयछे, वृक्ष अंदरथी धूम बहिर निकळतो देखायछे माटे वृक्षना कोटरमा अग्निछे एम अनुमान थी सिद्धि थायछे. तेम सुख,पूर्णेच्छा,भोग, रोग,शोक,वियोग,अधत्व, बधिरत्व, दरिद्रत्वरूप,कार्यरूप, फल देखायछे माटे तेनु कारण पुण्य पापरूप कर्म आत्मानी साथे लाग्युछे एम सिद्ध थायछे, सर्व विद्वानो कर्मनु अस्तित्व स्विकारेछे तेम कर्म ग्रथमा कर्मनु स्वरूप विस्तारथी ज्ञानीए वर्णव्युछे तेमज कम्मपयडी, भगवतीसूत्र, पन्नवणासूत्र, विपाकसूत्र विगेरे सूत्रो तथा ग्रथोथी कर्मनु यथातथ्य स्वरूप सम-

जायछे अने ते अनुभवमा आवेछे. कर्मनी प्रकृतिनु स्वरूप निग्रंथ प्रवचनमां सूक्ष्मपणे वर्णन कर्युंछे तेनुवर्णन अन्य दर्शनमां ते प्रमाणे परिपूर्ण पण नथी कोइ कर्मने किस्मत कहेछे, कोइ कर्मने प्रकृति कहेछे, पण कर्मनु अस्तित्व मान्याविना छुटको थतो नथी.—

श्लोक

कृतकर्मक्षयोनास्ति, कल्पकोटीशतैरपि ॥
अवश्यमेव भोक्तव्य, कृत कर्म शुभाशुभ ॥ १ ॥

कृतकर्मनो क्षय नथी कोटीकल्पशतोए पण कर्म अवश्य शुभाशुभ भोगवबु पडेछे, जन्मजरा अने मृत्यु पण कर्मथी थायछे चोराशी लाख जीवयोनिमा अवतरवु पण कर्मथी थायछे एकेंद्रिय, द्वींद्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिंद्रिय, पचेंद्रियना अवतार पण कर्मथी थायछे, कर्म अनेक प्रकारेछे. कर्मना मूळ आठ भेदछे तेनी उत्तर प्रकृति एकशतअठावनछे देवगति, मनुष्यगति, तिर्यचगति, नारकगति, ए चार गतिमा अवतार पण शुभाशुभ कर्मथी छे कयुछे के—

गाथा

जजेण कयकम्म, पुव्वभवे इहभवे वसतेण ॥
त तेण वेइअव्व, निमित्तमित्तो पगे होइ ॥ १ ॥

जे जीवे पूर्वभवमां तथा आभवमां वसता जे कर्म कर्याछे. ते कर्म ते जीवे भोगववा योग्यछे सुखदुःखमा परजीव तो निमित्त मात्रछे कर्मनो कर्त्ता पण जीवछे तेम कर्मनो भोक्ता पण जीवछे देखो सूयडांगसूत्र—सम्मतितर्कमां परभावमां रमतो जीव परनो कर्त्ता तथा भोक्ता बनेलोछे—केटलांक कर्म भोगवीने खेरवेछे अने जीव केटलांक कर्म नवां ग्रहण करेछे—एम अनादि काळथी जीव कर्मने ग्रहण करतो तथा कर्मने छडतो वर्तेछे, मातानु रुधिर अने पुरुषना

वीर्य संयोगे गर्भमा जीवनुं उत्पन्न थवु अने प्रतिदिन वृद्धि पामवुं इत्यादि सर्व कर्मनो प्रपंचछे गर्भमा पण जीव ओजाहारग्रहेछे

प्रश्न–गर्भमा जीव शावडे आहार ग्रहण करेछे.

प्रत्युत्तर–आहार त्रण प्रकारनाछे १ ओजाहार, २ लोमाहार, (रोमाहार) कवलाहर–पूप एटले मालपूआने ज्यारे घीमां तळेछे त्यारे मालपुओ सर्वथी घीनी साथे परिणमी जायछे तेम गर्भमा जीव आहारने खेंची शरीररूपे परिणमावी शरीरनी वृद्धि करेछे. रोमथकी जे आहारने ग्रहण करवो ते रोमाहार कहेवायछे. हवानु ग्रहण शरीरमा रोमथी थायछे, मुखथकी जे आहारनु ग्रहण करवु. ते कवलाहार कहेवायछे, मनुष्य पशु पखी जलचरने कवलाहार प्रत्यक्ष देखवामा आवे छे, एम गर्भमा ओजाहारनु ग्रहण छे.

प्रश्न–केटलाक भोळा लोको अज्ञानताथी एम मानेछे के–गर्भमांथी बाहिर नीकल्या बाद–जीव शरीरमा प्रवेशेछे अने पश्चात् छठ्ठा दीवसनी रात्रीए सरस्वति बाळकनु भविष्य कपालमां लखेछे अने कहेछे के–छठ्ठीना लेख लख्या मटे नहीं तेनु केम?

प्रत्युत्तर–गर्भमाज जीव उत्पन्न थायछे. ते माटे प्रवचनसारोद्धार नवतत्त्व विगेरे ग्रंथो जोवा छठीना लेख सरस्वति लखेछे एम मानवु पण मिथ्या कल्पनामात्रछे–कर्म साथे बंध पामेलो जीव गर्भमां उत्पन्न थायछे, अने त्या वृद्धि पामी नव मास थया बाद बाहिर नीकळेछे, कोइ गर्भमाज मरण पामेछे. इत्यादि सर्व

...कारे क्षय थवाथी जन्मजरा मरणनी प्राप्ति थती.

प्रश्न–कर्मनो क्षय थवाथी मुक्तिपद मळेछे त्यारे जेटला जीव कर्मनो क्षय करेछे ते परमेश्वर कहेवाय के नहीं

प्रत्युत्तर–हा, जेटला जीव, कर्मनो क्षय करेछे तेटला जीव परमात्मा सिद्ध, बुद्ध, कहेवायछे, कर्मथकी सर्वथा प्रकारे रहीत थवु तेनु नाम मोक्ष कहेवायछे

प्रश्न–कर्म सहित जीव मोक्षमा जाय के नहीं ?

प्रत्युत्तर–कर्मसहित कोइ जीव मोक्षमा गयो नथी अने जशे पण नहीं.

शिष्य–हे सद्गुरो–कोइ मति अज्ञानीयोए नवीन कल्पना उत्पन्न करी एम कहेछे के मुक्तिमा केटलाक वर्ष सुधी जीव रही पश्चात् ससारमा आवे छे आ बावत शु समजवु

सद्गुरु–मुक्तिमा गया बाद जीव पुनर्ससारमा पाछो आवतो नथी जीवने एक स्थानथी अन्यत्र लेइ जनार कर्मछे अने ते कर्मनो सपूर्ण नाश थाय त्यारे मुक्ति स्थानमां जीव सिद्ध रूपे बीराजेछे त्यांथी ससारमा आवी शकातुज नथी कारण के जीवनी साथे कर्म सबध छता गमनागमनछे कर्मना अभावे मुक्ति स्थित मुक्तात्मानु गमनागमन थतु नथी, श्री वीरप्रभु एम सर्वज्ञ दृष्टिथी वदेछे–चकलाचकलीनी पेठे मुक्तिना जीवो गमनागमन करता नथी–मुक्त जीवो अक्रियावतछे माटे ते गमनागमननी क्रिया करता नथी

प्रश्न–मुक्त आत्मामा सर्वशक्तिमानपणु छेके नहीं,

उत्तर–हा मुक्तात्मामां पोताना स्वरूपथी सर्व शक्तिपणु रहुछे पण पुद्गल द्रव्यनी शक्तिथी मुक्तात्मानी शक्ति भिन्नछे आकाश द्रव्य अरूपीछे आकाश जेम अनत प्रदेशीछे अने ते जेम स्वस्वरूपे स्थिर वर्तेछे तेम सिद्ध परमात्मा स्वस्वरूपे शुद्ध थया छता स्थिर वर्तेछे. स्थिरवर्तवाथी आत्मिक सर्व शक्तिपणु जरा

मात्र घटतु नथी. गमनागमन परमाणुओनुं छे. परमाणुओना संबंधथी थएला पुद्गल स्कंधो कर्मरूप परिणमी आत्माना प्रदेशोनी साथे लाग्याछे ते ज्यारे कर्म नाश थायछे. त्यारे मुक्तात्मा सिद्धबुद्ध कहेवायछे मुक्तात्मानी सर्व शक्तिआत्माना असंख्य प्रदेशोनी व्यापीने रहीछे मुक्तात्मानी शक्ति स्वद्रव्य बाहिर जती नथी. माटे आत्मस्वभावे सर्व शक्तिपणु सदा बनी रह्युंछे, सिद्ध अक्रिय होवाथी गमनागमननी क्रिया करे नहीं

प्रश्न–कोइ एम कहेछे के–इश्वर अवतार लेइ दैत्योनो नाश करेछे ए वात खरी के खोटी–

उत्तर–कर्म रहीत निर्मल परमात्माने इश्वर कहेवामां आवेछे ते परमात्मा अवतार ग्रहण करता नथी कारणके कर्मातीतने अवतरवु आदि उपाधि नथी–पण कर्म सहित जे संसारी जीवछे ते अवतार ग्रहण करेछे अने जन्म जरा मरणना दुःख पामेछे.

प्रश्न–त्यारे इश्वरना लक्षण कहो

प्रत्युत्तर–जेनामा रागद्वेष सर्वथा होतो नथी तेनेइश्वर कहेछे' वळी इश्वरना चार प्रकारछे–नाम इश्वर, स्थापना इश्वर, द्रव्य इश्वर, अने भावइश्वर इश्वर एवु गुणी वा निर्गुणीनु इश्वर एवु नाम स्थापवुं ते नाम इश्वर, तथा कोइ पण वस्तुमा इश्वरनो आरोप करवो ते स्थापना इश्वर–जे जीवमा इश्वरपणु आविर्भावे वर्ते नहीं ते द्रव्येश्वर–जे जीवमा रागद्वेषना क्षयथी इश्वरत्व आविर्भावे वर्तेछे ते भावेश्वर, ए चार भेद इश्वरनाछे तेमाथी पूर्वोक्त जे इश्वर भावइश्वर तरीके कथायछे ते इश्वरनु संसारमा पुनर्जन्मवु थतु नथी जीव ते पण इश्वर सत्ताएछे. इश्वरपणु कर्माच्छादितपणे होवाथी कर्म सहीत ससारी जीव ससारमा जन्म जरा मरण करेछे अने चतुरशीति लक्ष जीवयोनिमा पुन पुन परि-

भ्रमण करेछे-जीव पोते कर्म करेछे अने तेनो भोक्ता पण पोते एकलोछे. कह्युछे के-

गाथा

एको करेइ कम्म,फलमवि तम्मिक्कओ समणुवहइ
एको जायइ मरइय, परलोय एकओजाइ ॥ १ ॥

भावार्थ सुगम होवाथी लख्यो नथी, व्यवहारनये जीव कर्मनो कर्त्ताछे-शुद्धनिश्चयथी स्वस्वरूपे रमतो जीव परनो एटले द्रव्यकर्म तथा भावकर्मनो कर्त्ता नथी.

ज्ञानी शुद्ध आत्मस्वरूपमां रमतो कर्मनो नाश करेछे-जे आश्रवना हेतुओ छे ते ज्ञानीने संवररूपे परिणमेछे कह्युछे के-

श्लोक

यथा प्रकारा यावत' ससारावेश हेतव.
तावतस्तद्विपर्यासा निर्वाणवेशहेतव

कर्मना बे भेदछे एक शुभाश्रव बीजो अशुभाश्रव प्रथम शुभाश्रवने पुण्य कहेछे, अने अशुभाश्रवने श्रीजिनेंद्रदेव पाप तरीके कथेछे पुण्यनी बेतालीस प्रकृतिछे अने तेम पापकर्मनी ८२ ब्यासी प्रकृतिछे आत्माना शुभ परिणामथी पुण्य तथा अशुभ परिणामथी पापकर्म बंधायछे रागद्वेषने भावकर्म कथेछे रागद्वेषनो जय करवो ए शूरा पुरुषनु कृत्यछे रागद्वेष जीत्या विना देवपणु कहातु नथी चतुर्दश रज्ज्वात्मक लोकमा सर्व संसारी जीवोमा रागद्वेष व्यापी रह्योछे महादेव बत्रीसीमा कह्यु छे के-

श्लोक

रागद्वेषौ महामल्लौ, दुर्जितौ येन निर्जितौ,
महादेव तु त मन्ये, शेषा वै नामधारका.

आ संसारमां दुर्जेय रागद्वेषरूप महामल्लछे. तेवा महामल्लोने जेणे जीत्याछे तेने महादेव मानुछु, नाकीना तो नामना महादेवछे. रागद्वेषने जीतवाथी वीतरागता प्रगटेछे, सत्यतात्त्विक सुख वीतरागावस्थायाछे. रागदशाथी दुःखछे अने वीतरागदशाथी सुखछे. एम सर्वज्ञ वीरपरमात्मा सारमा सार कथेछे श्रीवीरप्रभुए ध्याननी तीक्ष्णताथी रागद्वेषनो क्षय कर्यो. श्रीप्रसन्नचंद्र राजर्षिए रागद्वेष शत्रुनो आत्मध्यानथी क्षय कर्यो. रागद्वेषज संसारनु मूळछे. ज्ञान दर्शन अने चारित्रगुणनी क्षायिकभावे प्राप्ति रागद्वेषना क्षय विना नथी. द्वेष करता पण रागनी सत्ता विशेषतः प्रवर्तेछे. कारण के जड वस्तुपर पण रागदशाथी ममत्वभाव उत्पन्न थायछे. आत्मिक ज्ञानयोगे मोहनीय कर्मनो उपशमभाव वा क्षयोपशमभाव वा क्षायिकभाव प्रगटेछे. ज्ञानावरणीय कर्मना, क्षयोपशमभाव वा क्षायिकभावना प्रादुर्भावने मोहनीय कर्म अटकावेछे.

कर्मबंधमां पण रागद्वेषनी प्राधान्यता समयमा वर्णवीछे. चार घातीकर्ममां पण मोहनीय कर्मनी सत्ता प्रबलपणे प्रवर्तेछे. देवगुरु धर्मनी श्रद्धा सम्यक्त्व पण मोहनीय कर्मना, उपशम, क्षयोपशम तथा क्षायिकभावथी थायछे, मोहनीय कर्म पण द्विधा प्रवर्तेछे. दर्शन मोहनीयना क्षयथी दर्शन प्रगटेछे अने चारित्र मोहनीयना क्षयथी चारित्र प्रगटेछे. वेदनीयकर्म, आयुष्यकर्म, गोत्रकर्म अने नामकर्म एह चार कर्म अघातीयाछे, ए चार कर्मना औदयिकभाव फक्त प्रवर्तेछे. औदयिकभावे अघातियां चार कर्म भोगवीने आत्मा खेरवेछे. प्रत्येक भवमां द्रव्य, क्षेत्र, काळ, भावथी औदयिकभावनी जीव जीव प्रति भिन्नता वर्तेछे. इंद्रिय, गतिकायनी अपेक्षाए औदयिकभावमा जीव जीव प्रति असंख्यभेदे भिन्नतानी तारतम्यता प्रवर्तेछे. औदयिकभावे चार अघातीयां कर्मनी कर्मबंधनमां निमित्त

कारणता वर्तेछे. आध्यानता रागद्वेषनी कर्मबंधनमाछे. मोहनीय कर्मनी बंधस्थीति उत्कृष्टी सित्तेर कोडाकोडी सागरोपमनी जाणवी मोहनीय कर्म मदिरा समानछे जेम मदिरापानथी मत्त थएल मनुष्य अविवेकी बनी कृत्याकृत्य जाणी शकतो नथी तेम मोहना उदयथी मूढ थएल मनुष्य कृत्याकृत्यने समजी शकतो नथी, भक्ष्याभक्ष्यमा प्रवर्तेछे, परभावमा मदोन्मत्तपणे प्रवर्तेछे अने पापकर्मयोगे आत्माने कर्मदलिकथी भारे करेछे मोहोदयथी कोइनी हितशिक्षा श्रवणे सुणतो नथी युवावस्थामा तो मोहोदयता अतिशय वर्तेछे. मोहनीय कर्मरूप बाजीगर–ससारी जीवोने पूतळांनी माफक नचावेछे अने जन्म, जरामरण, रोगशोक, तृषा, क्षुधा, छेदनभेदनना दुःख आपेछे. छता जीवो मूढताथी ससारमा सार मानी रागदशामां मस्तान थइ वर्तेछे अहो केटली अज्ञानता. क्षणिक सुखमा चिंतामणि रत्न समान मनुष्यभव जीव हारी जायछे अने पुन. पुनः ससारमा परिभ्रमण करेछे कर्मराजा ससाररूप नगरमांथी जीवने जरा मात्र खसवा देतो नथी अनत शक्तिधारी आत्मा पण कर्म पिंजरमा रह्योछे क्या पुद्गलनी शक्ति अने क्या आत्मानी शक्ति तेनो तो हे भव्यो विचार करो–

प्रश्न–हे गुरु महाराज कर्मए पुद्गल द्रव्य छे के पुद्गल द्रव्यना पर्यायछे.

उत्तर–कर्मएह पुद्गल परमाणु द्रव्यना पर्यायरूप स्कंधोछे अने ते आत्म प्रदेशोनी साथे क्षीरनीरनी पेठे परिणमेछे–पुद्गल द्रव्यनो स्कंध रूप पर्याय कर्म जाणवु–कर्म जडछे पण तेनाथी आत्माना गुणो ढकायछे तेथी आत्मा दुःख पामेछे.

प्रश्न–अनादिकाळथी जे कर्म आत्मानी साथे लाग्यु छे तेनो शी रीते अंत आवे

उत्तर–कर्म बंधननी मूळ सत्ता जे रागद्वेषछे तेनो क्षय करवाथी कर्मनो अंत आवेछे. मतिश्रुतज्ञानना क्षयोपशमभावे कोइक भव्यजीव षड्द्रव्यने जाणी जीवद्रव्यने अन्य पंचद्रव्यथी भिन्न जाणी सम्यक् शुद्ध बोधथी आत्मध्यानमां प्रवर्ते अने रागदशाना हेतुओने त्यागी संयम आदरी निश्चयथी स्वस्वभाव स्वगुण स्थिरतारूप चारित्रमां उपयोगथी वर्ते तो जीव कर्मनो क्षय करेछे. अने तीर्थंकरोक्त परमपदनी प्राप्ति करेछे. अनंत जीवो कर्मनो सक्षय करी परमपद पाम्या अने पामशे. एम श्री प्रवचन वदेछे.

जे भव्यो वीतरागना पंथने चाहेछे ते भव्यो रागद्वेषनो क्षय करी ते पदने पामेछे अने पामशे. कर्मनो ग्रहण कर्ता पण जीवछे अने तेनो नाशकर्त्ता पण जीवछे.

परमां रागद्वेषनी परिणतिथी कर्मबंधन अने स्वद्रव्य, स्वक्षेत्र, स्वकाल अने स्वभावथी आत्मगुणमां प्रवृत्ति करवाथी कर्मनो नाश थायछे. मिथ्यात्व, अविरति, कषाय अने योगथी कर्मबंधन थायछे. अनादि काळथी जीव संसारमां परिभ्रमण करेछे तेनुं कारण कर्म जाणवुं. भेदज्ञान थवाथी आत्मा अने परनो भेद थायछे. अने भेदज्ञानथी समकित प्रगटेछे. ज्ञानभाव विना मोहोदयतानो नाश थतो नथी. कह्यु छे के,

श्लोकः

ज्ञानेन भिद्यते कर्म, छिद्यते सर्व संशयाः
आत्मीयध्यानतो मुक्ति, रित्येव कथितं जिनैः॥१॥

ज्ञानथी कर्मनो नाश थायछे. अने सर्व संशयो छेदायछे अने आत्मध्यान पण ज्ञान विना थतुं नथी. माटे ज्ञानथी आत्मध्यान करतां मुक्तिनी प्राप्ति श्रीजिनेश्वरोए कथीछे. ज्ञानथी वैराग्य-

थायछे अने वैराग्यथी चारित्र जीव आदरेछे, अने तेथी जीवकर्मनो क्षय करी मोक्षमा जायछे माटे मुक्तिमार्गमा ज्ञाननी तथा तेनी साथे वैराग्यनी पण मुख्यताछे शास्त्रमा कह्यु छे के–

श्लोक.

ज्ञानस्यैवहि सामर्थ्यं, वैराग्यस्यैव वा किल,
यत्कोऽपि कर्मभि कर्म भुजानोऽपि न बध्यते. १

ज्ञानतु एवु सामर्थ्य छे के वा वैराग्यनु खरेखर एवु सामर्थ्य छे के जेथी कोइपण कर्मोवडे कर्म भोगवतो छतो पण कर्मथी बधातो नथी तात्पर्य के ज्ञान अने वैराग्यथी कर्म भोगवतां पण कर्मबंध थतो नथी

माटे कहेछे के–

ज्ञानीको भोग सवि निर्जराको हेतु हे.

ज्ञानीनो सर्वभोग निर्जरार्थछे औदयिकभावे प्राप्त थएला पचेंद्रिय विषयभोगोने भोगवता पण ज्ञानी कर्मनी निर्जरा करेछे, अने अज्ञानी उलटा बधायछे हु ज्ञानीछु एम मानी बेसवाथी कइ ज्ञानीपणु आवतु नथी वा कोइ एम कहेशे के आ ज्ञानी नथी एम कथवाथी ज्ञानीपणु टळतु नथी ज्ञानीपणु ज्ञानीगम्य वा ज्ञानीना अनुभवमा समजायछे

ज्ञानना पण घणा भेदछे आत्मज्ञान विना कर्म कलक टळतु नथी. ज्ञाननो महिमा अनतछे

कृष्ण अर्जुनने कहेछे के–

ज्ञानाग्निः सर्वकर्माणि भस्मसात् कुरुतेऽर्जुन.

हे अर्जुन ! ज्ञानरूप अग्नि सर्व कर्मने बाळी भस्म करेछे ज्ञान विना चारित्र नथी अने चारित्र विना मुक्ति नथी क्रिया पण ज्ञानिनी पासेछे ज्ञान विना शुतप, शुक्रिया माटे आत्मतत्त्वनु ज्ञान

करवु श्रेयस्करछे. आत्मज्ञान विना कोइ तर्या नथी अने तरशे पण नहीं, राजा, करोडाधिपति, आदि सर्व करता ज्ञानीनी महत्वताछे ज्ञानी सूर्य करता पण मोटोछे. कारण के सूर्य बाह्य प्रकाश करेछे किंतु अंतर्प्रकाश करी शकतो नथी. अने ज्ञानी तो अतर्प्रकाश करे छे. ज्ञानीनी सर्व क्रिया, वर्तन सापेक्षपणे वर्तेछे अने अज्ञानीनु वर्तन निरपेक्षतया वर्तेछे. ज्ञानी अवश्य चोथाठाणे गुणे तो होयछे अने अज्ञानी बी. ए. एल. एल. बी आदि पद्विओथी दुनीयादारीमा महा विद्वान् कहेवातो होय तो पण समकित विना पहेले गुणठाणे वर्तेछे. ज्ञानावरणीय कर्मना क्षयोपशमभावथी वा क्षायिकभावथी ज्ञाननो आविर्भाव थायछे. सम्यक्तत्त्व श्रद्धान् विना ज्ञानावरणीय कर्मनो क्षयोपशमभाव पण मिथ्यात्वरूपे परिणमेछे. एम श्रीवीर प्रभुनु कथनछे.

ज्ञानावरणीय कर्म पचप्रकारेछे–मतिज्ञानावरणीय कर्म १, श्रुतज्ञानावरणीय कर्म २, अवधि ज्ञानावरणीय कर्म ३, मनःपर्यव ज्ञानावरणीय कर्म ४, केवल ज्ञानावरणीय कर्म ५

ज्ञानावरणीय कर्ममा उपशम भाव नथी. ज्ञानावरणीय कर्मनो औदयिकभावछे. ज्ञानावरणीय कर्मनो क्षयोपशम विचित्र असख्य प्रकारे तरतमयोगथी वर्तेछे. द्वादशागीनु गुथन गणधरजी क्षयोपशमभावे करेछे

मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मन पर्यवज्ञानमा क्षयोपशम भाव लाभेछे. केवलज्ञान क्षायिकभावे उत्पन्न थायछे ज्ञानावरणीय कर्म अष्ट कर्ममा प्रथमछे तेनु कारण के विशेपत: ज्ञानावरणीय. कर्म आत्मानु भान भूलवेछे ज्ञान विना तत्त्वनु भान थतु नथी. माटे प्रथम तेनो निक्षेप कर्योछे. ज्ञान विना जीव, अजीव, पुण्य, पाप, आश्रव, सवर, निर्जरा, बध अने मोक्षनु स्वरूप जणातु नथी.

षड्द्रव्य, सातनय, सप्तभंगी, प्रमाण निक्षेपनुं यथातथ्य स्वरूप ज्ञान विना समजातुं नथी. ज्ञान विना धर्म अधर्मनुं स्वरूप जणातुं नथी. ज्ञान विना चारित्र शुं छे तेनुं पण भान थतुं नथी.

मति ज्ञानावरणीय अने श्रुत ज्ञानावरणीय कर्मनो क्षयोपशम सर्व जीवोमां सरखो लागतो नथी कोइएक वस्तुनुं स्वरूप विशेष समजेछे कोइ समजतुं नथी त्यां मति ज्ञानावरणीयकर्मनी क्षयोपशमताज कारणीभूतछे पूर्वभवमां जे प्रकारे मतिज्ञान अने श्रुत ज्ञाननुं आराधन कर्युं होयछे ते प्रमाणे आ भवमां मनुष्य जन्म पामी शरीरनी रचना, मगजनी रचना ज्ञानतंतुनी प्रबलता आदि सामग्रीसाधन मतिज्ञानावरणीय कर्मना क्षयोपशमभावमां प्राप्त थायछे अने ते साधनोद्वारा उद्यम करवाथी मतिज्ञाननी वृद्धि थायछे.

मतिज्ञानना अष्टाविंशति अने ३४० त्रणसो चालीश भेद नंदिसूत्रमां प्ररूप्याछे ज्ञाननी प्राप्ती लीपी जे श्रुतज्ञान अक्षरस्वरूपेछे तेनी आशातना करवाथी ज्ञानावरणीय कर्म बंधायछे आशातनाना हजारो भेदछे ते गीतार्थने विनयथी पूछी समजण लेवी

सुवर्णना प्यालामां जलना जेटलां बिंदु पडेछे तेटला कायम रहेछे तेम योग्य सरकारी जीव जेटलुं गुरुद्वारा श्रुतज्ञान मेळवेछे तेटलुं तेने शुद्धरूपे परिणमेछे अने तेनुं स्मरण रहेछे

जेम तपावेला लोहना गोळा उपर जलबिंदु त्रण चार दश वार पडे तो पण तेनुं जोर चालतुं नथी तेम मूढ अज्ञानी जीवना हृदयमां सद्गुरु वचनामृतनो वास थतो नथी उल्टो तेनो नाश थायछे

एक शिक्षक शिष्योने एकज वखते सरखी रीते कोइ विषयनो बोध आपेछे तेमां कोइ विद्यार्थिने तो बिल्कुल तेनी यादी रहेती नथी कोइने यत्किंचित् रहेछे कोइने पूर्ण यादी रहेछे त्यां श्रुत [illegible] कर्मनी क्षयोपशमताज कारणीभूतछे, कोइ एक श्लोक

भणीने स्मरणमां राखेछे कोइ एक कलाकमा पांच श्लोक भणेछे. कोइ पचीश श्लोक कोइ शतश्लोक कोइ सहस्रश्लोक एक कलाकमा याद करेछे कोइ आखा दीवसनो एक श्लोक पण याद करी शकतो नथी. त्या श्रुतज्ञानावरणीयकर्मनी क्षयोपशमताज कारणीभूतछे हाल्ना समयमा कोइ शतावधानी कोइ द्विशतावधानी देखवामा आवे छे. तेनु पण कारण मति अने श्रुतज्ञानावरणीय कर्मनी क्षयोपशमतानी विचित्रताछे अने ते प्रमाणे मगजनी रचना ज्ञानतंतुनी प्रबलता अने अप्रबलतानी तारतम्यताए घटना थायछे. अने ते प्रमाणे द्रव्य क्षेत्र कालभावथी प्रबल अप्रबल साधनोनी प्राप्ति थायछे. श्रुतज्ञानना अभ्यासथी तथा श्रुतज्ञानीनो विनय भक्ति बहुमान करवाथी श्रुतज्ञानावरणीय कर्मनो क्षयोपशम थायछे. श्रुत अने श्रुतज्ञानीनी आशातना करवाथी तथा उत्सूत्रभाषण करवाथी श्रुतज्ञानावरणीय कर्मनो बध थायछे माटे भव्य जीवोए क्रोध लोभ मान पूजा स्वार्थादिक आवेशथी उत्सूत्र भाषण करवु नहीं. उत्सूत्र भाषणथी जमाली तथा मरीचिनी पेठे भवपरंपरानी प्राप्ति थायछे. अल्पज्ञानयोगे उत्सूत्र भाषण थयु होय तो ज्ञान थता मिथ्या दुष्कृत देवु पण मान पूजा लज्जादिकथी मिथ्यादुष्कृत देता प्रमाद करवो नहि. भवभीरु भाग्यवंत जीव अनेकांत पथने समजी प्राणाते पण मिथ्याप्ररूपणा करतो नथी उत्सूत्र भाषण समान कोइ पाप नथी. माटे कदी अल्पज्ञपणाथी उत्सूत्र प्ररूपणा करवी नहि, कलियुगमा सूत्रोनी प्ररूपणामा गुरुगम विरह, मान, पूजा, स्वार्थ, मताग्रहपणाथी, उत्सूत्रभाषण करी अज्ञानी जीवो अनेक प्रकारना मत उठावेछे अने कुगति कुश्रुतयोगे कुतर्क करी भिन्न भिन्न पथनी काळी दृष्टि रागी जीवोने समजावीने वीरप्रभुना सत्य वचननो लोप करी आत्मना अजाणपणाथी भवपरंपरानी वृद्धि करी जन्मजरा मरणना दुःख विविध योनिमा अवतार ग्रही भोगववा प्रयत्न करेछे.

धर्म श्रवणथी भेदज्ञान थायछे अन तेथी स्वपरनो विभाग करता सम्यक्त्वनी प्राप्ति थायछे. तेमा श्रुतज्ञाननो महा उपकार समजवो, त्रिकाल सर्वज्ञ वीरप्रभुए केवलज्ञानथी सर्व पदार्थोने जोया अने वाणीथी ते पदार्थोनु स्वरूप कथ्यु ते भगवान्नी स्वपर प्रकाशक वाणीनेज श्रुतज्ञान सूत्रसिद्धातरूप कयेछे हाल पण भगवान्नी वाणी जयवती वर्तेछे

आसन्नभव्यो भगवद्वाणीरूपगगा प्रवाहमा स्नान करी ससारना तापथी शाति पामेछे अने पामशे.

महाविदेह क्षेत्रमा अनादिकालथी सम्यक्श्रुत अने मिथ्याश्रुत वर्ते छे.

सुश्रुतनो हे भव्यो आदर करो वखत वही जायछे, वखत अमूल्यछे गयो वखत पश्चात् आवनार नथी भव्य जीवोए वारवार श्रुतज्ञाननो अभ्यास करवो

अवधिज्ञानावरणीय कर्मनो क्षयोपशम थवाथी अवधिज्ञान उत्पन्न थायछे. अवधिज्ञानना षड्भेदछे अने वळी असख्यात भेदे प्रवर्तेछे मन पर्यवज्ञानावरणीय कर्मना क्षयोपशमथी मन.पर्यवज्ञान उत्पन्न थायछे, मनपर्यवज्ञान बे प्रकारेछे

केवलज्ञान क्षायिकभावे उत्पन्न थायछे शुक्लध्यानना बीजो पायो ध्यावता बारमे गुणठाणे केवलज्ञानावरणीयकर्मनो सत्ताथी पण सर्वथा क्षय थाय छे

मतिज्ञान अने श्रुतज्ञान परोक्षछे अवधिज्ञान अने मनःपर्यवज्ञान देश प्रत्यक्षछे केवलज्ञान सर्वथी प्रत्यक्षछे

आ प्रमाणे ज्ञाननी प्राप्ति थतां आत्मा परमात्मस्वरूप बनेछे. ज्ञाननी प्राप्ति थतां दर्शनावरणीयादि कर्मनो सर्वथा क्षय थायछे. जे जे कर्मप्रकृतिनो जे जे गुणठाणे क्षय थवानो होयछे ते ते गुण-

ठाणे तेनो क्षय थायछे ज्ञानप्ररूपणा नंदिसूत्रमा हेतु न्याय पूर्वक दर्शावीछे. माटे आत्मार्थि जीवोए त्याथी विशेष अधिकार समजवो अहाज्ञाननी केवी शक्ति ! ! ! चक्षुद्वारा देखेला पदार्थोनो मनमां केवो विचार थायछे बीजानामनना विचार पण ज्ञानथी जाणी शकाय छे ज्ञाननी एकनी एकथी बीजा जीवमा विशेषता देखवामा आवेछे. केवलज्ञानमा सर्वज्ञाननो समावेश थायछे सम्प्रतिकाळे ज्ञाननी क्षीणताछे. अने तेथी मतभेद घणा थया अने थशे जेम ज्ञाननी अल्पता तेम मतमतांतर विशेष अने ज्ञाननी वृधि तेम मतमतांतर अल्प जाणवा. मतभेदना कदाग्रह विना जे जे वांचवु. -साभळवु. मनन करवु ते सफळछे

क्षयोपशमभावे अधुना मतिज्ञान अने श्रुतज्ञान समकिती जीवोने वर्तेछे. एम कथवु अनुभवगम्य सप्रमाणछे, मति अज्ञानी अने श्रुत अज्ञानी जीवो आ क्षेत्रमा विशेषछे मति अने श्रुत ज्ञानी जीवो अल्प अने तेमा पण विरति पाम्या जीवो अल्प अनुभवगम्य सिद्धांतानुसारछे.

हे भव्य मति ज्ञान अने श्रुतज्ञाननो गहन विषयछे अल्पज्ञपणाथी सूक्ष्म तत्त्वस्वरूप निगोद स्वरूप समजी शकाय नहीं तो तेमा ज्ञानावरणीय कर्मनो दोष समज. ग्रंथकर्त्ताने दोष आपीश नहीं सूक्ष्म तीक्ष्ण मति ज्ञान विना सूक्ष्म वातनो बोध थतो नथी. एम कहेवु सप्रमाणछे. केवलज्ञान अने केवल दर्शनथी जे पदार्थ स्वरूप जाणवा देखवामा आवे तेवु स्वरूप मतिज्ञानथी यथार्थ साक्षात् कदी जाणी शकाय नहि. एम अनुभवथी ज्ञानीओ कथेछे. माटे शका मनमा लावीश नहि जिन प्रवचनपर आस्था राख. जिनेश्वरे जे वचनो कथ्यांछे ते अन्यथा नथी एम श्रद्धा कर. अने आत्मानुभव सद्गुरुद्वारा कर केजेथी मुक्तिमार्गनो अधिकारी थाय. पूर्वो-

क्त मोहनीय अने ज्ञानावरणीय कर्मनु स्वरूप तथा तेना नाशथी आत्मगुणोनो लाभ देखाडी हवे प्रस्तुत कर्मविषयनुज वर्णन करवामां आवेछे कर्म सबंधी सामान्य वर्णन कर्यु कर्म जडछे अने ते आत्माना गुणोनो घातकर्त्ता छे सर्व जीव कर्मासक्त छे. कर्मनो नाश करवो एज कर्तव्य छे कर्मनु स्वरूप समज्या विना कर्मनो नाश थतो नथी श्रीवीरप्रभुए घोर परिसह सहन करी कर्मनो क्षय कर्यो तो तेमनी वाणीना आधारे आपणे पण ज्ञान दर्शन चारित्रनु आराधन करवु, लक्ष्यमा राखवु मोक्ष मार्ग विकट छे प्रमाद घणो, उपयोग अल्प, आयुष्य अल्प, दु:षमसमय, सत्समागम अल्प, धर्म साधनो अल्प, कर्मसाधनो विशेष, अहो केवी दुर्दशा, कर्मनु जोर विशेष, धर्मध्याननु जोर अल्प. आ शु थयु, शु करवु हे वीरप्रभु तारी वाणीनु शरण, जगत्मां तमारो केटलो उपकार! तारो आधार, तारो विश्वास कर्मनी दु:खप्रदविचित्रप्रकृतियोनो नाश करवा केवा प्रकारनु लक्ष्य जोइए ? अधमता अने प्रमादथी जीवो क्याथी स्वस्वरूप पामे ? धर्म उद्यम अल्प छे कर्मोपार्जन उद्यम अहर्निश चाल्या करेछे तपासोतो खरा ! रागनु जोर समारामां विशेष छे वा वैराग्यनु, जोर विशेष छे, कर्मनी कठीन ग्रंथीनो भेद आत्मार्थी पुरुष पुरुषार्थथी करेछे. कर्मनु क्षेत्र चतुर्दश रज्वात्मक प्रमाण छे, अर्थात् कर्मनी राजधानी चउद राजलोकमां छे तो पण कर्मथी डरवानु नथी कर्म नाश थवानु नथी एम स्वप्नमां पण विचारवु नहि, कारणके तेम मानी बेसवाथी उलटु कर्मनीज वृद्धि थायछे माराथी राग छुटवानो नथी वा मारा कर्ममां लख्यु हशे ते प्रमाणे थशे. एम प्रमादनी वृद्धि अर्थे वा सरागदशानी वृद्धि अर्थे वचन वदवो नहि अनुद्यमनां वचनो जे बोलवामां आवेछे ते चारित्र मोहनी आदिना उदयथी समजवु जरा सूक्ष्मदृष्टियी विचारो के

उद्यमथी कयु कार्य सिद्ध थतु नथी ? अलबत उद्यमथी सर्व कार्य सिद्ध थाय ते. हवे ते कर्म संबधी विशेष विवेचन करीए छीए.

१ कर्मराजा

२ कर्मराजानो प्रधान मोह

३ संसारनगर

४ कर्मराजानो पुत्र अज्ञान

५ कर्मराजानी पुत्री निंद्रा

कर्मराजाना सुभटो—मिथ्यात्व, अविरति, क्रोध, मान, माया, लोभ, हास्य, रति, अरति, कलह, भय, अभ्याख्यान, अशुभयोग, आर्तध्यान, रौद्रध्यान, इर्ष्या विगेरे कर्मनु कार्य ए छे के दरेक संसारी जीवो उपर सत्ता चलाववी. हवे एक दीवस कर्मराजा पोते संसारनगर तरफ ध्यान आपी जुएछे के संसारी जीवो हाल केवी हालतमा छे अने ते आपणी आज्ञामा छे के नहीं ? जोतां जोतां धर्मराजाने मालुम पडयु के, अरे हाय वीतरागना भक्तो तथा तेमनी वाणीरूप आगमोथी घणा जीवोए मारु स्वरूप जाणी लीधु. अने ते जीवो मने ते शत्रु तरीके लेखवी मारी नगरीमाथी नीकळवानो उपाय श्रीवीतरागना भक्तोने पुछेछे अने मोक्ष नगरी के जे धर्मराजानी राजधानी त्या जवा इच्छेछे केटलाके मोक्ष नगरी तरफ जवा सारु प्रयाण शरु कर्युछे. अरे मारा नगरमाथी जीवो केटलाक काळे सर्वे जता रहेशे. केम करु, एम उंडा विचारमा गुम थइ बेठो छे त्यारे तेनी पासे मोहप्रधान आवी पुछेछे के, हे कर्मराजा तमे केम उदास थइ बेठा छो ? मारा जेवो प्रधान छतां तमने शी मोटी चिंता आवी पडीछे ते कृपा करीने कहो.

कर्मनृपतिभाषण

कर्मराजा मोहप्रधानने कहेछे के, अरे हवे मारा राज्यमांथी

क्त मोहनीय अने ज्ञानावरणीय कर्मनुं स्वरूप तथा तेना नाशथी आत्मगुणोनो लाभ देखाडी हवे प्रस्तुत कर्मविषयनुज वर्णन करवामां आवेछे. कर्म संबंधी सामान्य वर्णन कर्युं कर्म जडछे अने ते आत्माना गुणोनो घातकर्त्ता छे सर्व जीव कर्मासक्त छे कर्मनो नाश करवो एज कर्तव्य छे कर्मनु स्वरूप समज्या विना कर्मनो नाश थतो नथी. श्रीवीरप्रभुए घोर परिसह सहन करी कर्मनो क्षय कर्यो. तो तेमनी वाणीना आधारे आपणे पण ज्ञान दर्शन चारित्रनु आराधन करवु, लक्ष्यमा राखवु मोक्ष मार्ग निकट छे प्रमाद घणो, उपयोग अल्प, आयुष्य अल्प, दु षमसमय, सत्समागम अल्प, धर्म साधनो अल्प, कर्मसाधनो विशेष, अहो केवी दुर्दशा, कर्मनु जोर विशेष, धर्मध्याननु जोर अल्प. आ शु थयु, शु करवु हे वीरप्रभु तारी वाणीनु शरण, जगत्मां तमारो केटलो उपकार! तारो आधार, तारो विश्वास कर्मनी दु खप्रदविचित्रप्रकृतियोनो नाश करवा केवा प्रकारनु लक्ष्य जोइए ? अधमता अने प्रमादथी जीवो क्याथी स्वस्वरूप पामे ? धर्म उद्यम अल्प छे कर्मोपार्जन उद्यम अहर्निश चाल्या करेछे तपासोतो खरा ! रागनु जोर तमारामां विशेष छे वा वैराग्यनु, जोर विशेष छे, कर्मनी कठीन ग्रथीनो भेद आत्मार्थी पुरुष पुरुषार्थथी करछे. कर्मनु क्षेत्र चतुर्दश रज्वात्मक प्रमाण छे, अर्थात् कर्मनी राजधानी चउद राजलोकमां छे तो पण कर्मथी डरवानु नथी कर्म नाश थवानु नथी एम स्वप्नमां पण विचारवु नहि, कारणके तेम मानी नसवाथी उलटु कर्मनीज वृद्धि थायछे माराथी राग छुटवानो नथी वा मारा कर्ममां लख्यु हशे ते प्रमाणे थशे. एम प्रमादनी वृद्धि अर्थे वा सरागदशानी वृद्धि अर्थे वचन वदशो नहि अनुद्यमनां वचनो जे वोलवामां आवेछे ते चारित्र मोहनी आदिना उदयथी समजवु जरा सूक्ष्मदृष्टिथी विचारो के

उद्यमथी कयु कार्य सिद्ध थतु नथी ? अलबत उद्यमथी सर्व कार्य सिद्ध थाय छे. हवे ते कर्म सबंधी विशेष विवेचन करीए छीए.

१ कर्मराजा
२ कर्मराजानो प्रधान मोह
३ ससारनगर
४ कर्मराजानो पुत्र अज्ञान
५ कर्मराजानी पुत्री निंदा

कर्मराजाना सुभटो—मिथ्यात्व, अविरति, क्रोध, मान, माया, लोभ, हास्य, रति, अरति, कलह, भय, अभ्याख्यान, अशुभयोग, आर्तध्यान, रौद्रध्यान, इर्ष्या विगेरे कर्मनु कार्य ए छे के दरेक ससारी जीवो उपर सत्ता चलाववी. हवे एक दीवस कर्मराजा पोते ससारनगर तरफ ध्यान आपी जुएछे के ससारी जीवो हाल केवी हालतमा छे अने ते आपणी आज्ञामां छे के नहीं ? जोतां जोतां कर्मराजाने मालुम पड्यु के, अरे हाय वीतरागना भक्तो तथा तेमनी वाणीरूप आगमोथी घणा जीवोए मारु स्वरूप जाणी लीधु. अने ते जीवो मने ते शत्रु तरीके लेखवी मारी नगरीमांथी नीकळवानो उपाय श्रीवीतरागना भक्तोने पुछेछे अने मोक्ष नगरी के जे धर्मराजानी राजधानी त्या जवा इच्छेछे केटलाके मोक्ष नगरी तरफ जवा सारु प्रयाण शरु कर्युंछे अरे मारा नगरमाथी जीवो केटलाक काळे सर्वे जता रहेशे केम करु, एम उडा विचारमा गुम थइ बेठो छे. त्यारे तेनी पासे मोहप्रधान आवी पूछेछे के, हे कर्मराजा तमे केम उदास थइ बेठा छो ? मारा जेवो प्रधान छता तमने शी मोटी चिंता आवी पडीछे ते कृपा करीने कहो.

कर्मनृपतिभाषण

कर्मराजा मोहप्रधानने कहेछे के, अरे हवे मारा राज्यमांथी

दिनप्रतिदिन जीवो मोक्ष नगरीमा चाल्या जायछे.

धर्म राजाना सुभटो आपणी नगरीना जीवोने समजावी पोतानी नगरीमा खेंची जायछे मुख्यताए तेमा मोटो भाग जीवोने मोक्ष नगरीमा लइ जनार तीर्थंकरोनोछे अने तेमना कायदा प्रमाणे वर्तनार साधुओ एवा तो फावलछे के–ते साधुओनी आगल आपणा क्रोधादिक शत्रुओनु कइ चालतु नथी आपणा सुभटोने पण हरावी जीवोने पोते मोक्ष नगरीनो मार्ग जणावी आपणी नगरी खाली करेछे. हाय, हवे शु करू अरे ओ मोह प्रधान तु जलदी आपणा सुभटोने तथा मारा पुत्रने बोलाव, अने अविवेक सभामां कचेरी भर, मोहप्रधान कर्मराजानु वचन अंगीकार करी सर्व सुभटोने बोलावी सभानी बेठक करी कर्मराजा सभामा आवी ममता सिंहासन उपर विराजमान थया हवे कर्मराजा पोताना सर्व सुभटोने तथा पुत्रपुत्रीओने नीचे मुजब वचनो कहेछे के–

अरे मारा मोह प्रधान तु मारो प्रिय प्रधानछे हिंसातो मारी बेनछे निंद्रा मारी पुत्रीछे, अज्ञान मारो पुत्रछे, चउदराज लोकनु राज्य आपणा ताबामांछे आपणु राज्य अनादिकालथी ससार नगरमा चालेछे सर्व जीवोने आपणे पोताना वशमा राखी धर्म राजानी मोक्ष नगरीमा लेइ जवा देवा नहि ते तमारी मुख्य फरजछे आपणु राज्य घटे नहि ते तमारे ध्यानमा लेवु जोइए

मारा सुभटो सांभलो ! आपणो मोटो शत्रु धर्म राजाछे ज्ञान दर्शन चारित्र ए त्रण एना पुत्रछे धर्म राजानो उपयोग रूप प्रधान छे, क्षांति,आर्जव,मार्दव,मुक्ति,सयम,सत्य, शौच, आकिंचन, ए दश धर्म राजाना अत्यत बलवान सुभटोछे, समकित रूप धर्म राजानो पुत्र एवो तो बलवानछे के जेनाथी आपणो मिथ्यात्व सुभट रण सग्राममां भागी जायछे, पच महाव्रत रूप जोद्धाओ एवातो बलवा-

नछे के अविरति नामना आपणा योद्धाने थरथरावेछे. आपणा नगरनो भग करनार श्री चोवीस तीर्थंकरो तथा तेमनाथी उत्पन्न थयेला १साधु २साध्वी ३श्रावक ४श्रावीका रूप चतुर्विध सघ आपणाथी छुटी पडी धर्म राजाना नगरमा जवा उपडयोछे तीर्थंकरना भक्तो, साधु महाराजाओ, आपणा ससार नगरमा रहेनार ससारी जीवोने एवातो उपदेश आपेछे के-ते उपदेश साभळ्या पछी आपणा नगरमा ते जीवो रहेता नथी, अने ससारने ते स्मशान सरखो गणेछे, आपणी मायाना अने कुटुब परिवारने बधन समान गणेछे, मायाना पास त्रोडी वैराग्य रूप बख्तर धारण करी ससारनो त्याग करेछे, अनादिकाळथी आ प्रमाणे आपणा नगरमाथी जीवो मोक्ष नगरमा चाल्या जायछे. ते जोइ मने अत्यत चिंता थायछे. धर्म राजानु मोक्ष नगर आपणा ससार नगर करता नानुछे ते चौद राज लोकने अते आवेलुछे ते नगरमा रहेनारा जीवो अत्यत सुखी होयछे मोक्ष नगरीमा गयेला जीवोनो आपणाथी कशो भय रहेतो नथी.

मोक्ष नगरमा गया जीवो पाछा आपणा नगरमा आवी शक्ता नथी आपणु तेमना उपर कशु जोर चालतु नथी अरे मारी नगरीनी खराब अवस्था थइ गइ! तमो आटला बधा सुभटो छता मारी आवी दशा थई, हवे मारे शु करवु,कोनी आगळ जइ पोकार करवो

आ प्रमाणे कर्म राजाना वचनो साभळी मोह प्रधान आस्वासना आपेछे

हे कर्म राजा तमो केम चिंता करोछो, कर्म राजाजी तमारु नगर कदी खाली थइ शकवानु नथी अनादिकाळथी तमारी एवी सत्ता नेठेलीछे के माय. कोइक जीव मोक्ष नगरीमा जइ शके, आपनो हु प्रधान तथा अज्ञान नामनो पुत्र, एटली तो ससारी जीवो

उपर सत्ता चलावेछे के, बिचारा जीवने ससार एज सार मान्या विना छुटको थतो नथी. कर्म राजाजी अमारो दरेकनो पराक्रम नीचे मुजबछे ते सामळो.

हु मोह प्रधान अनादि काळथी आपनी कृपादृष्टि तळे हाजरछु. परभावरूपी आत्मा दरेक ससारी जीवोने मे फसावी दीधाछे. एकेंद्रिय जीवो उपर पण मारी सत्ता व्यापेली छे, द्वीन्द्रिय जीवो उपर पण मारी सत्ता व्यापेलीछे, त्रीन्द्रीय जीवो उपर पण हु सत्ता चलावुछु चतुरिन्द्रि जीवोपर पण मारा वशमाछे, पचेंद्री जीवो चार प्रकारनाछे १ देवता २मनुष्य ३तीर्यच ४नारकी ए चार प्रकारना जीवो पण मारा आधीनछे, देवताओ पण देवीओ उपर मोहना पासथी आशक्त रहेछे. आ मारी देवी, आ बीजानी देवी,एवी मोह धशा करावनारछु मारी उत्कृष्टि स्थीति मोहनीय, कर्मनी सित्तेर कोडाकोडी सागरोपमनीछे, नानु बालक तेनामा पण हु व्यापिछु युवावस्थावाळा जुवान पुरुषोमा तो हु निर्भय पणे व्याप्त छु जो मोहना होय तो दरेक मनुष्यो ससारमा सार मानेनहीं, रात्री अने दीवस हु दरेक जीवोनी साथे व्याप्तछु, मोह मन्थी घेला थयेला जीवो जाणी शकता नथी के अमो मोहना पासमा ऊपडायाछीए-एवी मारी सत्ताछे जोगी जती, सन्यासी, गोसाइ, अतीत, फकीर विगेरे कहेछेके मोह खराबछे, मोह करना नहि एम बीजाने उपदेश आपेछे तेवा पुरुषोने पण हु मारी मोह जाळमा फसावी दउछु

फकीर फकीराइ लेइ बेठा होयछे तोपण धन स्त्रीनामा हु प्रवेश करी तेने ठगवावी ससारमा पाडु राजाओ के जे शूरवीरो कहेवायछे तेने पण स्त्री,धन, पुत्र, राज्य, विगेरेना मोहमां फसावी देउछु जे राजाओ सिंह समान शूरा होयछे, अने जे रणसग्राममा हजारो मनुष्योने कापी नाखेछे तेवाने पण हु पुत्र मोहमां फसावी

रोवराव्युं. सिंहसमानशूरा राजाओने पण मोहमा फसावी स्त्रीओना पगे लगाड्युं. हजारो सुभटोना बाण वागता पण जेनी चक्षुमाथी अश्रु आव्या नथी एवा राजाओनी चक्षुमाथी स्त्रीना मरणथी अश्रु कढाव्युं जो हुं राजाओमा व्यापी नहि रहुं तो तेओ आ संसार माजीवनी हिंसा विगेरे केम कुकर्म करे? पृथ्वीना लोभथी परस्पर राजाओने हुं लडाउंछुं, स्त्रीना मोहथी परस्पर राजाओने लडावनार अने दुनीआमा जीवोनो नाश करनार हुं मोह प्रधान छुं. ज्या मारो संचार होयछे त्या क्रोधादिक सुभटो पण वास करेछे. मोक्ष नगरीमा जता अगीयारमा गुणठाणा सुधी मारु प्रबल जोरछे. कोइ विरलो जीव माराथी बची जायछे. अरे तमो तीर्थंकरना भक्तो साधुओने पूछोके तमो कोनाथी विशेष डरोछो प्रत्युत्तर मळशे के-मोहथी अमो डरीए छीए जुओ चकलो, चकली, मोर, पोपट, कबुतर, सिंह, शृगाल, विगेरे तिर्यंच जीवो पण मोहावेशथी केवी स्थिति प्राप्त करेछे.

चकलो, चकली, पोताना इंडापर केवो मोहधारण करेछे. मयूर मयुरीनो विरह थता केवुं आक्रंद करेछे. गौ महिषी पोताना बच्चाने जुओ मोहना आवेशथी केवा चाटेछे. कुकडी कुरकुरीयाने पोताना मानी केवुं हेतधारण करेछे वळी धनना मोहथी प्राणीओ मरी परभवमा मूषक सर्प विगेरेना अवतार धारण करेछे. पुत्रना मरणथी मातपिताने अत्यंत रूदन करावनार हुं छुं स्त्रीना मरणथी तेना पतिने शोक करावनार हुं छुं सत्यनेपण असत्य तरीके देखाडनार हुं छुं. मारा वशमा आवेला जीवोने चोराशीलाख जीवायोनिमा भटकावनार हुं छुं मारा वशमा पतित प्राणीओ हिंसा करेछे. असत्य वदेछे. चोरी करेछे. परस्त्री सेवन करेछे. इत्यादि सर्व मारी सत्ताथी थायछे.

पृथुराजे स्त्रीना मोहथी जयचद्र साथे भारे क्लेश कर्यो पृथुराज उपर शाहबुदीन घोरी चढी आव्यो, तेमा अते मृत्यु पाम्यो कर्णघेलाए स्त्रीना मोहथी राज्य खोयु,मनुष्य परदेश भ्रमण करेछे.जळमां प्रवेशेछे इत्यादि सर्व मारु कार्यछे अात जीवने हु ससारमा अनादिकाळथी भटकावु छु अने भटकावीश धर्मराजानो विवेक रूपी योद्धो पण माराथी बीवेछे कया जीवमा हु व्यापी रह्यो नथी.

वीतरागदेवना साधुओने लाग साधी मारा फदमा फसावी दउछु जुओ मारी केवी शक्ति जीवोने ससारमा सार देखाडी चारित्र लेवरावतो नथी सर्व जीवोने ससारमा अनादिकाळथी फेरवु छु अने वळी फेरवीश अर्मी वनावुछु अनेक प्रकारनो वेषो करी जीवोनो हु माराफदमा फसाउ छु कोइनामा व्यक्तपणेतो कोइनामा अव्यक्तपणे हु वसुछु,सर्व ससारी जीवोनेहु पुतळानी माफक नचावु छु, मारी घेनमा सर्व जीवो मुझाणाछे ज्यां त्या हु मोह व्यापी रह्यो छु मोह घाटीनु भेदन करवु महा दुष्करछे एम दरेक महात्माओ पुस्तकमा लखेछे दरेक जीवनु भान भूलावनार अने परस्वभावमा रमण करावनार हु मोह जीवोमा पेठो के ते बीचारा परवश थइ जायछे मारा आगळ सर्व जीवो कीटक समानछे, मारी शक्तिथी ज्ञानीओ पण गभरायछे, हु सदाकाल चोराशी लाख जीवयोनिमां रहेला जीवोनी पासे रहुछु महादेव सरखाने पण पार्वतीना मोहमा फसावनार मारा विना बीजा कोण देखाभिम नथी दुनीयानी मजाने परस्पर वैर करावनार मारा विना बीजो कोइ नथी मोह गर्भित वैराग्यमा पण मारु अस्तित्वछे, मतमतातर मिथ्यात्वादिनी वृद्धि माराथी थायछे जुओ मारी शक्ति !!!

आवा मोह सचिवना वचन सांभळी कर्मराजाए मोह प्रधानने शाबाशी आपी कह्यु के धन्यछे मारा खरा मोह प्रधान मारे तारा

जेवो बीजो कोइ प्रिय नथी.

हवे कर्मनृपतिनो पुत्र अज्ञान स्वकीय स्वरूप सभा समक्ष कथेछे अरे हु मोहराजानो पुत्रछु. अज्ञान मारु नामछे, पंडित लोक मारा वैरीछे. चउद राजलोक मारु स्थानछे. सर्व जीवोने में अध कर्याछे. ज्ञानावरणीय कर्म करी हु सर्व जीवोमा वसुछु, धर्मराजा तथा मोक्षनगरीनु भान हु थवा देतो नथी सत्यासत्यनु स्वरूप जीवोने जाणवा देतो नथी, सत्यदेव गुरुधर्मनु ज्ञान मारी सत्ताथी जीवो करी शकता नथी.

तीर्थंकरना सूत्रो तथा तेमनी आज्ञा प्रमाणे मोक्ष नगरी प्रति-गमन करनार मुनिवरो पण मारा वशमा रहेला जीवोने समजावी शकता नथी जे समजु छे तेने साधुओ समजावी शके, पण हु ज्या वसु छु त्या तेओ गमे तेटलो उपदेश आपे तोपण उखरभूमा वर्षा-नीपेठे निष्फळ जायछे. चारगतिना जीवो मारावशमाछे. पशुपखी आदिजीवोनी में केवी अवस्था करीछे, माटे हे कर्मनृपति मारा जेवा पुत्रो छता आपने चिंता करवी योग्य नथी.

अज्ञान पुत्र आ प्रमाणे कहीने मौन रह्यो, त्यारे कर्मनृपतिनी निंद्रा नामनी पुत्री सभासमक्ष कहेवा लागी के—

निंदाभाषण

हे पिताजी ! हु आपनी निंदा नामनी पुत्री छता आप केम उदास थाओछो. सर्व जीवोने हु वश करुछु अदेखाइ नामनी मारी माताए जन्म आप्योछे सर्व जीवोना गुणोने हु तेमा पेसता भस्म करुछु. ज्यां माता अदेखाइनो प्रवेश थयो त्या हु त्वरित हाजरी आपी प्रवेश करुछु.

मुनियो पंडितो के जे अमृत सरखा वचन वदेछे तेना मुख-मांथी खराब वचनोरूपी विष्टा कढावुछु. जे मनुष्यो परपुरुषना

गुणनी मशसारूप जळथी पोताना आत्माने पवित्र करेछे ते पुरुषो मारा वशमा थवाथी परनिंदारूप कर्मकादवथी तेओने मलीन करु छु निंदा चतुर्थ चडालछे एम सर्व लोको जाणेछे छता निंदा कर्या विना छूटको थतो नथी

सामासामी एक बीजानी निंदा करावी परस्पर वैर करावुछु, लडावुछु, अन नरक निगोदमा जीवोने घसडी लेइ जाउछु लोको सर्वना करता मने विशेष बळवान् गणेछे, कारण के परस्पर एक बीजानी निंदा करवाथी एक बीजाना मस्तकोने पण दडानी माफक मनुष्यो उडावी देछे, माटे हे कर्मराजाजी!!! तमारी पुत्री छता तमो केम चिंता करोछो

आवा निंदाना वचन साभळी अदेखाइ नामनी कर्मराजानी स्त्रीनो पुत्र कुसप नामनो हतो ते बोलवा लाग्यो के–हे पिताजी मारा जेवो आपणा सुभटो छता धर्मराजाना सुभटोनु कइ चालवानु नथी चार गतिना जीवोमा हु व्यापी रह्याछु, मारा सरखु कोइनु बळ नथी, वकील वकीलने कुसप, राजाराजाने कुसप, मुनि मुनिने कुसप, वेश्या वेश्याने कुसप, भीखारी भीखारीने कुसप, वेपारी वेपारीने कुसप, कुतरा कुतराओने कुसप एम सर्व जीवोने माहोमाहे कुसप करावनार हु छु, हे कर्मराजाजी हु कुसप नामनो महायोद्धो हिंदुस्तानना रहेवासीओमा पेठो त्यारथी हिंदुस्तानना लोकनी दुर्दशा थइ गइछे

जयचद्र अने पृथुराजने लडावी मारनार पण हुछु मुसलमानोए दिल्लीनी गादी लीधी ते पण मारा प्रतापथी कारण के ज्यारे हिंदुस्तानना राजाओने मांहोमाहे कुसप थयो त्यारे मुसलमानोए हिंदनु राज्य सर कर्यु मोक्षमार्गमा चालनार साधुओनो पण कुसप करावी कुमार्गे चलावनार हुछु ज्या पेठो कुसप त्यां

मरा नहि जप, ए वचन हु सत्य करुछु. कुसपथकी माहोमाहे मनुष्य लडेछे एक बीजाना मस्तक छेदेछे, एक बीजानी निंदा करेछे, क्रोध, मान, माया अने लोभ पण ज्यां हु कुसपछु त्या वासो करे छे, चोरासी लाख जीवयोनीना जीवोने हु अनादिकाळथी मारा वशमा राखुछु. हाल हिंदुस्तान देशनी नवळी स्थीति करनार पण हुछु. ज्या में प्रवेश कर्यो त्याथी सप नामनो योद्धो पण पोतारा गणी जायछे, कोइ वखत कोइ देशमा वधारे रहुछु अने कोइ वखत कोइ देशमा थोडो रहुछु, जीवो बिचारा सप करवाने घणी महेनत करे, कोन्फरन्स भरेछे, सभाओ स्थापेछे अने बीजाओने कहेछे, के भाइओ सप करो पण मारु मूळ काढवु घणु मुश्केलछे, ज्याथी कुसप काढवानी तैयारी सप योद्धाओनी होय त्या तो कुसप भयरहीत रहेछे मोटा मोटा मुनिराजो भाषणो आपीने थाक्या पण मारु मूळ कोइ उखेडी शक्यु नहि. वखते मुनिओमा पण हु लाग जोइने पेसी जाउछु अने मुनि मडळमा पण कुसपनी सत्ता चलावु छु, जे जीवो मारा वशमाछे तेमने काष्टनी पुतळीनी पेठे चारगतिमा नचावुछु, मारी अदेखाइ माता विना हु एकलो रही शकतो नथी.

अमेरिका इंग्लांड वगेरमा कुसप नथी तो ते लोको सुखीछे पण ज्यारे हु त्या पगला भरीश त्यारे ते लोकोना बार वगाडीश, सपीने जीवो वर्ते ते मने सारु लागतु नथी नबळा मनना माणस उपर हु विशेष सत्ता चलावुछु विशेष शु. पर्वत उपर, रणमा, अग्नि विगेरेमा हु जीवोने प्रवेश करावुछु हे कर्मराजाजी मारा जेवो पुत्र छता आम केम चिंता करोछो.

आवु कुसपनु वचन साभळी अदेखाइ नामनी तेनी माता सभा समक्ष भाषण करवा लागी के, हे मारा प्राणप्रिय तमो मारा छता केम चिंता करोछो.

अदेखाइ परस्पर करावनी ए मारो धर्मछे गुणीना गुण देखी माणसो अदेखाइ करेछे चारगतिना जीवोमां हु आविर्भावे वा तिरोभावे वसुछु

वेपारी वेपारीने, राजा राजाने, वकील वकीलने, साधु साधुने हु माहोमाहे अदेखाइथी कर्मरथ फळ प्राप्त करावुछु.

मारा वश थएला जीवो नरक निगोदमां जइ दारुण भोगवेछे इत्यादि अदेखाइना वचन सांभळी कर्मराजा खुशी थयो तेवामां सभामां बिराजमान मिथ्यात्व नामनो कर्मराजानो योद्धो बोल्यो उठयो के, हे कर्मराजाजी मारा छता आप केम चिंता करोछो हु मिथ्यात्व नामनो योद्धो ससारमां मशहूरछु, कर्मरथ जीवोने करावनार मुख्यताए हु छु, मारी सत्ता संसारी जीवोपर सारी रीते बेठेलीछे मारु मुख्य काम ए छे के, भव्य जीवोने शुद्ध देव शुद्ध गुरु अने शुद्ध धर्मनी श्रद्धा थवा देतो नहीं, कोइ विरला प्राणी तीर्थंकरनो कहेलो सत्य मार्ग जाणी शकेछे, जुओ में केटला जीवोनी पक्षी ता बुद्धि करी नाखी छे के ते बिचारा पच महाभूत स्वरूप जीवछे ते थकी अन्य आत्मा नथी एवु विचारी मानी चार्वाकमतरूप राक्षसना मुखमां प्रवेश करेछे

में केटलाक जीवोने एवा तो फसाव्याछे के– ते पामर जीवो जीव अजीव पुण्य पापने स्वीकारता नथी, मोक्ष मानता नथी खावु पीवु, हरवु, फरवु इत्यादि कार्यमां धर्म मानेछे–केटलाक जीवोने एवा तो में फसाव्याछेके–अज्ञानपणामां मुक्ति मानेछे अने तेओ अज्ञानवादी कहवायछेके–अज्ञानमां सुखछे ज्ञानथी राग द्वेष उत्पन्न थायछे एम मानी पामर चतुर्गति संसारमां अनंतश परिभ्रमण करेछे

वळी में केटलाक जीवोने एवातो फसाव्याछे के– बोध धर्म

स्वीकारी पोताने सुखी मानेछे अने ते पामर प्राणी मारा पासमा थी छूटी शकवाना नथी

वळी में केटलाक जीवोने एवी रीते फसाव्याछे के ते इशुए चढावेला इशुखीस्त धर्मरुप अन्याय कूपमा गाडरीया मवाहनी पेठे टपोटप कूदी पडेछ अने त्या अत्यत दुःख भोगवता सदा काळ जीवन गुजारेछे. वळी में केटलाक जीवोने एवा तो मुझाव्याछे के वीचारा धनना, स्त्रीना, पुत्रना लोभमा तत्त्व मानेछे अने ते पोताना आत्मानु हित साधी शकता नथी वळी में केटलाक जीवोने एवा तो फसाव्याछे के-सत्य जैनधर्म पाम्या छता पण तेमा शकादिक करी आपणी सत्तामा वर्तेछे. वळी हु तत्त्व समज्या जीवोने पण मिथ्यात्वमा घेरुछु जेटला ससारमा मतमतातर उत्पन्न थायछे ते मारी सत्ताथीज थायछे ससारी सर्व जीवोने हु मारा वशमा राखुछु माराथी छटकी कोइ वीरपुरुष मुक्तिमा जइ शकेछे हु सर्व जीवोमा व्यापीने रह्योछु. इत्यादि मिथ्यात्व योद्धाना वचन साभळी कर्मराजा हर्ष पाम्यो तेवामा अविरति नामना मोहराजाना योद्धाए भाषण कर्यु के अरे सभाजनो हु कोने ससारमा भटकावतो नथी चोथा गुणठाणा सुधी तो मारु स्वतंत्र राज्यछे देवताओ तथा नारकी जीवो तथा तिर्यच जीवो माय: सर्व मारा वशमा वर्तेछे.मनुष्योमा पण आर्यजनो कोइ मारा अपाटामाथी बची गया हशे आम अविरतिनु बोल्यु साभळी कषाय नामनो योद्धो छाती ठोकीने बोली उठयो के, अरे ज्या सुधी कषाय एवु मारु नाम दुनियामा विद्यमानछे त्या सुधी कोइनो भय राखवो नहीं, मारु रहेठाण चौद राजलोकमाछे, हु कोइ जीवने मुक्तिनगरीमा जवा देतो नथी, सर्व जीवो कषायना वश थइ पोतानु आत्महित करवु चुकेछे. सामासामी जीवोने हु लडावी मारूछु एक बीजाना मस्तक

कषावुछु सामासामी वेर करावुछु, माता, पुत्र, स्त्री विगेरनो निकट सबध करावी आपनार हुछु ससारी जीवोने उपरना गुणठाणे च-ढवा देतो नथी. ससाररुपी वृक्षनु बीज छछु हु अनादिकाळथी ससारमा वसुछु कोइपण काळेससारमांथी मारु रहेठाण दूर थवानु नथी आ प्रमाणे कषाय सुभटना वचन साभळी कर्मराजा खुशी थयो. त्यारे योग नामनो सुभट बोल्यो के मारु पराक्रम कोण नथी जाणतु हु सर्व जीवोने पाप बधावी चोराशी लाख जीवयोनिमां भटकावुछु हु सूक्ष्म रीते दरेक जीवोने व्यापीने रहुछु हु आत्मानी परमात्मादशा थता विम्नूटो पडुछु, माटे हे कर्मराजाजी तमो जरा मात्र पण भय पामशो नहि इत्यादि सुभटोनु बोलवु सां-भळी कर्मराजाने जुस्सो चढयो हिंमत आवी

सर्व सुभटोने कर्म राजाए हुकम कर्यो के तमो हवे सर्व स-सारी जीवोने वशमा राखो के जेथी धर्मराजाना सुभटोनु कइ पण चाली शके नहि अने सर्व जीवोमा व्यापी ससारी जीवोने धर्म करतां अटकावो

आवा कर्मराजाना वचन साभळी सर्व सुभटो जुस्साभेर पोत पोतानु कार्य बजाववु तत्पर थया

हवे आ वखते धर्म शु करेछे ते कीचे मुजब --

धर्मराजा

विवेकसभा, दयामाता, धैर्यपिता, शातिस्त्री, उपयोगमत्री, सम-कितसेनापति, क्षमापुत्री, ब्रह्मचर्यपुत्र, क्षमादिधर्मनृपतिनासुभटो, मुक्तिनगरी

एकदीवस धर्मराजा विचार करेछे के--अहो हु सर्व जीवोने मुक्तिनगरीमां क्यारे लेड जइश अनादिकाळथी हु ससारी जीवोने मुक्तिपुरीमां लेइ जाउछु, तोपण अद्यापि पर्यंत पार आवतो नथी.

कर्मराजाना सुभटो जीवोने एवातो सपडावेछे के-भाग्ये जावो मारा नगरमा आवी शके-सर्व जीवोमा कर्मराजाना सुभटो व्यापी रह्याछे. कर्म सुभटोए ससारी जीवोने एवी रीते अध कर्याछे के-ते जीवो मुक्तिनगरीमा आववा इच्छा पण करता नथी अरे हवे केम करवु. आम धर्मराजा उडो विचार करी चिंता करेछे.

त्यारे उपयोगमत्रीए इगिताकारथी जाणीने पूच्छयु के-हे प्रभो आज आप मोटी चितामा पडया होय तेम देखाओछो. ते चिंता शीछे ते कृपा करीने कहो—

एम उपयोग मत्रीनी प्रार्थनाथी धर्म नृपतिए सर्व हकीकत कही सभळावी—

त्यारे उपयोग मत्री बोल्यो के-हे प्रभो मारा छता आपने चिंता करवी घटे नहि. विवेकसभा भरात्री धर्मराजा निस्पृह सिंहासन उपर बिराजमान थया. मुख्य उद्देशथी धर्म राजाए वातचर्चा अने कयु के-हे सुभटो तमो आळसु थइ केम बेशी रह्याछो कर्म राजाना सुभटो सर्व जीवोने भमावी चारगतिमा परिभ्रमण करावेछे. सत्यमोक्षमार्गनी समजण पडवा देता नथी तमो मारा खरा सुभटो होय तो कर्मराजानो नाश करी भव्यजीवोने मुक्तिपुरीमा लेइ जाओ आ मारी सभा समक्ष हितशिक्षाछे आवा नीतियुक्त मिष्ट वचनामृतनु श्रवण करी धर्मराजानो अनादिकाळनो उपयोग मत्री गभीर वाणीथी सभा समक्ष कहेवा लाग्या के-

हे धर्मनृपति, हु निरतर आपनी सेवामा हाजरछु. ज्या आप धर्मराजा त्या हु उपयोग अवश्य

आपनो सर्व कारभार हु करछु. माटे कहेवायछे के-उपयोगे धर्म-उपयोगविना आप धर्मनृपति नथी. एम अनुवाद प्रसिद्धछे. हु आविर्भावे तथा तिरोभावे आपनी साथे सदाकाळ जीवोमा वसुछु

मारी शक्ति प्रगट थता मोहादि शत्रुओ नाश पामेछे जीवने क्षपक श्रेणि उपर हु चढावुंछु क्षपक श्रेणि चढता कर्मशत्रुनो नाश थायछे मोक्षपुरीमा पण प्रत्येक आत्मानी साथ भिन्नाभिन्न स्वरूपे हु वसुछु माराथी दरेक आत्माओ स्वपरने जाणी शकेछे मारो नाश कोइथी थतो नथी. माटे हे धर्मराजाजी आप जरामात्र चिंता करशो नहि आवां उपयोग मतीना वचनो सांभळी धर्मराजा खुशी थयो, त्यारे धर्मराजानी माता दया सभा समक्ष बोलवा लागी के–हु ज्या सुधी विद्यमानछु त्या सुधी कोइनु कइ चालनार नथी हु सर्व जीवोमा प्रथम वासकरुछु हु ज्या छु त्या तारी हयातीछे द्रव्य अने भावथी मारु वे प्रकारे वसवु थायछे दया, धर्मनी माता जगत्मा कहेवायछे तु मारो पुत्रछे हु ज्यां छु त्या त्हारी हयाती रहेवानीछे, माराथी हिंसा विगेरे कर्म राजानो परिवार दूर नासेछे, सर्व प्राणीयोमा थोडी घणी स्थीति करुछु, अने मोक्षपुरी जीवो ने पमाडछु, माटे हे पुत्र सुखेथी राज्यधुरा धारणकरो इत्यादि दयाना वचनो श्रवण करी धर्मराजाना मनमां धैर्य स्फुर्युं तेवामा धैर्य पिता धर्मपुत्र उपर स्नेहदृष्टि वर्षावता वचनामृतनो वरसाद वरसाववा लाग्यो हे धर्मपुत्र धैर्यथी तारी उत्पत्ति छता तमे केम अधीरा बनोछो कर्मशत्रुओ साथे हु हिंमतथी लडी जीवोने क्षपकश्रेणि प्राप्त करावी आपुछु हे धर्म तारा सुभटोने धैर्य आपुछु अने रणसंग्राममा कर्मनो पराजय करुछु, कर्मराजानी साथे युद्ध थायछे, अने तेना नगरमाथी अनेक जीवोने मुक्तिनगरीमा लेइ जइए छीए माटे धैर्य धारण करो त्यारबाद शांति स्त्री पोताना स्वामी धर्मराजाने नम्रतापूर्वक विनयथी कहेवा लागी के–हे स्वामिनाथ आप चिंता केम करोछो, मारो हु धर्म सदावाउ वजावुछु, हु सर्व जीवोने मोक्ष नगरी तरफ खेचुछु सर्व जीव कर्मना आधीन थया छे तोपण मारी सगत करवा चाहेछे हु तेमने शांति मेळववा लल-

चावी कर्म मपचथी दूर रहेवा वारवार मनोद्वारा कहुछु जे जीवो ससारनी हवाथी दूर रहेछे अने ससारने उळता अग्नि समान गणेछे ते जीवोमां हु वास करुछु अने ते जीवोने शाश्वतपद प्राप्त करवामा सहायी थवुछु. घणा जीवो मारी सहायथी मुक्तिनगरीमा गया जायछे अने जशे. माटे आप निश्चित रहो. त्यारबाद सकल धर्म सेनानो उपरी "सम्यक्त्व सेनापति" धर्मराजाजीने नमन करि मधुरवाणीथी समाजनने आश्चर्य पमाडतो कहेवा लाग्यो के हे धर्मराजाजी आपनी सेनानो हु उपरीछु. मारो वास सकळ भव्यात्माओमांछे. मारा विना कर्मना राजा योद्धाओ रणभूमिमाथी पाछा हठता नथी, सकळकर्म सैन्यनो हु नाश करुछु. जे आत्मामा हु उत्पन्न थाउछु त्याथी मिथ्यात्व योद्धो नाशी जायछे पछी भव्यात्मा सरलताए गमन करतो छतो मुक्ति नगरीमा पहोचेछे मिथ्यात्वनो नाश करवो एज मारु मुख्य कामछे जे जीवो मिथ्यात्वना जोरे दुनीया परमेश्वरे बनावीछे, पाछो प्रलयकालमा दुनीयानो नाश थायछे परमेश्वर जीवोने सुख दु:ख आपेछे एम मानी चारगतिमा भटकनारा जीवोने सुखदु:ख आपेछे ते जीवोनो हु उद्धार करुछु हु तेजीवोमा वास करी तेमनी सारी बुद्धि करुछु परमेश्वर जगतनो बनावनार नथी, जगत् अनादिकाळथीछे जीवो सर्व परमात्मा सदृशछे, कर्मनायोगे जुदी जुदी गतिमा भमेछे जीवोने कर्म अनादिकाळथी लाग्युछे जीवो अनतछे अनादिकाळथीछे कर्म नाश थता जीवनी मुक्ति थायछे आ प्रमाणे जीवोनी सारी बुद्धि करी मिथ्यात्वनो सग दूर करावी मोक्षनगरीतरफ गमन करावुछु. केटलाक जीवो मिथ्यात्व योद्धाना ससर्गे ब्रह्म ब्रह्म स्वीकारी अन्यने माया तरीके कल्पी भवब्रह्माडमा भटकेछे. तेमने हु शुद्धश्रद्धा अर्पि आत्महितार्थे आत्मा अने तेने

भटकावनार कर्मछे एवी श्रद्धा करावी कर्म नाश करवा तरफ ते जीवोनी वृत्ति लगुरु वळी हु इश्व-परमेश्वरनो दीकरोछे तेने सेवो ते तारशे इत्यादि भ्रमपाशमां फसाएला जीवोने विवेकचक्षु आप सत्य मोक्षमार्ग देखाडी आत्मतत्त्वनु भान करावी शुद्ध बुद्धिथी परमात्मपद प्राप्त करे तेम योजुलु, वळी हु केटलाक जीवोने आत्मा क्षणिकछे. क्षणमां क्षणमा जुदो जुदो आत्मा उत्पन्न थायछे. एम माननारा जीवोनु मिथ्यात्व सहरी सत्यमति अर्पी आत्मा क्षणिक नथी आत्मरूप व्यक्तिनो नाश थतो नथी ज्ञेयना पलटवे ज्ञाननु पलटावयु थायछे तेथी आत्मामा थतो उत्पाद व्यय तेनी अपेक्षाए पर्यायार्थिक नयमते आत्मा अनित्यछे एम सम्यग्बोध जीवने अर्पुलु अने द्रव्यार्थिक नयनी अपेक्षाए आत्मा नित्यछे एम शुद्धबोध समर्पी भव्य जीवोने मुक्ति नगरी दु भाष्या प्राप्त करायुछु वळी हु केटलाक जीवो मिथ्यात्व सुभटनो सग पामी पचभूत विना व्यतिरिक्त आत्मा नथी एम स्वीकारीछे तेवा जनोने शुद्ध श्रद्धा सद्गुरु सगे करावी आत्मा पचभूत थकी न्यारोछे सुख दु ख भोक्ताछे कर्मनो कर्ताछे एम सम्यक्त्व रत्न अर्पी मोक्ष मार्ग वाही करूछु वळी जे जीवो नित्य एकात आत्मतत्त्व मानी आत्माने कर्मबध स्वीकारता नथी आत्माकर्मनो कर्त्ता नथी अने भोक्ता नथी इत्यादि वक्ताओने पण अपेक्षाए सत्य समजावुछु कर्मनो कर्त्ता अने भोक्ता आत्माछे, आत्मा एकात नित्य नथी एकात नित्य वस्तु आत्मा जो होय तो पछी नाना विध शरीरमां वशनारा जीवो सुखी दु खी अवस्थावाळा देखायछे ते केम बनी शके, माटे आत्मा एकांत नित्य नथी, जो एकात नित्य आत्मा मानीए तो पछी शिर्षमुडन व्रतारोप विगेरे पण शा कारणथी करवुं जोइए माटे आत्मा स्वव्यक्तिथी नित्यछे अने

पर्यायना पलटवे करी अनित्यछे नित्य अने अनित्य एवे धर्मवाळो आत्माछे तेने कर्म लागेछे कर्मपण मिथ्यात्व अविरति कषाययोगे करी लागेछे ए कर्मनो नाश थता आत्मा परमात्मपद प्राप्त करेछे ए आदि शुद्धज्ञान अर्पी सा य मुक्तिपदार्थे जीवोने मेरछु अने स्वस्वरूपने प्राप्त करावुछु केटलाक जीवो स्त्री पुत्र धन आदिथी पोताने सुखी मानेछे ते जीवोनी दृश्य क्षणिक पदार्थोमांथी सुखनी बुद्धि दूर करी अदृश्य आत्मस्वभाव सुखछे एम शुद्धबोध देइ आ क्षणिक पदार्थोमा मिथ्या भ्रा थतो दूर करावुछु अने काम क्रोध लोभ भय हास्य शोक विगेरेथी जीवोने पृथक करी स्वस्वरूपे निष्ठा करावुछु

अहितमा हितबुद्धि अने हितमां अहित बुद्धिरूप जे मिथ्याज्ञान तेनो हु नाश करुछु दरेक जीवोने हु सम्यग्ज्ञान अर्पुछु एम अनता जीवोनु भूतकाळे मुक्ति मनि लक्ष दोर्यु अने वर्तमानकाळे लक्ष दोरुछु अने भविष्यकाळे दोरीश हु दरेक जीवशक्तिमा वसुछु मिथ्यात्व सैन्य माराथी ना ाभाग करेछे जेम सूर्यनो उदय थतां अधकारनो नाश थाछे अने ते अ ाकार क्या गयो ! तेनी जेम मालूम पडती नथी तेम सूर्यसम मारा प्रकाशथी मिथ्यात्व भागी जायछे हु भव्य जीवोमा स ा वसुछु सम्यक्त्व विना कोई माणस मुक्ति पामी शकतो न ी कर्मराजानु सैन्य माराथी दूर नासेछे माटे हे धर्मराजाजी ! तमो सुखेथी निश्चित रहो आ प्रमाणे सम्यक्त्व सेनापति वद्या बाद धर्मराजानी क्षमा नामनी पुत्री सविनय पिताजीने नमन करी मधुर भाषाए कहेवा लागी के—हे धर्मपिताजी हु एक आपनी नानी पुत्रीछु आपनी पवित्र सेवा हु दरेक आत्माओमां स्थिति करती बजावुछु. हु अनादिकाळथी भव्य जीवोमा वसुछु. हु

व्यवहारे करी द्रव्यक्षमा भावक्षमा उपकारक्षमा अपकारक्षमा इत्यादि रूपांतरे करी ओळखाउछु तीर्थंकर महाराजाए मुक्तिमार्ग मरूप्यो तेमां मने यतिना गुणोमां मुख्य करी स्थापीछे पुल्लिंगताथी ओळखातो क्रोध नामनो सुभट माराथी नाश पामेछे. अनेक कर्मना योद्धाओ माराथी समूला नाश पामेछे जे जीवोमा मारो वासछे, त्यां क्रोध अहंकार अदेखाई हिंसा विगेरेनु जोर चालतु नथी दुनीयामा हु सत्पुरुषोमा वास करुछु अने माराथी दरेक जीवो मतिष्ठा पामी कर्मदल हणी क्षपकश्रेणि प्राप्त करी सम्यक्त्व सेनापतिद्वारा मुक्तिपुरीमां सुखे पहोचेछे मुक्तिनगरीमा जवानी इच्छावाळा पहेलां मारु सेवन करेछे अपराधी जीवोपर गुस्से थता नथी अने तेमना अपराधो माफ जीवो करेछे ते पण मारा प्रसादथीज समजवु क्षमा थकी जीवो शान्तिने पामेछे क्रोधनो नाश थायछे दरेक जीवो उपर दयाना आर्द्रभाव थायछे परस्पर जीवोना वैर विरोधने हु टाळछु दरेक मनुष्यनु मन प्रफुल्ल राखुछु. अने मुक्तिनगरीमां जवा माटे माराथी घने तेटलु अवश्य करुछु मारी सहायथी अनंता जीवो मुक्ति गया, जायछे अने जशे माटे हे पिताजी! तमो हर्षाओ अने शोक त्यागो आ प्रमाणे क्षमा पुत्री बोलीने तुष्णीभावने पामी बाद ज्ञान नामनो महाबलवान् राजधुरावाही यथायोग्य विनयपूर्वक पिताजीने नमन करी हर्षचित्ते प्रसन्नवदने गंभीर वाणीथी सभाने चमत्कृति पमाडतो बोलवा लाग्यो के-हे पिताजी! अने हे सभाजनो! हु धर्मराजानो पुत्रछु एम आ बाळगोपाळ सर्व जगत्निवासीओ जाणेछे. मारु बळ केटलुछे ते कंइ विशेष स्वमुखे कहेवाथी शु? तोपण हु स्वफरजो केवी रीते अदा करुछु ते सभा समक्ष निवेदन करुछु, हु दरेक जीवोमां आविर्भावे करी वा तिरोभावे

करी स्थिति करुंछु हुं अनादिकाळथी आत्मव्यक्तिओमां वसुछु, ज्ञानावरणीय कर्मना घणा जोरथी पण नरकनिगोद तिर्यंचादि भवोमां हुं समूळ नाश पामी शकतो नथी. तेम हुं पण जेमा सदाकाळ रहुछुं. एवु आत्म व्यक्तिरूपस्थान असख्य प्रदेशी कदापि नाश पामी शकतु नथी. तेम आप पण आत्मस्थानमांथी नाश पामता नथी. चान्त लब्धियोगे हुं ज्ञानावरणीयादि कर्मने हठावतो मारु शुद्ध स्वरूप तथा आत्मानु शुद्ध स्वरूप समजी कर्मनो नाश करूछु आकाशस्थित सूर्यप्रकाशथी प्रत्येक वस्तुओ स्पष्टपणे भासे छे. तेम मारी शक्तिथी लोकालोक स्पष्टपणे भासेछे हुं प्रत्येक वस्तुओनु यथातथ्य स्वरूप जाणुछु अने मारी सत्ता थशा बाद कर्मना सुभटोनो समूळथी नाश करछु कर्म आठ प्रकारनांछे. १ ज्ञानावरणीय, २ दर्शनावरणीय, ३ वेदनीय, ४ मोहनीय, ५ आयुष्य, ६ नामकर्म, ७ गोत्रकर्म, ८ अन्तरायकर्म ए पूर्वोक्त कर्म रागादिक योगे आत्मा आकर्षेछे कर्म जडछे, चतुर्गति भ्रामककर्म छे जगत्मां आत्माओ अनंताछे प्रत्येक आत्मामां अनंति शक्ति रहीछे, शाश्वत, अज, अमर, निर्लेप, निस्संग आत्मस्वरूपछे.

जीव तथा अजीव तत्वने हुं जाणी शकुं छुं हुं व्यवहारे करी मतिज्ञान २ श्रुतज्ञान ३ अवधिज्ञान ४ मन.पर्यवज्ञान ५ केवलज्ञान आदि रूपांतरो पामु छु मारु शुद्ध स्वरूपतो केवळज्ञान रूपछे. लोकालोकनु स्वरूप पण हुं जाणुछु कर्मनो नाश पण हुं करू छु स्याद्वाद धर्म आत्मामां रहेलोछे तेपण माराथी जणाय छे. मिथ्यात्व ते पण हुं जाणी तेनो त्याग करी आत्माने कर्म थकी छोडावु छु मिथ्यात्व, अविरति, कषाय, अने योग पण मारी प्रबळ सत्ताथी नासेछे इच्छा, मोह, माया, काम, क्रोध, लोभ, पण माराथी नाश

पामेछे हु पोतानो पण पोतानी मेळे प्रकाश करूछु माटे लोको सूर्यनी उपमा मने आपेछे, कर्म रिपु सकळ सैन्यनो हु कल्पांत काल वायुनी पेठे क्षणमां नाश करूछु. में अनंता जीवोने मुक्ति नगरी प्राप्त करावी, करावुछु, ने करावीश, माटे हे पिताजी ! मारा बेठा आप चिंता करो ते अनुचितछे, आ प्रमाणे ज्ञानपुत्रे भाषण कर्यु. त्यारबाद ब्रह्मचर्यनामनो धर्मराजानो पुत्र महा पराक्रमी मख्याति पामेल सविनय पिताजीने नमन करी गंभीर वाणीथी बोल्यो के आ दुनियामां-ब्रह्मचर्य नामे करी हु प्रसिद्धताने पाम्यो छु

परस्पर मैथुन सबंधनो हु त्याग करावुछु हु अनादिकाळथी जीवोमां वास करूछु तथा मारी विरति नामनी नेता बसेछे तेनी साथे हु पण वसुछु ज्ञान तथा वैराग्य मित्र मने साहाय्य आपेछे नवविध ब्रह्मचर्य गुप्ति धारक जीवो कामनो पराजय करे छे मारा वासथी प्रत्येक मनुष्योना शरीरनी आरोग्यता वृद्धि पामेछे, धर्म कृत्यमां धैर्यता प्रेरक छुछु सर्व व्रतोमां समुद्रनी उपमाने हु धारण करूछु मारा वासथी मनुष्यो वचन सिद्धि कीर्तिमान् अष्ट सिद्धि आदि प्राप्त करेछे मोहादि शत्रुओ पराङ्मुख थायछे आसन्न भव्य जीवोमां ह विशेषत वास करूछु, मारु अवलंबन करी अनंत जीवो मुक्ति गया जायछे अने जशे, माटे हे पिताजी ! आप चिंतात्यागी धैर्य धारण करो अने सर्व सुभटोने धैर्य आपो

आम ब्रह्मचर्यना कथन पश्चात् सवरसज्ञक महारथि योध शौर्य वाणीथी सभा समक्ष बोल्यो के-हे धर्म राजाजी ! हु सत्तावन रूप करी कर्मारिनो समूलत नाश करूछु जे छिद्र द्वारा कर्म सैन्य जीवोमां प्रवेशेछे ते छिद्रोनो हु रोध करूछु तेथी धर्म सैन्यनु कइ

चालतु नथी, मन वचन अने कायाना व्यापारो जे अशुद्ध परिणतिमां परिणम्याछे तेनो हु नाश करुछु

मारी हयातीमा पाप अने पुण्य आत्माने लागी शकता नथी. कर्मनो पराजय करी क्षपक श्रेणि उपर चढावी त्रयोदशम गुणस्थानक प्राप्त करावी मुक्ति नगरमा प्रवेश करावुछु मारो वास पचेंद्रिय गर्भज मनुष्योमां विशेषतः आविर्भावेछे. क्रोध, मान, माया, लोभ, अने हास्यपट्कनो त्वरित नाश करुछु आर्तध्यान अने रौद्रध्यान रूप योद्धाओनो हु क्षणमा नाश करुछु कृष्ण लेश्या, कापोत लेश्या, नील लेश्या, विगेरेनो समूलतः नाश करुछु, आत्मानो हु शुद्ध स्वभाव अर्पुछु, कर्म रहीत करी जीवोने शिवस्थान प्रति मोकलवानु हु कार्य बजावुछु, मारा अवलंबनथी अनंतजीवो मुक्तिपद पाम्या अने पामशे, पण अभव्य जीवोने हु मुक्तिपद पमाडी शकतो नथी निरुपाधिमय मारो स्वभावछे, माराथी कर्मशत्रु थरथर धुजेछे ज्या मारो प्रवेश त्या उपशम विवेक विनय शांति विगेरेनो प्रचार थायछे, इत्यादि वाणी वदी संवरयोद्धो तुष्णीभाव पाम्यो त्यारे निर्जरानामनो, महायोद्धो विनयपूर्वक धर्मराजाने नमन करी बोल्या के–हे धर्मराजाजी ! आप सेवकनी वाणी प्रसन्नचित्तथी सांभळो हु आपनो योद्धोछु

हु आपनु कार्य सदाकाल बजावुछु, बाह्य अने आभ्यन्तर एवे रूपांतरने हु पामुछु अनंतकर्मनो नाश हु क्षणमा करुछु. निकाचित कर्म पण माराथी क्षय पामेछे आत्माओमां मारु रहेवानु स्थानछे. काष्टसमूहने जेम अग्नि बाळी भस्म करेछे तेम कर्मरूप काष्टसमूहने पण हु बाळी भस्म करुछु. तद्भव मुक्ति पामनार तीर्थंकरो पण मारो आश्रय करी कर्म नाश करे छे. नरसुरपद्वीओनां सुख पण मारा आलंबनथी पमायछे, माराथी मनुष्यो अष्टसिद्धि अने नवनिधि प्राप्त करेछे.

पण याद राखवुं के जे जीवो मने सेवेछे तेओनां क्रोध, छिद्र देख्या करेछे. अकाम अने सकाम ए बे भेदे मारु प्रवर्तनछे. चार हत्याकारक जीवोनो पण माराथी उद्धार थायछे. अनंताजीवो धर्म क्षपाती मुक्तिपद पाम्या अने पामशे तेमां मारो प्रभाव जाणवो माटे हे धर्मराजाजी ! आप स्वस्थ थाओ. आपणुं सैन्य एवुंतो बलवान् छे के त्यां कर्मराजानुं कइ चालवानुं नथी

आ प्रमाणे धर्मराजाना सुभटोए पोतपोतानुं पराक्रम वर्णव्युं त्यारे धर्मराजा अत्यंत हर्षायमान थयो अने मनमां समज्यो के मारु सैन्य प्रबलछे

आ प्रमाणे अत्र धर्मनृपनी सभामां वृत्तांत चालेछे त्यारे कर्मराजानी सभामां ते प्रमाणे धामधूम चाली रहीछे मिथ्या चेतना नामनी कर्म राजानी दासीए कर्मने धर्मनी सभामां बनेली सर्व हकीकत कही त्यारे सम्यक् चेतना दासी धर्मनी अग्रे कर्म नृप सभामां बनेली सर्व हकीकत कही परस्पर युद्ध कार्यनी सर्व सामग्रीओ तैयार थवा लागी धर्मनृपे पोताना सुभटोने कह्युंके—मारा प्रिय सुभटो ! तमो शत्रु सैन्यनो पराजय करो, मारनाम अमर राखशो, वळीतमारा जेवा शूरा सुभटोनुं पराक्रम रण संग्राममां मालुम पडशे माटे चतुराइथी युद्ध करवुं

ते प्रमाणे कर्म राजाए पण सर्व सुभटोने वीर रसनो वाक्यो कथी शूर चडाव्युं सुभटो पण परस्पर पराक्रम बतावचा आतुर थइ रह्या—परस्पर युद्ध चाल्युं तेमा श्रद्धा रूपी सुभटे मिथ्यात्व रूपी योद्धाने हराव्यो. समकित सेनापतिए मोह प्रधाननी शक्तिनो नाश कर्यो, क्षमा पुत्रीए क्रोधनो नाश कर्यो, जीव चोथा गुणठाणा आदि गुणस्थानक चडवा लाग्यो विरतिए अविरतिनी शक्ति नाश करी

ज्ञाने अज्ञानने नाश कर्यो. दयाए हिंसानो नाश कर्यो, शांतिथी तृष्णा नाश पामी कर्म राजानु सैन्य नाश पामतु पाछु हठवा लाग्यु. ब्रह्मचर्य पुत्रे अब्रह्मचर्यनो सर्वथा नाश कर्यो–परगुण प्रशंसाए निंदानो नाश कर्यो. ज्ञाने कषायनो पण स्थिर परिणामने साहाय्य आपी नाश कराव्यो धर्म ध्यान रूप योद्धाए आर्तध्यान अने रौद्र ध्याननो नाश कर्यो. संतोषे तृष्णानो नाश कर्यो, क्षायिक समकित पामी जीव स्वस्वभाव शक्ति पामी आत्म रूप प्रकाशवा लाग्यो. हास्य, रति, अरति, भय, शोक, दुगंछा, स्त्रीवेद, पुरुषवेद, नपुसक, वेद रूप कर्म सैन्यनो नाश अप्रमाद तथा ध्यान योद्धाए कर्यो. पंच प्रकारनी निद्रानो तथा चक्षु दर्शनावरणी आदिचारनो तथा ज्ञानावरणीय कर्मनो तथा अंतरायनो नाश उपयोग मंत्रीनी साहाय्यथी शुक्लध्याने कर्यो. आत्मा तेरमे गुणठाणे जइ अनंत चतुष्टयथी शोभवा लाग्यो. अंते अघाती कर्मनी प्रकृतिनो पण नाश करी मुक्तिपुरीमा गयो. एम धर्म राजानो जय जयकार थयो अने कर्म राजानु सैन्य नाश पाम्यु आत्मा परमात्म दशा पामी निर्भय थयो अनंत जीवो एम कर्मनो नाश करी मुक्तिमा गया अने अनागत काले अनंत जीव मुक्तिमा जशे. कर्मनो नाश उपयोग दशाए अनंता जीवो करेछे अने करशे. जीव कर्मनो नाश करतां क्षायिक भावनी नवलब्धियो पामेछे.

क्षायिक भावनी नव लब्धियोना नाम

१ क्षायिकसमकित, २ क्षायिकचारित्र, ३ अनंतज्ञान, ४ अनंत दर्शन, दान, लाभ, भोग, उपभोग अने वीर्य ए रीते नवलब्धियोनी प्राप्ति गुणठाणानी हद प्रमाणेछे

हवे संबंध दर्शावता कथायछे के–उद्यमथी कर्मनोक्षय थायछे, उपशमभाव ... क्षायीकभावनी प्राप्ति पण उद्यमथी

थायछे शास्त्राभ्यासनो उद्यम करतां पचमकारे स्वाध्याय करतां ज्ञानावरणीयकर्मनो क्षयोपशम थायछे. तेम प्रत्येक घातीकर्मनो नाश उद्यमथीछे धर्मध्यान अने शुक्लध्यानरूप उद्यमथी ज्ञानीओ कृत्स्न कर्मनो क्षय करेछे चारित्रनो खप करतां चारित्र मोहनीयनो पण नाश थायछे माटे पचमकाळमा पण भव्यजीवोए पुरुषार्थ करवो. पुरुषार्थना पण अनेक भेदछे माटे सत्यपुरुषार्थ ग्रहवो जोइए. समकितनी प्राप्ति विना सघळी परिणति थती नथी अने समकित विना पुरुषार्थ निष्फळ जाणवो समकित मोक्षनगरनु द्वारछे समकितविना कोइ जीव मोक्षमा गयो नथी अने जवानो नथी समकित विना ज्ञानावरणीय कर्मनो क्षयोपशम पण अज्ञान तरीके लेखायछे एटले मतिज्ञानावरणीय कर्मनो क्षयोपशम मति अज्ञान तरीके गणायछे श्रुतज्ञानावरणीय कर्मनो क्षयोपशम श्रुतअज्ञान तरीके लेखायछे अने अवधिज्ञानावरणीय कर्मनो क्षयोपशम विभग ज्ञान तरीके गणायछे अने ज्यारे समकितनी प्राप्ति थायछे त्यारे तेनो क्षयोपशम सवळो परिणमेछे अने ते मतिज्ञान श्रुतज्ञान अवधि ज्ञान तरीके गणायछे समकित विना अभव्य जीव मुक्ति पामतो नथी बाह्य चारित्र पाळीने अभव्य जीव नवग्रैवेयक पर्यंत जायछे किंतु समकितविना भावचारित्र पामी शकतो नथी अने तेथी ते चतुर्गतिमा पुन पुन परिभ्रमण करेछे, समकितनो महिमा अपूर्वछे, पच प्रकारना मिथ्यात्वनो नाश थवाथी समकितनी उत्पत्ति थायछे. पच प्रकारना मिथ्यात्वनो नाश जिनागम साभळवाथी थायछे, सद्गुरुनी श्रद्धा भक्तिथी उपदेश श्रवण करता मिथ्यात्व नाश पामेछे, समकितनी प्राप्ति माटे आगळ षट्स्थानक कहेवामां आवशे समकितना पचप्रकारछे

१ उपशम समकित, २ क्षयोपशमसमकित, ३ क्षायिकसमकित,

४ वेदसमकित, ५ सास्वादनसमकित, अनतानुबधी क्रोध, मान, माया अने लोभ तेमज समकित मोहनीय मिश्र मोहनीय, मिथ्यात्व, मोहनीय ए सात प्रकृति सर्वथा क्षय थता क्षायिक समकितनी प्राप्ति थायछे

श्री जिन वचनज तत्त्वरूपछे वीतराग होवाथी एम सामान्य रुचिवाळा जीव ने द्रव्य सम्यक्त्व पणु स्फुट थायछे. अने नय निक्षेप प्रमाणना विचारथी तत्त्व श्रद्धावाळा जीवने भाव सम्यक्त्व पणु स्फुट थायछे अहिं द्रव्य शब्दार्थ कारणता अने भाव शब्दार्थ कार्यता रूप जाणवो एम श्री हरिभद्रसूरि कहेछे

श्री उत्तराध्ययन सूत्रानुसारे दशविध सम्यक्त्व कहेछे.

१ सत्य अर्थनी साथे समतिवडे जीवाजीवादि नव पदार्थ सबधी जे रुचि ते निसर्ग रुचि जाणवी.

२ परोपदेशवडे प्रयुक्त जीवाजीवादि पदार्थ विषयनी जे श्रद्धा ते उपदेशरुचि कहेवायछे

३ रागद्वेष रहित एवा पुरुषने आज्ञा वडे धर्मानुष्ठानमा रुचि थाय तेने आज्ञारुचि समकित कहेवायछे.

४ सूत्रना अध्ययन तथा अभ्यासथी उत्पन्न थएला विशेष ज्ञान वडे जीवाजीवादि पदार्थना विषयमा रुचि थाय तेने सूत्र रुचि समकित कहेछे.

सूत्र रुचि उपर गोविंदाचार्यनु दृष्टात जाणवु.

५ एकपद वडे अनेकपदतथा तेना अर्थना अनुसधान द्वारा जलमा तेलना बिंदुनी जेम रुचि प्रसरि जाय तेनीजरुचि सम्यक्त्व कहेवायछे.

६ जेने सर्व सूत्रना अर्थनु ज्ञान उत्पन्न थाय ते अभिगम रुचि सम्यक्त्व कहेवायछे, त्यारे अत्र शका थशे के अभिगम रुचि

अने सूत्रमा शोफेर-प्रत्युत्तरमा समजवानु के-आ अभिगम रु चि अर्थ सहित सूत्रना विषयमा आवेछे अने ते सूत्ररुचि केवळ सूत्रना विषयमाज आवेछे एटलो ते बन्नेमां भेदछे. केव ल सूत्र मूल कथायछे

७ सर्व प्रमाण तथा सर्व नयथी उत्पन्न थएल सर्व द्रव्य अने सर्व भावना विषयनी रुचिने विस्तार रुचि सम्यक्त्व कहेवा- यछे तेथी विशेष लाभ प्राप्ति थायछे

८ ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप अने विनय वैयावृत्त्य आदिना आच- रण संबधी रुचि ते क्रियारुचि कहेवायछे

९ जेणे कुदृष्टिनो अभिग्रह कर्यो ना होय अने जे प्रवचनमा प्रवीण न होय तेवा पुरुषने मात्र निर्वाण पद संबधी रुचि ते संक्षेप रुचि जाणवी जेम उपशम संवर अने (विवेक आ त्रण पदनी रुचि चिलाती पुत्रने थइ हती तेम समजवु

१० धर्मपद श्रवणथी उत्पन्न थएली जे धर्मपदवाच्य संबंधी रुचि ते धर्मरुचि कहेवायछे

समकितरत्ननी प्राप्ति दुर्लभछे-समकित पाम्या पश्चात् संसार समुद्र चुलुक प्रमाण समजवो आ संसारचक्रमा अनंतश परिभ्र- मण करी अनंतवार अनंतदु:ख पाम्यो अनेक देहो धारण कर्या प्रत्येक भवमा अनेक दु ख भोगव्या जन्म जरा मरणादि दु:खो- नो भोक्ता घणीवार थयो पण पार आव्यो नहि जीव पुन. पुन परस्वभावमा रमण करी कर्म ग्रहेछे आत्मस्वभावमा रमण करवा थी कर्म नाश पामेछे कम्मपयडी आदि ग्रंथोमाथी विशेष स्वरूप जाणवु कर्मनो नाश करी मोक्षनगरमा जवानी इच्छा होय तो अनुभव ज्ञाननो खप करो मति-श्रुत ज्ञाननु उत्तर भावी अने के- वळज्ञाननु पूर्वभावी अनुभवज्ञानछे. दृष्टांत जेम सूर्य केवलज्ञानछे

अने सूर्योदय थता प्राक् जे अरुणोदयछे ते, दृष्टांते अनुभवज्ञान जाणवु. अनुभवज्ञान साक्षात् परमात्मपदनी प्राप्ति करावेछे. भव्यजीवो अनुभवज्ञानथी जाणेछे अनुभवज्ञान साक्षात् सूर्य समानछे. शास्त्रोनु अध्ययन करता, ध्यान करता अनुभवज्ञाननी प्राप्ति थाय छे अनुभवज्ञानीओ उपयोग पोताना आत्माना असख्यात प्रदेशे स्थापी पुद्गलवस्तुमा उंघेछे मारो शुद्ध आत्मस्वभाव तेज मारु धनछे. बाकी आ बाह्य देखातु धन मारु नथी. एम भिन्नता पाडी शुद्ध गुणमा परिणमेछे अनुभवज्ञानी सिद्धातनो साररूप मकरंद पीवछे. अनुभवज्ञानी समता भुवनमा सदा सुखमा म्हालेछे अरूपी आत्माने दृष्टिगोचर करवानु स्थान अनुभवज्ञानछे माटे सम्यग् ज्ञानना अर्थी जीवोए पुनः पुनः सत्शास्त्र अने सद्गुरुनो परिचय करी अतरवृत्ति करी बाह्यवृत्तिनो त्याग करवो

कह्यु छे के—

बाह्यवृत्तिए गुणठाणे चढवु, ते तो जडना भामा,
सयमश्रेणि शिखरे चढावे, अतरग परिणामारे. लोका भो-
ळवीया मत भूलो. १

ए उपरथी सार लेवानो के—बाह्यवृत्ति नाम बहिरात्मदशाथी गुणस्थानके चढवु एम तो जडजीवोनी भ्रमणाछे, अतरग परिणामरूप अतर्वृत्ति सयमश्रेणिना शिखरे चढावछे माटे भव्य लोको भोळवीया तमे भूलो नहीं सत्य तत्त्वमा रमण करो अने ध्याननी इच्छा करो. आतमगुणनी विचारणा करो आत्माना स्वभावमा ज्ञान, दर्शन, चारित्र, वीर्यादि अनतगुणछे, वळी गुण गुण प्रति भिन्न भिन्न स्वभाव आत्मामा रह्याछे, ज्ञाननो जाणवारूप स्वभाव, दर्शननो देखवारूप स्वभाव, चारित्रनो स्थिरतारूप अने वीर्यनो स्फुरणा शक्तिरूप स्वभाव एम अनतगुणो आत्मामा तिरोभाव रह्याछे पण-

शक्तिभावथी आत्मानु कार्य सरे नहि जेम अरणि काष्ठमा शक्ति भावे रहीछे पण अरणिना काष्ठने वाथ मीडवाथी टाढ नाश पामे नहि ते दृष्टांतना अनुसारे शक्तिभावे रहेलो आत्मानो धर्म ज्ञानथी जाणी तेथी प्रगट करीए तो चतुर्गतिना अनंतक्ष' जन्म जरा मरण टळी जाय आत्माना गुण पर्यायनु व्यक्तिरूपे प्रगटवु तेज स्वभाव लाभ जाणवो

प्रश्न-घातीकर्मनो नाश शावडे त्वरित थाय

उत्तर-ज्ञान अने ध्यानथी प्रमादना त्यागपूर्वक आत्मोपयोगे स्थिरताथी कर्मनो नाश थायछे पर्वतनी गुफामा निविड अंधकार होयछे तेनो नाश दीपकथी थायछे तेम अज्ञान तथा कर्मनो नाश पण आत्मज्ञानथी थायछे मोटी तृणनी गजी पण अग्निना स्वल्प कणीयाथी नाश क्षणमा पामेछे तेम अनंत भवोपार्जित घातीकर्मनो नाश पण आत्मज्ञानथी स्वल्पकाळमा थायछे. श्रीपाळना रासमा देशनानी ढाळमा कह्यु छे के-

श्री यशो विजय उपाध्याय.

क्षण अर्धे जे अघटळे, तेन टळे भवनी क्रोडीरे,
तपस्या करतां अतिघणी, नहीं ज्ञान तणीछे जोडीरे

ज्ञानी पुरुष अर्धक्षणमा जे पापनो नाश करेछे ते क्रोडी भव पर्यंत कठीन विचित्र छठ अठम मास बे मास विगेरेनी तपश्चर्या करतां टळे नहीं माटे ज्ञाननी कोइ जोडी एटले ते समान कोइ नथी माटे आत्मज्ञाननी प्राप्ति करवा प्रयत्न करवो ज्ञान रूपी अग्नि सर्व कर्मने बाळी भस्म करेछे षड्द्रव्य सात नय तथा निक्षेप द्रव्यादिकना ज्ञानथी स्वपर विभाग थायछे अने पोताना घरमां प्रवेश करेछे अर्थात् असंख्य प्रदेशरूप जे घर तेमा आत्माउपयोगपणे परिणमी अशुद्धतानो परिहार करेछे, पोताना घरमा आवतां आ-

त्माए अनुभवदृष्टिथी सर्व सिध्धि जोइ त्यारे विचार्यु के-अहो में अनत भवचक्र काळ अज्ञान रूप निद्रामां निर्गमाव्यो मारी भूले हु जन्म जरा मरणना दु ख पाम्यो हवे भ्रांति भागी आ शरीररूप नगरीमा असख्य प्रदेशी आत्मानी प्रतीति थइ, असख्य प्रदेशीरूप आत्मा हु अरुपी छु श्वेत, पीत, रक्त, कृष्ण, ए पुद्‌गलनु रूप छे पण हु तो पुद्‌गलथी भिन्नछु माटे रूपातीतछु, मारामा गध स्पर्श नथी शब्दथी मारु ज्ञान थाय छे पण हु शब्दथी न्यारो छु मारु कोइ नाम नथी तेथी हु अनामी कहेवाउछु.

हु कीर्ति वा अपकीर्तिवाळो नथी-कारण के बहिरात्मदशामा कीर्तिनी वासना जीवने रहेछे अने तेथी ते अनेक प्रकारना कीर्ति माटे उद्यमो करेछे. पण तेथी कइ कल्याण थतु नथी जेम वध्याने स्वप्नानी अदर पुत्रनो प्रसव थयो. अने ते पुत्रने मोटा थता परणाव्यो. वध्या बहु आनद पामी एटलामा वध्यानो पुत्र मरण पाम्यो त्यारे वध्या रोवा पीटवा लागी केश तोडवा लागी वध्यानी आख उघडी गइ अने जुवे छे तो कइ नथी. मिथ्याभास थयो एम जाण्यु तेम अज्ञानी जीव साधु वा गृहस्थना वा कोइपण अवस्थामा कीर्तिनी वासनाथी अनेक कार्यो करेछे किंतु आख मींचाया बाद कइ पण तेमानु देखातु नथी. माटे ज्ञानयोगी आत्मा कोइ कीर्ति करे वा कोइ अपकीर्ति करे तोपण समभावे रहेछे. कारण के-ज्ञानयोगी आत्मा जाणेछे के कीर्तिनाम कर्मना बधनथी जगत्मा कीर्ति प्रसरेछे. अने अपकीर्तिनाम कर्मोदयथी अपकीर्ति प्रसरे छे-माटे ते कीर्ति अने अपकीर्ति बन्ने पौद्‌गलिकछे कोइनी कीर्ति प्रसरवाथी ते धर्मी कहेवातो नथी. तेम अपकीर्ति प्रसरवाथी ते अधर्मी कही शकातो नथी. अतरग शुद्धात्म वृत्तिथी धर्मी कहेवायछे. अने अतरग अशुद्धात्म वृत्तिथी अधर्मी जाणवो. मान पूजा आदि वास-

नाओथी पण आत्मा भिन्नछे कारण के मान अने अपमान एह बहिरात्मा दशावाळाने एटले जेणे दुनीयादारीमा सुखदुःखनी बुद्धि धारण करीछे तेवा जीवने वर्तेछे, पण जेणे शरीरथी भिन्न आत्मा निराकार ज्योतिमय जाण्योछे तेवा अतरात्म दशावाळा जीवने माननी वासना रहेती नथी शुद्धात्मा सदा मानवतछे पुद्गलरूप देह कइ मान्य योग्य नथी वळी कोइ अपमान करे तो समजे के-देहनु अपमान के तेनी अदर रहेला आत्मानु अपमान नथी. देह तो जडछे अने आत्मा तो अदृश्यछे, तेथी तेनु अपमान थइ शकतु नथी माटे ज्ञानयोगी महात्माने मान अपमान ए सरखाछे वळी ज्ञान योगीनी कोइ निंदा करे वा कोइ वदन करे तोपण ते समभावमा वर्ते छे कारणके ज्ञानी जाणे छे के-मारो आत्मा अलक्ष्यछे. पोताना स्वभावे शुद्ध निर्लेपछे एम उपयोगमा वर्ततो कोइना उपर राग वा कोइना उपर द्वेष करतो नथी कनक अने पाषाणने पण ज्ञानी आत्मा सरखा जाणेछे, कनक अने पाषाण पृथ्वीकायना दळीया पौद्गलिकछे अने ते कनक पाषाणरूप अचित्त पुद्गल स्कधरूपीछे अने हु आत्मा तो अरूपीछु कनक पाषाण पुद्गल स्कध जडछे अने हु आत्मा तो ज्ञान गुणमयछु, मारी अने एनी भिन्न जातिछे वळी कनक पाषाणमा सुख नथी तो ते उपर केम दृष्टि आपु ? एम समजी ज्ञानी आत्मार्थी समभावमा रहेछे अने शुद्धात्म स्वरूपमा उपयोग दृष्टि आपेछे

ससारना ससर्गमा आवतो पण ज्ञानी आत्मा जलमा कमलनी पेठे भिन्नपणे वर्तेछे, हर्ष शोक धारण करतो नथी एम प्रमादस्थाननु निवारण करतो विरतिव्रत अगीकार करतो अतरथी द्रव्यक्षेत्र काळभावथी आत्म स्वरूप विचारतो अने तेम आत्माना गुणपर्यायने भिन्नाभिन्नपणे विचारतो मति अने श्रुतज्ञानना क्षयोपशमे वीर्य श-

क्ति फोरवतो सयम श्रेणि आरोहण करतो घातीकर्मनो क्षय करी यावत् अघातीकर्मनो क्ष करी पचम गति जे मुक्तिस्थान तेमां सादि अनतमा भाग विराजे छे. त्या मुक्तिस्थानमा शरीरनो त्रीजो भाग टाळी बे भागनी अवगाहना रहेछे. मुक्तिमा स्वामी सेवकभाव नथी, मुक्तिमा गएल आत्मा पश्चात् संसारमां आवतो नथी, अने तेथी जन्म जरा मरणना दुःख पामतो नथी, आ प्रमाणे कर्मना नाशे मुक्ति पासेली पासेछे किंतु आत्मध्यानरूप पुरुषार्थमा प्रमाद यवाथी पुनः पुनः ससारमा परिभ्रमण करवु पडेछे मन, वचन अने कायाना योगो स्थिर करी आत्म स्वरूपमां स्थिर थवु अने बाह्य मार्गमा वृत्ति देता आगळ वऱ्या करवु. तेम करवाथी आनदनी खुमारी प्रगट थशे अने स्थिरता योगे चारित्र मोहनीयनो नाश थशे, अने आत्मा मतिज्ञान अने श्रुतज्ञानना क्षयोपशमयोगे प्रत्यक्ष गुण स्थानकनी हदे विचित्र अनुभव प्रगट करतो देखाशे अने आत्मतत्त्वनो निर्धार भास थशे. आ अचळ सिद्धातनी श्रद्धा तथा तेनो आदर जे आत्मा अल्पभवमा मुक्ति जवानोछे तेने प्राप्त थायछे. अने परमपद प्राप्तिनी तीव्रेच्छा प्रगट थया विना तेना उपर लक्ष्य लागतु नथी अने ते प्रति लक्ष्य लाग्या विना आत्म कल्याण नथीज जे भव्यने जे वस्तुनी इच्छा होयछे ते प्रति तनो उद्यम वर्तेछे. सर्व करता शुद्ध स्वरूपनी इच्छा श्रेष्ठ गुणावहा जाणवी. हवे ते आत्मगुणनी प्राप्तिकरवा मन शुद्ध करवु जोइए मननी शुद्धता थया विना सच्चिदानद प्रति वलण थतु नथी, प्रथमतो मन इन्द्रियोना विषयमां भटकतु होयछे तेने पाछु वाळवु अने आत्मरमणमा जोडवु एम थवाथी राग द्वेषादिक शत्रुओ तेनी मेळे नाश पामशे. आम वर्तन करवाथी गुणोनी प्राप्ति थायछे कोइ भव्यो बोलवामा एवु बोले के—जाणे महा तत्त्वज्ञान

प्राप्त थयु पण अतरमा कइ होतु नथी, माटे वर्तन आत्म स्वभावमां थयु जोइए, एम करवाथी अनुक्रमे आत्मा कर्माष्टकनो नाश करी मुक्तिपद पामेछे अतीत काळे अनत जीवो मुक्ति गया जायछे अने जशे इति सप्तम विषय संपूर्ण

८ अष्टमविषय.

संसारमा आत्मा क्यारथीछे-- ?

संसारमा आत्मा अनादिकाळथीछे जेनी आदि होयछे ते उत्पत्तिमान पदार्थ होयछे. अने जे उत्पत्तिमान् होयछे ते कार्यरूप कहेवायछे, अने जे पदार्थ कार्यरूप होय ते समवाय निमित्तआदि कारणोनी सामग्रीद्वारा उत्पन्न थायछे अने तेथी ते कार्यरूप पदार्थ आनित्य कहेवायछे अने जे पदार्थ आनित्य होयछे ते विनाश पामे छे आत्माने कोइए उत्पन्न कर्यो नथी अने तेथी ते अनादि कहेवायछे

जे पदार्थनी आदि नथी तेनो अतपण नथी. ते प्रमाणे आत्मा अनादि छे अने अनतछे. जे वस्तुनो कोइ बनावनार नथी ते वस्तु नित्य कहेवायछे तेम आत्मा तेनो बनावनार कोइ नथी तेथी आत्मा नित्य कहेवायछे जे नित्य वस्तु होयछे ते त्रण कालमां नाश पामती नथी तेम आत्मा पण नित्यछे तेथी त्रणे कालमां नाश पामतो नथी, जे वस्तुउत्पन्न थायछे ते कारण पूर्वक होयछे, जेम घटवस्तु मृत्तिका दड चक्र कुलालादि पूर्वकछे. अने जे वस्तुनो कोइ उत्पन्न कर्त्ता नथी ते कारण विना स्वय सिद्ध होयछे जेम आकाश ते प्रमाणे आत्मा पण कारण विनानोछे. अर्थात् ते कोइनाथी बन्यो नथी

ईश्वरवादी—सर्व जीवोने ईश्वरे बनाव्याछे तो–जीवोनो कर्त्ता ईश्वर कारणी भूत मानवो जोइए.

तत्त्ववादी—जीवोनो कर्त्ता ईश्वर नथी, ईश्वर अरूपीछे रागद्वेष-रहीतछे, संसारनी खटपट रहीतछे. तेवा ईश्वरने जीवो बनावावानु शु प्रयोजन ते बतावो अने ज्यारे ईश्वरे जीवो नहोता बनाव्या ते पूर्वे ईश्वर शु करतो हतो वळी बतावो के जीवोनु उपादान कारण कोण अने जीवरूप कार्यनु निमित्त कारण कोण ?

प्रथम सामान्य माध्यस्थ बुद्धिथी विचारतां पण मालुम पडेछे के रागद्वेष रहीत एवा प्रभु वा जे ईश्वर सिद्ध तेमने जीवो बनाववानु कइ प्रयोजन नथी, एकने सुखी बनाववो अने एकजीवने दुःखी बनाववो एवु अन्यायनु कार्य ईश्वर करतो नथी. जीवो बनाव्या विना पूर्वे ईश्वरने गमतु नहोतु ते पण कइ कही शकातु नथी, अने जीवो बनाव्या पूर्वे ईश्वर कर्तृत्व शक्ति रहीत हतो के केम ते कही शकातु नथी. कर्तृत्व शक्ति ईश्वरनी अनादिनी मानो तो जीवो पण अनादि ठर्या. त्यारे वदतोव्याघातदूषण प्राप्त थयु. कर्तृत्व शक्ति ईश्वरनी जो अनादि न मानो तो शक्तिनी अनित्यताए ईश्वर पण अनित्य ठर्यो. वळी जीवोनी पूर्वे ईश्वर छे ते पण सिद्ध थतु नथी. वळी जीवोनु उपादान कारण पण ईश्वर कही शकातो नथी, कारणके उपादान कारणथी कार्य भिन्न नथी. यथा तन्तवः पटस्य जेम पटनु उपादान कारण तंतु ते पटरूपज छे तेम जो जीवोनु उपादान कारण ईश्वर मानीए तो सर्व जीवोथी अभिन्न ईश्वर ठर्यो. अने ज्यारे सर्व जीवमय ईश्वर ठर्यो त्यारे राजा पण ईश्वर पापी पण ईश्वर चोर पण ईश्वर बिडाल पण ईश्वर सर्व पण ईश्वर पोतानी मेळे ईश्वर उपाधिमय बन्यो कोनु भजन करवु. कोनु

बंधन, फोगट मुक्ति, ते पण असत्य ठर्युं, तप जप दान क्रिया सर्व असत्य ठरी. माटे जीवोनुं उपादान कारण ईश्वर सिद्ध थतो नथी तेम निमित्त कारण पण ईश्वर कही शकातो नथी, कया कया मसाला लावीने ईश्वरे जीव बनाव्यो जो कहेशो के पंचभूतरूप मसालाथी जीव बनाव्यो तो ते वात पण आकाश कुसुमवत् असत्य ठरेछे कारण के पंचभूततो जडछे. अने आत्मा तो ज्ञान गुणी छे माटे ते पंचभूतनुं कार्य नथी माटे जीवनुं उपादान कारण पंचभूत कदी ठरता नथी अने निमित्त कारण जीवनो ईश्वर ठरतो नथी. माटे जीव अकारण होवाथी नित्य सिद्ध ठर्यो अने तेथी ते अनादिकालथी छे एम सिद्ध थयो. श्री केवलज्ञानीवीरप्रभुए जीवो अनादिकालना छे एम सत्य कथ्युछे हवे ब्रह्मथकी जीवोनी उत्पत्ति माननाराओने मति प्रश्न पूर्वक तेमनी भूल दूर करायछे

शिष्य—हे सद्गुरो कोइ एम कहेछेके आत्मा वा इदमेक एवाग्र आसीत् अर्थ आ दुनीयामां प्रथम ब्रह्म एकज हतुं अने तेमांथी आ सर्व प्रपंच बन्योछे आ वातमां शुं सत्य समायुंछे. ते कृपा करीने कहेशो ?

सद्गुरु—हे सौम्य श्रवण कर ब्रह्मथकी जीवो माया विगेरे सर्व प्रपंच बन्यो एम मानवुं युक्तिहीनछे ते नीचे मुजब. ब्रह्मथी दुनीयाना प्रपंच भिन्न मानशो तो एकांत भिन्न प्रपंचरूप वस्तु ब्रह्मथकी उत्पन्न थायछे तेम मानवुं मडूक जटावत् असत्य ठरेछे, कारण के जेम घटथकी एकांत भिन्न पटनी उत्पत्ति जोवामां आवती नथी एम प्रत्यक्ष विरोध आवेछे, वळी ब्रह्मथकी एकांत अभिन्न जगत्रूप प्रपंच मानशो तो ते पण युक्ति, विकल आकाश कुसुमवत् असत्य ठरेछे,

ब्रह्मथी एकांत अभिन्न जगत् प्रपच ब्रह्मस्वरूप ठर्यो, त्यारे माता, स्त्री, पुत्र, सर्प, सिंह, आदि सर्व ब्रह्मरूप ठर्युं, त्यारे तेनाथी भिन्न वा तेथी मुक्त थवाशेज नहि, वळी अमो ब्रह्मवादीने पुछीए छीए के–ब्रह्म जे ते जगत् प्रपचनुं उपादान कारणछे के निमित्त कारण ? प्रथम पक्षमां जो ब्रह्मने उपादान कारण मानवामा आवे तो कारण जेवु होय तेवु कार्य थाय जेम पटनु उपादान कारण ततु रक्त होय तो पट पण रक्त थायछे. तेम जो ब्रह्म सत्‌छे अने उपादान कारणछे तो उत्पन्न थनार जगत् प्रपचरूप कार्य सत् थवु जोइए. अने ते कदी नाश पण पामे नहि, पण जगत् प्रपच सत् नथी एम प्रत्यक्ष विरोधापत्ति प्राप्त थती देखायछे वळी ब्रह्मने रूपी वा अरूपी मानता विरोध दर्शावेछे प्रथम पक्ष ब्रह्मने रूपी मानतां आगम विरोध आवेछे द्वितीय विकल्पमा ब्रह्मने अरूपी मानता ब्रह्मथी उत्पन्न थनार जगत् प्रपच रूप कार्य अरूपी थवुं जोइए पण घटपटादि वस्तुरूपी देखायछे ए पण महाविरोध आवेछे वळी ब्रह्मने नित्यमान ता ब्रह्मथी उत्पन्न थनार जगत् प्रपच पण नित्यपणे उपलब्ध थवो जोइए पण जगत् प्रपच तेथी उलटो विनाश पामतो देखायछे, तेथी तेम मानता पण विरोध प्राप्त थायछे, माटे जगत् उपादान कारणपणे मानेलु ब्रह्म नित्यपणे पण कहीशकातु नथी ब्रह्मने अनित्य मानता आगम विरोध आवेछे वळी ब्रह्मने एक अने ते सर्वत्र व्यापकछे एम मानशोतो जीवोनो बध मोक्ष मानवो असत् ठरेछे तेम सुख दु ख पण असत् ठरशे इत्यादि विकल्पोथी ब्रह्मनी सिद्धि पण थती नथी तो वळी ब्रह्माथी जीवो उत्पन्न थया तेम मानवु ते तो सर्वथा असत्य ठरेछे

प्रश्न–आनद ब्रह्मणो विद्वान् नबिभेति कुतश्चन–ब्रह्मना आनंदने जाणनार पुरुष कशाथी भय पामतो नथी, एम वृहद आर॰

ण्यक तथा तैत्तिरीय श्रुतिमा कहुछे तेनु केम ?

उत्तर-ब्रह्म शब्दार्थनु सम्यग् ज्ञान न थवाथी तत्त्वनी प्राप्ति थती नथी. केटलाक वादीओ ब्रह्म विषे सर्व जीवोनो लय थायछे. अने वळी ब्रह्ममांथी सर्व जीवो उत्पन्न थायछे एम समजी तत्त्व पामी शकता नथी कारणके-सम्यग् ज्ञान विना सम्यग् क्रिया थइ शकती नथी अने ते विना भवात थतो नथी. अर्थात् कर्मनो नाश करी मुक्तिपद पमातु नथी पण आत्मारूप ब्रह्मनो भावार्थ ज्ञानथी सम्यक् समजनार क-शाथी भय पामतो नथी. माटे सम्यग्दृष्टिपणु प्राप्त थता ए-कात हठ टळेछे

प्रश्न-श्लोक भिद्यते हृदयग्रंथी छिद्यते सर्व संशया
क्षीयते चास्य कर्माणि, तस्मिन् दृष्टे परावरे. १

ब्रह्मने साक्षात्कार जाणवाथी हृदय ग्रंथी भेदायछे अने सर्व संशयो छेदायछे कर्मो नाश पामेछे ते ब्रह्मने देखता-आम मुंडकोपनिषद् विगेरेथी जणायछे तोब्रह्मने असत्य केम कहेवाय?

उत्तर-हेभव्यजीव हजी अमारु कथन तमाराथी समजायुनथी— ब्रह्मशब्दनो अर्थ ज्ञानवान् आत्मा अनेते ज्ञानीजीव प्रतिशरीर भिन्नभिन्न-तेमज कर्मरहीत ज्ञानीजीवो-व्यक्तिथी भिन्नभिन्नछे तेरूपे अमो ब्रह्मने सत्य मानीएछीए—पणजे एक ब्रह्म अने तेमांथी जगत् पेदाथवु तेवा ब्रह्मशब्दना अर्थने अमो सत्यरुपे मानतानथी तेनासबबे असत्यपण थायछे —असत्यजणावानुके-सर्वत्र ब्रह्मछे, ब्रह्मथकीअन्य कोइपदार्थ नथी एम मानवु ते ज्ञानविरुद्धछे-अने एम कोइमानेतो तेमा अन्यनु जोरनथी-पण समजवानुके—उपरना श्लोकथी द्वैतपणानी एटले बे तत्त्व-जीव अने अजीव तेनी सिद्धि थायछे—अस्य

कर्माणि क्षीयंते—आना कर्म नाशपामेछे. आना एटले आत्माना आत्मानी साथे ज्ञानावरणीयादी अष्टकर्म अनादिकाळथी क्षीर नीरवत् लाग्याछे. ते कर्म, आत्मानु स्वरूप स्याद्वादपणे देखी आत्म स्वभावमा रमवाथी नाशपामेछे. आत्मा अने कर्म एम बे वस्तुनी सिद्धि थइ, एक आत्मद्रव्यनी द्वितीय कर्मरूप पुद्गल द्रव्यनी अनायासे सिद्धि थइ, कर्मजड अने,अजीवछे, तेथी जीवतत्त्व एम बे तत्त्वज्ञानी प्रभुश्रीमहावीरस्वामीए कथ्या छे तेनी सिद्धि थइ कदापि सामो प्रश्न एम करवामा आवे के कर्म पण ब्रह्मथी भिन्न नथी अने ते ब्रह्मस्वरूपछे. तो उत्तर तरीके कहेवामा आवशे के कर्म ज्यारे ब्रह्मस्वरूप ठर्युं त्यारे कर्मनो नाश थता ब्रह्मनो पण नाश थशे.

वळी विचारोके कर्म छे ते ब्रह्मथकी भिन्न छे अभिन्न? प्रथम पक्षमा ब्रह्मथकी कर्मएकांत भिन्न मानता पटथी एकांत भिन्न घटनी पेठे बे पदार्थ ब्रह्म अने कर्म भिन्न छे तेनी सिद्धि थइ, द्वितीयपक्षमां ब्रह्मथी कर्म अभिन्न छे एम मानता ब्रह्म अने कर्म एक स्वरूप थइ जशे अने कर्मनो नाश पण थशे नहि

वळी विचारो के कर्मसत्‌छे के असत्‌छे. कर्मअसत् मानवामा आवे तो सत्ब्रह्म अने असत् कर्मनो संयोग थाय नहि, कारण के सत्‌नी साथे जे वस्तुरूपे ना होय तेनो संयोग घटे नहि अने बेनो संयोग मानवामा आवशे तो बे पदार्थ भिन्न स्वभाववाळा भिन्न ठर्या, त्यारे एक एव ब्रह्म आवाक्यनो नाश थयो एम अवश्य सिद्ध ठरेछे. स्याद्वादपणाथी तो ते सर्व जिन दर्शनमा यथार्थ घटेछे अने आत्मानी सिद्धि थायछे अने कर्मनी सिद्धि थायछे. आत्मा ज्ञानादिके करी सत्‌छे अने कर्मरूप पुद्गलनी अपेक्षाए असत्‌छे. पण पुद्गल द्रव्य पोताना स्वरूपे सत्‌छे. आत्मा अने कर्मनो संयोग अनादिका-

ळयी छे. आत्मा अने कर्म बे क्षीरनीरवत् परिणामीछे, आत्मा ज्यारे स्वस्वभावमा रमण करेछे त्यारे कर्मरूप पुद्गलो आत्माना प्रदेशोथी विखरेछे, अने आत्मामा रहेलु अनतज्ञान आविर्भावे प्रकाशेछे. अने आत्मा परमपद पामता अचल थायछे. जन्म जरा मृत्युनो नाश करी अजरामर पद पामेछे तेमा नपुनरावृत्ति शिव अर्थात् मोक्ष पामेला जीवो ससारमा पाछा आवी जन्म धारण करता नथी. वळी सर्व जीवो ब्रह्मना अशछे एम मानीएतो पुण्य पाप बध मोक्ष आदि घटी शकतु नथी कारण के-सर्वस्य ब्रह्मस्वरूपत्वात् सर्व पदार्थने ब्रह्मस्वरूप मान्याथी धर्म अधर्म मुक्ति विगेरे असत्य ठरेछे तेमा आ वाक्य प्रयोग पहीना नह वचननोछे, तेथी आत्मा अनतछे एम प्रतिपादन कर्युछे. ने फरीथी ससारमा आवता नथी एम कहेवाथी प्रलय काळ थया बाद केटलाक मानेछेके मुक्तिमाथी ससारमा जीव पाछा आवेछे तथा दयानद सरस्वति जे आर्य समाजनो प्रकाशकछे ते स्वकल्पनाथी एम मानेछेके मुक्तिमाथी जीव ससारमा पाछो आवेछे एम ते वादियोनु मानवु असत्य ठरेछे अने ते मिथ्या ज्ञानछे एम सिद्ध कर्यु. वळी नीचेनी वेदश्रुतियो पण सम्यग्ज्ञान विना असमजस भासेछे.

तथाच

इद सर्व यदयमात्मा, सर्व खल्विद ब्रह्म ॥
अयमात्मा ब्रह्म, अह ब्रह्मास्मि ॥

इत्यादि वेद श्रुतियोपण सम्यग्ज्ञान विना प्रमाणीभूत नथी सर्व एटले सर्व खलु एटले निश्चयथी आ ब्रह्मछे घट, पट, दड, चक्र, वृक्ष, सर्प, जगत् सर्व ब्रह्मछे तो सिद्ध थयु के स्त्री पण ब्रह्म स्वरूप. माता पण ब्रह्मस्वरूप पुत्री पण ब्रह्मस्वरूप.पोते वक्ता पण ब्रह्मस्वरूप त्यारे कोने नमस्कार करवो ? कोनु स्मरण करवु? अने वळी स्मरण करवानु शु प्रयोजन ? तेनी सिद्धि ठरती नथी. आ पण

ब्रह्मस्वरूप, अने विष्णु पण ब्रह्मस्वरूप. सर्प पण ब्रह्मतो प्रत्येकने नमस्कार करवो जोइए पण ब्रह्मवादी पण सर्वने ब्रह्मस्वरूप मानी भेदभाव राखेछे ते आकाश जेवडी मूल गणाय, माटे ब्रह्मने एक मानता पूर्वोक्त दूषण प्राप्त थायछे. सम्यग्दृष्टि तेवोज अर्थ सम्यग्पणे ग्रहण करेछे. आ सर्व जगत् अनंतजीवोथी परिपूर्ण व्याप्तछे, अने जे आ शरीरमा छे ते आत्माछे, अने आत्मा ज्ञानमयछे दुनीयानी सर्व वस्तुओ ज्ञानमा विषयीभूत थायछे. अनंतज्ञेयनो ज्ञाता अनंत ज्ञानमय आत्माछे तेने ब्रह्म कहो वा चैतन्य कहो वा परमात्मा कहो, नामभेद पण अर्थतो एकनो एकछे–सिद्ध परमात्माओ सदृश शरीरमा रहेलो आत्मा पण सर्व रुद्धिमयछे पण कर्मावरणथी सर्व रुद्धि तिरोभावेछे–आत्मा अजछे अविनाशीछे. अनादि अनंत, अक्षय, अक्षर, अनक्षर, अचल, अटल, अमल, अगम्य, अरूपी, अकर्मा, अबंधक, अनुदय, अनुदरीक, अयोगी, अभोगी, अरोगी, अभेदी, अवेदी, अछेदी, अलेपी, अखेदी, अकषाइ, अलेशी, अशरीरी, अणाहारी, अव्याबाध, अनवगाही, अगुरुलघुपरिणामी, अप्राणी, अयोनि, असंसारी, अमर, अपर, अपरपर, ज्ञानगुणापेक्षाए व्यापक अनाश्रित, अकंप, अनाश्रव, अशोकी, असंगी अनाहारी लोकालोक ज्ञायक, अनंत सुखमय, आदि गुणोथी विराजमान प्रत्येक शरीरमा रहेला आत्माओ छे. किंतु कर्मनायोगे सर्व रुद्धि ढकाणी छे, आ शरीरमा पण कर्मथी बंधाएल हे आत्मातुछे जेवा सिद्ध भगवान् छे तेवो तु छे एम सम्यग् अर्थ ग्रही प्रयत्न करायतो मुक्तिपद पामी शकाय. पण सम्यग्ज्ञान विना संसारी जीवो मोहमायामा मस्तान थइ संसारमा परिभ्रमण करेछे. माटे सत्य तत्त्वनी प्राप्ति करवी एज मोक्षमार्ग जाणवो. श्री सर्वज्ञ प्रभुए धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, पुद्गलास्तिकाय, जीव द्रव्य

अने काळ आ षड्द्रव्य कथन कर्याछे केवळज्ञानमां जेवुं जाण्यु तथा केवल दर्शनमा जेवु सामान्योपयोगथी देख्यु, ते प्रमाणे पदार्थोनु प्रतिपादन कर्युंछे तेनु ज्ञान थवाथी सत्य आत्मतत्त्वनी प्राप्ति थायछे. मिथ्याज्ञानथी मिथ्यात्वनी वृद्धि थायछे -यत उक्त

श्लोक

नमिथ्यात्वसम शत्रु, र्नमिथ्यात्वसमंविष ॥
नमिथ्यात्वसमोरोगो, नमिथ्यात्वसमतमः ॥ १ ॥
द्विषद्विषतमो रोगै, र्दुःसमेकत्र दीयते ॥
मिथ्यात्वेन दुरंतेन, जंतोर्जन्मनिजन्मनि ॥ २ ॥
वर ज्वालाकुले क्षिप्तो, देहिनात्मा हुताशने ॥
नतु मिथ्यात्वसयुक्त, जीवितव्य कदाचन ॥ ३ ॥

मिथ्यात्व समान कोइ शत्रु नथी कारणके मनुष्यरूप शत्रुओ बाह्यरिद्धि वा बाह्यप्राणनो नाश करेछे अने मिथ्यात्वरूप शत्रु तो आत्मानी अनंतिरुद्धिनो नाश करेछे अने मिथ्यात्व समान कोइ मोटु विष नथी अने मिथ्यात्व समान कोइ रोग नथी अने मिथ्यात्व समान कोइ अधकार नथी ज्वालाथी देदीप्यमान अग्निमा पडी मरवु ते सारु किंतु मिथ्यात्वपणाथी जीववु सारु नथी. वळी उपरना बीजा श्लोकमां जणाव्यु के-शत्रु विषरोग तेथी तो एकवार दुःख पमायछे अने दुःखे करी जेनो नाश थायछे एवा मिथ्यात्वथी तो भवोभव दुःखनी परपरा प्राप्त थायछे, माटे सम्यग्ज्ञाननी प्राप्ति माटे प्रयत्न करवो, श्रीवीरप्रभुए जीवो अनादिकाळनाछे एम केवलज्ञानथी जाणी प्ररूपणा करीछे ते सत्य मानवी श्रद्धा करवी

९ नवमविषय.

आत्मा निर्मलपद (मोक्ष) शाथी पामे,

ज्ञान दर्शन चारित्राणि मोक्षमार्गः ज्ञान दर्शन अने चारित्र मोक्षनो मार्गछे श्रीतत्त्वार्थसूत्रमा ज्ञान दर्शन चारित्रनु विशेषतः प्रतिपादन कर्युंछे त्याथी जिज्ञासुजनोए तेनु स्वरूप गुरुगमद्वारा धारवु अत्र ए त्रणनो विशेष विस्तार करवाथी ग्रथ गौरवता वृद्धि पामे माटे कर्यो नथी. पूर्वे ज्ञाननु सामान्यतः वर्णन कर्युंछे. दर्शननुं पण वर्णन कर्युंछे. चारित्रनु पण सामान्य स्वरूप आगळ कहेवाशे अष्टकर्मना समूहनो जे नाश करे तेने चारित्र कहेछे. चारित्रना बे प्रकारछे व्यवहार चारित्र द्वितीय निश्चय चारित्र तेमा व्यवहार चारित्रना बे भेदछे. १ देशविरतिरूप-द्वितीय सर्व विरतिरूप

तेमा श्रावकना बारव्रत अगीकार करवा तथा तेनु पालन करवु तेने देशविरति चारित्र कहेछे

सर्वथी पचमहाव्रतनो शास्त्राज्ञापूर्वक स्वीकार करवो अने वीतराग आज्ञा प्रमाणे वर्तन करवु तेने सर्वथी चारित्र कहेछे-सर्व विरतिरूप भागवती दीक्षाथी कर्मनो नाश थायछे-शास्त्रोमा दीक्षानु बहु माहात्म्यछे कह्युछे के-तथाच

श्लोक

सर्वेषामपि पापानां, प्रव्रज्या शुद्धिकारिका ॥
जिनोदिता तत सैव, कर्तव्या शुद्धिमिच्छता ॥१॥
ददति ब्राह्मणादिभ्य, एके पाप विशुद्धये ॥
गोदान स्वर्णदानच, भूमिदानान्यनेकधा ॥ २ ॥

आत्मशुद्ध्यर्थमेवान्ये, कारयंति नतानपि ॥
जुह्वत्यमी पशूस्तत्र, अश्वादींश्च सहस्रश ॥ ३ ॥
अमेध्यभुग् गवामेके, पृष्ठभाग स्पृशंतिच ॥
गवां मूत्र पिवत्यन्ये, अन्ये पचगव तथा ॥ ४ ॥
शुद्ध्यर्थ स्नांति तीर्थेपु, प्रविशत्यन्ये हुताशने ॥
तथापि नैवशुध्यति, विनादीक्षां जिनोदिता ॥५॥
किंच शौच विनाशुद्धिं, जायते न कदाचन ॥
सत्वाहिंसादिक तच्च, यत प्राहुर्मनीपिण ॥ ६ ॥
सर्वजीवदयाशौच, शौच सत्यप्रभापण ॥
अचौर्य ब्रह्मचर्यंच, शौच सतोप एवच ॥ ७ ॥
कपायनिग्रह शौचं, शौचमिंद्रियनिग्रहः ॥
प्रमादवर्जन शौच, ध्यान शौच तथोत्तम ॥ ८ ॥
दुष्टयोगजय शौच, शौच वरविवेकिता ॥
तपो द्वादशधाचैवं, शौचमाहुर्मनीपिण ॥ ९ ॥
सर्वज्ञोक्तदीक्षाया, एतत् सर्वदयादिक ॥
शौच सपूर्ण मेवास्ति, सदांतरात्मशुद्धिकृत ॥१०॥

भावार्थ—सर्व पापोनी शुद्धिकारिका दीक्षाछे माटे जिनेश्वरे कयेली दीक्षा आत्मशुद्धि इच्छनारे अगीकार करवी दीक्षा अगीकार करवाथी सर्वथा प्रकारे कर्मनो नाश थायछे

केचित् जीवो ब्राह्मण विगेरेने स्वर्णदान गोदान भूमीदान विगेरे आपेछे अने केटलाक आत्मानी शुद्धिने माटे व्रतो करेछे अने

करावेछे. अने होममा पशुओने होमेछे. केटलाक आत्मकल्याण माटे गायनु अमेध्य भक्षण करेछे, तथा तेना पृष्ट भागने स्पर्शेछे अने वळी गायनु मूत्र पीवेछे, तथा पचगवनु भक्षण करेछे. केटलाक आत्मशुद्धि माटे गगा यमुना आदि तीर्थोमा स्नान करेछे. केटलाक अग्निमा प्रवेश करेछे, तोपण ते अज्ञानपणाथी आत्मशुद्धि प्राप्त करता नथी पण ज्यारे वीतराग सर्वज्ञे कथेली भागवती दीक्षा अगीकार करवामा आवेछे त्यारे आत्मा निर्मल थायछे.

वळी ते भागवतीदीक्षामा शौचविना शुद्धि थती नथी हवे ते शौच दर्शावेछे. सर्वजीवदयाशौच-सर्व जीवोनी दया करवी तेने शौच कहेछे. दया विना धर्म होतो नथी. अहिंसा परमोधर्म अहिंसा मोटो धर्मछे. अने शास्त्रमा पण कहुछे के-

नय तिहुअणेवि पाव, अन्न पाणाइवायओ गरूयं ॥
ज सव्वेविय जीवा, सुहासिणो दुक्खभीरूय ॥ १ ॥

त्रगलोकमा हिंसा करता मोटु कोइ पाप नथी. सर्वे जीव सुख इच्छेछे अने दुःखथी बीवेछे

श्लोक.

नसादीक्षा नसाभिक्षा, नतद् दान नतत्तप. ॥
नतज्ज्ञानं नतद्ध्यान, दयायत्र न विद्यते ॥ १ ॥

भावार्थ-एवी कोइ दीक्षा, भिक्षा, दान, तप के ध्यान नथी के-जेमा दया नहीं होय.

श्लोक

अहिंसैव मता मुख्या, स्वर्गमोक्ष प्रसाधनी ॥
अस्याः [illegible]र्थत्र, न्याय्य सत्यादिपालन

स्वर्ग अने मोक्ष आपनारी दयाज (~
पणे मनायलीछे अने एने राखवा माटे
व्याजरी गणायछे वळी आचारांग सूत्रमा प

सेनेमि जेअइया जेय पडुपन्ना जे आ
वतो ते सव्वे एव माइक्खन्ति, एवभासंति, प
सव्वेपाणा, सव्वेभूया, सव्वेजीवा, सव्वेसत्ता, न
व्वा, नपरितावेयव्वा, नउद्दवेयव्वा, एसधम्मे सुद्दे
समिच्चलोय खेयन्नेहिं पवेइय

आचारांगसूत्र भावार्थ

हु कहु छु के जे तीर्थंकर भगवान थइ गया अने जे हाल वर्ते छे, अने जे आवता काळमा थशे ते सर्व आ रीते कहेछे जणावेछे तथा वर्णवे छे के सर्वप्राण, सर्वभूत, सर्वजीव, अने सर्व सत्त्वने हणवा नहि, तेमना उपर हकुमत चलाववी नहि तेमने क-बजे करवा नहि तेओने मारी नाखवा नहि, अने तेओने हेरान करवा नहि, आवो पवित्र अने नित्य धर्म लोकोना दुःखने जाणनार भगवाने बताव्योछे

अने वळी कह्यु छे के—

जयचरे जयचिट्ठे, जयमासे जयसए ॥
जय भुजंतो भासंतो, पाव कम्म न बधइ ॥ १ ॥

श्री शय्यंभवसूरि कहेछे के यतनाथी चालवु जीवनी दया सचवाय तेम उभा रहेवु यतनाथी बेसवु, अने यतनाथी सूवु, अने यतनाथी बोलवु, एम करतां पाप कर्म बधाशे नहि वळी कह्युछे के—

गाथा

मल मइल पंक मइला. धूली मइला न ते नरा मइला

जे पावपक मइला, ते मइला जीवलोयामि ॥ १ ॥
खणमित्तःसलिलेहि, सरीरदेसस्स शुद्धिजणगंजं
कामगति निसिद्ध, महेसिणत नणु सिणाणं ॥२॥

भावार्थीः—मलथी मेला, कादवथी मेला थएला, अने धूलथी मेला थएला माणसो मेला नहि गणाय. पण जे पापरूप बकथी मेला थएल होय ते जीवो आ लोकमा मेला जाणवा—

वळी स्नानमा जलवडे क्षणभर शरीरना बहिर्भागनी शुद्धि थायछे, अने जे जल स्नान कामनु अग गणायछे ते जलथी महर्पियोने स्नान करवानो निपेधछे—

उक्तच श्लोक

स्नान मददर्पकर, कामांग प्रथम स्मृत ॥
तस्मात कामं परित्यज्य, नैव स्नांति दमे रताः १

स्नान ए मद अने विषयाभिलापनु कारण होवाथी कामनु प हेलु अग गणायछे. माटे कामने त्याग करनार अने इद्रियोने दमवा तत्पर थएला यतिजनो बील्कुल स्नान नथी करता. केटलाक लोको समज्या विना एम बोलेछे के जैनना मुनियो स्नान करता नथी. तेमने कहेवानु के जैनना साधु शास्त्राज्ञा मुजब वर्तेछे तेथी विपयाभिलापजनक स्नाननु तेमने कइ प्रयोजन नथी. ब्रह्मचारी सदाशुचिः ब्रह्मचारी पुरुप सदा पवित्रछे तेने दातण स्नाननी कइ जरूर नथी वळी श्रीकृष्ण, पाडु पुत्रने नीचे मुजब उपदेश आपेछे.

श्लोक.

आत्मानदी सयमतोयपूर्णा, सत्यावहा शीलतटा दयोर्मिः
तत्राभिषेकं कुरु पाडुपुत्र, नवारिणा शुद्धयति चांतरात्मा१

भावार्थ-आत्मारूपी नदीछे तेमा सयमरूपी पाणीपरिपूर्ण भरेलछे, त्या सत्यरूप शीतरूप तेना तटछे, त्या दयारूप तरगोछे माटे हे पाडुपुत्र तेमा स्नान कर. कारण के शरीरनी अदर रहेलो अरूपी आत्मा कइ पाणीथी शुद्ध थतो नथी हवे त्यारे पवित्र कोण कहेवाय ते जणावेछे

गाथा

अखडिय वयनियमा, गुत्ता गुत्तिदिया जियकसाया
अइशुद्ध बभचेरा, सुइणो इसिणो सयानेया १

भावार्थ-अगीकार करेला व्रत अने नियमने अखडित राखनारा अने जेणे पोतानी इन्द्रियो वश करीछे तथा वळी क्रोध, मान, माया, लोभ, ए चार कषायोने जीतनारा तथा निर्मल ब्रह्मचर्य पाळनार मुनियो (ऋषियो) सदा पवित्र जाणवा.

तथा वळी कहुछे के—

श्लोक

नोदकक्लिन्नगात्रोऽपि, स्नात इत्यभिधीयते,
स स्नातो योदमस्नात स वाह्याभ्यतर शुचि १

भावार्थ-पाणीथी भींजायल शरीरवाळो कइ न्हाएलो नहि कहेवाय किंतु जे पोतानी पाच इन्द्रियोनो वश करनारो थइ अभ्यतर अने बाह्यथी पवित्र होय तेज न्हाएलो कहेवाय वळी कहुछेके—

श्लोक

चित्तमतर्गत दुष्ट, तीर्थस्नानैर्न शुद्धयति,
शतशोऽपिजलैर्धौत, सुराभाडमिवाशुचिः १

भावार्थ—अंतरनु दुष्ट चित्त कइ तीर्थ स्नानथी शुद्ध थतु नथी केमके मदिरानुं वासण सेंकडो पाणीथी धोइए तोपण ते अपवित्र ज रहेछे. माटे साराश के—जलथी मात्र स्नान कर्याथी पवित्रता प्राप्त थती नथी. परतु दयारूप शौचथी पवित्रपणु प्राप्त थायछे. माटे दीक्षा अगीकार करी प्रथम अहिंसा व्रतनु पालन करवु जोइए. कोइ पण जीवनी हिंसा करवी नहि. मुनिने वीस वशानी दया होयछे. अने श्रावकने सवावशानी दया होयछे. मांसनु भक्षण करनार, मास वेचनार. जीवो, पापी जाणवा ससारनो त्याग करनारा मुनीश्वरो अहिंसा व्रतनु पालन करी शिव पाम्या अने पामशे. जीवनी हिंसा करवाथी थएल दारुण दुःख यशोधर चरित्रथी जाणवु हवे दीक्षा अगीकार करी बीजु सत्य बोलवु, मृषावाद एटले जूठु कदी बोलवु नहि. तद्रूप सत्यव्रतनु परिपालन करवु. त्रीजु महाव्रत अगीकार करी कोइनी नजीवी वस्तु पण कह्या विना लेवी नही पोतानी वा पारकी सर्व स्त्री वर्गनो त्याग करवो. मनमा पण भोग भोगववानी इच्छा करवी नहीं स्त्रीना साम्रु सराग दृष्टिथी जोवु नहि नव प्रकारे ब्रह्मचर्य व्रतनी गुप्ति पाळवी अने मैथुननो सर्वथा त्याग करवो तेने चोथु ब्रह्मचर्यव्रत कहेछे. सर्व व्रतो नदीओ समान छे अने ब्रह्मचर्यव्रत समुद्र समानछे, ब्रह्मचारी पुरुषोनी कीर्ति वधेछे. ज्यां जायछे त्या तेने मान मळेछे. देवताओ पण ब्रह्मचारी पुरुषोने साहाय्य करेछे. मत्रनी सिद्धि पण शीलव्रत पाळनारने तुरत फळेछे. देवताओ, यक्षो, राक्षसो पण ब्रह्मचारी मुनिने नमस्कार करेछे. ब्रह्मचारी मुनीश्वरने वचन सिद्धि सप्राप्त थायछे, ब्रह्मचारी पुरुषनो सकल्प सिद्ध थायछे. कोइ मनुष्य सुवर्णना मोटा देरासर करावे अने कोइ ब्रह्मचर्यव्रत अगीकार करे तो पण ब्रह्मचारी पुरुषनी बरोबर सुवर्णना देरासर

करावनारने फल थतु नथी चारित्रनु मूळ ब्रह्मचर्यव्रतछे ज्या ब्रह्मचर्यव्रत नथी त्यां चारित्रनी शुद्धि क्याथी अर्थात् ब्रह्मचर्यविना चारित्र नथी ग्रहस्थ पुरूष पण पोतानी स्त्री विना अन्य स्त्रीनो त्याग करेछे. ब्रह्मचर्यमा घणा गुण समायाछे, सुदर्शनशेठने शूळी पण सिंहासनरूपे थइ तेमा ब्रह्मचर्यनु माहात्म्य जाणवु. नवनारद ब्रह्मचर्यना प्रतापथी सन्य सुखलीला पाम्या. वळी पारकी स्त्रीना उपर राग करनार रावणने लक्ष्मणे मार्यो, अने रावण मरी नरकमा गयो. अने सीता सतीनो यश जगत्मां गवायो. विषय लपटी जीवो सदाकाल आकुल व्याकुल दु खी रहेछे. लपटी जीवो आ भवमा पण दु ख पामेछे अने परभवमा पण दु ख पामेछे लपटी जीवोनी जगत्मा अपकीर्तिथायछे अने विषयलपटी जीवो पकडाय छे तो सरकार तेनो मोटो दड करेछे. अने जगत्मा तेनु अपमान थायछे विषय लपटी जीवो एवा तो आंधळा होयछे के-तेमने धर्म वा अधर्मनी समजण पडती नथी माट भव्य जीवोए ब्रह्मचर्यव्रतनु सम्यक् परिपालन करवु वारवार मनुष्य जन्म मळनार नथी स्त्रीनु शरीर सात धातुथी भरेलुछे तेना शरीरमा लोही मास, हाडका, मेद, मज्जा, मूत्र, विष्टा भरेलीछे नाकमाथी लींट वहा करेछे आखमा पीयाना थोक जामेछे केशमा जुओ, लीखोना समूह पड्या करेछे शरीरद्वारोथी अशुचि वह्या करेछे, वळी जुवान अवस्था उतर्या बाद वृद्धावस्था थायछे त्यारे शरीर खराब लागेछे शरीरनो रग उतरी जायछे. अलबत तेना सामु पण जोवानु मन थतु नथी एवी स्त्रीना शरीरमा शो सारछे के तेना उपर राग थाय. वळी स्त्री जाति कपटथी भरेलीछे. भर्तृहरि जेवा राजाने मूकी तेनी राणी चाकरनी साथे सबधवाळी थइ हती ते वात ज्यारे भर्तृहरिराजाए जाणी त्यारे मनमा घणो

खेद थयो अने विचारवा लाग्यो के-अहो जे पिंगलाने हु पटराणी तरीके मानतो हतो अने जे मारी प्राणप्रिया हती. अने हु जेना उपर पूर्ण विश्वास राखतो हतो ते पिंगलाराणी पण अते मारी थइ नहि. अने तेणीए कामना आवेशथी नीचनी साथे सबध कर्यो माटे तेने धिक्कार थाओ. अहो जगत्‌ना जीवो कामावेशथी पुण्य पाप गणता नथी. एवा कामने पण धिक्कार पडो अने आ ससारमा हु जेने सारभूत मानतो हतो एवी पिंगला पण मारी थइ नहि. अहो ज्ञानीओए ससारने असार कह्योछे तेमा जरा मात्रपण असत्य नथी. एम चिंतवी तापसी दीक्षा अगीकार करी पर्वतनी गुफामा चाल्यो गयो, अने तेमणे भर्तृहरि शतकनी रचना करी. माटे ससारमा सारभूत धर्म विना अन्य कशु जणातु नथी. माटे भव्यजीवोए पण सासारिक मोहमायाथी दूर रही आत्मिक धर्माराधनमा तत्पर थइ धर्माराधन करवु, अने स्त्रीविषयाभिलाषनो त्याग करजो. शास्त्रमा विषयने विषनी उपमा आपीछे त्यारे वळी एक महात्मा कहेछे के, विषयने विषनी उपमा आपवी ते योग्य नथी कारण के, विष तो एक भवमा भक्षतां प्राण हरी दुःख आपेछे अने विषयो तो अनेक भव पर्यंत परिभ्रमण करावी दु.ख आपेछे माटे विषना करता पण मोटी उपमा आपवी जोइए. विषयथी थतु सुख स्वप्नसुख समान मिथ्या कल्पना मात्रछे.

तथाच श्लोक

स्वप्ने दृष्टं यथापुसः क्षणमात्रं सुखायते
प्रबुद्धस्य नतत्किंचित् एव विषयज सुखं. १

स्वप्नमा देखेलो पदार्थ पुरुषने क्षणमात्र सुख आपेछे अने ज्यारे ते मनुष्य जागेछे त्यारे कइपण देखातु नथी ए प्रमाणे विष-

पन्तु सुख क्षणमात्र आभास मात्रछे अने वस्तुतः विचारतां कइ सुख नथी. वळी विषयी पुरुषोनी केवी स्थिति थायछे ते जणावेछे.

श्लोक

विषयेषु विषीदतो, न पश्यति हिताहित
श्रृण्वंति न हित वाक्य, अंध बधिरसंनिभा' १

विषयोमां विषाद पामेला जीवो हित या अहितने देखता नथी. तेम वळी हितवाक्य कोइ कहे तो ते साभळता नथी. खरे खर विषयलालचु जीवो अंध अने बहेरा सरखाछे. अने वळी कहेछे के,

श्लोक

विषयेषु रतोजीव', कर्म बध्नाति दारुण
तेनासौ क्लेशमाप्नोति, भ्राम्यन् भीमे भवोदरे २

विषयोमा आसक्त थएल जीव दारूण कर्म बांधेछे अने तेथी ते जीवो भयंकर ससारमां परिभ्रमण करतां क्लेश पामेछे. वळी विषयमां मोह पामेला जीवो शु करेछे ते कहेछे

श्लोक

अहो मोहस्य माहात्म्य, विद्वांसोऽपियतो नरा
मुह्यंति धर्मकृत्येषु रता कामार्थयोर्हढ १

अहो मोहनु माहात्म्य केवु छे के जे विद्वान् मनुष्यो पण काम अने अर्थमां आसक्त थया छता धर्मकृत्यमा मुझायछे. आवु मोहनु जोर तोडी श्रीजंबुकुमार क्रोडी धन, स्त्री, परिवारनो त्याग करी दीक्षा अगीकार करी तेमज धन्नाकुमार तथा शाळीभद्रे मोहनो नाश कर्यो श्री स्थुलीभद्र के जे पाटलीपुरमा शकटाल मत्रीना पुत्र हता अने जे बार वर्ष वेश्याना घेर रह्या हता. तेमणे स्त्रीनो त्याग करी दीक्षा अगीकार करी अने वेश्याने, गृहे चातुर्मास

कर्युं. त्या वेश्याए पोतानुं शरीर देखाय अने विषयाभिलाष थाय तेम नाच कर्यो, कामोत्पादक अनेक प्रकारना गायनो गाया तो पण मुनिवर्यश्री स्थुलीभद्र जरा चलायमान थया नहीं अने विषयमां रागी एवी वेश्याने पण वैरागी बनावी. अने ते वेश्याने श्रावकना बार व्रत उचराव्या. अहो आश्चर्यनी वात छे के, कामनो नाश करवा महामुनियो पर्वतनी गुफाओमा तथा एकांत जग्याओमां गया, केमके त्यां काम आवी शके नहि माटे. त्यारे स्थुलिभद्र मुनिवर तो कामना गृहमां प्रवेशी कामनो नाश कर्यो अहो केटलुं तेमनुं सामर्थ्य ? एवी रीते भव्यजीवोए उत्तम चरित्र श्रवण करी विषय, काम, मोहनो नाश करवो अने ते प्रति जरा मात्र पण इच्छा करवी नहीं अने मन, वचन, कायाथी शुद्ध ब्रह्मचर्य व्रत पाळवुं.

हवे पांचमुं सर्वतः परिग्रह परिमाण विरमण व्रत कहेछे श्री मुनीश्वर महाराजा धनधान्यादिक नव विध परिग्रहनो त्याग करे छे, कारण के विकल्प संकल्पनुं कारण परिग्रहछे. परिग्रहथी क्रोध, मान, माया, लोभनी उत्पत्ति थायछे. जेम वहाण अतिशय भारथी समुद्रमां बुडेछे परिग्रहनी वृद्धिथी रागद्वेषनी वृद्धि थायछे. परिग्रहथी दुनीयामां मनुष्य एटली बधी गुंचवणमां आवी पडेछे के तेने जरामात्र पण शांति मळती नथी. वळी धनधान्यादिकनी वृद्धिथी मोटाइ वधेछे. मनमां मान आवेछे. वळी अदेखाइ पण प्रगट थायछे. वळी परिग्रहनी प्राप्तिना कारणथी प्राणातिपात, असत्य, चोरी, आदि पापस्थान कोनुं सेवन करी कर्मार्जन करी जीव अधोगतिमां अवतरी त्यां छेदन भेदन ताडन तर्जन शोक, वियोग क्षुधा, तृषा, आदि विविध दुःखो भोगवेछे. वळी परिग्रहथी अज्ञानीजीव धर्म साधन करी शकतो नथी परिग्रह मेळववामां केवळ

दुःखज समायुछे. वळी परिग्रह धन उपर ममता भाव राखी मनुष्य मरण पामी सर्प, उदर, गीरोलीना अवतार पामेछे वळी परिग्रहनी ममताथी मातपिता भाइ परस्पर लडी मरेछे वळी परिग्रह धनरूप वृद्धि पामेछे त्यारे तेने साचववानी पण चिंता रहेछे. रखेने चोर विगेरे लइ जाय एवी चिंता तेना मनमां रहेवाथी सुखे करी उघपण आवती नथी, परिग्रहथी आरंभ, समारंभ करी कर्मोपार्जन जीव करेछे परिग्रहधारी खरेखर जडवस्तुने पोतानी मानी ठेतरायछे माटे वैरागी आत्मार्थी जीवो परिग्रहनो त्याग करी दीक्षा ग्रही पंचमहाव्रत अंगीकार करेछ अने पुत्र स्त्री मातपिता विगेरे संसारी कुटुंबनो संबंध छोडेछे अने स्वस्थ चित्ते हु एकलो छु. आत्माथी अन्य मारु नथी अने हु कोइनो नथी एम अदीन मना थइ आत्माने शिखामण आपेछे सद्गुरूने धारण करेछे. संयमनी रक्षा अर्थे वस्त्र, पात्र, पुस्तक, रजोहरण, मुखवस्त्रिका, धारण करेछे संयमना उपकरण राखवाथी परिग्रह कहेवातो नथी कहुछे के

मुच्छापरिग्गहोवुत्तो, नायपुत्तेण ताइणा,

श्री ज्ञानपुत्र वीरप्रभुए मूर्च्छाने परिग्रह कह्योछे माटे हठ कदाग्रह करवो नहीं. एम मुनीश्वर परिग्रहनो त्याग करी निर्विकल्प मन करी आत्मज्ञानमां मग्न रहेछे, अने मुनीश्वर विचारे के आ बाह्य परिग्रह त्यागी मुनि आत्मानी रूद्धि तरफ लक्ष आपी जुवेछे तो त्यां अनतज्ञान, अनंत दर्शन, अनंत चारित्र, आदि रुद्धि भरेली छे अने ते रुद्धि अविनाशीछे. पोतानाथी कदी जुदी पडवानी नथी अने ए रूध्धि प्राप्त थवाथी सहज शांति अनुभवायछे, एम आत्मा ए जाण्यु त्यारे आ बाह्य जड रूध्धिरूप परिग्रहनो त्याग कर्यो. अने आत्मिक रुध्धि मेळववा प्रयत्न करवा लाग्या, ध्यानादिकनो अभ्यास करवा लाग्या, ए पांचमु परिग्रह विरमणव्रत दी-

क्षा अंगीकार करी मुनिवर्यो मनवचन अने कायाथी परिग्रह धारण करवो नहीं परिग्रह धारण करावचो नहीं. अने परिग्रह धारण करता होय तेनी अनुमोदना करवी नहीं.

छठु रात्रीभोजन विरमणव्रत कहेछे. रात्रीना समयमा मुनीश्वर अशनपान, खादिम अने स्वादिम ए चार प्रकारना आहारनो त्याग करेछे श्रीवीरप्रभुए रात्रीभोजनमा महा दोष कथ्योछे, माटे आत्मार्थी जीव रात्रीभोजन करे नहि. योग शास्त्र, वर्धमान देशना, आदि ग्रंथोमा तथा सूत्रोमा रात्रीभोजन करवाथी महादोष बताव्याछे. वळी अन्य दर्शनीओना शास्त्रमा पण रात्रीभोजन करवाथी दोष बताव्याछे माटे मुनिवर्यो दीक्षा ग्रही रात्रीभोजननो त्याग करेछे. ए रीते पच महाव्रत अने छठु रात्रीभोजन विरमणव्रतनु अंतो संक्षेपथी स्वरूप प्रसंगोपात देखाड्यु. आ प्रमाणे मूल व्रत अंगीकार करे, अने चरण सित्तरी करण सित्तरीरूप उत्तर भेदनु आराधन निर्ग्रंथ मुनिवर्य करे. श्रीसिद्धसेन दिवाकरसूरिकृत प्रवचन सारोद्धारमा चारित्रना मूळ भेद उत्तरभेदनु तथा चारित्रना उपकरणोनु विशेषत वर्णन कर्युंछे त्यांथी जिज्ञासुए विशेष अधिकार जाणवो हवे दीक्षा अंगीकार करी कषायना निग्रहरूप शौच मुनीश्वर धारण करेछे क्षमाथी क्रोधनो पराजय करेछे अने नम्रताभावथी माननो पराजय करेछे अने सरलताथी मायानो नाश करेछे. अने संतोषथी लोभनो नाश करेछे वळी पाच इंद्रियोना विषयो जीतवारूप शौच मुनीश्वर धारण करेछे प्रमादनो त्याग करवो ते रूपशौचने दीक्षा अंगीकार करी धारण करेछे.प्रमादथकी चौद पूर्वी पण संसारमा पड्या माटे आलस्य, निद्रा, विकथा, पारकी निंदा आदि प्रमादनो नाश करी मुनीश्वर अप्रमत्तपणे रहेछे वळी मुनीश्वर ध्यानरूप शौच जे

सर्व शौचोमा उत्तमछे तेने धारण करेछे. धर्मध्यान अने शुक्लध्यान ए बे ध्यान आत्मकल्याणकारीछे. तेमा शुक्लध्यान मुक्ति प्रदाताछे मन वचन अने कायाना दुष्ट योगनो जय करवो तेने शौच कहेछे वळी हेय, ज्ञेय अने उपादेयनो विवेक तेने उत्तम विवेक कहेछे. ते शौचने दीक्षा अंगीकार करी मुनिवर्यो धारण करेछे. बार प्रकारे तप करवो ते पण शौच जाणवो, श्री सर्वज्ञ कथित दीक्षामा दयादिक सर्व कृत्य शौचरूप शरीरनी अंदर रहेला आत्मानी शुद्धि करनारछे. निश्चय चारित्र आत्मस्वभावमयछे एटले आत्माथी भिन्न नथी ते चारित्रनी प्राप्ति माटे व्यवहार चारित्रकारणीभूतछे.

आ संसारमा केटलाक जीवो धर्मनु नाम पण जाणता नथी अने तदनुकूल प्रयत्न पण करता नथी संसारमां मोटा कहेवाणा एटले पोताने धन्य मानेछे पण पोते जीवादिक तत्त्व जाणता नथी अने सांसारिक कार्योमा अहर्निश गुंथाया रहेछे, पण धर्माराधन परायण थता नथी धर्मनु आराधन करी आत्माने कर्मेन धनथी छोडाववो एज उत्तम पुरुषोनु लक्षण छे बाकी धन, पुत्र, लक्ष्मीनी वृद्धिथी पोतानी वृद्धि मानी अहंभावमा वर्तवु ते तो अधम पुरुषोनु लक्षणछे श्री भरतराजा, राम, पांडवो विगेरेए अंते आ संसारने असार समजी आत्महितमा प्रवृत्ति करी तेम भव्य जीवोए पण अधुना सारमा सार दीक्षानु अवलंबन करवु जोइए दीक्षा ग्रहा विना आश्रवमार्गनो रोध थतो नथी आ संसारने ज्ञानी पुरुषोए बळता अग्नि समान कह्योछे, बाजीगरनी बाजी जेवु आ संसारनु स्वरूप जाणी विवेकी मनुष्य चारित्रमार्ग ग्रहण करेछे मारु मारु मानता एवा अनेक जीवो मायाना वश ज्ञानलक्ष्य सत्य आत्मस्वरूप भूली यमराज वश थया अने थायछे. जेम समुद्रमां पाणीना अनेक तरंगो उत्पन्न थायछे अने पश्चात् विलय

पामेछे तेनी पेठे अनादिकालथी आससारसमुद्रमां देव मनुष्य तिर्यंच अने नारकीतरगे करी जीव अनेकशः शरीर छोडतो अने अनेकशः शरीर धारण करतो वर्तेछे. पण अज्ञान दशाथी पामर जीवनी मुक्ति थइ नहीं. पण ज्यारे आत्मानु स्वरूप जाणवामा आवेछे त्यारे आत्मा सयममार्गयोगे धर्मना आविर्भाव अर्थे प्रयत्न करेछे, ज्यारे चारित्रमोहनीय प्रकृतिनो क्षय थायछे त्यारे चारित्र आत्मामा प्रगटे छे. कोइ जीव चारित्र मोहनीयने उपशमावेछे. कोइ चारित्र मोहनीयनो क्षयोपशम करेछे. कोइ जीव क्षायिकसमकितयोगे आठमा गुणठाणाथी क्षपकश्रेणि आरोहण करी चारित्र मोहनीयनो क्षायिक भाव करेछे. कोइ जीव उपशम श्रेणि चढी चारित्र मोहनीयकर्मनी प्रकृतिने अगीयारमा गुणठाणे उपशमावेछे अने त्याथी पाछा पडे छे. अने यावत् मिथ्यात्व गुणठाणा सुधी आवेछे.

कोइ उपशम समकित पामी आठमागुणठाणाथी उपशमश्रेणिए चढेछे अने कोइ क्षायिक समकित पामी आठमा गुणठाणाथी उपशम श्रेणि चढी अगीयारमे गुणठाणे जइ मरे तो अनुत्तर विमानमा जायछे. अने कोइ उतरता गुणठाणे पण मरण पामेछे. अनतानुबधी क्रोध, मान, माया अने लोभ तेमज समकित मोहनीय अने मिश्रमोहनीय अने मिथ्यात्वमोहनीयनो क्षायिकभाव कर्या पूर्वे आवता भवनु आयु बाधी पाछळथी क्षायिक समकित पाम्यो होय ते जीवने बद्धायुक्षायिक समकित जाणवु. आयुष्य बधनी अपेक्षाए आवु क्षायिक समकित कह्यु छे, तत्त्वथात बहुश्रुतवा केवळी जाणे. ते अशुद्ध क्षायिक समकिती जीव उपशम श्रेणि करे एम कहेवायछे. क्षायिक समकित जीव दशमा गुणठाणे यथाख्यात चारित्र पामी बारमा गुणठाणे ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, अने अतरायकर्मनो क्षायिकभाव करी अनतज्ञान, अनंतदर्शन, अनतवीर्यअने क्षायिकभावना

पचलब्धि पामेछे. ते नीचे मुजब, अनतदानलब्धि,अनतलाभलब्धि, अनतभोगलब्धि, अनतउपभोगलब्धि अने अनतवीर्यलब्धि समाप्त थायछे अतरायकर्म क्षय थयुछे एवा परमपरमेश्वर पुरुष सदा सुखी छे मुख्यपणे तो ते लब्धियोनी प्राप्ति आत्मस्वभावेछे केमके तेनी क्षायिकभावे प्राप्तिछे. अने जे अनत सामर्थ्य आत्मामा अनादिथी शक्तिरूपे हतु ते व्यक्तिरूपे थइ प्रकाशेछे, अने आत्माना अनत- गुणोनो आविर्भावसेरूप दान, आत्मा पोते पोताने आप्यु ते दान- लब्धि जाणवी. तेमज अनत आत्म सामर्थ्यनी समाप्तिमां किंचित् मात्र वियोगनु कारण रह्यु नथी तेथी अनतलाभ लब्धि कहेवायछे

वळी अनत आत्मसामर्थ्यनी समाप्ति सपूर्णपणे परमानद स्वरूपे अनुभवायछे. तेमां किंचित् मात्रपणे वियोगनु कारण रह्यु नथी तेथी अनतभोगलब्धि जाणवी.

तथा अनत आत्म सामर्थ्य सपूर्णपणे परमानद स्वरूपे समये समये परिणमेछे तोपण तेमा किंचित् मात्र पण वियोगनु कारण रह्यु नथी. तेथी अनत उपभोगलब्धि कहेवा योग्यछे. तेमज अनत आत्मसामर्थ्यनी प्राप्ति संपूर्णपणे थया छता ते आत्मसाम- र्थ्यना भोगथी आत्मशक्ति थाके के तेनु सामर्थ्य न झीली शके, वहन न करी शके,एम छेज नहीं सदाकाल ते सामर्थ्यछे तेमां जरा मात्र पण न्यूनाधिकपणु थवानु नथी. एवी जे वीर्य शक्ति त्रिकाल सपूर्णपणे वर्तेछे ते अनतवीर्यलब्धि कहेवा योग्यछे.

क्षायिकभावनी दृष्टिथी जाता उपर कह्या प्रमाणे ते लब्धिनो परमपुरुषने उपयोग होयछे. वळी ए पाचलब्धि हेतु विशेषथी सम- जावा अर्थे जुदी पाडीछे नहीं तो अनतवीर्यलब्धियां पण ते पाचेनो समावेश थइ शकेछे. एम तेरमा गुणठाणे क्षायिकभावनी नवलब्धि भोगवतो परमपुरुष शैलेशीकरण करी चउदमा गुणठाणे अया-

तीकर्मनी ते गुणठाणे खपाववा योग्य जे प्रकृतियो बाकी रही हती ते चउदमा गुणठाणे खपावी सिद्धशिलानी उपर एक योजनना चोवीश भाग करीए तेना त्रेवीस भाग नीचे मूकी चोवीसमा भागे अवगाहनाए सयुक्त ते मोक्षस्थानमां आदिअनतमे भांगे बिराजमान थायछे, चारित्रथी पूर्वोक्त मोक्षस्थाननी प्राप्ति थायछे.

अथ दशमविषय.

१० कर्मनो कर्ता तथा भोक्ता आत्मा, कर्मनो नाश शी रीते करे ?

प्रत्युत्तर–आत्मा स्वरूपमा रमण करे तो कर्मनो नाश थायछे,

परस्वभावमां रमण करतो आत्मा कर्म बांधेछे अने, स्वस्वभावमां रमण करतो कर्मनो नाश करेछे, अनतजीवोए भूतकाळमा कर्मनो नाश कर्यो अने अनतजीवो भविष्यकाळे करशे, जीव बे प्रकारनाछे. १ भव्यजीव २ अभव्यजीव.

जेनामा मोक्ष जवानी योग्यताछे तेने भव्यजीव कहेछे. अने जेनामां बिलकुल मोक्ष जवानी योग्यता नथी तेने अभव्यजीव कहेछे. अभव्य जीव कदी मोक्ष पामी शकतो नथी.

आत्मा कर्मनो नाश शी रीते करे तेनु घणुखरु विवेचन पूर्वे प्रायः कथ्युछे तेथी अत्र स्थळे विशेष विवेचन कर्युं नथी. हवे विचारोके–मोक्षतत्त्व बंधविना सभवे नहीं. अने जेवडे बंध ते कर्म एम आत्मा अने कर्मनो सबध जेवो जिनदर्शनमा घटेछे. तेवो अन्यत्र घटतो नथी. कर्मथी मुक्त आत्मा सिद्धस्थानमा सादि अनतभगीए रहे छे, त्यां परमात्मपणे समये समये अनंतसुखनो भोक्ता आत्मा बनेछे. कोइ दर्शनी दुःखात्यताभावरूप मुक्तिमानेछे पण तेम नथी. आत्माने कर्मनायोगे दुःख थायछे, ते विभाविकछे

एटले विभाविक वस्तु स्वरूप जे दुःख ते आत्माथी दूर थायछे अने आत्मामां सुखछे ते स्वभाविकछे. स्वभाविक वस्तु कदी टळती नथी. तेम आत्मामां जे सुखछे ते स्वभाविकछे एटले आत्मानो सुख शुद्धगुणछे अने आत्मागुणीछे माटे तेनाथी दूर थतो नथी. कोइ वादी जडस्वरूप मुक्ति मानेछे मुक्तदशामां आत्माने कोइपण वस्तुनु भान नथी आम ते वादीनु मानवुछे ते अज्ञान विशिष्टछे. कारणके–जडस्वरूप मुक्ति होत तो कोइ मुक्ति पामवानी जरामात्र पण इच्छा करे नहीं. परंतु स्याद्वाद सत्यदृष्टिथी समजो के मुक्तिपद पामेलो आत्मा केवलज्ञानथी दरेक पदार्थने जाणेछे. समस्त वस्तुनु ज्ञान सिद्धात्मामां समये समये प्रवर्तेछे, वळी सामान्य उपयोगरूप केवलदर्शनथी सिद्धात्मा सर्वजगत्ने देखेछे अने मुक्तात्मा अव्याबाधगुणथी अनंत सुख भोगवेछे, माटे जडस्वरूप मुक्ति नथी. ज्ञान स्वरूप जे आत्मा ते जडरूप बनी जाय तो ते मुक्ति कहेवाय नहीं, वळी आत्मा ज्ञानगुणथी भिन्न थाय नहि कारणके–आत्मानो स्वभाविक ज्ञानगुणछे ते ज्ञानगुण आत्माथी त्रिकाले पण जुदो पडे नहीं.

वादी–जो मुक्तिमां आत्माने ज्ञानगुणवाळो मानीए तो मुक्तात्मा ज्ञानथी सर्व जगत्जीवोने थतु दुःख जाणे, त्यारे ते दुःख मुक्तात्माने थाय, माटे ज्ञानगुण मुक्तिमां मानवो अयुक्तछे

सुगुरू–हे सत्य तत्त्वाकांक्षी भव्य–जरा विचार करशो तो मालुम पडशे के–मुक्तात्माने अनंतज्ञानथी तेमां किंचित् विरोध आवतो नथी जेम दृष्टांत–कोइ मनुष्य कोइस्थाने पडेलु तालपुटविष जाणे अने तेने देखे तेथी तने कइ दुःख थतु नथी, तेम सिद्धपरमात्मा केवली भगवान्ने पण जगत्ना जीवोने दुःखी जाणवाथी ते दुःख पोताने लागतु नथी तेम जगत्ना जीवोमां शातावेदनी जोवाथी शातावेदनीय कइ सिद्धप्रभुना

आत्माने लागती नथी—कारणके वस्तुओ थकी पोतानो आत्मा न्यारोछे, तेथी ते विरोध सिद्धभगवानमा घटतो नथी.

आशंका—सिद्धात्माओ अनंत सुख समये समये भोगवेछे ते केवल ज्ञानथी के, केवलदर्शन गुणथी—

समाधान—सिद्धात्माओ केवलज्ञानथी सर्व वस्तु जाणेछे अने केवलदर्शनथी सर्व पदार्थोने देखेछे अने सिद्धात्माओ सुख भोगवेछे ते अव्याबाध नामना गुणथी भोगवेछे तेथी पूर्वोक्त विरोधनो सर्वथा नाश थायछे.

ते उपरथी सिद्ध स्पष्ट भासेछे के जडस्वरूप मुक्ति नथी परंतु शुद्ध चैतन्य स्वरूप मुक्तिछे.

कोइवादी आकाशनी पेठे सर्वत्र व्यापिनी मुक्ति मानेछे ते पण यथार्थ घटना नहिं छे. कारणके, मुक्तआत्मा आकाशनी पेठे सर्वत्रव्यापक नथी. सर्वत्रव्यापक आत्माने मानता बंध मोक्ष व्यवस्था घटती नथी जेम आकाश सर्वत्र व्यापक छे तो ते कोइनाथी बंधाय पण नहीं अने बंधाबाना अभावे मोक्ष पण घटे नहीं. तेम आत्माने कर्मपण सर्वत्र व्यापक माननाथी बंधाय नहीं अने बंधाभावे मोक्ष पण कहेवाय नहि एम दोष स्पष्ट भासेछे, माटे सर्वत्र व्यापिनी मुक्ति सिद्ध ठरती नथी सर्वव्यापिनी मुक्ति मानता प्रथम सर्वत्रव्यापक आत्मा मानवो पडशे. अने सर्वत्रव्यापक एवा आत्माने बंध मोक्ष घटतो नथी वळी सर्वत्रव्यापिनी मुक्ति मानवामा अनेक विरोध आवेछे, माटे त्रिशलातनये श्री सर्वज्ञमहावीरे प्ररूपेली मुक्ति यथातथ्य सत्य छे अने ते प्रमाणे मानवामा कोइ जातनो विरोध आवतो नथी

वळी कोइ मतवादी मुक्तिमा स्वामी सेवक भाव स्वीकारेछे ते पण युक्तिहीनछे, कर्म खप्याथी सर्व आत्माओ मुक्तिमां सरखा

छे. सर्व आत्माओ पोतपोताना स्वरूपे परमानंद सुखविलासी छे. सर्व सिद्धात्माओमा केवलज्ञान अने केवलदर्शन छे. कोइ नानु मोटु नथी. अष्टकर्म खपावी अष्टगुण सिद्धना जीवोमा प्रगट्या छे पोताना गुणना कर्त्ता प्रत्येक सिद्ध भगवान् छे. विभावदशाथी रहित स्वस्वभावभोगी थयाछे माटे परनु कर्त्तापणु लेश मात्र नथी. वळी सिद्धना जीवोने शरीर नथी, लेश्या नथी, मन नथी, काया नथी, एक पुद्‌गल परमाणु सरखो पण सिद्धना जीवोमां रह्यो नथी अलेशी, अशरीरी, अचल, सिद्धना जीवोछे.

एम मानेछे के, मुक्तिमा केटलाक वर्ष पर्यंत रहीने जीव पाछो ससारमा आवेछे पण ते योग्य नथी. कारणके कर्मनो नाश थता सिद्ध स्वरूपता प्रगटे छे ते अवस्था सादि अनतमें भागेछे एटले सिद्धमा गयानी आदि छे पण अनत नथी अर्थात् सिद्ध थया पछी ससारमां आवता नथी. ससारमां आववानु कारण कर्म छे ते कर्मनोतो प्रथमथीज नाश करी मुक्ति गयाछे माटे ससारमा अवतार लेवानु काम बिलकुल नथी. वळी कोइ कहेछेके, सिद्धना आत्माओने नवां कर्म लागे ते पण ज्ञानहीन वचनछे कारणके, कर्म लागवानु कारण आत्माने राग अने द्वेष छे अने रागद्वेषनो सर्वथा नाश करी सिद्धात्मा थया छे माटे नवां कर्म पण सिद्ध परमात्माने लागता नथी सदाकाल शुद्ध स्वरूपे निज भोगवेछे, तेथी सिद्धना आत्माओ कदापि काले ससारमा पाछा जन्म धारण करता नथी सिद्धना जीव अनवतारी छे कोइ एम कहेछेके ज्यारे ते परमात्मा थया अने सिद्ध शिलानी उपर सिद्ध क्षेत्रमा रह्याछे अने त्याथी पाछा दुनीयामा आववाना नथी अने जगतना लोकोने दु.खमांथी बचावता नथी त्यारे तेमणे शो परोपकार कर्यो कहेवाय, तेना उत्तरमां समजवानु के,

मुक्तात्मा ने प्रकारनाछे एक केवलज्ञान संपादन करी आयुष्य विशेषे रहेला अने बीजा चउदमु गुणस्थानक स्पर्शी सिद्ध स्थानकमा गयेला. हवे तेरमा गुणस्थाककवर्ती केवलज्ञानी महात्माओ भाषा वर्गणाना पुद्गलयोगे उपदेश आपी तत्त्वस्वरुप समजावी जगज्जीवोनु कल्याण करेछे. अने सिद्धमा गया बाद सिद्धस्वरुपे थतां जगत् जीवो सिद्धनु ध्यान करी स्वस्वरुप प्रगटावेछे एटले तेमां पण कल्याण प्राप्तिमा जगज्जीवोप्रति सिध्ध परमात्मा निमित्त कारणीभूत छे, ते विना द्रव्यदयारुप उपकार करवा अर्थे ते सिध्ध परमात्मानी स्वाभाविक शक्ति नथी कारणके ते वीतराग थयाछे, सर्वजीवना कल्याणमा उपादान कारणनी अपेक्षाएतो पोतेज कारणछे. अन्य तो तेमा निमित्त कारण छे. आ वात सूक्ष्मदृष्टिथी सद्गुरू पासे समजता यथातथ्य समजाशे.

कोइ जीव तो इद्र आदि देवतारूपे थवु तेनेज मुक्ति मानेछे. कारण के तेनाथी आगळ सूक्ष्म ज्ञानदृष्टिथी जोवायु नहि तेज कारण छे, जेम के इशुख्रीस्त आदि मतवाळा एम मानेछे के परमेश्वर सुवर्णना सिंहासन उपर बेठोछे अने तेना मस्तके मुकुट विगेरेछे एम कहेवाथी समजायछे के ते देवयोनि पैकी कोइ देवने परमेश्वर मानी विश्वासयोगे एममाने छे. कारण के पूर्व भवनो रागी अने संबधी कोइ देव आ प्रमाणे करी शके अने तेथी भ्रांतिमा फसावु पडे. एम ख्रीस्ति धर्ममा होय तो ते अप्रमाण कही शकाय नही, माटे सर्वांशे परिपूर्ण अनुभवगम्य जिनदर्शनमा जे मुक्तिस्वरूपछे ते सत्यछे.

मुक्तिमां अनंत सिद्धोनी अवगाहना भेगी होयछे.

शिष्य-हे गुरो ! अवगाहनानु शु स्वरूपछे अने ते अवगाहनारूपी छे के अरुपी ?

गुरु-हे विनयशिष्य ! आत्मा ज्यारे शरीर त्यागीने मुक्तिमां जाय छे त्यारे शरीरना त्रण भाग करीए तेमांथी एक भाग त्यागीए. ⅔ प्रमाणमान आकाशप्रदेशमां आत्मा असंख्य प्रदेशथी व्यापीने रहेछे ते अवगाहना जाणवी. अने ते अवगाहना अरूपीछे.

शिष्य-एक सिद्धक्षेत्रमां अनंत आत्माओ केम करी समाय ?

गुरु-एक ओरडामां एक दीपक करीए छीए तो पण तेनी ज्योति समायछे तेम हजारो दीपक कर्या होय तो ते दीपकोनी ज्योति (प्रकाश) पण समायछे तेमां कइ हरकत पडती नथी. वळी दीपकना प्रकाशना पुद्गलरूपीछे तो पण समाइ जायछे तो अरूपी एवा अनंत आत्माओ सिद्धक्षेत्रमां समाय तेमां किंचित् पण विरोध जणातो नथी.

शिष्य-त्यारे सिद्धात्मा त्याथी अलोकमां केम जइ शकतो नथी,-

गुरु-सिद्धात्मा अक्रियछे गमनागमन क्रियाथी विराम पाम्याछे तेथी उपर जइ शकता नथी कारण के अक्रियपणुछे अने अलोकमां धर्मास्तिकाय पण नथी माटे सिद्ध त्यां जइ शकता नथी धर्मास्तिकाय तो फक्त गमनमां प्रवर्तेला पदार्थोने साहाय्य आपी शकेछे.

शिष्य-त्यारे आ आधिव्याधिउपाधिमय जगतमां शुं सारछे. शाथी अनंत दुःख नाश पामे ?

गुरु-शिवपद आराध्य, जगत्मां समजवु अने तेज साध्य करवा लायकछे. ते पदनी समाप्तिथीज सर्व अखंड शाश्वत सुखनी प्राप्ति थायछे. श्री गुणस्थानक क्रमारोहमां कह्यु छे. यथा

श्लोक

यदाराध्य चयत्साध्य, यद्ध्येय यच्चदुर्लभ,
चिदानंदमयं तत्त्वं सप्राप्तं परमं पद.

भावार्थ–जे शिवपद आराध्य, साध्य, ध्येय, दुर्लभछे. ते पद ने ज्ञानीओए शुक्लध्यानथी प्राप्त कर्युंछे.

आत्मा तेज ब्रह्मस्वरूपछे. आत्माज शिवस्वरूपछे, आत्माज परमात्मरूपछे. सिद्धत्वपणु आत्मानो शुद्ध पर्यायछे, सम्यग् मोक्ष स्वरूप वीतराग वचनोथी प्रतीत थायछे, ज्यारे बंधतत्त्वनो नाश थायछे. त्यारे मोक्षतत्त्वनी उत्पत्ति थायछे. मोक्षतत्त्वथी आत्मा भिन्न नथी. मोक्षमयी आत्माछे. ज्ञान, दर्शन अने चारित्रथी मोक्ष प्राप्तिछे. ज्ञान, दर्शन अने चारित्र गुणमय आत्माछे.

अज्ञानी जीव आत्मानो शुद्ध स्वभाव नहीं जाणतो छतो राग द्वेषादि करेछे, त्यारे ज्ञानी जीव आत्मस्वभाव जाणतो छतो राग द्वेषनो त्याग करी कर्मथी रहीत थइ मोक्षपद प्राप्त करेछे. ज्ञानी आत्माना स्वरूपमा सदाकाल रमण करी अखंडानंदानुभव प्राप्त करेछे. जेम हंसने मान सरोवरमा रतिछे तेम आत्मज्ञानीने आत्मस्वरूपमां रति होयछे. जेम चकोर चन्द्रमाज प्रीति धारण करेछे. तेम आत्मज्ञानी आत्मस्वभावरमणतामा प्रीति धारण करेछे. सीतानी जेम राममा प्रीति तेम आत्मार्थीनी आत्मस्वरूपमा प्रीति रमणता भासनता वर्तेछे. आत्मज्ञानीने शास्त्रकर्त्ता श्रमण कयेछे. श्रीआनंदघनजी महाराज पण कहेछे के–

आतमज्ञानी श्रमणकहावे, बीजा तो द्रव्यलिंगीरे

वळी श्रीयशोविजयजी उपाध्याय कहेछेके, समाधिशतकमां–

यथा

केवल आतम बोधहे, परमारथ शिव पंथ
तामे जिनकु मगनता, सोहि भाव निर्ग्रंथ.

परमार्थ शिवनो पंथ केवल आत्मज्ञान छे तेमा जे भव्यात्माने मग्नताछे ते भाव [illegible] जाणवा. निक्षेप भेदथी निर्ग्रंथ चार प्र-

धारनाछे १ नाम निर्ग्रंथ २ स्थापना निर्ग्रंथ ३ द्रव्य निर्ग्रंथ ४ भावनिर्ग्रंथ पूर्वोक्त चार निर्ग्रंथमां भाव निर्ग्रंथसर्जन. मोक्षसाधक जाणवा. कारणके, भावनिर्ग्रंथपणानी प्राप्ति विना कदापि काळ मोक्षपदनी प्राप्ति थती नथी सर्वपर वस्तु विषयोथी मनने खेंची आत्मस्वरूपना ध्यानमां मनने स्थिर करे. श्वासोश्वासे आत्मानु स्मरण करी भव्य जीवो कर्म खपावी परमात्मपद प्राप्त करेछे ज्ञानी पुरुष आत्ममाज स्थिरता करे. अने आत्मभावना सदाकाल भावी अनंत सुखमय पोताने लेखे नीचे प्रमाणे आत्मभावना भावे.

गाथा.

एगो मे सासओ अप्पा, नाण दंसण संजुओ,
सेसामे बाहिराभावा, सव्वे संजोग लक्खणा,

भावार्थ—एक मारो आत्मा शाश्वत छे. त्रिकालमां पण आत्मानो नाश थतो नथी वळी आत्मानु स्वरूप दर्शावेछे. ज्ञानदर्शन संयुत ज्ञान अने दर्शनादि अनंतगुणमय आत्माछे

आत्माथी दृश्यमान सर्व पदार्थो भिन्नछे सर्व पौद्गलिक पदार्थो संयोग विनाशी धर्मवाळाछे ते पौद्गलिक पदार्थमां मारापणुं कइ नथी रूपीपदार्थथी भिन्न हु आत्मा शुद्धचैतन्यमय लक्षण लक्षितछु. आत्मानोप्रकाश करवाने अन्य पदार्थनी जरूर नथी. आत्मा पोतानी मेळे पोताना स्वरूपनो प्रकाश करेछे. कंचुकना त्यागथी जेम सर्प नष्ट थतो नथी. तेम शरीर नाशथी आत्मा नष्ट थतो नथी. त्रिकालमां आत्मा पोताना शुद्ध स्वरूपथी भ्रष्ट थतो नथी

मूर्ख मूढ मनुष्य शुक्तिमां रजतनी भ्रांति धारण करी जेम मिथ्याभ्यास धारण करेछे तेम बहिरात्मा, परपुद्गलवस्तुमा आत्मत्व बुद्धिथी भ्रांति धारण करी मिथ्या चतुर्गति भ्रमणरूप क्लेश पात्र बनेछे.

सहज स्वाभाविक आत्मिक गुणानंतनी आविर्भावतारूप सिद्धतानु हेतु सम्यग्ज्ञानछे सम्यग्ज्ञाननी प्राप्ति विना भवसततिनो उच्छेद थतो नथी तेम सम्यग्दर्शननी प्राप्ति विना सम्यग्ज्ञान कही शकातुं नथी. अनेकात स्याद्वाद सत्तामय आत्मस्वरूपादि पदार्थोनु यथार्थ भासनपणु, श्रद्धानपणु थाय त्यारे समकित कथायछे अने समकित पूर्वक जे जाणपणु ते सम्यग्ज्ञान कहेवायछे सम्यग्ज्ञाननी प्राप्ति रूपसूर्य जे भव्यजनना हृदयमा प्रगटयोछे तेने मिथ्यात्वरूप अधकार आच्छादन करी शकतु नथी. ज्ञानरूप सूर्योदयथी सर्व पदार्थोनो भास थायछे त्यारे मोक्षमय आत्मा स्वयमेव प्रकाशेछे. अने कर्मनो नाश थायछे नवतत्त्वमा जीवतत्त्व आदेयछे, सवर निर्जरा मोक्ष ए त्रण तत्त्व उपादेयछे, पुद्गल द्रव्य अजीवछे. पुण्य पाप पुद्गल स्कधोछे. ते पुद्गल स्कधोने आत्मा पोताना स्वरूपमा रमतो दूर करेछे. ज्यारे आत्माना असख्यप्रदेशोनी साथे कर्मरूप पुद्गल स्कधोनो एक परमाणु सरखो पण रहेतो नथी. त्यारे आत्मा निरावरण निर्ममपद प्राप्त करी सादि अनत स्थिति पामेछे. एक समयमा गुणस्थानातीत थएल आत्मा आकाश प्रदेशनी समश्रेणिए अन्यप्रदेशोने स्पर्श्याविना सिद्धिस्थानमा विराजेछे. त्या सिद्धमा किंचित् दुःख नथी. दुःख सर्व पुद्गलना सयोगथीछे निर्मल परमात्माने परमाणु मात्रनो सबध नथी. तेथी त्यां लेश पण दुःख नथी. आधि व्याधि अने उपाधि ए त्रण प्रकारना दुःखथी रहित आत्मा अनत सुखमय वर्तेछे सर्वथा प्रकारे दुःखनो अभाव मुक्तिस्थानमां छे. अनत सिद्धजीवो लोकना अग्रभागे विराज्याछे अने तेओ सदाकाल आत्मस्वभावमा रमण करेछे. अनत ज्ञानदर्शन चारित्ररूप रत्नत्रयीनी लहेरमा स्वगुण भोगवेछे, त्याथी कदापिकाळे संसारमा पाछा आवी जन्म मरण धारण करता नथी. सर्व जगतुने ज्ञानथी

फारनाछे. १ नाम निर्ग्रंथ. २ स्थापना निर्ग्रंथ. ३ द्रव्य निर्ग्रंथ भावनिर्ग्रंथ पूर्वोक्त चार निर्ग्रंथमा भाव निर्ग्रंथसर्वत. मोक्षस प्राणवा. कारणके, भावनिर्ग्रंथपणानी प्राप्ति विना कदापि काळे क्षपदनी प्राप्ति थती नथी सर्वपर वस्तु विपयोथी मनने आत्मस्वरूपना ध्यानमां मनने स्थिर करे श्वासोश्वासे आ स्मरण करी भव्य जीवो कर्म खपावी परमात्मपद प्राप्त करेछे. पुरुप आत्ममाज स्थिरता करे. अने आत्मभावना सदाकाल अनत सुखमय पोताने लेखे नीचे प्रमाणे आत्मभावना भावे.

गाथा.

एगो मे सासओ अप्पा, नाण दंसण सजुओ,
सेसामे बाहिराभावा, सव्वे सजोग लरकणा,

भावार्थ–एक मारो आत्मा शाश्वत छे. त्रिकालमां प त्मानो नाश थतो नथी वळी आत्मानु स्वरूप दर्शावेछे. सयुत ज्ञान अने दर्शनादि अनतगुणमय आत्माछे

आत्माथी दृश्यमान सर्व पदार्थो भिन्नछे. सर्व पौद्‌ग थी सयोग विनाशी धर्मवाळाछे ते पौद्‌गलिक पदार्थमा कंइ नथी रूपीपदार्थथी भिन्न हु आत्मा शुद्धचैतन्यमय सितछु. आत्मानोप्रकाश करवाने अन्य पदार्थनी जरूर न पोतानी मेळे पोताना स्वरूपनो प्रकाश करेछे. कचुक जेम सर्प नष्ट थतो नथी. तेम शरीर नाशथी आत्मा न त्रिकालमा आत्मा पोताना शुद्ध स्वरूपथी भ्रष्ट थतो न

मूर्ख मूढ मनुष्य शुक्तिमां रजतनी भ्राति धार मिथ्याभयास धारण करेछे तेम बहिरात्मा, परपुद्‌गल त्मत बुद्धिथी भ्रांति धारण करी मिथ्या चतुर्गति भ पात्र बनेछे.

आत्मद्रव्य हु छु. सूर्य चंद्रादिकनी सहाय विना मारो शुध्ध ज्ञानरूप प्रकाश समये समये वर्तेछे. त्रण लोकना पदार्थनी उत्पादव्यय ध्रौव्यतानी अनतता मारा शुध्धज्ञानमा ज्ञेय स्वरुपे परिणमी समये समये भासेछे, ते ज्ञानगुण मारोछे हु ज्ञाननु पात्र छु. धर्मास्तिकायादिकथी हु भिन्न छु तनु-धनादिक पदार्थो माराथी भिन्नछे. स्वद्रव्यादिकथी युक्त रत्नत्रयीनो स्वामी आत्मा तेज हुछु. आवु भेद ज्ञानरुप अस्त्र मोहनो नाश करेछे माटे सर्व परभावथी भिन्न एवा आत्मामा रमणता करवी. वळी जे भेदज्ञानीछे ते औदयिक भावमा लेपातो नथी. जेम आकाश कादवथी लेवातु नथी तेम अत्र समजवु.

वळी अध्यात्म बिंदु ग्रथमा कह्यु छे के-

श्लोक.

स्वत्वेनस्वं परमपिपर त्वेनजानन्समस्ता
न्यद्रव्येभ्यो विरमणमिति चिन्मयत्व प्रपन्न
स्वात्मन्येवाभिरतिमुपनयन् स्वात्मशीली स्वदर्शी ॥
त्येवंकर्त्ता कथमपिभवेत् कर्मणो नैपजीव. ॥ १ ॥

जेणे आत्मामा आत्मपणु जाण्युंछे. अने पुद्गलादिकमा परपणु जाणी समस्त अन्य पदार्थोथी विराम पाम्योछे अने ज्ञानमयपणाने पाम्योछे. पोताना आत्मामा आनद पामी स्वस्वरुपनो दर्शी थयोछे एवो आत्मा शी रीते कर्मनो कर्त्ता बनी शके? अर्थात् एवी अध्यात्मदशामा रमण करनार जीव कर्मनो कर्त्ता बनतो नथी. पण पोताना आत्मस्वभावनो कर्त्ता थायछे. आत्माना स्वरूपमा रमण करनार योगीश्वरने जे सुख थायछे ते अनवधि सुख जाणवु. परस्वभावथी रहित एवा मुनीश्वरने जगत् तृणवत् जाणवु. अर्थात्

भावार्थ–परमात्मतत्त्व स्वाभाविक सदाकाल आनदरूपछे वळी शुद्ध निश्चयनयथी जोता परमात्मतत्त्व केवा प्रकारनुछे ते जणावे छे के–समस्त प्रकारना सकल्प अने विकल्पथी रहितछे, एवा परमात्मतत्त्वमा सहज स्वरुपमा लीन थएला भव्यो सदाकाल वसेछे, एवु परमात्मतत्त्व योगी पोतानी मेळे अनायासे जाणेछे उत्कृष्ट आल्हादथी सपन्न अने रागद्वेपरहित आत्मा आ शरीरमा वस्योछे तेज हु परमात्माछु एम जे जाणेछे ते पडित जाणवो' परमात्मस्वरुप एवो आत्मा ससारमा परिभ्रमण करेछे तेनु शु कारण छे ते दर्शावेछे.

गाथा

आया नाणसहावी, दसणसीलोविसुद्धसुहरूवो ॥
सो ससारे भमइ, एसो दोसो खु मोहस्स १

आत्मा ज्ञानस्वभावी अने अनत दर्शनगुणमयछे वळी ते निश्चयथी विशुध्ध तथा अनत सुखवान् छता ससारमा परिभ्रमण करेछे तेमा मोहनो दोपछे माटे आत्मार्थी भव्य जीव मोहनो जय करे मनमा विचारे के आ दुनीयामानी सर्व जड वस्तुओ मारी नथी अने हु तेनो नथी एम भावता मोहरिपुनो जय करी शकाय छे त्यारे हवे मारे शु एम जिज्ञासा शिष्यने थता गुरु महाराज कहे छे के–

श्लोक

शुद्धात्मद्रव्यमेवाह, शुद्धज्ञानगुणो मम
नान्योऽहसिद्धबुद्धोऽह, निर्लेपोनिष्क्रियः सदा ॥१॥

सकल पुद्गलना आश्लेपथी रहीत ज्ञान, दर्शन, चारित्र, अव्याबाधादि अनत गुणपर्यायमयअसख्य प्रदेशीशुध्ध

वळी भव्यपुरुषोए समजवु के-अहं अने ममपणु पोताना आत्मामा नथी. ज्ञान, दर्शन, चारित्ररूप रत्नत्रयीनो स्वामी हुंछु अन्य किंचित् वस्तु मारी नथी. आत्मिक धन तेज मारुछे. अन्य मारु नथी. आत्मस्वरूप जडमा कल्पे तो जन्मनी वृद्धि थायछे. अने आत्मस्वरूप आत्मामाज धारी निश्चय करे, स्वस्वभावमां रमे तो मोक्षनी प्राप्ति थायछे यथा समाधिशतक-

आपभावना देहमे, देहंतरगति हेत ॥
आपबुद्धि जो आपमे, सोविदेहपददेत ॥ १ ॥

भावार्थ-सारमा सार के-आत्मना स्वद्रव्यादिक चतुष्टयमां आत्मत्वपणु धारण करी एक चित्तथी आत्मध्यान करे ते संसार चक्रमाथी छूटेछे. आत्मा पोतेज परमात्मरूप बनेछे. ते बतावेछे.

समाधिशतक.

भविशिवपददे आपकु, आपहि सन्मुखहोइ ॥
तातेंगुरुहे आतमा, अपनो ओर न कोइ ॥ १ ॥

आत्मा पोते पोताना सन्मुख थायछे, त्यारे पोते पोताने शिवपद आपेछे. ते माटे निश्चय नयथी जोता आत्मा पोते पोतानो गुरु छे, आत्मानो अन्य कोइ गुरु नथी. निश्चयनयथी पोतानो गुरू आत्मा छे, पण तेनु समजीने व्यवहारथी परमोपकारक सद्गुरुनु आलम्बन मूकवु नहि पोतानी साध्यदशामां सद्गुरुनु आलंबन पुष्टिनिमित्त कारणछे. सद्गुरुना आलंबनथी आत्मानी शुभपरिणति थायछे. राग द्वेषमा परिणमवु ते परपरिणति छे. बहिरात्मा परपरिणतिने पोतानी करी मानेछे. संयम अंगीकार करीने पण जे भिक्षु रागद्वेष परिणामयुत परपरिणतिमा राचेछे, माचेछे ते द्रव्यसाधु जाणवो कह्युछेके-

मुनीश्वरने जगत् निस्सार लागेछे. अने आत्मस्वरूपमाज सार लागेछे. कह्यु छे के–ज्ञानसारमा देवचद्रकृत टीकामां

गाथा.

तिणसंथारनिसिन्नो, मुणिवरो भठरागमयमोहो ॥
जपावइ मुत्तिसुह, कत्तो तं चक्कवट्टीवि ॥ १ ॥

भावार्थ–नष्ट पाम्याछे राग, द्वेष, मद, मोह, ते जेना एवा मुनिवर्य तृणना सथारमा बेठा छता जे सुख पामेछे ते सुख चक्रवर्तिने पण क्याथी होय, अर्थात् मुनिवर्यने आत्मस्वभावे रमण करतां जे सुख थायछे ते सुखनो लेश मात्र चक्रवर्तिने नथी पर भावमा रमण करनार चक्रवर्ति सुरपतिने आत्मिक सुख प्राप्त थतु नथी. कह्यु छे के–ज्ञानसारमा देवचद्रकृत टीकामा

गाथा

जेपरभावे रत्ता, मत्ताविसयेसुपाव वहुलेसु ॥
आसापासनिवद्धा, भमति चउगइ महारन्ने ॥

जे भव्यो परभावमा मग्नछे. पचेंद्रियना विषयोमा जे मत्त थया छे, अने आशापाशथी जे बधायाछे ते चतुर्गतिरूप महाअरण्यमा परिभ्रमण करेछे, परभावमा आसक्त जीवो समये समये सात वा आठ कर्म ग्रहण करी पुनः पुन पुनर्जन्म धारण करेछे माटे परभावमा रमवु ते आत्माने योग्य नथी जडवस्तुमा किंचित् पण सुख नथी परमा यतो रागभाव तेने परिहरी पोताना आत्मामा जे खोज करेछे ते परम सुख पामेछे. यथा समाधिशतक–

रागादिकजबपरिहरी, करे सहजगुणखोज,
घटमे भी प्रगटे तदा, चिदानदकी मोज " १ ॥

वळी भव्यपुरुषोए समजवु के-अहं अने ममपणु पोताना आत्मामा नथी. ज्ञान, दर्शन, चारित्ररूप रत्नत्रयीनो स्वामी हुंछु अन्य किंचित् वस्तु मारी नथी. आत्मिक धन तेज मारुछे. अन्य मारु नथी. आत्मस्वरूप जडमा कल्पे तो जन्मनी वृद्धि थायछे. अने आत्मस्वरूप आत्मामाज धारी निश्चय करे, स्वस्वभावमा रमे तो मोक्षनी प्राप्ति थायछे यथा समाधिशतक-

आपभावना देहमें, देहंतरगति हेत ॥
आपबुद्धि जो आपमे, सोविदेहपददेत ॥ १ ॥

भावार्थ-सारमा सार के-आत्मना स्वद्रव्यादिक चतुष्टयमा आत्मत्वपणु धारण करी एक चित्तथी आत्मध्यान करे ते ससार चक्रमाथी छूटेछे. आत्मा पोतेज परमात्मरूप बनेछे ते बतावेछे.

समाधिशतक.

भविशिवपददे आपकु, आपहि सन्मुखहोइ ॥
तातेंगुरुहे आतमा, अपनो ओर न कोइ ॥ १ ॥

आत्मा पोते पोताना सन्मुख थायछे, त्यारे पोते पोताने शिवपद आपेछे. ते माटे निश्चय नयथी जोता आत्मा पोते पोतानो गुरु छे, आत्मानो अन्य कोइ गुरू नथी निश्चयनयथी पोतानो गुरू आत्मा छे, पण तेवु समजीने व्यवहारथी परमोपकारक सद्गुरुनु आलंबन मूकवु नहि. पोतानी साधकदशामा सद्गुरुनु आलंबन पुष्टिनिमित्त कारणछे. सद्गुरुना आलंबनथी आत्मानी शुद्धपरिणति थायछे. राग द्वेषमा परिणमवु ते परपरिणति छे. बहिरात्मा परपरिणतिने पोतानी करी मानेछे सयम अगीकार करीने पण जे भिक्षु रागद्वेष परिणामयुत परपरिणतिमा राचेछे. माचेछे ते द्रव्यसाधु जाणवो.

परपरिणतिपोतानीमाने, क्रियागर्वे गहेलो ।
उनकु जिनकहो केम कहीए, सो मूरखमे पहेलो--परम
जैनभावे ज्ञाने सवमांहि, शिवसाधन सद्दहीए;
नाम भेखसु काम न सीजे, भाव उदासी रहीए -परम
ज्ञान सकलनय साधन साधो, क्रिया ज्ञानकी दासी,
क्रिया करत धरतु हे ममता, आइ गलेमें फांसी--परम

इत्यादि समजी स्वस्वभावमा रमण करवु. एज सारमा सार आत्महित कर्तव्यनी पराकाष्ठा जाणवी सर्व पुद्गलभावमांथी प्रीति हठावी एक आत्मामा प्रीति जोडवी सर्व जगत् प्रपच दुःखमय छे एम आत्मार्थीए सतत अत करणमा भावना भाववी. प्रथम बाल जीवने बाह्य वस्तुमां सुख ज्या त्यां लागेछे अने अतर्मां उतरवु ते महा दु'ख लागेछे, पण ज्यारे द्रव्यानुयोगनु ज्ञान थायछे अने आत्मतत्त्वनी सम्यक् श्रध्धा थायछे त्यारे अतरमा एटले आत्मस्वरुपमां सुख लागेछे अने बाह्य जगत्मा दु ख भासेछे. अमृतरस भोजनना करता पण ज्ञानीने आत्मस्वभावमा अनतगुणु विशेष सुख लागेछे. अमृतरसभोजननु सुख क्षणिक छे अने आत्मसुख तो नित्यछे माटे ते अनुपमेय छे. आत्मसुखनु वर्णन करोडो जिह्वाथी लाखो वर्ष सुधी वर्णन थता पण कदापि पुरु थतु नथी आत्मिक सुख अवर्ण्य छे

अनुभवज्ञाननी ज्यारे प्राप्ति थायछे त्यारे आत्मिकसुखनी सत्य निश्चय प्रतीति थायछे. अनुभवज्ञान विना सत्य सुखनी प्रतीति थती नथी श्री चिदानदजी महाराज पण अनुभवज्ञान विषे आनदमां आवी पद्द्वारा विवेचन करेछे यथा.

पद.

अवधु पियो अनुभवरसप्याला, कहत प्रेममतिवाला.अ०
अंतर सप्त धातरस भेदी, परमप्रेम उपजावे
पूरवभाव अवस्था प्रगटी, अजवरूप दर्शावे. अ०
नखशिख रहत खुमारीजाकी, सजलसघनघन जेसी,
जिण ए प्याला पिये तिणकुं, और बात हे केसी. अ०
अमृत होय हलाहल जाकुं, रोगशोगनवी व्यापे,
रहत सदा घरगाय नशासे, बंधन ममता कापे. अ०
सत संतोष हैयामां धारे, जनमनां काज सुधारे;
दीनभाव हीरदे नहि आणे, अपनो विरुद संभारे. अ०
भावदया रणथंभ रोपके, अनहद तुर बजावे,
चिदानंद अतुली बलराजा, जीतअरि घर आवे. अ०

वळी तेमज श्री आनदघनजी महाराज पण कहेछेके—

आतम पियाला पीओ मतवाला, चिन्ही अध्यातम वासा,
आनंदघन चेतन व्हे खेले, देखे लोक लोक तमासा.
आशा औरनकी क्या कीजे.

अनुभवगम्य एवु आत्मिक सुख बाह्येंद्रियथी कदी जणातु नथी. बहिरात्मी प्राणीओ आत्मिकसुखनो गध पण अनुभवी शकता नथी साकरनो स्वाद जेम विषनो कीडो जाणी शकतो नथी तेम अज्ञानी जीव आत्मिकसुखनो लेश पण जाणी शकतो नथी. शाश्वत एवु आत्मिक सुख साध्य जाणी तेनी प्राप्ति अर्थे सदाकाल चारित्र धर्मनी आराधना ज्ञानी मुनिवर्यो एकाग्र चित्तथी क-

रेछे, ज्यांसुधी बाह्य पौद्गलिकसुखनी इच्छा हृदयमा प्रगटेछे त्यां सुधी समकितनी प्राप्ति थती नथी ज्ञानीओ बाह्यभावने स्वप्नवत् भ्रांति समान जाणी सत्यआत्मिकसुखने माटे प्रयत्न करेछे. परपुद्गलवस्तुमा आत्मिकधर्म नथी स्वस्वरूपमा रमणता करवी तेमाज लयलीनता करवी, मनवचन अने कायाना योगनी प्रवृत्ति परवस्तुमा थायछे ते निवारवी, अने बहिर्वाचा अने अंतर्वाचानो त्याग करी भव्यो मुक्ति पामे माटे आत्मिकधर्मनुं स्वरूप प्राप्त करवु जोइए ज्ञानथी आत्मिकधर्मनो पूर्ण राग प्रगटेछे ते सबधी कहेछे

॥ दुहा ॥

लाग्यो चोल मजीठनो, रग ते कबु न जाय,
धर्म रग लाग्यो थको, कदी न दूरे थाय ॥ १२९ ॥

भावार्थ-ज्ञानदर्शन चारित्र सहित आत्मानु स्वरूप समजतां परपुद्गल वस्तु उपरथी राग उतरी जायछे, अने आत्माना स्वरूपपर राग थायछे. आत्मा विना कोइपण वस्तु प्रिय लागती नथी. आत्माना गुण पर्यायमाज रंगावानो राग थायछे एम आत्मानी ज्ञानदृष्टि स्वस्वरूपने योग्य गणेछे ने परवस्तुने हेय गणेछे. आवी दशा थतां आत्मा परवस्तुओमा अहममत्व भावथी छुटेछे विरति सन्मुख थएलो आत्मा गुणस्थानकपर चढेछे दशमा गुणठाणाए राग पण छुटी जायछे अने तेरमा गुणठाणाए केवलज्ञान दर्शन चारित्रनो भोगी बनेछे अने अन्ते सिद्धबुद्ध बनेछे. आवी परमात्मदशानु स्वरूप देखाडनार सद्गुरू महाराजछे. माटे सर्व उपकारीमा मुख्य एवा गुरूना उपर प्रीति धारण करवी जोइए ते दर्शावेछे,

" दुहा. "

पुत्र पुत्रीदारा थकी, अधिको गुरुपर प्यार;
प्राणाधिक गुरुप्रेम जास, ते भवजल तरनार ॥१४०॥
एकज देव गुरू पिता, तेमां नही संदेह,
धर्मगुरू ते एकछे, अन्य मुनि गुणगेह ॥१४१॥
धर्मगुरूनी चाहना, धर्मगुरूनी भक्ति,
धर्मगुरू हृदय वदो, सेवो निजनिज शक्ति ॥१५२॥
सेवे शाश्वव सपदा, देखे दळदर दूर ॥
वदे वद्यपणुं वरे, गिरूआ गुरू जरूर ॥१४३॥

भावार्थः—पुत्र पुत्री अने स्त्री उपर मनुष्यने घणो प्यार होयछे तेना करता पण अत्यतराग सद्गुरूपर थवो जोइए. पोताना प्राण करता पण सद्गुरू उपर अत्यत प्रेमधारण करे. हृदयमा गुरु शब्द स्मरणनो मत्र जाप करे गुरूनी आज्ञा शीर्षपर धारण करे. एवो भव्यजीव जन्म जरा मरणथी पूर्ण समुद्र तरी शकेछे. अने मुक्ति पुरी प्राप्त करेछे. भव्यजीवोए समजवानु के पिता एक होयछे सद्देव पण एक होयछे, तथा समकितमदधर्माचार्य सद्गुरू पण एक होयछे. समकितमदधर्माचार्य मुनिनो जे उपगार छे तेना तुल्य अन्य मुनिओनो उपगार नथी. अन्य मुनिओनो यथायोग्य भक्ति विनय साचववो. धर्म गुरूना सिवाय आचार्य उपाध्याय पण आत्माना मुख्य उपगारी नथी, माटे धर्मगुरू उपर विशेषत भक्ति प्रीति धारवी. अने तेमनु वहुमान करवु. स्वकीय शक्तितः धर्मगुरूनु आराधन करवु धर्मगुरूनी सेवाथी त्वरित शाश्वत शिवसपदानी प्राप्ति थायछे. सद्गुरूने देखवाथी दारिद्र

दूर थायछे. सद्गुरुने वांदवाथी आत्मामां वयपणु मगटेछे. गुरुनी गुरुता अलौकिकछे गुरुनी गुरुता वर्णी शकाय तेम नथी. भव्य जीवो गुरुनी सेवा करतां गुरुनी गुरुता माप्त करेछे. श्री सद्गुरु कथित अनन्तगुणधामपूर्ण चेतनमां सदाकाल रमवुं ते दर्शावेछे.

दुहा

अज अविनाशी जीवछे, अखंड आनद पूर;
अतर्दृष्टि देखतां, चेतन नहींछे दूर.　　　॥१४४॥
चेतनगत तुज धर्म देख, बाहिर क्यां कर ख्याल;
बाहिर्दृष्टि देखतां, भवनी अरहट्ट माल.　　॥१४५॥
ध्यान धारणा धारीने, देखो आत्मस्वरूप;
बहिरूपाधि त्यागतां, शिवशाश्वतचिद्रूप　　॥१४६॥
मूढ बन्यो मानव कहे, ओ जाणे जगमूढ ॥
आतम ज्ञानी सुख लहे, ए अतरनु गूढ　　　॥१४७॥
रागद्वेष परिणामनी, ग्रथि त्यां छेदाय ॥
शून्यदशा पुद्गलतणी, सहेजे शांति पाय. ॥१४८॥

भावार्थ–अज अने अविनाशी एवो आत्माछे. आत्मा अनादि कालथीछे माटे ते अज कहेवायछे अने अनतछे माटे अविनाशी कहेवायछे अखंड अने आनदथी परिपूर्ण आत्माछे यत्र आनदछे तत्र आत्माछे. आनदनो ज्ञाता तथा आनदनो भोक्ता आत्माजछे अतर्दृष्टिरूप ज्ञानदर्शनथी देखतां आत्मा शरीरमांज रहेलोछे पोतानाथी दूर नथी आत्मानी शोधखोळ माटे परदेश जवा जरुर नथी. शरीरमात्र व्यापी रहेलो आत्मा ज्ञानदृष्टिथी

शोधता जणायछे. बाह्यदृष्टिथी देखता जडवस्तु जणायछे. अने जड-वस्तुमा आत्मपणु नथी. जडवस्तुथी भिन्न अरूपी आत्मानो निर्धार करी स्वस्वभावमा रमवु योग्यछे. जडवस्तुनो धर्म परिहरीने आत्मानो धर्म देखवो जोइए. मनवाणी अने कायाना वेपारमा आत्म धर्म नथी. आत्मानो धर्म त्रियोगनी क्रियाथी तथा लेश्याथी पण भिन्नछे. धारणा तथा ध्यानरूप सयम अवलबीने हे भव्यजीव आत्मानु स्वरूप देख. सयममा विघ्नभूत बहिरुपाधि परिहरीने स्वस्वरूपमां रमतां शाश्वतकल्याण ज्ञानमय आत्मा थायछे आत्मज्ञानी आत्मामा रगायछे त्यारे तेने बाह्यवस्तु भ्रातिमय लागेछे. तेथी तेने बाह्य वा वेपारमा आचारमा प्रेम रहेतो नथी तेथी जगत् लोको आत्मज्ञानीने (उन्मत्त) गाडो बनी गयो एम जाणेछे, त्यारे आत्मज्ञानी एम जाणेछे के जगत्ना लोको आधळाछे. पोतानी रुद्धि आत्मामां नहीं देखतां जडवस्तुमा गचीमाची रहेछे. अरे तेवा अज्ञानी जीवो जन्मजरा मरणना दुःख पामे तेमा शु आश्चर्य ? एवं ज्ञानीने अज्ञानीनी दृष्टिमां भेद पडेछे, अने एक बीजाने भिन्न दृष्टिथी देखेछे. आत्मज्ञानी अनत ज्ञान दर्शन चारित्रनो धामभूत आत्माने मानतो आत्मामांज स्थिरउपयोगथी रमणता करी क्षणेक्षणे अनतानंद भोगवेछे. आवी शुद्धदशामा रागद्वेषना परिणामनी ग्रंथी छेदायछे, अने रागद्वेषना अभावे शून्यपणु वर्तायछे. अने आत्मानी सहजशाति प्रगट थायछे. ज्ञानीने आवी सहज शांतिदशामा जे भान वर्तेछे ते जणावेछेः—

“ दुहा. ”

भासे एकज आतमा, सोऽहं सोऽह ध्यान;
तत्त्वमसि ... i, चिदानद भगवान् ॥१४२॥

आत्मदशा तेवी थइ, थिरता निज गुणमांहि,
वश वर्त्युं मन मांकडु, दु:ख देखे नहि क्यांहि. १५०

भावार्थः-उत्कृष्टनिर्मलध्यानदशामां शुद्ध आत्मस्वरूप भासे छे सोऽहं शब्दथी आत्मध्यान करायछे. आत्मा तेज हुं इत्येवसोऽहं शब्दनो परमार्थछे ते ज्ञानदर्शन चारित्रमय तेज हुं आत्माछे. बीजो नथी. एम तत्त्वमसि शब्दनो परमार्थछे. सोऽहं अने तत्त्वमसि वाक्यथी अनेकांतधर्ममय चेतननुं ध्यान धरता आत्मा केवलज्ञान अने क्षायिक सुख प्रगटावेछे, अने त्रण जगतमां पूज्य थायछे. सोऽहं अने तत्त्वमसिना ध्यानमां पोतानो आत्माज चिदानंद भगवान्‌रूप भासेछे. निर्मलध्यानमां शुद्ध आत्मदशा थतां आत्माना गुणोमां स्थिरता थायछे अने मनमर्कटनी चचलतारूप संकल्पविकल्प बंध पडेछे अर्थात् मन वशमां थायछे. तादृशीध्यानदशामां दु:खना ओघ विलय पामेछे कोइ ठेकाणे तेने ते काले दुःख देखातुं नथी. भव्यजीवोए निर्मलध्यानदशाथी स्वजीवन गाळवुं जोइए अतर्दृष्टि थया विना जे जीवो बाह्य आचारमां धर्म मानेछे अने आत्माना धर्म तरफ लक्ष राखता नथी ते पोते धर्म पामी शकता नथी, ने बीजाने धर्म पमाडी शकता नथी.

" दुहा "

रागे बांध्या जीवडा, आप मतीला मुड,
धूर्त ढोंगी पापीया, लेइ साधुनुं झुंड १५१
खावुं पीवुं पहेरवुं, वेशे माने धर्म,
सत्य धर्म नवि दाखवे, बांधे उलटां कर्म १५२
सत्य देव नवि ओळखे, दे मिथ्या उपदेश;
पेटभरु कदाग्रही, कुगुरू पामे क्लेश. १५३

मनमाया मूके नहीं, पहेरे त्यागी वेष;
भगवा वस्त्रे भोळवे, लोको देशो देश १५४

धननीं आशा राखता, ठगे ठगारा लोक;
टीलां टपके धर्म क्यां, आत्म विना सहु फोक. १५५

भावार्थ—अहममत्वमा तल्लीन बनेला केटलाक, आत्मा अने परमात्मानु स्वरूप नहि जाणनार ढोंगी पापिजीवो साधुनु छन्द लेइ गामोगाम फरी धन उघरावी दुनियाने ठगेछे, पण वस्तुतः जोता बिचारा ते ठगायछे. केटलाकतो खावामा, पीवामा अने वस्त्रवेषमाज एकांते व्यवहार निश्चयनय अवबोध्या विना धर्म माने छे. धर्मनु शु स्वरूप छे ते सापेक्षदृष्टिथी पोते जाणी शकता नथी तो अन्यने शी रीते जणावी शके धर्मना नामे ढोंग करी मिथ्या उपदेश आपी पोते बुडेछे. अने अन्य जनोने पण संसाराब्धिमां बुडाडेछे. अष्टादश दोषरहित सत्य देवने ते जाणी शकता नथी. सत्यज्ञानना अभावे स्वच्छंदताथी मनमां जेम आवे तेम मिथ्या उपदेश आपेछे. एतादृश उदरपूर्तिस्वार्थसाधक अज्ञान कुगुरुओ बहिरात्मभावथी भवपरंपरा ग्रही क्लेश पामेछे. मनमा रहेलु मिथ्या वस्तुओनु ममत्व मूके नहि अने त्यागीनो वेष पहेर्यो तेथी शुं थयु. बाह्यत्याग अने अन्तर् त्याग ए बे त्यागनी जरुरछे. उपरना फक्त बाह्य त्यागथी त्यागीपणु कहेवातु नथी. तेमज ज्ञानगर्भितवैराग्य विना केटलाक परिग्रहादिक उपाधिमा रक्त होय छता बाह्यत्यागनो अनादर करी अन्तर् त्यागी केहवावे ते पण अनेकान्तनय विरुद्ध छे. माटे बाह्यथी फक्त देखाता त्यागी भगवा वस्त्र पहेरी कुपथनी जाळमा लोकोने फसावेछे. धननी आशा धारक कुगुरुओ अलौकिक ठग जाणवा आत्मज्ञान थया विना उपरनां टीलांटपका मायाथी

करवामां आवेतो तेथी कइ आत्मानी रुद्धि माप्त थती नथी, तेमज जन्मजरा मरणना बंधनमांथी छूटातु नथी सातनय अने चारनिक्षेप पूर्वक आत्मज्ञान थायतो मिथ्यात्व देवगुरु धर्मना असद् विचारो नो नाश थाय. सत्यज्ञान थता आत्मज्ञानिनी केवी दशा थायछे ते जणावेछे

" दोहा "

फोक करीने लेखवे, सघळो दुनिया खेल,
योगाभ्यासी थइ खरे, टाळे सघळो मेल. १५६
टळे कर्मनो मेल सहु, करतां निजगुण खोज,
निजघटमा प्रगट तदा, चिदानन्दनी मोज. १५७
अन्तर ऋद्धि ज्ञानथी, प्रगटपणे निरखाय,
बाहिर रुद्धि बापडा, भोळा जन भरमाय. १५८
तनु धन यौवन कारमु, विद्युतना चमकार,
परभव साथ न आवतु, मोह्या मूढ गमार १५९
राची रुद्धि कारणे, जीव हणे केइ लाख,
जीवन तेनु धूळसम, जाणो छेवट राख १६०

भावार्थ–आत्मज्ञानिसन्त सासारिक मोहक पदार्थोनी रचनाने मिथ्या जाणेछे मोहक जड पदार्थोमा आत्मत्व लेश मात्र नथी. एव सत्य निश्चय करी योगाभ्यासमा प्रवृत्त थायछे. यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान अने समाधियी अष्टकर्मरूप मलिनतानो नाश करेछे, ध्यान अने समाधिद्वारा शोध करता आत्मा पोतेज परमात्मा बनेछे, परमात्मा थतां अनन्तगुण

आविर्भाव थायछे, केवलज्ञानथी सर्व रुद्धि प्रत्यक्ष देखायछे एम आत्मज्ञानिमा परिपूर्ण निश्चय थायछे आत्मज्ञानी विचारेछे के अज्ञानि पामर जीवोज उपाधिमय सुवर्णादिक बाह्यरुद्धिमा आसक्त होयछे. एव सत्य अने असत्यतो ज्ञानी निर्णय करेछे. सम्यक्त्व जडवस्तुओ जेवीके तनु धन यौवनपणु आदिने विद्युत्ना चमकारानी पेठे क्षणिक गणेछे, परभव तेमानु कइ साथे आवतुं नथी. अहो मोहमग्नमूर्खजीवो ! जडवस्तुओमां राची रहेछे. जे वस्तुओपर राग धारण करेछे ते वस्तुओ मृत्युबाद कशी साथे आवती नथी. ज्यारे आ प्रमाणे छे तो आत्मानी रुद्धिविना बाह्य जड रुद्धिमा केम मूढनी पेठे राचीमाची रहु. अलबत तेमा मूर्च्छा धारवी ते योग्य नथी एम ज्ञानी निश्चय करेछे, अज्ञानी पामर जीव बाह्य लक्ष्मीनी प्राप्ति माटे अनेक प्रकारना हिंसक व्यापारोमा लक्ष जीवोनो नाश करेछे. अज्ञानी जीव मत्स्य, सूकर, पशु, पखीना जीवोनो आ जीविका माटे नाश करेछे. तादृशअज्ञानिजीवोनु जीवबु पाप माटे जाणवु. एतादृश पापी जीवो मृत्यु पामी नरकादि दुर्गतिमा जायछे. तेवा पापी जीवोनु जीवन धूळ करता अनिष्ट पृथ्वीमा भारभूत जाणवु तेवा पापिजीवो उपर करुणादृष्टिथी जोवु योग्यछे. उपदेशादिकथी पापियोनो उद्धार करवो जोइए राखमा पडेलु घृत यथा नकामु छे तद्वत् पापिजीवोनु आयुष्य स्वपरापेक्षाए तेवी पापदशा वर्ते तावत् पर्यंत नकामु जाणवु बाह्यमांज सुखनी बुद्धि धारण करनाराओनी अशुभ प्रवृत्ति दर्शावेछे.

" दुहा. "

असत्य वाणी बोलीने, जन वचे धन हेत,
अशुभ कर्म पोठी भरी, जन्म जन्म दुःख लेत. १६१
चोरी चाडी चुगली, परनिन्दा अपमान,

स्वार्थिक जन ससारमां, नरक गति मेमान १६२
आत्म प्रशंसा दाखवे, करे घणो अभिमान,
धर्म मर्म पामे नहीं, पापी जन नादान. १६३
परापकर्ष चित्तडु, परने देवे आळ,
पापारंभ करे मुदा, देवे क्रोधे गाळ १६४
पाप पुण्य समजे नहि, ले नहि सद्गुरु बोध,
नास्तिक वादी जीवडा, करे शु चेतन शोध १६५
मत एकान्ते जे ग्रहे, ते अज्ञानी जीव,
भ्रमण करे भवमां अरे, ले नहि शाश्वत शिव. १६६

भावार्थ–अज्ञानी मोही जीव, असत्य वचन वदीने धनादिक माटे मनुष्योने छेतरेछे, चोरी, चाडी, चुगली करेछे. पापाचरणो थी पापकर्म ग्रहण करेछे, परजीवोनी निन्दा करेछे, परन्तु अपमान करेछे. स्वार्थिक मनुष्य ससारमा अनेक ज म दु.ख परपरा पामे छे, बाह्यदृष्टिधारकजीव स्वकीय प्रशसा करेछे अज्ञानी बाह्य धन सत्तादिकथी मनमां अत्यताभिमान धारण करेछे, बाह्यदृष्टिजीव जडमाज धर्म मानेछे तेथी आत्मधर्मनो मर्म समजतो नथी मनुष्यजन्म पामी जे आत्मतत्त्वनी शोध करतो नथी अने मोहक पदार्थोमाज अहममत्व धारण करेछे एवो जीव मोक्षथी पराङ्मुख रहेछे, आत्मधर्मनी प्राप्ति दुर्लभछे, नवतत्त्वनु सम्यग्ज्ञान थया विना आत्म ज्ञान थतु नथी, बाह्यदृष्टिजीव अन्यने नीचो पाडवा प्रयत्न करेछे तेमज कृत्याकृत्य विवेक पराङ्मुख थइ परजीवने आळ चढावेछे परजडवस्तुमां ममत्वथीवधार अनेक प्रकारना पापारभ करेछे क्रोधथी परने गाळो देछे, अज्ञानी जीव पाप पुण्यमा समजतो नथी.

तेमजमोहा न्धनवाथी सद्गुरुनो उपदेश श्रवण करतो नथी. सद्गुरूपदेश श्रवण करनारने श्रेष्ट मानतो नथी, मिथ्यात्वमा अंध थएला जीवो आत्मानी शोध करी शकता नथी. नास्तिकवादी एकान्तमत धारण करेछे. एगतो होइ मिळच, एकान्तपणाथी मिथ्यात्वछे. मिथ्यात्वी (अज्ञानी) मिथ्यात्वना योगे भवमा परिभ्रमण करेछे, सम्यग्दृष्टि थया विना सम्यक्चारित्रमार्ग प्राप्त थतो नथी. सम्यग्दृष्टिजीव सम्यक् चारित्र पामी शिवसुख सपत्ति प्राप्त करेछे. मिथ्यात्वीजीव वस्तुने यथार्थपणे जाणतो नथी. ईश्वरने मानेछे तोपण ते विपरीत पणे जाणीने मानेछे ते प्रसगतः जणावेछे, तेमा कोइक तो ईश्वर जगत्नो बनावनार मानेछे तेनो मत प्रथम दर्शावेछे.

॥ दुहा ॥

कर्ता ईश्वर मानता, जगमां केइक लोक,

सुखदुःख इश्वर आपतो, ए पण वाणी फोक १६७

भावार्थ–जगत्मा केटलाक मनुष्यो जगत्नो बनावनार ईश्वर मानेछे, केटलाक मनुष्यो खुदाने जगत्नो बनावनार मालीक माने छे, त्यारे खीस्तियो ते खुदानी मान्यता नहीं स्वीकारता इशुनो परमेश्वर जगत्नो बनावनारछे एम स्वीकारेछे. खीस्तिलोकोनी आवी मान्यताथी विरुद्ध पडी केटलाक हिंदुस्थानना हिंदुओ ब्रह्माने जगत्नो बनावनार मानेछे त्यारे केटलाक ते पक्षथी विरुद्ध विष्णुभगवान् जगतनो बनावनारछे एम मानेछे त्यारे केटलाक ते पक्षथी विरुद्ध पडी महादेवने जगत्नो रचनार स्वीकारेछे. त्यारे केचित् शक्तिथी जगत् वस्तुछे एव स्वीकारेछे. खीस्तियो दुनिया सातहजार वर्ष लगभगनी बनेली मानेछे. त्यारे मुसलमानो तेथी विशेपवर्ष कहेछे ब्रह्म जगत्कर्तावादी तेथी भिन्न रीते कहेछे. शक्तिपथवाळा तेथी भिन्नपण स्वीकारेछे. आर्यसमाजीओ जगत् अनादिछे एम

मानीने पुनः जगत्नो बनावनार ईश्वर सर्वथी भिन्नरीत्या वर्णवेछे, ख्रीस्ति मुसल्मान अने हिंदुओ जगत्नो बनावनार भिन्न भिन्न स्वी कारेछे, सर्व पोतपोताना पक्षने सत्य मानी अन्यपक्षनु खंडन करेछे. मुसल्मानो पूनर्जन्म स्वीकारता नथी. पशुपंखीमा सुकानीर (जीव) छे एम मानेछे त्यारे ख्रीस्तिधर्मवाळाओ तो पुनर्जन्म मानता नथी. तेमज पशुपंखीमां आत्मा नथी एम मानेछे पशुपंखीने मार्यामां ख्रीस्तियो दोष मानता नथी. हिंदुधर्म पाळनाराओ पुनर्जन्म मानेछे तेमज पशुपंखीमा आत्मा मानेछे अने पशुपक्षी मार्यामां पाप गणेछे, जैनधर्म पाळनाराओ पुनर्जन्म मानेछे अने एकेन्द्रियादिक सर्व जीवोनी दया पाळवी तने मुख्य धर्म स्वीकारछे हिंदुओमां वेदलाक वेदनो बनावनार ईश्वरछे एम मानेछे त्यारे वेदलाक कहेछेके वेदनो बनावनार कोइ नथी एम पौरुषय अने अपौरुषयनो विवाद चाली रह्योछे. वेदलाक हिंदुओ कर्मकाण्डने मुख्यधर्म तरीके गणेछे त्यारे वेदलाक ज्ञानकाण्डने मुख्य गणेछे. वेदमाननाराओ पैकी वेदलाक जगत् स्वप्न समान भ्रांतिरूप मानी तेनो कर्ता ईश्वरछे एम मानता नथी. त्यारे वेदलाक जगत्नो कर्ता ईश्वरछे एम मानेछे ज्ञानकाण्डमां पण अद्वैतवाद माननाराओ जगत् अनादि मानेछे अर्थात् तेनो बनावनार कोइ मानता नथी. जे वस्तुनी आदि नथी अर्थात् अनादिछे तनो बनावनार कोइ नथी. जेनो कोइ बनावनारछे ते वस्तु अनादि कहेवाती नथी ज्यारे जगत् अनादिकाळथी छे एम मान्यु तो ईश्वर कर्तृत्ववाद रहतो नथी वेद पश्चात् उपनिषदो बनी एम मानवामा आवेछे पश्चात् व्यासऋषि तेमणे तथा भगवद्गीता तथा अष्टादश पुराण बनाव्या एम केचित् मानेछे आर्य समाजीओ अढार पुराण व्यासजीना बनावेलां मानता नथी आधु- . बनेलां मानेछे एम पुराणो सबधी चर्चा चाली रहीछे. सना-

तनपक्षवाळा तथा आर्यसमाजीओने भगवद्गीता मान्यछे. तेमा पण केटलाक श्लोको प्रक्षिप्त भगवद्गीतामाछे एम आर्यसमाजीओ मानेछे. भगवद्गीतामा पण ईश्वर जीवोने सुखदुःखनो न्याय आपनो नथी. एव मान्युंछे. तथा जगत्कर्तापणु ईश्वरमां नथी एवु स्वीकार्युंछे.

शिष्य–हे सद्गुरो भगवद्गीताना कया अध्यायमा तेम दर्शाव्युंछे ते जणावशो–

सद्गुरु–स्वच्छ चित्तथी श्रवण कर

भगवद्गीता अध्याय पचम १४ चतुर्दश श्लोक ॥

श्लोक.

न कर्तृत्वं न कर्माणि, लोकस्य सृजति प्रभुः
न कर्मफल संयोग, स्वभावस्तु प्रवर्तते ॥ १४ ॥
नादत्ते कस्यचित् पाप, नचैव सुकृत विभुः
अज्ञानेनाऽऽवृत ज्ञानं, तेन मुह्यन्ति जतव ॥ १५ ॥

प्रभु, ईश्वर परमात्मा लोकना कर्माने बनावना नथी तथा लोकनु (जगत्नु) कर्तृत्व पण ईश्वरमा नथी. जगत् रचनाने ईश्वर परमात्मा रचता नथी. तेमज जीवोने पुण्य पापने संयोग करावनार ईश्वर नथी तेमज पुण्यपापनु फल आपनार पण ईश्वर नथी त्यारे जगत् कर्म विगेरेनु शु समजवु तेना प्रसंगमा बतावेछे के जी-

श्लोक

कृत कर्मक्षयो नास्ति, कल्पकोटीशतैरपि,
अवश्यमेव भोक्तव्य, कृतं कर्म शुभाशुभं. ॥ १ ॥

कोटी कल्पशते पण पुण्य पापरूप जे कर्म कर्याछे ते भोगवव्या विना छुटको नथी त्यारे ईश्वर जीवोनुं पाप पोते शी रीते ग्रहण करे, ईश्वर जीवोना पापपुण्य लेतो नथी. जीवो शुभ कर्म अने अशुभ कर्म करी स्वय कर्मना उदयथी तेनुं फल भोगवेछे, ईश्वर पेदा करेछे ईश्वर संहरेछे एम अज्ञानथी आच्छादित दृष्टिवाळा जीवो मानीने मुझायछे, जगत् कर्ता ईश्वर आ प्रमाणे जोतां सिद्ध थतो नथी. अन्यत्र पण भगवद्गीतामां ईश्वर अने प्रकृति (जगत्) अनादिकालथी छे एम कहुंछे ज्यारे व अनादिकालथी छे त्यारे प्रकृतिनो कर्त्ता ईश्वर शी रीते सिद्ध ठरे अर्थात् सिद्ध ठरतो नथी तत् पाठः भगवद्गीता अध्याय १३ त्रयोदश—

श्लोक

प्रकृतिं पुरुषं चैव, विद्धयनादी उभावपि,
विकाराश्चगुणांश्चैव, विद्धि प्रकृतिसंभवान् ॥ १९ ॥

पुरुष (परमात्मा) प्रकृति (जगत् आरे अनादिकाळथीछे एम जाण सत्व रजो अने तमोगुण तथा विकारो प्रकृतिज छे एम जाण आ उपरथी पण सिद्ध थायछे के अनादिकाळथी आत्मा अने कर्मछे तेम जगत् पण अनादिकाळथी छे अद्वैतवादी ब्रह्मसत्य जगत् मिथ्या एक अद्वितीय ब्रह्मज मानेछे. ते जगत्नो कर्त्ता ईश्वर अन्य मानतो नथी आ जगत् देखायछे ते भ्रांति मात्रछे त्यारे तेनो बनावनार ईश्वर केम कहेवाय एम अद्वैतवादियो मानेछे जैनदर्शन ... जगत् स्वरूपे सत् मानेछे पण जगत् अनादिथीछे. सत्वात्

सत्पणाथी जे वस्तु सत् होयछे ते अनादिथी छे. जेम षड्द्रव्य. जिनदर्शनमा षड्द्रव्य सत्छे हवे मूळ विषय जगत् कर्ता ईश्वर सबंधी निराकरणनोछे. वेदांत ग्रथाधारे जोता पण केटलेक स्थाने ईश्वर कर्तृत्व स्वीकार्युछे. अने केटलेक ठेकाणे जगत्नो बनावनार ईश्वर नथी एम स्वीकार्युछे. अन्य दर्शनपण जिन दर्शनना सिद्धांतनो केटलाक अंशे अनुसरेछे हवे जिनदर्शनमा जगत्कर्तृत्व ईश्वर संबंधी केवी मान्यता छे ते बतावेछे.

" दुहा "

ईश्वरना बे भेदछे, जीव सिद्ध बे जाण,
कर्त्ता निज निज कर्मना, जीवो मनमां आण ॥१६८॥
निजने सुखदुःख आपतो, जीवज करी नवकर्म,
कर्त्ता भोक्ता जीवछे, ईश्वर कर्त्ता मर्म. ॥१६९॥
चेतन ईश्वर जाणीए, नय व्यवहार प्रमाण
अशुद्ध नय ईश्वर कथ्यो, सापेक्षा मन आण. ॥१७०॥
कर्त्ता परपरिणामथी, चेतन ईश्वर जोय;
शुद्ध निश्चय नयथकी, कर्म करे नहि सोय. ॥१७१॥
सुख कर्त्ता निज भावथी, दुःख कर्ता परभाव,
परपरिणतिना नाशथी, कर्त्ता निजगुण दाव ॥१७२॥
सापेक्षा समजे नहीं, पक्ष ग्रहे एकांत,
ईश्वर कर्त्ता मानता, निरपेक्षाथी भ्रान्त, ॥१७३॥
कर्म मैल जेने नहीं, निराकार भगवान्,
कर्युं प्रयो[illegible] कर निश्चयथी ज्ञान. ॥१७४॥

परमप्रभु शिव सिद्धमा, इच्छा नहीं अभिमान,
शु ते कर्ता सृष्टिनो, माने भूली भान. ॥१७५॥
उपादान जेवु अहो, तादृश कार्य कहाय,
निराकार ईश्वरथकी, जडसृष्टि न रचाय ॥१७६॥
उपादान कारणथकी, जाणो कार्य अभेद,
उपादान ईश्वर कहो, सृष्टिरूप ते खेद ॥१७७॥
निमित्त हेतु इशजो, उत्पत्तिमां होय,
ईश्वरशक्ति नित्यके, अनित्यते अवलोय. ॥१७८॥
उपादान कारण विना, निमित्तथी शु थाय,
उपादान कोने कहो, ज्ञाने सत्य जणाय. ॥१७९॥
कार्य पूर्व तो होयछे, कारणनो सद्भाव,
उपादान कारण विना, बने न एह बनाव. ॥१८०॥
उपादानथी भिन्नछे, निमित्त कारण भाइ,
भिन्न भिन्न शक्तितणी, क्याथी एक सगाइ ॥१८१॥
सृष्टिनु कारण कदा, ईश्वर नही कल्पाय,
नाहि तो रासभ पण कहो, सद्युक्तिधर न्याय ॥१८२॥
पृथ्व्यादिक परमाणुओ, ग्रही सृष्टि निर्माय,
ईश्वरमां यदि मानीए, चेतन क्यायी आय. ॥१८३॥
परमाणु समुदायथी, जडनु कार्यज थाय,
चेतन तेथी भिन्नछे, अरणि वन्हि न्याय, ॥१८४॥

पुद्गल द्रव्य अनादिछे, तथा जीव पण जाण;
निश्चयथी बे भिन्नछे, भिन्नशक्ति पण आण ॥१८५॥
जडमां चेतन परिणमे, जाणो नय व्यवहार,
अनेकान्तमत ज्ञान वण, लहो न सम्यक्सार. ॥१८६॥
काल अनादि द्रव्य षट्, कर्त्ता ईश्वर केम,
ईश्वरशक्ति नित्यवा, अनित्य शु त्यां एम ॥१८७॥
कर्तृत्वशक्ति नित्य तो, नित्य जगत् निर्माय,
कर्त्ता शक्ति अनित्य तो, क्षणमां विणशी जाय ॥१८८॥
कर्तृत्वशक्ति यादृशी, तादृश कार्यज थाय,
नित्यानित्य विकल्पथी, बे पक्षे दूषाय. ॥१८९॥
ईश्वर साकारी कहो, तोपण दोषित थाय,
पूर्वापर विचारतां, दोषो बहुला आय. ॥१९०॥
नैयायिकवादी कहे, कर्त्ता ईश्वर सत्य;
पण युक्तिथी लेखतां, लागे तेह असत्य. ॥१९१॥
ईश्वर इच्छाथी कदा, सृष्टि नहीं निर्माय,
निमित्त इच्छा जो कहो, केम स्वभाव न थाय. ॥१९२॥
का विनिगमना त्यां लहो, करो कदाग्रह दूर,
स्वभावयुक्तिथी ग्रहो, तो नहि दोष जरूर ॥१९३॥
उपादान मध्ये रही, तिरोभाव जे शक्ति,
तेनी आविर्भावता, परिपूर्ण निजव्यक्ति. ॥१९४॥

परमप्रभु शिव सिद्धमां, इच्छा नहीं अभिमान,
शुं ते कर्त्ता सृष्टिनो, माने भूली भान. ॥१७५॥
उपादान जेवु अहो, तादृश कार्य कहाय,
निराकार ईश्वरथकी, जडसृष्टि न रचाय ॥१७६॥
उपादान कारणथकी, जाणो कार्य अभेद,
उपादान ईश्वर कहो, सृष्टिरूप ते खेद. ॥१७७॥
निमित्त हेतु इशजो, उत्पत्तिमा होय,
ईश्वरशक्ति नित्यके, अनित्यते अवलोय. ॥१७८॥
उपादान कारण विना, निमित्तथी शु थाय,
उपादान कोने कहो, ज्ञाने सत्य जणाय ॥१७९॥
कार्य पूर्व तो होयछे, कारणनो सद्भाव,
उपादान कारण विना, बने न एह बनाव. ॥१८०॥
उपादानथी भिन्नछे, निमित्त कारण भाइ,
भिन्न भिन्न शक्तितणी, क्याथी एक सगाइ. ॥१८१॥
सृष्टिनु कारण कदा, ईश्वर नहीं कल्पाय
नहि तो रासभ पण कहो, सद्युक्तिधर न्याय ॥१८२॥
पृथ्व्यादिक परमाणुओ, थकी सृष्टि निर्माय,
ईश्वरमां यदि मानीए, चेतन क्याथी आय. ॥१८३॥
परमाणु समुदायथी, जडनु कार्यज थाय,
चेतन तेथी भिन्नछे, अरणि वन्हि न्याय, ॥१८४॥

ईश्वर कर्त्ता मानिनुं, वचनु युक्ति हीन,
जड ईश्वरना धर्म बे, वर्ते निशदिन भिन्न ॥२०५॥
भिन्न धर्म बेना सदा, भिन्नधर्मी पण दोय,
निराकार साकार एक, रूपी अरूपी जोय ॥२०६॥
चेतन शक्ति अनन्त छे, पुद्गलशक्ति अनन्त;
चेतनशक्ति ज्ञातृता, जडता पुद्गलतत ॥२०७॥
निजस्वभावे शक्ति त्यां, कोइ नहीं परतन्त्र,
निश्चयनयथी जाणीए, ज्ञानी एम वदंत ॥२०८॥
अनन्त शक्ति अस्तिता, निज द्रव्ये वर्ताय;
पर अपेक्षाए ग्रहीं, नास्तिता एम थाय. ॥२०९॥
अनन्त शक्ति अस्तिता, नास्तिताज अवलोय,
षड्द्रव्ये व्यापी सदा, निश्चयथी ए जोय ॥२१०॥
चेतनथी जड जो बने, तो खरशृंग जणाय,
स्वप्न सुखलडी सत्यरूप, सत्य विचारो न्याय. ॥२११॥
अनन्त शक्ति इशनी, ईश्वरमांहि समाय,
कूपनी छाया कूपमां, तद्वत् जाणो न्याय ॥२१२॥
जडनी शक्ति अनन्त छे, पुद्गल धर्मे जोय,
वर्णादिक तेमां रह्या, अन्य न कर्त्ता कोय. ॥२१३॥
आत्मापेक्षाथी अहो, जडनी शक्तिज लेश;
सापेक्षा अवबोधीने, लहो न मनमां क्लेश. ॥२१४॥

शुद्धशक्तिछे वस्तुमा, वर्ते काल अनादि,
आविर्भाव कराववा, निमित्तहेतु उपादि ॥१९५॥
आविर्भाव जे धर्मनो, कार्यरूप ते थाय,
घटनु कारण मृत्तिका, अनन्य कार्य कहाय. ॥१९६॥
घटनो नाश कर्याथकी, होय न कारण नाश,
कारण नित्यपणे रहे, मृत्तिकारूप खास ॥१९७॥
काल स्वभावने नियति, कर्म उद्यम ए पक्ष,
कार्य प्रति कारण सदा, धरो न मनमां खक्ष ॥१९८॥
राग दोष जेने नथी, ते ईश्वर कहेवाय,
तेने इच्छा जो कहो, तो ईश्वरता जाय ॥१९९॥
कृत्य कृत्य ईश्वर थया, तेथी शु इच्छाय,
इच्छा ज्यां त्यां रागद्वेष, रागदोष दुःख पाय. ॥२००॥
रागदोष सहचारिणी, इच्छा भवनु मूल,
ईश्वरने इच्छा कहो, इहा मोह प्रतिकूल. ॥२०१॥
इच्छा नहीं त्या सुखशु, कहेशे जन जो कोय,
शर्म अनतु समाधिमा, इच्छा त्या नहि होय. ॥२०२॥
जडवस्तुज ईश्वरथकी बने नाहि कोइ काल,
जड स्वभाव न ईशमा, धर मनमाहि ख्याल ॥२०३॥
ईश्वर शक्ति अनन्तछे, जडनी शक्तिज लेश,
सृष्टि बनेले ईशथी, युक्ति लहो ए बेश ॥२०४॥

ईश्वर कर्त्ता वादिनुं, वदवु युक्ति हीन,
जड ईश्वरना धर्म बे, वर्ते निशदिन भिन्न. ॥२०५॥
भिन्न धर्म बेना सदा, भिन्नधर्मी पण दोय,
निराकार साकार एक, रूपी अरूपी जोय ॥२०६॥
चेतन शक्ति अनन्त छे, पुद्गलशक्ति अनन्त,
चेतनशक्ति ज्ञातृता, जडता पुद्गलतंत ॥२०७॥
निजस्वभावे शक्ति त्या, कोइ नही परतन्त्र,
निश्चयनयथी जाणीए, ज्ञानी एम वदन्त. ॥२०८॥
अनन्त शक्ति अस्तिता, निज द्रव्ये वर्ताय,
पर अपेक्षाए ग्रही, नास्तिता एम थाय. ॥२०९॥
अनन्त शक्ति अस्तिता, नास्तिताज अवलोय;
षड्द्रव्ये व्यापी सदा, निश्चयथी ए जोय ॥२१०॥
चेतनथी जड जो बने, तो खरशृंग जणाय,
स्वप्न सुखलडी सत्यरूप, सत्य विचारो न्याय. ॥२११॥
अनन्त शक्ति इशनी, ईश्वरमांहि समाय,
कूपनी छाया कूपमां, तद्वत् जाणो न्याय ॥२१२॥
जडनी शक्ति अनन्त छे, पुद्गल धर्मे जोय,
वर्णादिक तेमां रह्या, अन्य न कर्त्ता कोय. ॥२१३॥
आत्मापेक्षाथी अहो, जडनी शक्तिज लेश;
सापेक्षा अवबोधीने, लहो न मनमां क्लेश. ॥२१४॥

तालपूट विष लेशथी, हस्ती प्राण हणाय,
निजनिजना धर्मे वड्ड, अनेकान्तमतन्याय. ॥२१५॥
ईश्वरथी सृष्टि बने, कदी नहीं कहेवाय,
समजु समजे सानमां, सद्युक्ति मन लाय. ॥२१६॥
जीव कहो चेतन कहो, अर्थ एकनो एक;
ईश्वरसम छे आतमा, कर्त्ता इश न टेक ॥२१७॥
लक्ष चोराशी योनिमां, अटतो जीव अनन्त,
कर्माष्टकना योगथी, पामे दुःख अनन्त ॥२१८॥
काल अनादिथी ग्रही, जीवे कर्मनी राश,
बांधे छोडे कर्मने, करतो परनी आश. ॥२१९॥
भवितव्यतायोगथी, थावे कर्म विनाश.
अविचल आतमस्वरूपनो, सहेजे थाय विकास.॥२२०॥
इशु विभु परब्रह्म छे, परमेश्वर सुखधाम,
सोऽहं सोऽहं पद लह्यु, तेने करु प्रणाम ॥२२१॥
जीवो कर्म क्षपणथकी, अनन्त ईश्वर थाय,
एकाऽनेक सिद्धान्तनी, ज्ञानी कुंची पाय, ॥२२२॥
कर्म रूप्याथी सारिखा, समजे ज्ञानी विवेक,
व्यक्ति स्वरूपे भिन्नता, गुणव्यपेक्षा एक ॥२२३॥
रागदोष जेने नथी, नहि रमता परभाव,
अनन्त आतमस्वरूपमां, रमता शुद्ध स्वभाव ॥२२४॥

परम प्रभुसम ध्यानथी, स्वकीय चेतन धार,
ध्याता ध्याने ध्येयरूप, सिद्ध बुद्ध निर्धार. ॥२२५॥

तादृक् ईश्वर सिद्धने, वन्दु वार हजार,
तेना सम्यग् ज्ञानथी, लहिये भवजलपार ॥२२६॥

सम्यग् ज्ञानक्रियाथकी, मोक्ष न होय परोक्ष,
आत्मज्ञान ध्यानादिथी, त्वरित पामो मोक्ष. ॥२२७॥

भावार्थ–ईश्वरना बे भेदछे. अष्टकर्मसहित संसारि जीव ते पण अपेक्षाए ईश्वरछे, अष्टकर्मनो संपूर्ण नाश करी जे मुक्ति पाम्या ते सिद्ध परमात्मा ईश्वर कहेवायछे, जीवो कर्मरूप सृष्टिना कर्त्ता परपरिणतियोगे जाणवा, शाता अने अशाता वेदनीय कर्म ग्रही आत्माओ पोताने सुख दुःख आपेछे कर्मसृष्टिनो कर्त्ता तथा तेनो भोक्ता जीवरूप ईश्वर जाणवो. जीवरूप ईश्वर संसारिकअवस्थामां कर्मसृष्टिनो कर्त्ता जाणवो. सृष्टिकर्तृत्व जीवरूप ईश्वरने परभाव रमणतानी अपेक्षाए घटेछे एम रहस्य अनुमेक्षा करवा योग्यछे. जीवरूप ईश्वर, कर्मरूप सृष्टिनो कर्त्ता व्यवहारनयथी जाणवो. अशुद्धनयथी जीवरूप ईश्वर परवस्तुनो कर्त्ता निमित्तपणे जाणवो. हे भव्य आवी अपेक्षाथी ईश्वर कर्तृत्वरहस्य हृदयमां धारण कर. शुद्ध निश्चयनयथी कर्मरूप सृष्टिनो कर्त्ता ईश्वर नथी आत्मिक सहज सुखनो कर्त्ता अशुद्ध स्वभावथी आत्माछे दुःखनो कर्त्ता परस्वभावथी आत्माछे ज्यारे संपूर्ण अशुद्ध परिणति (परपरिणति) नो आत्मध्यानथी नाश थायछे त्यारे आत्माना अनंतगुणनो आत्मा स्वयं कर्त्ता थायछे.

जे भव्यो सापेक्षता समजता नथी. अने एकांत पक्ष ग्रहण

करेछे ते शुद्ध परमात्मारूप ईश्वरने जडवस्तुनो कर्त्ता मानी भ्रांतिमा पडेछे कर्मरूप मलिनता जेनामा नथी एवा सिद्धबुद्ध परमात्माने शु प्रयोजनछे के सृष्टिनी रचना करे हे भव्य पक्षपात त्यजी मा-यस्थ दृष्टिथी अववोध.

परमप्रभु, परमब्रह्मरूप ईश्वरमा रजोगुण, तमो गुणादि नथी इच्छा नथी, अभिमान नथी, वेदातमा पण कह्युछे के-न च स पुनरावर्तते मुक्तिमा गएला आत्माओ शुद्धबुद्ध थइ पश्चात् ससारमा जन्म लेता नथी रागद्वेषरहित सिद्ध (ईश्वर) जडसृष्टिनो कर्त्ता कदा पनी शकतो नथी जडसृष्टि रचवानो सिद्धबुद्धना स्वभाव नथी ते माटे.

प्रश्न-सिद्ध परमात्मा जडसृष्टिना कर्त्ता नथी मानता त्यारे अन्य कोइ सृष्टिना कर्त्ता छे के नहीं

उत्तर-सिद्ध परमात्मा-ज्ञान, दर्शन, चारित्र, वीर्य, सुख आदि आत्माना अनत शुद्ध गुणरूप सृष्टिना कर्त्ताछे. क्षायिकभावे आत्माना शुद्धरूप सृष्टिना कर्त्ता सादि अनतमा भगेछे परमाणु आदि जडसृष्टित्व स्वभावना बीलकुल कर्त्ता नथी जे आत्माना शुद्ध क्षायिक धर्मना कर्त्ता थया ते कर्मरूप सृष्टिना कर्त्ता कदी थता नथी.

माटे विवेकदृष्टिथी भव्यात्मन् सत्यतत्त्व विचार,

यादृक उपादान कारण होयछे तादृक् कार्यनी उत्पत्ति थायछे, जेम मृत्तिकारूप उपादान कारण जेवु होयछे तेवु घटरूप कार्य बनेछे. उपादान कारण कार्यरूप बनेछे घटकार्यमा कुभकार निमित्त कारणछे घटरूप कार्यमा उपादानकारण मृत्तिकाछे. अने निमित्तकारण कुभकार दडचक्र वगेरेछे. तेम जो कर्मरहित परमात्माए जगत् बनाव्यु एम कोइ माने तो तेमा उपादान अने निमित्त

कारण कोण ? निराकार ईश्वरने जगतनु उपादान कारण मानतां जगत्रूप ईश्वर बन्यो. ए पण महादूषण आवेछे. सिध्धान्त एवो छे के निराकारथी साकारनी उत्पत्ति थती नथी. माटे निराकारथी जडसृष्टि रचाती नथी एम सिध्ध ठरेछे.

वळी नियम एवोछे के उपादान कारणथी कार्यनो अभेदछे, जेम मृत्तिकारूप उपादानथी घटरूप कार्यनो अभेदछे. मृत्तिकाथी घट भिन्न नथी. तेवीज रीतिथी निराकार ईश्वरथी जड सृष्टि मानवामा आवे तो जगत्रूपज ईश्वर बन्यो, सृष्टिरूप कार्यथी ईश्वरनो अभेद थयो माटे जडसृष्टिरूप ईश्वर मानवामा आवे तो अनेक दूषणरूप खेदनी प्राप्ति थायछे,

सृष्टिकार्यमा ईश्वरने निमित्त हेतु मानता ने विकल्प उत्पन्न थायछे, ईश्वरनी शक्ति नित्यछे के अनित्यछे ? उपादान कारण विना फक्त निमितकारणथी कोइ कार्य बनतु नथी. कार्यनी पूर्वे उपादान तथा निमित्तनो सद्भावछे उपादान विना निमित्तभूत ईश्वरथी सृष्टिरूप कार्य बनी शके नही, ईश्वरनी इच्छा निमित्त हेतु कोइ माने तो ते पण योग्य नथी, कारण के ईश्वरनेइच्छा होती नथी. अपूर्णने इच्छा होयछे. कृतकृत्य परमात्माने अंशमात्र पण इच्छा होती नथी. प्रमाण युक्ति अनुभवथी विरुद्ध सृष्टिहेतु ईश्वर कल्पातो नथी तेम छता यदि ईश्वर मानवामा आवे तो रासभने केम मानवामा न आवे ? पृथिवीआदि परमाणुओनु ग्रहण करीने ईश्वर सृष्टि रचेछे एम जो मानवामा आवे तो जीवो क्याथी आव्या जीवो अनादिकालनाछे एम कहेवामां आवे तो सृष्टिपण अनादिकालथीछे एव केम मानता नथी अनादिकालना जीवो सृष्टि विना अन्यत्र रही शकता नथी माटे सृष्टि पण अनादिकालथी छे एमस्पष्ट भासेछे परमाणुओना कार्यथी चेतन (आत्मा) भिन्नछे माटे अरणिमा वन्हि रहेछे तेवी रीते आत्मा

पण देहमा रहेछे पण पञ्चभूतथी भिन्नछे. जड अने चेतन ए बे वस्तु आ प्रमाणे विचारतां अनादिकालथी छे एम सिद्ध थायछे जीव अने जडनी परस्पर शक्तियो पण भिन्नछे जडवस्तुमां चेतन कर्मनावशे परिणमेछे ते व्यवहारनयथी जाणवुं. निश्चयथी जडमा चेतन परिणमतो नथी, आ प्रमाणे अनेकान्तनयज्ञान थया विना तत्त्वनुं यथार्थ भासन थतुं नथी.

धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, पुद्गलास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, काल अने जीव एम षड्द्रव्यथी जगत् कहेवायछे. अनादिकालथी षड्द्रव्यछे. ते षड्द्रव्य, द्रव्यार्थिकनयथी नित्यछे अने पर्यायार्थिकनयथी अनित्यछे. ते षड्द्रव्यथी भिन्न कोइ वस्तु नथी तो षड्द्रव्यनो कर्त्ता ईश्वर केम मानी शकाय अर्थात् न मानी शकाय. हवे बे विकल्प करवामा आवेछे. जगत्कर्तृत्व शक्ति ईश्वरमा नित्य छे के अनित्यछे ? जगत्कर्तृत्व शक्ति नित्य मानवामा आवे तो ईश्वर सदाकाल जगत् बनाव्या करशे एव महादोष आवेछे, तेमज जगत्कर्तृत्व शक्ति अनित्य मानवामां आवे तो जगत्कर्तृत्व शक्ति क्षणमां अनित्य होवाथी विणशी जतां सृष्टि पण क्षणमां नाश पामी जाय पण तेम प्रत्यक्ष अनुभव विरुद्धछे माटे बे पक्षथी ईश्वरशक्ति जगत् कर्तृत्वमां सिद्ध थती नथी एम नित्यानित्य पक्षथी ईश्वरशक्ति दूर थायछे.

जगत् कर्त्ता ईश्वरने साकारी मानवामा आवे तो अनेकदोषो उत्पन्न थायछे. साकार ईश्वर एकदेशावस्थित होवाथी सर्वत्र सृष्टि बनावी शके नहीं साकारकुंभकारवत् साकारकुंभकारनी पेठे कर्म विना देह होय नहीं अने देहवडे ईश्वर साकार देवतानी पेठे कहेवाय तो कर्म सहित ठर्यो सकर्मईश्वर ठरवाथी अन्य जीवोनी पेठे कर्मना परतन्त्र रह्यो, अने स्वतन्त्र थयो नहीं त्यारे ते जगत् बनाव-

वामां कथ समर्थ थाय.

नैयायिक कहेछे के सृष्टिनो कर्त्ता ईश्वर सत्य छे पण ते पूर्वोक्त युक्तिथी विचारता सत्य नथी. ईश्वरनी इच्छाथी जगत् उत्पन्न थयु एम मानवामां आवे तो अनादिकालथी जड अने चेतन बे पदार्थ छे. एम अनादिस्वभाव केम न मानवामा आवे, अर्थात् त्यां एकत्र पक्षपातिनी युक्ति कइ छे के अनादिकालनो स्वभाव न मानवामां आवे अने इच्छाज मानवामा आवे इच्छा मोहरूप छे. ईश्वरने इच्छा कहोतो साधारण मनुष्यनी पेठे ईश्वर पण मोही ठर्यो त्यारे तेनु ईश्वरपणु रहेतु नथी. माटे ईश्वरनामा इच्छा मानवी ते शशशृगवत् असत्य छे. आत्मानी परमात्मदशामा ज्ञान, दर्शन, चारित्र, वीर्य, सुखादि गुणो उपादान कारणछे. तेनो परिपूर्ण आविर्भाव तेज परमात्मपणु जाणवु. अनन्तधर्मनी शुद्धि प्रगटाववा निमित्त हेतुनी जरूरछे, आत्माना धर्मनो आविर्भाव तेज कार्य जाणवु. घटनु कारण जेम मृत्तिका अनन्य कारण कहेवायछे तेम परमात्म दशारूप कार्यमा ज्ञान, दर्शन, चारित्ररूप अनन्य कारण उपादानछे. घटनो नाश थवाथी मृत्तिकानो नाश थतो नथी. अर्थात् कारण सदाकाल वर्तेछे. अत्र काल, स्वभाव, नियति, कर्म, अने उद्यम पच कारणथी कार्योत्पत्ति थायछे. पच कारणमाथी एक कारणनी उत्थापना करता मिथ्यात्व प्राप्त थायछे. आ वातमा लेशमात्र पण शङ्का करवी योग्य नथी.

राग अने द्वेपनो सर्वथा जेणे क्षय कर्योछे ते ईश्वर परमात्मा कहेवायछे. एवा शुद्ध परमात्माने जो इच्छा कहेवामा आवे तो ईश्वरतानो नाश थायछे सर्व प्रकारनी इच्छानो जेणे नाश कर्योछे एवा ईश्वरने जगत् करवानी इच्छा क्यांथी होय. अलबत कदीहोय नहीं, रागद्वेपसहचारिणी इच्छाज ससारनु मूलछे. अने तेवीइच्छा

ईश्वरने कहेवी ते मोहचेष्टित जाणवु. अहो अज्ञाननी केटली शक्ति.

कोइ एम कहे के-ज्यां इच्छा नथी त्यां शु सुख ? अन्दरत कइ नहीं. आवी रीते बोलनारे समजवु के योगीन्द्रमहात्मा समाधिमां अनन्त सुख वेदेछे, पण ते समये तेने इच्छा नथी माटे इच्छा होय त्यां सुख एवी व्याप्ति घटती नथी

इत्यजडवस्तु कदापि ईश्वरथी बनी शके नहीं. ईश्वरमां जडस्वभाव नथी. जडवस्तुनो कर्त्ता वा याय आपनार ईश्वर नथी. हे भव्य हृदयमां अवधार.

कोइ एम कहेछे के-ईश्वरनी शक्ति अनन्तछे अने जडपदार्थनी शक्ति अल्पछे माटे ईश्वरथी सृष्टि बनेछे. आ युक्ति पण ठीक नथी ते जणावेछे. ईश्वरनी शक्ति चैतन्यभावे अनन्तछे तेम जडनी शक्ति जडभावे अनन्तछे ईश्वरना धर्म अनन्तछे जेम जडतत्त्वना धर्म पण अनन्तछे आत्मा अने जड बे तत्त्व भिन्नधर्मीछे जडपुद्गल द्रव्य साकारछे अने आत्मतत्त्व निराकारछे प्रत्येक तत्त्व स्वस्वभावे स्वतन्त्रछे. वस्तुत कोइ द्रव्य परतन्त्र नथी प्रत्येक द्रव्यमां अनन्त अस्तिधर्म अने परनी अपेक्षाए अनन्तनास्तिधर्म रह्याछे अस्तिधर्म अने नास्तिधर्मनी अनन्तता षड्द्रव्यमां व्यापी रहीछे. अन्य द्रव्यनो कर्त्ता अन्यद्रव्य वस्तुत नथी

चेतनथी जो जडनी उत्पत्ति उपादानपणे थाय तो खरशृंगनी पण उत्पत्ति थाय पण खरने शृंग थनार नथी ते प्रमाणे ईश्वररूप चैतन्य मूर्तिमांथी जडवस्तु थती नथी. त्यारे ईश्वरमांथी जगत् थयु एव प्रलाप करवो ते अंधश्रद्धानी बुद्धि विना अन्य समजातु नथी. स्वप्न सुखडीथी पेट भराय तो ईश्वरमांथी जडनी उत्पत्ति थाय

आ प्रमाणे सिद्धांत जाणवाथी प्रश्न थशे के अहो ज्यारे परमात्माथी जगत्नी उत्पत्ति थती नथी, त्यारे तेमनी अनन्त शक्ति शा

कामनी ? तेना प्रत्युत्तरमा जणावेछे के-ईश्वरनी ज्ञानादिक अनन्त शक्तियो ईश्वरमाज समायछे. रूपनी छाया रूपमा समायछे ते प्रमाणे अत्र न्याय समजवो. जडद्रव्योनी अनन्त शक्ति जडमा व्यापी रहीछे. पुद्गलद्रव्यना वर्णादिकनी शक्ति पुद्गलद्रव्यने त्यजी अन्यत्र जती नथी. पुद्गलद्रव्यनो निश्चयथी अन्यद्रव्य कर्त्ता शीरीते होइ शके,

आत्मद्रव्यनी अपेक्षाए पुद्गलद्रव्यनी शक्ति अल्प गणायछे. पण वस्तुतः जेम आत्मद्रव्यनी आत्मस्वरूपे अनन्त शक्तिछे तथा पुद्गलद्रव्यनी शक्ति पण तेना स्वरूपे अनन्तछे सापेक्षा अवबोधता कोइपण प्रकारनी हानि आवती नथी. तालपुटविषलेशथी हस्तिना प्राणनो नाश थायछे, एक लेशमात्र तालपुटविषथी हस्तिनो प्राण नाश थाय त्यारे कहोके पुद्गलनी शक्ति केटलीछे आत्मानी शक्ति अपेक्षाए मोटीछे तेमज पुद्गलनी शक्ति पुद्गलनी अपेक्षाए मोटीछे. आ उपरथी सिद्ध थायछे के शुद्धबुद्धपरमात्माथी सृष्टि बनी शके नहीं, माध्यस्थदृष्टिवाळा पुरुषो सहजमा तत्त्व अवबोधी शकेछे. ईश्वर सर्वज्ञ परमात्मरूप सृष्टिनो कर्त्ता नथी. एवी प्रतिज्ञा युक्तिमतीछे.

चोराशीलक्षजीवयोनिमा जीवो परिभ्रमण करेछे. अज्ञान राग द्वेष प्रयोगे जीव ससारमा परिभ्रमण करेछे कर्मथीज ससारमा परिभ्रमण थायछे कर्या कर्म प्रमाणे सुख दुःख थायछे त्यारे शामाटे हे ईश्वर तें मने दुःख आप्यु एम असत् वदवु जोइए. अनादिकालथी जीवनी साथे कर्मनो सबधछे भावकर्म रागद्वेषयोगे जीव द्रव्यकर्मने ग्रहण करेछे. तेने भोगवी निखेरेछे पञ्चकारणनी सामग्री मळे त्यारे कर्मनो नाश थायछे. कर्म नाश थता अविचल आत्म स्वरूपनो सहेजे विकाश थायछे.

इष्ट, विष्णु, परमब्रह्म, परमेश्वर, सुखधाम ब्रह्मनी स्थिति शुद्ध

भावमां वर्तेछे. परभावमां न्याय माटे पण प्रवर्तती नथी. सोऽहं सोऽहं पद प्राप्त कर्यु तेने हु प्रणाम करुछु. परमात्मपदने सोऽहंपद कहेछे सोऽहंपदनु ध्यान धर्याथी परमात्मपद मळेछे जे जे जीवो कर्मनो नाश करेछे ते ते जीवो परमात्माओ थायछे. सिद्धस्थानमा एक सिद्धछे तेम अनेक सिद्ध परमात्माओछे सपूर्ण कर्मक्षयथी मुक्तिस्थानमां सर्वे सिद्धात्माओ समानछे. ज्ञाननी अपेक्षाए व्यापकछे असख्य प्रदेशरूप व्यक्तिनी अपेक्षाए व्याप्यछे. शकराचार्य तथा उपनिषदोनी केटलीक अपेक्षाए आत्मानु व्यापकपणु जैनमत अगी कार करेछे. तेमज रामानुजमतापेक्षाए आत्मानु व्याप्यपणु पण जैनमतमां समाइ जायछे. व्यक्तिनी अपेक्षाए सिद्धात्माओ भिन्नभिन्न छे अने ज्ञानादिक गुणनी अपेक्षाए एकरूप (एक) छे.

जे सिद्ध परमात्माओने रागद्वेष नथी. परभावमा रमण करता नथी. आत्माना ज्ञानादिक अनन्त गुणमा जे समये समये रम्या करेछे एवा परमप्रभुना ध्यानथी आत्मा पण परमात्मा थायछे. ध्याता ध्येयना ध्याने स्वशुद्ध ध्येयरूप प्राप्त करेछे. परमशुद्धपरमात्माने वारवार नमस्कार करुछु परमात्माना सम्यग्ज्ञानथी अज्ञानादि दुःखनो नाश थायछे सम्यग् ज्ञानथी सहज शुद्ध स्वरुप मय चिदानन्द समुद्रनी लहेरो प्रगटेछे सम्यग् ज्ञान क्रियाथी मुक्ति परोक्ष नथी. अर्थात् मुक्ति प्रत्यक्षछे मुक्तदशा जे जे अशे थायछे ते ते अशे मुक्तिनां सुख प्रगटेछे केटलाक अद्वैतवादियो अद्वैतवादनु गुरुगम यथार्थ स्वरूप न समजवाथी ब्रह्ममांथी सृष्टि उत्पन्न थइछे अने ब्रह्ममां समाइ जायछे. इत्यादि एकांतवाद स्वीकारीने भूल करेछे जैनदर्शन अपेक्षाए अद्वैतब्रह्मवाद स्वीकारेछे पण जे नयोनी सापेक्षा विना ब्रह्म मानी भूलो साथे करेछे ते सबधी कहेवामां आवेछे.

" दोहा. "

ब्रह्मथकी सृष्टि बनी, सहु छ ब्रह्म स्वरूप;
व्यापक ते सर्वत्र छे, चिदानन्द गुणरूप. २२८
मायाना बहु जोरथी, भूल्यो ब्रह्मनु भान;
एकरूप सर्वत्र छु, अद्वैतवादि ज्ञान २२९
शुद्ध ब्रह्मना अंश छे, जीव अनन्ता लेख,
परमात्ममांहि ते भळे, द्वैतपणे नवि देख. २३०
अद्वैतवादि वचन छे, माने ब्रह्मनुंज्ञान;
द्वैतपणु माने नहीं, ब्रह्मध्यान मस्तान. २३१
नहि सत्यने ढांकीये, सत्य न ढांक्युं जाय,
छाबडीए रवि ढांकतां, कदी नहीं ढकाय. २३२
जड चेतनता भेदथी, द्वैतपणुं प्रगटाय,
कथ एक हि आतमा, सुख दुःख विघटाय. २३३
जडतारूपे जड अहो, जडनो कदा न नाश;
असत् कहो शा कारण, ज्ञानी बहु शाबाश. २३४
जीवाजीव बे तत्त्व छे, ज्ञाने दोय जणाय;
मिथ्या एक ग्रहे मुधा, सम्यक् धर्म न थाय. २३५
ज्ञानी ज्ञानथकी ग्रहे, वस्तु सत्य स्वरूप,
द्वैतपणुं अंगीकरे, पडे न भवजल रूप. २३६
एक एव हि आतमा, भूते तेह जणाय,
जले प्रतिबिम्ब चन्द्रनु, तद्वत् जाणो न्याय. २३७

सत्ताने अगीकरी, माने अद्वैत एम,
सग्रहनय एकान्तथी, तरे भवोदधि केम २३८
प्रथम विषम दृष्टान्तथी, साध्यसिद्धि शु थाय,
प्रतिबिम्बरूपितणु, अरूपि शु ते पाय. २३९
प्रतिबिम्ब पुद्गलतणु, जल चन्द्रे दृष्टान्त;
जीव अरूपी वस्तुमां, प्रतिबिम्ब नहि भ्रान्त २४०
प्रतिबिंबथी जाणशो, प्रतिबिंबक छे भिन्न,
प्रतिबिंबकना भावथी, प्रतिबिंब छे खिन्न २४१
प्रतिबिंबित चन्द्रनु, भिन्नपणु त्यां छेक,
कथ साध्यनी सिद्धि छे, जो नहीं चेतन एक. २४२
व्यापक आतम एकनु, अशपणु नही होय,
भिन्न भिन्न जीवाशथी, आतम एक न जोय. २४३
आतम एकथी सर्वने, शर्म दु ख समकाल,
सुख दु ख आच्छादक कह्यो, द्वैतपणु त्यां भाळ २४४
घटाकाश उपाधिथी, ग्रह्यो गगननो भेद,
तेवी उपाधि अत्र नहीं, सुख दु ख वारक वेद २४५
समकाले सुख दु खनो, जीवोने प्रतिभास,
अधिक न्यून प्राप्तितणो, मळे नहीं अवकाश २४६
मळे नहीं अवकाश तो, तेनु कारण कोण,
भिन्न भिन्न चेतन विना, घटे नहि कंइ ओर २४७

व्यक्तिथी सहु भिन्न छे, सत्ता ए सहु एक,
आत्मतत्त्व अवबोधथी, मानो एकाऽनेक. २४८

सर्वत्रज व्यापक कहो, युक्ति घटे नहि कोइ;
सम्मतितर्के जाणशो, कह्यु विचारी जोइ. २४९

सर्वत्रज व्यापक कहो, पिण्डे किम बंधाय,
देहे व्यापी जो कहो, अव्यापक पद पाय. २५०

व्यापक नहि बंधाय छे, गगन पङ्कनी पेर,
सर्वत्र सुख दुःखनी, प्रासितणु छे झेर. २५१

सर्वत्र व्यापक कहो, कदा नहीं बंधाय,
मानो तो छे अज्ञता, सद्युक्ति न जणाय २५२

अव्यापक छे आतमा, तेमां नहीं संदेह,
व्याप्यने व्यापक बोधथी, थाशो निःसंदेह. २५३

शैलेशीकरणे करी, व्यापक आतम लोक,
असंख्य शुद्ध प्रदेशथी, जाणो भविजन थोक. २५४

अव्यापक व्यापक लहो, चेतन गुणनी खाण,
अनेकान्त अवबोधथी, पामो शिवपुर ठाण २५५

सादि आदि भगे करी, व्यापक चेतन जाण,
स्याद्वाद दृष्टि थकी, साचु मनमां आण २५६

केवलज्ञाने आतमा, व्यापक सहुमां जोय,
स्वपर प्रकाशक आतमा, प्रदीप पेठे होय २५७

तिमिरारि प्रगटे तदा, तमनो शो छे भार,
ज्ञानदीपक उद्योतथी, रहे नहि अंधकार २५८

अद्वैत स्वरूपी आतमा, जडथी भिन्न विचार,
द्वैतपणु पण तेहमां एक अनेकाधार २५९

अक्षररूपे आतमा, अनक्षर गुणवान्,
आत्माऽसह्व्य प्रदेशमां, स्थिरता शुद्ध वखाण. २६०

भास्यो आपोआपमा, टळ्यु महा अज्ञान,
अपूर्व वीर्यज उल्लस्यु, यदा थयु निज भान. २६१

जड इन्द्रियो शु करे, तेनाथी हु भिन्न,
जडस्वरूपे तेह छे, क्षणिक नाशी दीन २६२

मन वाणी मारां नहीं, जडनु छे ते काज;
तेनी सगे राचतां, नहीं रहे मुज लाज २६३

हसु रसु कोनाथकी, कोनापर ममभाव,
मृगजलोपम वस्तुमां, शो ममतानो दाव २६४

नहीं मारु जड वस्तुमा, राचु शु ससार,
शाथी शाने माटे में, लीधो मही अवतार २६५

फोगट फंदामां पडयो, जरा न शर्म जणाय;
सवळे पन्थे चालतां, मनमां शुं खमचाय. २६६

नथी तनु ते तु सदा, शरीर माटीघाट,
पींपळपानपरे खरे, चेत चेत ते माट २६७

सहुने देखुं ज्ञानथी, सहु म्हाराथी दूर,
प्रतिबंध कोनो नहीं, सिंह इव हु शूर २६८

रागदोष निन्दा कथा, तेनु भाग्यु जोर,
स्वाभिमुख थइ चेतना, प्रगटयो अनुभव तोर. २६९

शस्त्रथी छेदाउ नहीं, नहि शस्त्रे भेदाउ ?
शत्रुमित्र सम भावना, भ्रमणा क्यांथी पाउ? २७०

कर्मवशे सहु प्राणिया, भ्रमण करे निर्धार,
पुत्र मित्र ललनापणे, सगपणनो आचार. २७१

सगपण साचु नहि कदी, स्वारथियो संसार,
जगमां को केनु नहीं, संवेगे मनधार २७२

सर्व जीव छे सिद्ध सम, निर्मल अविचल देव,
त्रिकरण योगे तेहनी, मित्रभावना सेव २७३

द्रव्यार्थिकथी नित्य छे, कदी न होवे नाश;
असंख्यप्रदेशव्यक्तिथी, ध्रुव स्वरूपी खास. २७४

पूर्वजन्म अभ्यासथी, जीव नित्यता सिद्ध,
बाल युवा वृद्धा विषे, ज्ञाता एक प्रसिद्ध. २७५

क्षणे क्षणे बदलायतो, चेतन होय अनेक,
पाप पुण्य कोने घटे, तेनो करो विवेक २७६

क्षणिक वस्तुना ज्ञानथी, क्षणिक वाद सुजाण,
वक्ता क्षणिक नहीं थयो, नित्यरूप मन आण २७७

कोइक वस्तुनो कदी, केवल नाश न होय
चेतन नाश कह्या थकी, अन्यावस्था जोय २७८

अन्यावस्था को नहीं, माटे चेतन नित्य
प्रत्यभिज्ञा सुहेतुथी, नित्यज जाणो चित्त २७९

पर्याये पलटाय छे, आतमना पर्याय
अनित्य माटे आतमा, अनेकान्तमतन्याय २८०

शुभाशुभ आश्रव ग्रही, धरतो नाना देह
शाताशाता भोगवे, नय व्यवहारे एह २८१

पुण्य पापना नाशथी, प्रगटे निजगुण भोग
सूर्योच्छादक अभ्रनो, टळे महासयोग २८२

कर्मसग टळ्या थकी, पामे जीव शिवठाण
पुरुषोत्तम परमातमा, सिद्ध बुद्ध भगवान् २८३

अगम्य आत्मस्वभावनुं, अवलम्बन करनार
आश्रव त्यागी संवरी, भवोदधि तरनार २८४

जेने इच्छे योगिजन, अनन्यसुखनुं धाम.
नमुं नमुं ते आतमा, अनन्तगुण विश्राम २८५

अवलम्बन शुभ आत्मनुं, करतां नाशे दोष,
प्रगटे अनुभव ज्योति त्यां, चेतन वीर्यें पोष. २८६

निजपद जिनपद साम्यता, भेदभावनो नाश
पूर्ण व्यक्तिमय आतमा, राजाने कुण दास २८७

सर्व सिद्धनी तुल्यता, जीव अनन्ता माय
कोकोने नडता नही, अरूपपद महिमाय. २८८

विषमज्वरना जोरथी, होय अरुचि अन्न.
अभव्य आदि जीवने, आत्मरुचि नहिमन २८९

सम्यग् ज्ञान प्रभावथी, बहिरातम पद नाश
अन्तरातमगुण भावना, प्रगटे शिवपुर वास २९०

परप्रवृत्ति हेतुओ, समूल त्यां छेदाय
अन्तर परमप्रभुपणुं, सहजे उदये आय २९१

हुं कर्त्ता परभावनो, बुद्धि भवनुं मूल
अन्तरातमपद योगथी, थाय तेह निर्मूल २९२

कोटिवर्षनुं स्वप्नपण, जागतां लय थाय
आत्मज्ञान उद्योतथी, सहजरूप प्रगटाय २९३

चेतनबुद्धि देहमां, जाणो देहाध्यास
छूटे देहाध्यासतो, कर्म कलंक विनाश २९४

कर्त्ता नहि हुं कर्मनो भोक्ता नहि हु तास
शुद्धदशा प्रगट्याथकी, विघटे भवभयवास २९५

चेतनधर्मे मोक्ष छे, तुछे मोक्षस्वरूप,
भोगी रत्नत्रयितणो, क्षायिकशिवसुखभूप २९६

सागरमांहि ल्हेरियो, उपजेने विणशाय,
चेतनगुण जे ज्ञान छे, ज्ञेयपणे पलटाय २९७

शुद्ध बुद्ध निर्मल प्रभु, स्वयज्योति गुणधाम,
चिदानन्द चेतन विभु, अनन्तगुणनुं ठाम २९८

निश्चय अत्रज आवता, साक्षर एक स्वरूप
योगत्रिकने सवरी, शिवनगरी था भूप २९९

रागादिक महावैरियो, ज्या तेनो नहि गन्ध,
आत्मलक्ष्यवृत्ति थता, परपरिणति थइ बंध ३००

देहनिष्ठ पण ध्यानथी, वर्ते देहातीत,
वन्दन वारवार तास, त्रियोगे हो नित्य, ३०१

पुद्गल सुख ते ऐठवत्, दुनिया स्वप्न समान;
शुद्धज्ञान ते आत्मनु, बाकी वाचा ज्ञान. ३०२

जेनुं ज्ञान थया थकी, शान्तदशा प्रगटाय,
धर्म रह्यो त्यां जाणीए, निश्चयथी सुखदाय. ३०३

नैगम संग्रह नय कह्या, त्रीजो नय व्यवहार,
ऋजुसूत्र चोथो कह्यो, पञ्चमशब्द विचार ३०४

समभिरूढ छठो गणो, सप्तम एवंभूत,
सप्तनयोथी धर्मरूप, सत्यज प्रगटे युक्त. ३०५

सातनयोथी वस्तुरूप, परिपूर्ण परखाय,
नय एकान्तकदाग्रहे, मिथ्यात्वी कहेवाय ३०६

सातनयोना बोधथी, सम्यक् अनुभव साथ;
आत्मतत्त्वने पारखी, तरशे भवजल पाथ ३०७

ऋजुसूत्र आवेशथी, प्रगट्यु दर्शन बुद्ध,
ग्रहे एकान्त एकनय, थाय नहि ते शुद्ध. ३०८

जीवादिक नवतत्त्वपर, नय साते योजाय,
सद्गुरु सेवा योगथी, सहजे ते बोधाय. ३०९

स्यादस्ति भंगज कह्यो, अनेकान्त मत कंद,
अस्तित्व सहु वस्तुमां, ज्ञानी एम वदन्त ३१०

[illegible] [illegible], [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible]- [illegible] [illegible] ३११

जीवादिक [illegible], [illegible] अस्तित्व[illegible]
कहो नहि जे [illegible] [illegible]- [illegible] [illegible]- ३१२

धर्माधर्माकाशकाल [illegible] [illegible] [illegible]
जीवद्रव्य छट्ठं कह्युं- आम्न [illegible] [illegible]- ३१३

भूत भविष्यत् [illegible] त्रिकाले वर्तायः
षद्रव्योमां जाणिये- अस्तिमां [illegible]- ३१४

सर्व सर्व अस्तिता, अनंतगुणनी जाणः
चेतनद्रव्ये वर्णवी सिद्धान्ते व्याख्यान- ३१५

द्रव्ये द्रव्ये अस्तिता, भिन्न भिन्न कहेवानः
द्रव्यज गुण पर्यायनी- अस्तिताज निजमांय- ३१६

पुद्गलना पर्याय जे, वरणरूपे लेसः
तदाकारठे अस्तिता, सादि सान्तथी देस ३१७

द्रव्यार्थिक नय जाणिये, अनादयनंतज भंगः
पुद्गलमां व्यापी रह्यो, सादिसान्त गुण चंग- ३१८

स्यान्नास्ति वीजो कह्यो, भंग अति [illegible]
षद्रव्योमां व्या[illegible] ३२०

परद्रव्य परक्षेत्रथी, परकालज परभाव,
नास्तितता तेनी सदा, निजमां वर्ते दाव. ३२०
अही अपेक्षा परतणी, घटे नास्तिता आय,
परभावे षड्द्रव्यमां, नास्तित्व स्थिरताय ३२१
परद्रव्योनी अस्तिता, तेज नास्तिता रूप,
प्रणमे निजनिज द्रव्यमां, सापेक्षाए अनुप. ३२२
पूछे पृच्छक अत्र एम, घटे न बे एक ठाम;
तमः तेज प्रतिपक्षिनुं, घटे न एकज धाम ३२३
नैकास्मिन् ए सूत्रथी, रहे न बे एकत्र,
अस्ति नास्ति एकत्र नहि, भाखो सद्गुरु अत्र ३२४
सापेक्षाए सहु घटे, तथा सर्व समजाय,
पिता, पुत्रत्व एकमां, बन्ने धर्म सुहाय. ३२५
चेतननुं अस्तित्वते, परमां नास्ति स्वरूप,
परमां नास्ति नहीं रहे, विघटे वस्तु अनूप ३२६
विना अपेक्षा अस्तिता, नास्तिता नहीं जोय,
नैकस्मिन् ए सूत्रतो, स्याद्वादे अवलोय ३२७
जे समयेछे अस्तिता, नास्तिपणु ते काल,
एकसमयमां वर्तना, षड्द्रव्योमां भाळ ३२८
अस्ति नास्ति त्रीजो कह्यो, भंग समय सिरताज
षड्द्रव्योमां व्यापियो, जिनदर्शन साम्राज्य ३२९

अस्ति शब्द उच्चारतां, समयो वदे असंख्य,
नास्ति शब्दोच्चारमा, तथा कहे भगवंत. ३३०
एकज समये अवाच्यछे, कदी न कोइ कहंत;
अवक्तव्यज भगछे, चोथो सूत्रे लहंत ३३१
अस्तिधर्म अनन्तछेज, वाणी अगोचर थाय;
पञ्चमभग ते उपजे, अनेकान्त शोभाय. ३३२
नास्तिधर्म अनन्तता, वस्तुमध्ये रहत,
अवाच्य वाणीथी कह्यो, छठो भंग कहत. ३३३
अस्तिनास्ति बे छे सदा, अवक्तव्य ते होय,
सप्तमभगज सर्वमां, समय समय अवलोय. ३३४
गुरुगमज्ञानअवाप्तिथी, भगज सप्त स्वरूप,
जाणी आत्मस्वभावमां, अपहरीए भवधूप. ३३५
अतिगहनछे तत्त्वबोध, विरलाजन समजत,
सज्जन भवसागर तरे, करी कर्मनो अन्त. ३३६
सप्तभंगीछे सिद्धमा, अनन्तगुणमा जोय,
अनेकान्तनय जाणता, शुद्ध समकित होय ३३७
नवतत्त्व षड्द्रव्यनु, सत्यज्ञान जो थाय,
तो जाणो ज्ञानिपणु, सहेजे शिवपद पाय ३३८
समकितादि मोहिनी, तेनो उपशम भाव,
क्षयोपशम क्षायिकपणे, प्रगटे समकितदाव ३३९

निजगुण स्थिरता चरणथी, थाता गुण उद्योत;
स्वयंशुद्ध परमातमा, प्रगटे निर्मल ज्योत. ३४०
गुणस्थानक स्पर्शन थतां, सहजे गुण प्रगटाय.
परिपूर्ण निजव्यक्तिथी, अविचलपदवी पाय ३४१
षट्स्थानक अवबोधथी, समकित प्रगटे चंग;
षट्स्थानक धारो सदा, गुण प्रगटे निज अंग. ३४२
अस्ति चेतनद्रव्यनी, चेतनद्रव्य अनन्त
ससारीने सिद्ध दोय, ज्ञानी एम वदन्त. ३४३
नित्यज चेतन द्रव्यछे कर्त्ता हर्त्ता जोय,
कर्मथकी मूकाय शिव, तेनां कारण होय. ३४४

शिष्य उवाच

नथी द्रश्य ते दृष्टिथी, स्पर्शे ग्रह्यो न जाय;
आत्मद्रव्यनी अस्तिता, अनुभवे न जणाय. ३४५
मानो देहज आतमा, अथवा श्वासोश्वास.
पंचतत्त्वनुं पूतळुं, अन्य कयो आभास ? ३४६
घटपट यथा जणायछे. तथा न चेतनद्रव्य;
माटे चेतन नास्तिता, मिथ्या माने भव्य. ३४७
यदि नथीजो आतमा, तपजप सयम फोक;
पुण्यपापनी कल्पना, भूले भोळा लोक. ३४८

शका मोटी जीवनी, टाळो सद्गुरुदेव,
मतिहीन हु जीवछु, कापो कुमति टेव. ३४९

सद्गुरुः उवाच

उत्शृंखलवृत्ति त्यजी, ग्रहो सुयुक्ति दीप;
समजो चेतन अस्तिता, यथाऽस्ति मौक्तिक छीप ३५०
पञ्चभूतथी भिन्नछे, अरूप निर्मल शुद्ध
देहे व्याप्यो जीवछे मळ्यु उदकमां दुध ३५१
हुं सुखी हु दु.खी एम, बुद्धि देहनी नांय,
मृत कलेवरमां कदी, जरा न चेष्टा त्यांय. ३५२
कठीन शीतत्वादि गुण, पंचभूतना जोय,
चैतन्यादि त्या नही, सूक्ष्मपणे अवलोय. ३५३
अरूप चेतन चक्षुथी, ग्रह्यो कदा नहि जाय,
पुद्गलस्कधो स्पर्शथी, ग्रह्या सदा जोवाय ३५४
श्वासोश्वास ते स्पर्शथी, सदा अहो ग्रहवाय,
बाहिर् जातो आवतो, ते चेतन शु थाय. ३५५
ज्ञातृताश्रय जीव छे, पुद्गल नहीं कदाय,
नहीं तो घटपट वस्तुमा, ज्ञातृशक्ति ग्रहाय ३५६
मद्यांगे मदशक्तिवत्, पञ्चभूत सयोग,
चैतन्यशक्ति उद्भवे, ते युक्ति पण फोक. ३५७

भिन्न भिन्न मद्यांगमां, मदशक्ति अवभास;
भूत भूत प्रत्येकमां, ज्ञानतणो नहि वास ३५८
बुद्ध्यादिक आधार जे, तेहिज चेतन पेख,
आदि शब्दथकी ग्रहो, सुख दु ख कार्योल्लेख ३५९
बुद्ध्यादिक आश्रित जिहां, त्यां गुणपात्र जणाय;
रूपादिवत् जाणीए, चेतन सिद्धि उपाय ३६०
गुण निराश्रय नही कदा, आश्रय छे घटरूप;
बुद्ध्यादिक आश्रय तथा, आनन्दघन चिद्रूप ३६१

शिष्य उवाच

बुद्ध्यादिक आधार तो, इन्द्रियो कहेवाय;
चेतननी शी कल्पना, करवी सद्गुरुराय. ३६२

गुरु उवाच.

उपहत इन्द्रियो थकी, विषयस्मृति न वदाय,
आश्रयनाशे स्मृतितणी, उत्पत्ति केम थाय? ३६३
कर्णेन्द्रियना नाशथी, स्मरणतणो नहि क्षोद,
स्मृत्याश्रय ते आतमा, मानो सत्यज बोध ३६४
अनुभव्युं जे इन्द्रिये, तेनो थातां नाश,
स्मृति इन्द्रियो अन्यमां, ते पण मिथ्याभास ३६५
थातां एमज चैत्रने, थया अनुभव जेह,
स्मृत्युत्पत्ति मैत्रने, घटे न युक्तिज तेह. ३६६

शिष्य उवाच.

भले न थावो इन्द्रियो, बुद्धि आश्रय कोइ,
बुद्धि आश्रय देह छे, कहुं विचारी जोइ ३६७
शरीरनाशे बुद्धिनो, नाशज थाता दीठ,
भस्मीभूत शरीर तो, चेतन थाय अदीठ. ३६८

सद्‌गुरु उवाच.

बाल युवादिक भेद त्रण, तनुना एह प्रसिद्ध;
बालदेहथी भोगव्यु, स्मृति ते तेणे लीध ३६९
तरुण तनुमा तेहनी, स्मृति कदा नहि थाय;
बालशरीरे भोगव्यु, कथं युवान जणाय ३७०
मृतक शरीरे बुद्धिनी, स्फूर्ति कथं न थाय,
माटे बुद्ध्याश्रय कहो, चेतन स्मर्ता आय ३७१

शिष्य उवाच.

बुद्ध्याश्रय नहि देह तो, श्वासोश्वास जणाय,
श्वास नहीं त्या सुखदुःख कदा न निरख्युं जाय ३७२
श्वासोश्वासे भिन्नता, नहि ते एक स्वरूप,
बुद्ध्याश्रय तेने कहो, ए पण जडता रूप ३७३
एकज श्वासोश्वासथी, कीधो अनुभव जेह,
अन्यश्वास स्मर्ता नहीं, बुद्ध्याश्रय नहि एह, ३७४

बुद्ध्याश्रय जो श्वासतो, त्वक्थी तं स्पर्शाय;
त्वचा ग्रहेछे श्वासने, केम न बुद्धि ग्रहाय. ३७५
सोऽयं प्रतीतियोगथी, बुद्ध्याश्रय जे होय;
आत्मतत्त्व ते जाणीए, नहि त्यां शंका कोय. ३७६

शिष्य उवाच.

देहादिकथी भिन्न जो, मानो चेतनराय;
भिन्न करी देखाडीए, असिम्याननं न्याय. ३७७

गुरु उवाच.

वायुरूपी पण नेत्रथी, निरख्यो कदा न जाय,
जीव अरूपी चक्षुथी, कथ अहो निरखाय ३७८

बौद्ध उवाच.

क्षणिकसंतति ज्ञाननी, तेतो चेतन मान;
प्रवृत्तिरूप विज्ञाननो, आलय उपादान ३७९
एकरूप नही ज्ञाननु, क्षणे क्षणे बदलाय,
ज्ञानसन्तति आतमा, मानो सवळो न्याय ३८०
क्षणिक सन्तति ज्ञाननी, मानंतां नहि दोष,
क्षणिक उत्तर ज्ञानमां, पूर्व ज्ञाननो पोष ३८१

गुरुः उवाच.

ज्ञान क्षणिकनी सन्तति, चेतन नहि कहेवाय,
क्षणिक सन्तति मानतां, पुण्य पाप कुण पाय ? ३८२

उपादान कारणतणो, कदा विनाश न थाय,
आलयनो जो नाशतो, वृत्ति क्या प्रगटाय. ३८३
आलयने ध्रुव मानीए, तो ते चेतनरूप,
मानतां दोषज नथी, करवी समजी चूप ३८४
आलयने प्रवृत्तिमां, मानो जो यदि भेद,
उपादान कारणतणो, थाशे त्यां विच्छेद ३८५
बने नहीं घट वस्तुथी, सूत्रतणो समुदायः
कारण कार्यज भिन्नता, त्या शु कार्यज थाय. ३८६
चैत्रमैत्र इव भेद त्या, कारण कार्यज भाव,
स्मृतिभग त्यां होयछे, घटे शु युक्ति दाव ? ३८७
क्षणिक सन्तति ज्ञानमा, कारणकार्यभेद,
मानो तो क्षणवादनो, थाशे निश्चय छेद. ३८८
उत्तरज्ञानदशा विषे, पूर्व ज्ञान जो होय.
स्थिरबुद्धि तेथी थइ, बुद्धि नाश क्यां जोय ३८८
आलयनी जे स्थिरता, तेतो आतम मान,
बन्धमोक्ष सहु तो घटे, चेतन गुणछे ज्ञान. ३८९
पूर्वजन्मना स्मरणथी, पुनर्जन्मता सिद्ध,
पुण्य पाप फल भोगवे, चेतन नित्य प्रसिद्ध ३९१
चेतन नित्यज होय तो, कर्म न लागे कोय,
अनित्य माटे आतमा, क्षण क्षण नाशी होय ३९२

आ क्षणमां जे आतमा, ते क्षण विणशी जाय;
पुण्य पाप सुख दुःखनी, घटना कहो शी थाय. ३९३
अन्य करेने अन्यने, पुण्य पापनो बन्ध;
अन्यतणो जो मोक्षतो, ए सहु मिथ्याधंध. ३९४
को कर्त्ता भोक्ता अहो, सहुथी अवळो न्याय;
नित्य आतमा मानतां, कर्त्ता भोक्ता थाय ३९५
अभ्रसंग दूरे थतां, निर्मलरवि प्रकाश,
नित्य आतमा मानता, होवे दोष विनाश. ३९६
जेनी सयोगे करी, उत्पत्ति नहीं थाय,
नाश होय नहि तेहनो, माटे नित्य सदाय. ३९७
अहंकृतिने क्रोधनी, केशरी फणिधरमांय;
भासे तरतमता घणी, पूर्ववासना त्यांय. ३९८
पूर्ववासना योगथी, नित्य आतमा सिद्ध;
क्षणिकचेतन बुद्धिने, देशवटो एम दीध. ३९९

आशंका शिष्य उवाच.

जीव न कर्त्ता कर्मनो, कर्मज कर्त्ता कर्म,
चेतन कर्त्ता कर्मनो, धर्म जीवनो मर्म. ४००
सदा असंगी आतमा, जलपकजनी पेर.
कर्त्तोने भोक्तापणु, भासे प्रकृति घेर. ४०१

ईश्वर इच्छा योगथी, कर्मतणोछे बंध,
सुख दुःख तेथी सपजे, माटे जीव अबंध. ४०२

सद्गुरु-उवाच—समाधान.

काल अनादि परिणम्या, चेतन पुद्गल दोय;
अशुद्धपरिणतियोगथी, कर्त्ता कर्मनो होय. ४०३
जीवप्रेरणा जो नहि, तहिं ग्रहे को कर्म,
जडमां कदी न प्रेरणा, भिन्नपणे बे धर्म ४०४
माटे चेतनप्रेरणा, थाता कर्म ग्रहाय;
परभाविक ते प्रेरणा, ग्रहीलत्रेशान्याय. ४०५
कर्त्ता कर्म न कर्मनो, जुओ विचारी चित्त,
घटपट करे शु प्रेरणा, समजो न्याय पवित्र. ४०६
माटे कर्त्ता कर्मनो, चेतनछे व्यवहार,
शुद्धस्वभाविक धर्मनो, कर्त्ता चेतन धार; ४०७
मलधर्म त्यागे नहीं, एवो जीव स्वभाव,
अशुद्धपरिणतियोगथी, कर्त्ता कर्म विभाव ४०८
परिणम्यां पयनीरखे, भिन्न करेछे हस,
निजगुण रमतो हस त्या, करे कर्मनो ध्वस ४०९
चेतननो नही जाणीए, जड विभाविक धर्म,
स्वाभाविक निजधर्मछे, जाणो अनुभव मर्म.. ४१०

अशुद्धपरिणतिथी कर्या, कर्मतणोछे अन्त;
सहजशुद्धनिजधर्मथी, भाखेछे भगवन्त. ४११

सदा असंगी आतमा, निश्चयसत्ता धार,
कर्त्ता भोक्ता कर्मनो, वर्ते ते व्यवहार ४१२

जन्मजराने मृत्युनां, दु खनु कारण कर्म;
शाताऽशाता कर्मथी, कर्मजालनो मर्म ४१३

रग्युं बीज कपासनुं, लाक्षारस सयोग,
रूमां लागी रक्तता, कर्मफलोनो भोग ४१४

कर्माष्टक नाशे यदा, तो चेतननी शुद्धि,
आत्मस्वभावे आत्मनी, पामे तात्त्विकऋद्धि. ४१५

शिष्य उवाच, शंका

अनादिकालथी सगति, कर्म जीवनी जोय;
नाश कहो शुं कर्मनो, कारण त्यांशुं होय. ४१६

सद्गुरु उवाच–समाधान.

कालअनादि परिणम्यो, चेतन मिथ्या भ्रान्त;
छूटे चेतन खाणमां, रजः कनक दृष्टान्त. ४१७

ईश्वर इच्छायोगथी, सुख दुःख क्याथी होय.
ईश्वरनी जो प्रेरणा, दोषी ईश्वर जोय; ४१८

शाथी ईश्वर प्रेरणा, ईश्वरनो अन्याय,
न्यायी अपराधी सहु, ईश्वर पोते थाय. ४१९

शिष्य उवाच शंका

कर्म करेछे प्राणिया, सामग्री अनुसार,
सुख दुःख ईश्वर आपतो, जीव अकर्ताधार. ४२०

गुरु उवाच.

कृत्य करे ते भोगवे, पोते सुखने दुःख,
खावे तेह धरायछे. प्रभु न भागे भूख ४२१
क्षेपे निजकर वन्हिमा, ज्वलतो देखे हाथ.
स्वयंहि कर्त्ता जीवछे, कथ प्रेरणा नाथ, ४२२
अवळी बुद्धियोगथी, विषभक्षणथी नाश,
प्राणोनो जाणो अहो, ईश्वर न्याय न खास. ४२३
स्वयमेव ज्या सुख दुःख, चेतन कर्मे पाय,
ईश्वर प्रेरण कल्पना, सुख दुःख कर्मे थाय ४२४
सदा असगी आतमा, निश्चय सत्ता लेख,
व्यवहारे सुख दुःखनो, कर्त्ता चेतन देख. ४२५
जीव अकर्त्ता कर्मना, नाशे सत्य जणाय,
चेतन जाणो नयथकी, शुद्धधर्म प्रगटाय ४२६

शिष्य उवाच.

न्याययुक्ति दृष्टांतथी, कर्त्ता कर्मनो जोय;
समजे जड शुं कर्मके, फलपरिणामी होय ४२७

उवाच गुरुः.

कर्त्ता भोक्ता जीवछे, पण तेनो नहि मोक्ष,
वीत्यो काल अनन्त पण, हजु न मुक्ति पोष. ४२९

पुण्यतणुं फल भोगवे, मानव स्वर्ग मझार,
पापतणुं फल भोगवे, दुर्गतिमां अवतार. ४३०

पापपुण्य फल भोगवे, चतुर्गतिमां जाय,
समये समये कर्मसंच, कर्मरहित नहि क्यांय. ४३१

उवाच समाधानं सद्गुरुः

अशुद्धपरिणतियोगथी, फलद कर्म प्रमाण,
तथा निवृत्ति धर्मथी, सिद्ध ठरे निर्वाण. ४३२

काल अनतो वितीयो, जीवतणो परभाव,
आत्मरमणता योगथी, प्रगटे मुक्ति प्रभाव. ४३३

सयोगे वियोगछेज, देहादिक दृष्टान्त,
कर्मवियोगे आत्मनी, मुक्ति सुखालय कान्त. ४३४

शाथी ईश्वर प्रेरणा, ईश्वरनो अन्याय;
न्यायी अपराधी सहु, ईश्वर पोते थाय. ४१९

शिष्य उवाच शंका

कर्म करेछे प्राणिया, सामग्री अनुसार;
सुख दुःख ईश्वर आपतो, जीव अकर्ताधार. ४२०

गुरु. उवाच.

कृत्य करे ते भोगवे, पोते सुखने दुःख,
खावे तेह धरायछे, प्रभु न भागे भूख ४२१
क्षेपे निजकर वन्हिमा, ज्वलतो देखे हाथ,
स्वयंहि कर्त्ता जीवछे, कथ प्रेरणा नाथ, ४२२
अवळी बुद्धियोगथी, विषभक्षणथी नाश;
प्राणोनो जाणो अहो, ईश्वर न्याय न खास. ४२३
स्वयमेव ज्या सुख दुःख, चेतन कर्म पाय;
ईश्वर प्रेरण कल्पना, सुख दुःख कर्मे थाय. ४२४
सदा असगी आतमा, निश्चय सत्ता लेख,
व्यवहारे सुख दुःखनो, कर्त्ता चेतन देख. ४२५
जीव अकर्त्ता कर्मना, नाशे सत्य जणाय,
चेतन जाणो नयथकी, शुद्धधर्म प्रगटाय ४२६

मोहिनी नाशे सर्व हणाय, नृप हार्याथी प्रजा पलाय;
कर्म टळयाथी शिवसुख गेह, सत्यपथमां शो संदेह ४४३

मतदर्शनना असत्यराग, अथा श्रद्धा ज्ञाने त्याग.
जातिलिंगमां माने मोक्ष, तेथीज मुक्ति होय परोक्ष. ४४४

सत्यतत्त्वनी श्रद्धा थाय, समवायिपवज प्रगटाय;
अरूप चेतन जागे ज्योत, त्रिभुवनमां ज्ञाने उद्योत. ४४५

भवमुक्तिनी नहींछे आदि, प्रवाहथी ते दोय अनादि;
अनेकान्त पन्थज समजाय, श्रद्धाथी सहु मळे उपाय ४४६

केवलज्ञानी वाणी ग्रंथ, गुरुगम समजी ल्यो शिवपंथ;
एकशब्दनो भावज साच, एम कहे तीर्थंकर वाच. ४४७

जीव मोक्षादि शब्दज एक, साचो माटे करो विवेक,
जेनो बंधहि तेनो मोक्ष, जरा नहि त्यां लागे दोष. ४४८

शिष्य उवाच.

" दुहा "

आपे पट्स्थानक कह्यां, करुणाथी गुरुदेव,
श्रद्धाथी मे सद्दह्यां, टळी अनादि कुटेव. ४४९

आज लगी अज्ञानथी, थइ न तत्त्व प्रतीत,
नमन करुंश्री सद्गुरु, कीधो शिष्य पवित्र. ४५०

शिष्य शंका.

मोक्षतणी जे आस्तिता, तेतो समजी जाय,
अनन्तभवना कर्मनो, त्रास न क्यारे थाय ४३५
भिन्न भिन्न दर्शन कथे, मुक्ति अनेक उपाय,
सत्य असत्य तेमां कयुं, निर्णय चित्त न थाय ४३६
को वेष कइ जातिमां, कया पन्थमां मोक्ष,
निश्चय तेनो नहि बने, तो शी करवी होंश ४३७
भव प्रथम के मुक्तिवा, प्रथम जीव के सिद्ध;
इत्यादिक मन चितता, मोक्ष न होय प्रसिद्ध ४३८

उवाच सद्गुरु

चोपाइ.

ज्ञानक्रियाछे मोक्षोपाय, सूत्रे भाखे श्री जिनराय,
अग्निकणाथी, गंजीबळे, तथा ध्यानथी कल्मप टळे ४३९
जेने लाग्यो जन्मथी रोग, औषधयोगे थाय निरोग,
कीधां अनन्तभवनां कर्म, नष्ट थता प्रगटे शिवशर्म ४४०
अंधारु जग व्यापी जाय, थातां सूर्योदय विणसाय;
सत्य ज्ञान त्या शोछे भार, कर्मतणो तुं हृदये धार ४४१
ज्ञानावरणीयादिक आठ, कर्मतणोछे सूत्रे पाठ,
मुख्य मोहिनी सहुमा होय, यथा प्रजामा नृपति जोय.

वदे वेदान्ती मुक्ति स्वरूप, जाणो जग व्यापक चिद्रुप;
घटे न व्यापक चेतनराय, त्यां शु शिवनी आश रखाय ४५९

माने मुक्तिज आर्य समाज, भाडे पाम्यो जीवजराज,
मुक्तिथी जीव पाछो फरे, मुक्ति एवी शुं दुःख हरे ४६०

कर्म खप्याथी नहि संसार, कथं जीव पामे अवतार,
जन्म मरण ज्यां वारवार, शान्ति तेनी नहीं लगार ४६१

एक कहे छे मुक्ति स्वरूप, मोटो अंधारानो कूप,
जावुं जे ईश्वरनी पास, चित्त धरो ईश्वर विश्वास ४६२

विश्वासी ईश्वरना दास, मुक्तिफोजमां भळतां खास;
इशु भलो ईश्वरनो पुत्र, ते चलवे छे जगनुं सूत्र. ४६३

शरीरधारी मुक्तिज ज्यांय, जन्म मरणना फेरा त्यांय;
मुक्ति तेवीज कदी न होय, साक्षवादी ग्रहे न कोय. ४६४

अंधो वनमां फरतो फरे, पण चाली पहोंचे नाहे घरे,
ज्ञानचक्षु हृदये प्रगटाय, मुक्ति पन्थ त्यारे देखाय. ४६५

कोइक राता छे व्यवहार, ज्ञाने राता कोइकधार,
एकएकनुं खंडन करे, पक्षापक्षेज लडी मरे ४६६

एकान्तनयोथी पक्षापक्ष, सत्यज माने बे नय दक्ष;
नय एकेके दर्शन थयां, सापेक्षे ज्ञानिए ग्रह्यां. ४६७

धर्मरत्न आजे ग्रह्युं, देख्युं परमनिधान;
शरण शरण त्हारु प्रभु, कोई न तुज समान. ४५१
काल अनादिथी भम्यो, पण आव्यो नहीं अन्त;
सम्यक्तत्त्व जणावियु, नमु प्रभो गुणवन्त. ४५२

शिष्य उवाच शंका.

अनन्तजीवो सिद्धता, शिवमा केम समाय,
निराकरण तेनु करो जेथी शङ्का जाय. ४५३

उवाच गुरु

सिद्धशिलानी उपरे, शाश्वतछे शिवठाण,
कर्म खप्याथी जीव त्या, थाने श्री भगवान् ४५४
एकदीपकनी ज्योतिमा, अनेकदीपकज्योत,
सिद्धअरूपी मावता, दोष न किञ्चित् द्योत. ४५५

चोपाइ

विषयवासना विषसम खास, त्यागो बहिरातमपदवास,
शाश्वतपदनी वाञ्छा होय, तो अधिकारी धर्मे जोय ४५६
दु खनो आत्यंतिकविनाश, मुक्ति वैशेषिकनी खास,
मनने नित्यज माने तेह, मुक्तिमा जीव साथे तेह ४५७
बुद्ध्यादिकनवनो ज्यां नाश, मुक्तिज एवी त्यांशुआश,
वृन्दावन जम्बुक अवतार, तेथी सारो मानव धार. ४५८

आर्त्त रौद्र किरियानो त्याग, तेथी नहि शिवसुखनो लाग;
मुक्तिप्रापक मनमा जाण, तद्धेतु अमृत सुख खाण. ४९५

आत्मज्ञानथी छे नहि देह, चेतनधर्मी गुणगणगेह;
अरिहंतादिक पदवी जेह, तेनो धर्ता चेतन एह ४९६

जेजे इच्छे रुचि अनुसार, तेते फळ पामे निर्धार,
भवाभिनंदी भवमां फरे, आत्मानंदी शर्मज वरे ४९७

अव्यय निर्मळ चेतनगति, अनुपम मुक्ति स्त्रीनो पति,
कर तुं तारो स्वयप्रकाश, पोतानो धर तुं विश्वास.४९८

त्हारावण सारो जग कयो, त्हारावण निर्मळ को भयो,
नहि नाहि त्हारा कोय समान,धर निर्मळ पोतानुं ध्यान ९९

त्हारा निर्मळगुणनो लेश, पामंतां नाशेछे क्लेश;
योगीजन तो देखे त्हने, मोह न आवे तेनी कने.५००

योगी देखे आपोआप, तेने क्यांथी लागे पाप;
ध्यानगुफामां योगी वास, कर्म न आवे तेनी पास.५०१

सौथी न्यारो योगी योग, नहि पामे ते मोही लोक;
जागे योगीज उंघे सहु, शुं योगीनी वातज कहु. ५०२

योगी सोह चेतनराय, बोले देखे ते कहेवाय;
परमातमने जीवनो भेद, भागे नाशे भवनो खेद. ५०३

पद् द्रव्योमां वर्तन एम, चितन करता लहिये क्षेम,
शुक्लध्यान पण तेथी होय, निश्चय शास्त्रे भाख्यु जोय ४८६

षड् द्रव्योमां सर्व समाय, भाखे सूत्रे श्री जिनराय;
सूक्ष्मपणे जो थावे ज्ञान, स्वल्पभवे पामे शिव स्थान ४८७

निश्चयदृष्टि चित्ते वहे, व्यवहारे वर्ती गुण लहे;
एकान्ते चाले व्यवहार, पामे नहीं ते भवनो पार. ४८८

सर्वज्ञे भाख्या नय दोय, होय न जूठो तेमां कोय;
निश्चयनो हेतु व्यवहार, कारण कार्यपणु त्यां धार ४८९

आवश्यादिक जे व्यवहार, करीये लहिये भवजल पार,
जनमन रंजन किरिया करे, भाव विना ते भवमां फरे ४९०

भाव विना किरिया छे फोक, करीए समजी हरिये शोक;
आडु अवळु मनडु फरे, धर्मक्रिया ते ज्ञानी करे ४९१

चित्त न ठरतु एकज ठाम, माटे किरियानुं शु काम;
निश्चय एम न करशो कोय, उद्यम अवलंबो सुख होय ४९२

निज गुण रक्षण साचो धर्म, निजगुण विध्वंसनज अधर्म,
आत्म प्रवृत्ति धर्मे वळे, निज ऋद्धि तो निजने मळे. ४९३

क्रिया बाह्यनी चेतन करे, कर्म ग्रही भव फरतो फरे,
पाप क्रियाछे भव जजाळ, क्रिया धर्मनी मंगलमाळ ४९४

आर्त्त रौद्र किरियानो त्याग, तेथी नहि शिवसुखनो लाग;
मुक्तिप्रापक मनमा जाण, तद्धेतु अमृत सुख खाण. ४९५

आत्मज्ञानथी छे नहि देह, चेतनधर्मी गुणगणगेह;
अरिहतादिक पदवी जेह, तेनो धर्ता चेतन एह ४९६

जेजे इच्छे रुचि अनुसार, तेते फळ पामे निर्धार;
भवाभिनंदी भवमां फरे, आत्मानंदी शर्मज वरे. ४९७

अव्यय निर्मळ चेतनगति, अनुपम मुक्ति स्त्रीनो पति;
कर तुं तारो स्वयंप्रकाश, पोतानो धर तुं विश्वास.४९८

त्हारावण सारो जग कयो, त्हारावण निर्मळ को भयो,
नहि नहि त्हारा कोय समान,धर निर्मळ पोतानुं ध्यान९९

त्हारा निर्मळगुणनो लेश, पामंतां नाशेछे क्लेश;
योगीजन तो देखे त्हने, मोह न आवे तेनी कने.५००

योगी देखे आपोआप, तेने क्यांथी लागे पाप,
ध्यानगुफामां योगी वास, कर्म न आवे तेनी पास ५०१

सौथी न्यारो योगी योग, नहि पामे ते मोही लोक;
जागे योगीज उंघे सहु, शुं योगीनी वातज कहुं. ५०२

योगी सोह चेतनराय, बोले देखे ते कहेवाय;
परमातमने जीवनो भेद, भागे नाशे भवनो खेद. ५०३

धन्य धन्य मानु अवतार, स्वरूप किंचित भास्यु सार;
अकलगति तु चेतनदेव, कर पोतानी पोते सेव. ५०४

दानी दे तु निजगुणदान, भानी तु दे निजगुणभान;
ह्मारु सुख छे अव्याबाध, साधनथी तुं तेने साध्य. ५०५

समतारसनो तुं भण्डार, आत्म धर्मने तुं धरनार,
नाहं नाह तृष्णादास, नाहं नाह पुद्गलत्रास. ५०६

श्री जिनवरभाषित वे धर्म, हेतु ते छे शाश्वतशर्म,
यथाशक्ति तेनो स्वीकार, करिये समजी धर्ममकार. ५०७

निंदो धर्मीने मा कोय, निंदाना कडवा फल होय,
श्रावक थइने तपजप करे, निंदा करतो भवमां फरे. ५०८

समजे नहि अंतरनो मर्म, टीला टपके शानो धर्म,
शुद्धस्वरूपे निश्चय धार, धन्य धन्य तेनो अवतार ५०९

कुलमा उपन्यो श्रावक नाम, तेथी शुं थावे निजकाम,
नाममात्रथी कार्यज सरे, धनपति भिक्षा खातो फरे. ५१०

श्रावकव्रत नहि पोते धरे, दे शीखामण साधुघरे,
गुरुनो प्रत्यनीक चडाल, तेथी जन्म भलो शृगाल ५११

अहो विषम कलिकाले जोय, श्रावकना गुणधारी कोय,
मानी मुनिथी क्लेश, तेने शुं लागे उपदेश. ५१२

भण्योगण्यो पण श्रावक कोय,गुरुथी अधिको नहि तेहोय;
मेरु सरसव समछे फेर, अतर अजवाळुं अधेर. ५१३

उत्तरज्ञयणे तेनी साख, गुणना माटे कर आभिलाष;
द्दष्टिरागे शानोज धर्म, द्वेषे वाह्यो बांधे कर्म. ५१४

धर्मगुरुनीज आज्ञा धार, तरवानु ते तीर्थ विचार;
तेथी पामो भवनो पार, सार सार तेछे सुखकार. ५१५

साधुव्रतनोछे अभिलाष, माने सद्गुरुनो हुं दास;
अक्षुद्रादिक गुणनु नाम, साचु तेनुं श्रावक नाम.५१६

पंचमहाव्रत पचाचार, धर्मध्यानमां वर्त्ते सार;
भवभ्रमणभय आज्ञा जिन, वर्त्ते मन जेनु निशदीन ५१७

बाह्योपाधि विषवत् त्यजी, सहजसमाधि ज्ञाने भजी;
जेने बोध्युं आत्मस्वरूप,नमु नमुं प्रभु गुरु श्री अनुप५१८

पार्श्वमणि संयोगे लोह, भजे कनकता तेह अमोह;
जेना बोधे टळे सदाय, गुरुनी गुरुता मासि थाय ५१९

एवा गुरुने सेवो भाइ, तीर्थ तीर्थ ते जग सुखदाइ;
वाणी जेनी बहु गभीर, चेतन योगी ध्यानी धीर.५२०

धर्मगुरु मुज प्राणाधार, सदा शुद्ध तेनो उपकार;
गुरुनी सेवा भक्ति मळे,तो भव कल्मकप सहेजे टळे.५२१

गुरुए कीधो जे उपदेश, पामीने तेनो लवलेश;
गुरुनी भक्ति वर्णन करी, लागी गुरुभक्ति मुज खरी ५२२

धर्मगुरुओज थया करो, ज्ञानामृतनो वहो झरो,
श्रीसखेश्वर पार्श्वकृपाळ,निशदीन करशो मगळमाळ ५२३

धरणेन्द्र पद्मावती सहाय, पामी पूरो ग्रंथ कराय,
परमात्मदर्शन निर्मळ ग्रथ,पचशती जाणो शिवपथ ५२४

गाम लोदराए करी मास, मतिस्फूर्तिथी कर्यो प्रयास,
म्हेसाणामां पूरो थयो, शुद्धस्वभावे चेतन रह्यो. ५२५

" दुहा "

धर्मचन्द सुत जीवणलाल, सुरतवासी जीवदयाळ;
सकल संघना माटे कर्यो, ज्ञाताभवपाथोधि तर्यो ५२६

श्री सुखसागर गुरुजी वेश, पामी आनन्द होय हमेश,
बुद्धिसागर रचना सार, मगल सिद्धि जयजयकार ५२७

सवत ओगणीश उपरे, साठतणी शुभसाल,
अपाड शुकला पचमी, रचतां मगलमाल ५२८

ॐ शान्तिः शान्ति' शान्ति'

अशुद्धि शुद्धि पत्रक.

पृष्ठ	लीटी	अशुद्धि	शुद्धि
३	१२	भन्यत्मा	भव्यात्मा
४	२३	अववोत्र	अवबोध.
६	२४	सुखन	सुखने
७	१३	सगयसूचक	समयसूचक
१३	४	साभ्यता	साम्यता
१५	३	पष्ठ	षष्ठ
१५	१५	निद्राधीन	निद्राधिन
१५	२१	अने	० नथी
१५	२२	तेने	तेणे
१६	७	रुपिसभा	ऋषिसभा
१६	२२	त्माय	त्माच
१७	९	ससय	समय
१७	२१	तीर्थने	तीर्थनी
१७	२२	सद्गुरू	सद्गुरु
१८	१६	य ा	यथा
१८	१८	तादक	तादृश्
२०	१४	भे ु	भेगु
२०	१८	चत्तु	चक्षु
२१	७	स्थीति	स्थिति

पृष्ठ	लीटी	अशुद्धि	शुद्धि
१२०	१	।धगता	धिगता
१२०	१०	सर्वत्रा	सर्वत्र
१२५	८	विचार	विचारे
१२५	८	तारा	तारो
१२८	१०	रा वीश	राखीश
१२६	३	किंचित्नि	किंचिन्नि
१२७	१०	तिष्ठति	तिष्ठति
१२७	१८	तिष्ठति	तिष्ठति
१२८	१७	।पृ वी	पृथ्वी
१२९	५	देश	देशे
१२९	९	क्षु	शु
१२९	१३	सर्व	सर्वे
१३१	११	मनुण्यो	मनुष्यो
१३१	१८	होतु	होतु
१३३	३	सरुवप	स्वरुप
१३७	८	कश	केश
१४०	५	मुस्केल	मुश्केल
१४०	१२	औदारिका	औदारिक
१४०	१२	तेनस	तैजस
१४०	१५	चाल्या	चाल्यो
१४१	३	सुद्धा	शुद्धा
१४१	५	विण	वण
१४१	७	द्रसिम	द्रचिमां
१४१	१६	जेतु	जेतु मन
१४१	१७	नर्मी	नयी

पृष्ठ	लीटी	अशुद्धि	शुद्धि
१४१	१७	भाक्ता	भोक्ता
१४२	२२	मुनिश्वर	मुनीश्वर
१४३	३	शरीरीनु	शरीरीनु
१४३	६	सधा	सुधा
१४४	८	सुभडो	सुभटो
१४४	९	पारो	पासे
१४४	९	हायछे	होयछे
१४४	१३	ता	तो
१४४	२०	ता	तो
१४५	२४	अनुष्टान	अनुष्ठान
१४६	१०	×	केवलज्ञान
१५३	८	आही	ओही
१५३	२०	अगुलन	अगुलना
१५७	३	आत्मत्व	आत्मतत्व
१५७	२२	शुद्द	शुद्द
१६०	१८	आत्तध्यान	आर्त्तध्यान
१६१	१	वा	वो
१६१	१०	फरीन	फरीने
१६२	७	०	तो
१६२	८	रग	रग
१६२	२४	सुरव	सुख
१६६	४	योग	योग
१६७	६	अभित्राषि	अभिलाषि
१६८	१०	कह्यछे	कह्युछे
१६८	११	विपयाणा	विपयाणा

पृष्ठ	लीटी	अशुद्धि	शुद्धि
१६९	११	पाद्य	ग्राम
१७०	१०	विराजीम	विरामित
१७१	१८	ञोक	लोक
१७१	१८	र I	रूप
१७३	१७	हे	छे
१७३	१७	कु	न
१७४	१०	फरु	फरु
१७४	१०	व्याघि	व्याधि
१७४	२१	याज्य	त्याज्य
१७५	३	हे	छे
१७५	३	कु	न
१७६	३	या	वा
१७६	३	उ	०
१७८	१२	श्राद्द	श्रद्धा
१८१	७	अत्म	आत्म
१८५	१२	घ्याए	ध्यान
१८७	९	आत्म	आत्मा
१८७	१०	निष्क्रिम	निष्क्रिय
१८७	१६	,,	,,
१८७	१९	स्वरू-ा	स्वरूप
१८७	२३	निद्दष्टि	निश्चयदृष्टि
१९१	१८	तृपा	तृपा
१९४	१५	दुष्पाप्य	दुष्पाप्य
१९५	२२	त ागर	तवगर
१९८	६	धर्मा	धर्मी

पृष्ठ	लीटी	अशुद्धि	शुद्धि
१९८	१०	सिहलद्वीप	सिंहलद्वीप
१९९	१६	पण	पण
२००	११	नु	नु
२०५	२५	गत	०
२०७	६	चारिन्न	चारित्र
२०७	२०	कृत्सुमां	कृत्य
२०९	७	राफाइ	रोकाइ
२१०	३	राग	राग
२१०	१८	०	छे
२११	२५	शु	०
२१२	१	०	शु
२१३	१५	गिहेसु	गिहेसु
२१४	५	प्रमा -ा	प्रमाण
२१६	१६	सद्भाव	सद्भाव
२१८	४	दशनापयोग	दर्शनोपयोग
२१८	१६	नाणवा	जाणवा
२२१	१	व्याक्ति	व्यक्ति
२२२	०	प्रायश्चित छेवु	अन्यमतनो जैनदर्शनां समावेश
२२३	१	नारितत्व	नास्तित्व
२२४	२५	एकेकवी	एकेकथी
२२९	९	वलवत्तर	बलवत्तर
२३०	१६	का	कारण
२३१	१९	देननी	देवनी
२३२	२५	जन	जिन
२३२	११	सामिले	सोमिले

[illegible]	લીટી	અશુદ્ધિ	શુદ્ધિ
૨૩૬	૧૧	ભાવનેં	ભાવ તે
૨૩૬	૧૯	લારણ	કારણ
૨૩૮	૭	ઉત્પત્તો	ઉત્પત્તી
૨૪૧	૪	તિક્ષ્ણ	તીક્ષ્ણ
૨૫૩	૧૫	વેના	વેનના
૨૫૯	૯	કવલાહર	કવલાહાર
૨૬૨	૧૬	દ્વેપ ો	દ્વેપને
૨૬૩	૩	સ ય	સત્ય
૨૬૩	૭	નયી	નથી
૨૬૩	૧૯	આયુણ્ય કર્મ	આયુષ્ય કર્મ
૨૬૩	૨૪	તારતમ્ય	તારતમ્યતા
૨૬૪	૧	માહનીય	મોહનીય
૨૬૪	૧૭	આત્મની	આત્માની
૨૭૬	૧૦	પ્રધાન	પ્રધાને
૨૭૬	૨૫	જોદ્ધાઓ	યોદ્ધાઓ
૨૭૭	૧૧	નમર	નગર
૨૭૭	૧૮	જીવોનો	જીવોને
૨૭૮	૦	ઘમ	ધર્મ
૨૭૮	૪	આ	આ
૨૭૮	૮	ચતુરિન્દ્રિ	ચતુરિંદ્રય
૨૭૮	૧૧	ધશા	દશા
૨૭૮	૧૪	મોહના	મોહ
૨૭૮	૧૭	પાસ	પાસ
૨૭૯	૧	રોવરાવુ ૩	રોવરાવુ છુ
૨૭૯	૧૭	કૃ ા ી	કૃતરી
૨૮૦	૧	મોંહેં	મોહે
૨૮૦	૫	ર જા	રાજા
૨૮૦	૧૫	જીવ	જીવ

पृष्ठ	ओळी	अशुद्धि	शुद्धि
२८०	२३	वृद्ध	वृद्धि
२८१	२५	विष्टा	विष्ठा
२८२	१५	कृसप	कुसप
२८४	२१	सुरव	सुख
२८४	२२	तेओ	तेमा
२८४	२२	भ्रभावेछे	भमावेछे
२८४	२५	बौध	बौद्ध
२८६	४	ससार	ससार
२८७	१	जावो	जीवो
२८७	२०	लाग्या	लाग्यो
२८८	१२	थाडी	थोडी
२८८	१३	न	ने
२८८	१४	दयाना	दयाना
२८८	१५	वर्षावता	वर्षावतो
२८८	२४	जोवोने	जीवोने
२८८	२४	खेचुछु	खेचुछु
२८९	१	०	के
२९०	१०	सम्यक्	सम्यग्
२९१	१५	नाश	नाश
२९२	७	मतिष्टा	प्रतिष्ठा
२९३	२१	स्माद्वाद	स्याद्वाद
२९३	२४	मारा ।	माराथी
२९५	६	वांइ	काइ
२९८	१०	तरीक	तरीके
२९८	१२	वरणोय	परणीय
३०३	१२	—	प्रसव
३०५	२	पचम	पञ्चम
३०५	४	स्वामी-	स्वामी-

पृष्ठ	लीटी	अशुद्धि	शुद्धि
३०५	१३	येगे-	योगे
३०५	१५	सिद्धात-	सिद्धान्त
३०९	१८	वस्तु	वस्तु
३०८	९	–	ठर्यो
३११	१०	–	स्वरूप
३१६	१०	ब्रह्मचर्य	ब्रह्मचर्य
३१७	१७	तत्ज्ञान	तत्ज्ञान
३१८	७	शुद्धे	शुद्धे
३३९	०	कारणक	कारणके
३३६	१५	सिद्धत्मा	सिद्धात्मा
३५४	[illegible]	फवी	वेवी
३५५	१	आविर्भाव	आविर्भावे
३६१	१८	एकात	एकान्त
३६४	१३	मल	मूल
३६६	१०	स्वरूपमा	स्वरूपमा
३६९	१३	निमित	निमित्त
३७२	६	दृश्य	दृश्य
३७४	८	उपनिपदा	उपनिपदो
३७५	१	सहु छ	सहु छे.
३८३	४	त्या	त्यां
३८८	३	उत्शगल	उत्शृंखल
३०४	१३		मूल धर्म
३९४	१६	त्या	त्या
३९१	११	अना।दि	अनादि
३९८	८	चिंतता	चिंतता

ज्यां ईश्वरमा ह्रस्व छपाइ होय त्या दीर्घ वाचवी.

बीजी जे अशुद्धि छद्मस्थ दृष्टिथी सुधारता रही गइ होय ते सुधारीने वाचवी

योगनिष्ठ मुनि बुद्धिसागरजी कृत ग्रन्थोनी यादी.

अने ते मळवाना ठेकाणा—

પુસ્તકનુ નામ.	મળવાનુ ઠેકાણું.
૧ જૈન ધર્મ અને ખ્રીસ્તિ ધર્મનો મુકાબલો.	ધી જૈન ફ્રેન્ડલી સોસાઇટી-મુંબઇ.
૨-૩ શ્રી રવિસાગરજી અને શોકવિનાશક.	વડોદરા મામાની પોળ શા કેશવલાલ લાલચંદને ત્યાં.
૪ ષડ્દ્રવ્ય વિચાર. ૫ વચનામૃત.	પાદરા. શા. મોહનલાલભાઇ હીમચંદ વકીલ.
૬ અધ્યાત્મ શાંતિ.	શા. રતનચંદ લાધાજી કાવીઠા બોરસદ પાસે.
૭ ચિંતામણિ. ૮ કન્યાવિક્રય નિષેધ. ૯ પૂજા સંગ્રહ.	જૈનોદય બુદ્ધિસાગર સમાજ. સાણંદ.
૧૦ બુદ્ધિપ્રકાશ ગાયનું સંગ્રહ.	શા. મણિલાલ વાડીલાલ સાણંદ.
૧૧ બુદ્ધિપ્રકાશ ગાયન સંગ્રહ ભાગ બીજો.	અમદાવાદ સજ્જન જિનમંડલ.
૧૨ સમાધિશતક	શેઠ. જગાભાઇ દલપતભાઈ. મુ અમદાવાદ.
૧૩ તત્ત્વવિચાર. ૧૪ સત્યસ્વરૂપ.	જ્ઞાન પ્રસારક મંડલ. મુંબાઈ.ઝવેરી બજાર
૧૫ આત્મ પ્રકાશ.	શા. વીરચંદ કૃષ્ણાજી. મુ. માણસા. પુના-વેતાલપેઠ.
૧૬ ભજન સંગ્રહ ભાગ પહેલો. ૧૭ ભજન સંગ્રહ ભાગ બીજો. ૧૮ ભજન સંગ્રહ ભાગ ત્રીજો. ૧૯ ભજન સંગ્રહ ભાગ ચોથો. ૨૦ અધ્યાત્મજ્ઞાન વ્યાખ્યાનમાળા.	અમદાવાદ. જૈન બોર્ડીંગ નાગોરીસરાહ.

૨૧ આત્મપ્રદીપ. ૨૨ અધ્યાત્મગીતા. ૨૩ આત્મસ્વરૂપ. ૨૪ અનુભવ પચ્ચીશી. ૨૫ પરમાત્મ દર્શન ૨૬ પરમાત્મ જ્યોતિ. ૨૭ ગુરૂબોધ	અમદાવાદ જૈનશ્વેતામ્બર બોર્ડીંગ નાગોરીશરાહ.
૨૮ પ્રાચીન ન્યાય ગ્રંથ ઉદ્ધાર. સંસ્કૃત સ્યાદ્વાદ મુક્તાવલી.	ઝવેરી ભોગીલાલ તારાચંદ. અમદાવાદ રોશીનાકાનીપોળ.
૨૯ તત્ત્વબિંદુ (યાને સંક્ષિપ્ત સિદ્ધાંત રત્ન.	જૈન બોર્ડીંગ નાગોરીશરાહ અમદાવાદ.

૩૦ ચેતનશક્તિ ગ્રન્થ-(ભજન સંગ્રહ ત્રીજા ભાગમાં)

૩૧ વર્તમાનકાળ સુધારે-(ભ. ત્રીજા ભાગમાં)

૩૨ પરમબ્રહ્મ નિરાકરણ-(ભજન સં. ૪ ચોથામાં)

૩૩ અધ્યાત્મ વચનામૃત ગ્રન્થ (ભજન સંગ્રહ ભાગ ચોથો)

નહીં છપાવેલા ગ્રંથોની યાદી.

૩૪ તત્ત્વ પરીક્ષા વિચાર

૩૫ ધ્યાન વિચાર

૩૬ સુખસાગર

૩૭ ગુરૂમાહાત્મ્ય.

૩૮ શ્રીમંત સરકાર ગાયકવાડ સયાજીરાવની આગળ આપેલું ભાષણ

૩૯ પત્ર સદુપદેશ.